॥ श्री सद्गुरु समर्थ ॥

श्रीमत्

रामदास-कृत दासबोध

भक्ताभिमान देव । हे दाशरथी समर्थ ।
श्रीरामके ही कृपावचन । है यह दासबोध ॥

अनुवादक:
विनायक हरि दाते

भारतीय विद्या भवन
बम्बई – ४०० ००७.

इस ग्रंथ में क्या है ?

प्रपंच करते करते काम-क्रोधादि-मगरकी पकडसे छुटकारा जो चाहते है और जो नीती-मूलक परमार्थ - मार्ग से जाकर ईश्वर - दर्शन करना चाहते है उनके लिए श्री समर्थ रामदास कृत दास-बोध ग्रन्थ का अधिक उपयोग होगा। प्रपंच और परमार्थ दोनों का ही सम्यक रीतीसे आचरण करना ऐसा जो एक जनमत प्रवाह है वह बिल्कुल ही भ्रामक है । प्रपंचसे धीरे धीरे मुक्त हो कर एक परमार्थ ही करना या प्रपंचका रूपांतर परमार्थमें करना यही समर्थका अंतिम ध्येय है । यह साध्य करने के लिए नवविधा भक्ति का सोपान उन्होंने बताया है । भक्तीसे ही निश्चयसे परमेश्वर-प्राप्ती होगी और 'भक्तिबिन अधोगति' ऐसा ही उनका उपदेश है । भक्ति से ज्ञान (साक्षात ईश्वर दर्शन) और ज्ञानसे वैराग्य हो जाय तभी भक्तिका अंतिम स्वरुप जो आत्मनिवेदन या देवसमर्पण है, प्राप्त हो सकता है । इसका ही नाम सायुज्यमुक्ती है । किन्तु यह मुक्ती सद्-गुरुकी शरण जाकर उनसे अनुग्रहित हुए बिना नहीं हो सकती क्योंकि गुप्त परमा-त्माको प्रकट करनेका सामर्थ्य एक सद्‌गुरु में ही है । और सद्‌गुरु वह है जो परमात्मासे तद्रुप हुआ है और दूसरो को तद्रुप करा सकता है ।

M. S. P. Sharma

श्रीमत्
रामदास–कृत दासबोध

: प्रकाशक :

भारतीय विद्या भवन

बम्बई

Bhawan's Sri Sankaracharya Sansk...
४९२

सन् : १९८९

अनुवादक :

विनायक हरि दाते

प्रकाशक :
भारतीय विद्या भवन
कुलपती मुनशी मार्ग,
बबई ४०० ००७.

सर्वाधिकार सुरक्षित
श्रीमती मालती विनायक हरि दाते

प्रथम आवृती १९८९
किमत रु. १०० - ००

मुद्रक :
भावना प्रिंटर्स
१५, केंम्वे बिल्डींग,
खेतवाडी १२ वी. लेन,
बम्बई ४०० ००४.

श्री सद्गुरुको अर्पण

अनुक्रमणिका

[१] प्रस्तावना पृष्ठ संख्या १ से ८

[२] लेखकके बारेमें पृष्ठ संख्या १ से ८

[३] दासबोध पृष्ठ संख्या १ से २८५

प्रस्तावना

श्री समर्थ रामदास का अल्प परिचय।

शके १५३० चैत्र शुद्ध नवमी, मंगलवार (१५ मार्च १६०८) मध्यान्हकालमें संत रामदास का जन्म हुवा। हजारों वर्षोंके पहले प्रभु श्री रामचन्द्रका जन्म भी चैत्र शुद्ध नवमी, मध्यान्हकालमें हुवा था, और उसी दिन और उसी समय श्री रामदास का भी जन्म होना, यह एक महान् और विलक्षण योगायोग है। जिस गांवमें रामदासका जन्म हुवा वो जांब नामका गांव महाराष्ट्रमें गोदावरी नदीके तीरपर है। सूर्याजीपंत ठोसर व राणुबाई इनके रामदास द्वितीय पुत्र हैं। जमदग्नि-वत्स गोत्रमें उत्पन्न हुवे सूर्याजीपंत वंशपरंपागत राम व सूर्य इन दो देवताओंके उपासक थे। बारह गांव के कुलकर्णी होनेके कारण सूर्याजीपंतकी सांपत्तिक स्थिति समाधानकारक थी, किन्तु उनको कोई पुत्रसंतान न होने के कारण वे दुःखी थे। तथापि सूर्यकी अखंड उपासना व प्रार्थनाका फल उनको अविलंब प्राप्त हुवा। राणुबाईको शके १५२७, मार्गशीर्ष मासके पौर्णिमाके दिन ज्येष्ठ पुत्र गंगाधर प्राप्त हुवा। विधिलिखितानुसार रामदास (उनका जन्मनाम नारायण) सात वर्षके हुवे तब सूर्याजीपंतका देहावसान हुवा।

बचपनमें रामदासकी वृत्ति बहुत खिलाडु थी। वृक्षके ऊपर चढकर वहांसे दूसरे वृक्षकी डाली पर कूदना या नीचे गंगाप्रवाहमें कूदकर मनसोक्त तैरना उनको बहुत अच्छा लगता था। 'यह तो हनुमानका अवतार दिखता है' ऐसे हंसते हंसते लोग विनोद करते थे। वास्तवमें वे आगे हनुमानसम श्रीरामके अनन्य दास बन गये। हो सकता है कि देहावसान के पहले चार दिन, सज्जनगढमें जो उन्होंने तंजावरसे लाकर राम, सीता व लक्ष्मण इन तीन मूर्तियां की स्थापनाकी थी और उनके आगे हनुमानकी मूर्ति स्थापित की नहीं इसका कारण रामदास स्वयं ही अपनेको हनुमानसम समझते होंगे। श्रीसंत तुकारामने भी अपने एक अभंगमें रामदासका वर्णन हनुमान ऐसे किया है। इन ऐतिहासिक घटनाओंसे हमें एक बात स्पष्ट होती है कि जैसे मारुतीकी भक्ति 'रामरूपी अंतरात्माकी' ही भक्ति होती है उसी प्रकार देव और कोई महान् संत इनमें कोई अंतर होता नहीं, राम की भक्ति करना या रामदासकी करना दोनोंका फल एक ब्रह्मसाक्षात्कार है।

रामदास एकान्तप्रिय थे। रात रात जगते रहकर एकान्तमें विश्वके कल्याणकी चिंता करना आठ वर्षके बालकके लिए असामान्य है। "नारायण, इतनी रात्र हो गयी,

तुम अकेले बैठके क्या करते हो' ऐसे माताने पूछतेही, "मां, विश्वके कल्याणकी मैं चिन्ता करता हूं" ऐसा उत्तर रामदासने दिया । दूसरी एक महान् चिन्ता भी रामदासको अहर्निश लगी रहती थी । वो थी देवदर्शनकी । उसके लिए उन्होंने अपने ज्येष्ठ बंधु गंगाधरपंतको प्रार्थना भी की थी कि मुझे नाममंत्र दो । जब गंगाधरपंतने प्रार्थना मान्य नहीं की, तब रामदास गांवके बाहर मारुतीके देवालयमें गये । वहा उनके प्रार्थनानुसार शके १५३८ में प्रभु रामचंद्रने स्वप्नमें नाममंत्र दिया । तदनंतर चार वर्ष तक रामदासने मंत्रजपके साथ साथ तत्कालीन धार्मिक शिक्षण, संस्कृत भाषाका अध्ययन व पुराणोंका व वेदांतादि शास्त्रोंका अवलोकन किया होगा । इसका ही परिणाम हो सकता है कि उनकी संन्यास-वृत्ति जागृत हुई और उन्होंने शके १५४२ में विवाह मंडपसे पलायन किया ।

शके १५४२ से १५५४ तकका बारह वर्षोका काल रामदासने तपस्या, नामजप व स्वाध्यायमें व्यतीत किया । सूर्योदयसे मध्यान्हतक गोदावरीके जलमें नाभीतक खड़े रहकर गायत्रीका जप, मध्यान्होत्तर राममंत्रका जप, ऐसा उनका टाकलीस्थलमें बारह वर्ष तक़, बिना अपवाद नित्यनेम चलता था । साहजिक ही इसकी परिणति प्रभु रामचंद्र, सीतामाई, लक्ष्मण व हनुमान इनके अखण्ड साक्षात्कार रूपसे हुई । इस प्रकार मानव जन्मका साफल्य हो जानेपर रामदासको और क्या करने की आवश्यकता थी ? किन्तु उनके सामने एक महान् व अत्यंत कठिन ऐसी राजकीय सामाजिक समस्या थी, जिसका निराकरण करना वे अपना जीवितकर्तव्य मानते थे । वैयक्तिक मोक्ष प्राप्त करना यही उनका ध्येय नहीं था । किन्तु साथ साथ बहुजन समाजकी नैतीक और पारमार्थिक योग्यता बढाकर उनको ईशसाक्षात्कारका मार्ग बताना यह उनकी हार्दिक इच्छा व महत्वा-कांक्षा थी ।

इसकी पूर्तता करने के लिए उन्होंने प्रथम भारत वर्ष की वास्तविक स्थिति किस प्रकारकी है यह प्रत्यक्ष देखने हेतु आसेतु हिमाचल पदयात्रा की । कहते हैं कि वे नेपालमें पशुपतिके दर्शनार्थ गये थे, और काबुल व कंदहारतक भी पहुंच गये थे । तपश्चर्यार्थ जब वे टाकलीमें द्वादश वर्ष थे तब ही मुसलमानोंके अत्याचारोंकी अनेक कहानियां वे सुनते थे । उससे कईगुना क्रूर और कठोर घटनाएं उन्होंने अपनी पदयात्रामें प्रत्यक्ष देखी । हिंदुओंके देवालयोंको ध्वंस करना, उनके कलाकौशल्य को नष्ट करना, हिंदु स्त्रियोंको अवमानित एवं भ्रष्ट करना उनको धर्मान्तर करवानेपर लक्ष देकर सब प्रकारकी क्रूरता व दृष्टताका उपयोग करना यही मुसलमानोंका नित्यक्रम था । युक्तिप्रयुक्तिसे जो कार्य नहीं होते वो वे लूट व आगजनी इत्यादि हिंसात्मक मार्गसे करते थे । ईश्वर-भीरू व

पापभीरू हिंदुके लिए जीवन असह्य हुवा था। यह सब देखके रामदासका अंतःकरण फट जाता था। दुःखसे वे अत्यंत व्यथित होकर निराश बनते थे। इस दुर्दशाके कारण केवल मुसलमान ही नहीं किन्तु अंशतः हिंदूभी उत्तरदायी थे। मुसलमानोंके दरबारमें उच्चपदस्थ होकर हिन्दुओंसे छल करना, व केवल अपना स्वार्थ साधना यही वे चाहते थे। विशेषतः राजाओं और सरदारोंका यही एक ध्येय था। क्षत्रियोंका तेज नष्ट हो गया था। ब्राह्मणजाति ढोंगी, अनीतिमान व अधार्मिक बन गई थी। वेद और शास्त्र इनका विक्रय करके उदर भरना इसके अतिरिक्त वे कुछ जानते नहीं थे। साधु सन्यासीका वेष धारण करके लोगोंको फंसाना यही उनका जीवित-कर्तव्य हुवा था। सारांश, जहां देखें वहां अनीति, अधर्म, अस्थिरता व नैराश्यताकी कृष्णछाया पसर गई थी। दिन-दिन सहस्रावधि हिन्दुओंके आर्तरुदनकी कर्कश ध्वनि रामदासको सुननेमें आती थी।

इस महान संकटसे छुटकारा पानेका क्या मार्ग होगा इसपर रातदिन सोचते सोचते रामदासको इतना विश्वास उत्पन्न हुवा कि 'मैं अकेला नहीं हूं, मेरे आगेपीछे भगवान श्रीराम मेरा और देशका संरक्षण करनेके लिए समर्थ व सिद्ध हैं'। सोचते सोचते उनके यही ध्यानमें आया कि जब तक स्वराज्यकी स्थापना नहीं होगी और हिंदू समाज भीरू वृत्ति, आलस्य, अनास्था, सुखलोलुपता इत्यादि दुर्गुणोंसे परावृत्त होकर, स्वाभिमानी, कर्तव्यदक्ष, उद्योगी और देशको परतंत्रतासे स्वतंत्र करनेके लिए स्वार्थत्यागी नहीं बनेगा तब तक देशसे अशांती, अस्थैर्य, भीति व दुःख नहीं जायेगा। इस द्विविध कार्यके लिए द्विविध उपाय योजना चाहिए ऐसे उन्होंने सोचा। नैतिक व पारमार्थिक मूल्य जो अच्छी तरहसे जानते हैं व इनकेलिए जो अहर्निश प्रयत्नशिल रहेंगे उनके हाथोंमें राजसत्ता आनी चाहिए। दूसरी बात यह कि हिंदू समाज हो या मुसलमान समाज हो, दोनोंमें ही नैतिक और पारमार्थिक मूल्योंकेलिए आदर होना चाहिए। तब ही स्वराज्य और सुराज्यकी नीव दृढ और चिरकाल रहेगी और प्रजा ईश्वरानुरक्त निस्वार्थी व बंधुभावसे मानवसेवामें रत रहेगी। स्वराज्य का अर्थ हिंदुओंका राज्य ऐसे कभी रामदासने सोचा नहीं, और न उनको यही ठीक लगा कि मुसलमान निर्घृणतासे हिंदुओं पर सतत अत्याचार करते रहें। दोनों ही समाजोंको धार्मिक स्वातंत्र्य होना चाहिए ऐसे वे चाहते थे। किन्तु मुसलमानोंकी आक्रमणवृत्ति व विध्वंस कार्यको रोकना चाहिए ऐसी उनकी इचछा थी। और स्वराज्य ही होना चाहिए ऐसा उनका दृढ विश्वास था। क्योंकि एकबार स्वराज्य व तदनंतर सुराज्य हो जाय तो लोगों को नैतिक और परमार्थिक शिक्षा देना सुगम होगा। किन्तु यह द्विविध हेतु कार्यान्वित करके सफल करनेके लिए

निःस्वार्थी व प्रयत्नशील लोगोंका समुदाय एकत्रित करना अत्यंत आवश्यक है इसका आकलन पूर्णतया रामदासको हुवा था ।

इस विचारानुसार अपना प्रयोग अत्यंत गुप्ततासे कहां शुरु करना योग्य होगा ऐसा महान् प्रश्न उनके सामने उपस्थित हुवा । वस्तुतः हिंदुस्थानका कोई भी भाग सुरक्षित नहीं था । विशेषतः राजकीय दृष्टिसे यह एक बहुतही कठिन परिस्थिति बन गयी थी कि गोदावरी व नर्मदा इन दोनों नदियोंका उत्तरीय भूभाग व कृष्णा नदीका संपूर्ण दक्षिण भाग मुसलमानोंके हाथमें था । उत्तरमें सर्वथा अविचारी व निर्दय मोगल-राज्य, तो दक्षिणमें क्रूरता व अत्याचार । इनमें यत्किंचितही कमी नहीं ऐसे एकसौ वर्षोंतक (१३४७-१५२६ ईस्वी सन) बहामनी राज्यकी दुर्धर पीडा ! कालान्तरमें बहामनी राज्यके पांच टुकड़े हो गये । किन्तु उसका परिणाम क्रूरता बढनेमें ही हुवा । हिन्दुओंका दुःख पांचगुणा बढ़ गया । मुसलमानोंने दक्षिणमें हिंदुओंका विजयनगर साम्राज्य व अन्य छोटे छोटे राज्य नष्ट कर दिये थे । माहराष्ट्र भी सुरक्षित नहीं था । किन्तु रामदासको गोदावरी छोड़के कृष्णानदीके तीरपर आकर वास्तव्य करनेके दो कारण हो सकते हें । पहले रामदास स्वयं महाराष्ट्रीय होने के क़ारण महाराष्ट्रीय जनताकी आशा-आकांक्षाका उनको ज्ञान था । इतर प्रान्तीय जनताके आधारसे महा-राष्ट्रीय जनताका आधार लेना अधिक योग्य होगा ऐसा विचार मनमें आना साहजिक था । दूसरा कारण यह हो सकता है कि नाशिक और त्र्यंबकेश्वरके आसपासके प्रदेशपर शिवाजीके पिताज़ी शहाज़ी इनका अधिकार चलता था । शहाजी विज़ापुर दरबारमें एक प्रतिष्ठित सरदार थे, व उनका, मसूरके ज़ागीदार होने के नातेसे महाराष्ट्रमें सातारासे मिरज़ व कोल्हापुर इसप्रान्तपर सर्वाधिकार था । रामदास व शहाजी परस्परको अच्छी तरहसे ज़ानते होंगे क्योंकि टाकलीमें बारह वर्षोंतक तपश्चर्या करनेके-कारण रामदास भी कुछ छिपे हुए व्यक्ति नहीं थे । मुसलमानोंके अत्याचार व क्रूरताका ज्ञान शहाजीको नहीं था ऐसे भी हो नहीं सकता । एतावता, अनुमान करें तो अयथार्थ नहीं होगा कि रामदास शहाजीकी मूक संमतीसे ही कृष्णा नदीके तट पर अपना नैतिक पारमार्थिक व राजकीय ऐसा त्रिधार प्रयोग करनेके लिए गये होंगे ।

इस प्रकार महाराष्ट्रमें कृष्णा व कोयना नदीयोंके संगमपर कराड गांवके पास, किन्तु पहाडों व जंगलोमें एक चाफल नामक छोटेसे गांवमें आकर अपने प्रचण्ड कार्यकी शुरुआत की । एक दो वर्षोंमेंही मसूरमें व मसूरके आस पास दूसरे गावोंमें उन्होंने ग्यारह मारुतीकी व प्रभु रामचंद्रकी मूर्ती स्थापना करके वहां उत्सव शुरु किया । जब अखिल

हिंदुस्थानमें प्रत्यही सैकडों देवालयोंका विध्वंस हो रहा था, तबही नवीन देवालयोंकी बनाना व वहां मूर्ति-स्थापन करके उनका उत्सव शुरु करना यह न केवल मुसलमानी सत्ताको आव्हाहन करना था, बल्कि अपनी स्वतःकी शक्ति कितनी है इसका भी अंदाज लेना था। साथ साथ, लोगोंकी भिरूवृत्ति नष्ट करके उनको उत्साही, धैर्यशाली व स्वधर्मरक्षणार्थ उद्योगी बनानेका एक उपक्रम था। इसका ही परिणाम यह हुवा कि चाफलमें एक राम-मंदिर लोगोंने बिना वेतन लिए, स्वसंतोषसे बना दिया। उस मंदिरका नाम होना चाहिए इसीलिए बिजापुर दरबारमें जो हिंदु सरदार थे उनसे मंदिरके लिए भूमि व मूर्तिपूजाके लिए द्रव्य सहाय्य रामदासने प्राप्त कर लिया। यही एक भावी प्रचण्डकार्यकी शुभकारक नांदी थी। दो वर्षोंके पश्चात् ही (शके १५७१) चाफलके समीप शिंगणवाडीमें समर्थ रामदासने शिवाजीको अपना शिष्य बनाया। यहांसेही परमार्थ और राजकारण इनका अटूट संबंध जुड़ गया। परमार्थ और राजकारण ऐसे दो परस्पर विरोधी, असंबंध भाग नहीं थे, किन्तु वे एकही कार्यक्षेत्रके परस्परावलंबी, परस्परपोषक ऐसे दो अविभाज्य घटक थे। इसीलिए शिवाजी ने शूर सैनिक व योध्दे निर्माण किये, व रामदासने सैकड़ों महंत व सहस्त्रशः शिष्य किये। शिवाजी और रामदास इन दोनोका ही अंतिम उद्देश स्वराज्यमें सुराज्यकी स्थापना करके लोगोंको, सुरक्षता, निर्भयता, सुख और शांति देकर उनको नीतियुक्त परमार्थपर लानेका था। इसीलिए रामदास शिवाजीके न केवल पारमार्थिक गुरु थे, किन्तु राजकारणमें भी शिवाजी को योग्य सूचना व सलाह देनेमें मार्गदर्शक मित्र भी थे।

परमार्थ और राजकारण अलग अलग, परस्पर विरोधी होते, तो प्रथमतः रामदासको गोदावरी छोडके कृष्णातटाक आनेकी आवश्यकता ही नहीं थी। टाकली नासिक, त्र्यंबकेश्वर इत्यादि पवित्र क्षेत्रोंमें रहकर उनका पारमार्थिक कार्य यथास्थित, निर्विघ्न चल सकता था। आसेतु हिमाचल रामदासने जो ग्यारहसौ मठोंमें महंतोंकी स्थापनाकी, वो केवल परमार्थ के लिए ही होती, तो शिवाजीका आगरासे सातारातक औरंगजेबके बंदिखानेसे छुटकारा पाकर सुरक्षित तरहसे पहुंचना बहुत ही कठिन होता। इससे यह ज्ञात होता है कि मठस्थ महंतोंके सहाय्यके बिना यह काम हो नहीं सकता था। तुलजापुर भवानीको "तेरा तूं बढावो राजा (शिवाजी)" ऐसी देवीको प्रार्थना करनेकी रामदासको क्या आवश्यकता थी? औरंगजेबके मृत्युके पच्चीसवर्ष पहले भविष्यवाणीसे, "डूब गया औरंग्या पापी। म्लेंच्छसंहार हो गया। बहुत हुवा है जल। स्नान संध्या करने के लिए" ऐसे रामदासको कहनेकी क्या आवश्यकता थी? इन सबका एकही तात्पर्य है कि रामदासने या शिवाजीने परमार्थ और राजकारण दोनोंको एकही कार्यक्षेत्र माना।

अब श्री समर्थ रामदासकी परमार्थ विषयमें थोडी चर्चा करूं। प्रथमतः यह ध्यानमें रखना चाहिए कि कोई भी बडासे बडा संत हो वो जन्मतः ही बडा नहीं होता। श्रीकृष्ण भगवानने व उनके अर्जुनादि भक्तोंने भी कितनी भक्ति व गुरुसेवाकी इसका वर्णन पुराणों में आया है। पूर्वजन्मका पुण्यांश या आनुवंशिक संस्कार, या सद्य परिस्थिति इतनी सामग्री संत होने के लिए पर्याप्त नहीं होती। संत होने के लिए सर्व प्रकारके मानसिक कष्ट सहन करके सद्‌गुरुकी सेवासे उनकी कृपा संपादन करके देवदर्शनार्थं नीतीयुक्त पारमार्थिक कठोर साधना करनी चाहिए। संत रामदासने ऐसे ही किया। वे आठवें वर्षमेंही सिद्ध बन गये थे और उनको देवदर्शन हुवा था इनमें तर्कशून्य या पारंपरिक अंधश्रद्धा रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा होता तो जेष्ठ बंधु गंगाधरपंतने जब नाममंत्र दिया नहीं तब गांवके बाहर जाकर मारुतीके देवालयमें रातभर क्यों रहते? व तत्पश्चात् गोदावरीमें कमर तक जलमें सूर्योदयसे मध्यान्हतक खड़े रहके बारह वर्षों तक अनेक गायत्रीमंत्रके पुरश्चरण क्यों करते? मारुतीके देवालयमें स्वप्नमें प्रत्यक्ष श्री प्रभु रामचंद्रने मंत्र देनेपर भी गायत्री मंत्रका अनुष्ठान क्यों करते? गायत्रीमंत्रके अनुष्ठानसे उनको महान् सिद्धियां प्राप्त हुई। इसका अर्थ उनको देवदर्शन हुवा ऐसा करना सर्वथैव गलत होगा।

रामदासने स्वयं अपने 'दासबोध' ग्रंथमें लिखा है कि गायत्री मंत्र का अधिकार ब्राह्मण को ही है, तथापि केवल ब्राह्मण होने के कारण देवाधिदेव की प्राप्ति हो सकती तो सद्‌गुरु की शरण जाने का प्रयोजन ही नहीं। इसीलिए वे भी ब्राह्मण जाती के अनुसार गायत्री का सुबह से मध्यान्ह तक जप करते थे, किन्तु ईश्वर साक्षात्कार के लिए श्रीराम ने दिया हुवा मंत्र का जप मध्यान्ह से आगे करते थे। एक रामदास ही ऐसे संत हो गये कि जिन्होंने मूर्तिपूजा से ईश्वरसाक्षात्कार तक भक्तिमार्ग से मनुष्य किस प्रकार द्वैत से अद्वैतानुभव ले सकता है यह बता दिया है। रामदासने स्वयं मूर्ति पूजा की व दूसरों को मूर्ती पूजा करना सिखाया यह उन्होंने जो टाकली, मसूर इत्यादि स्थानोंमें मारुती व राम इनकी स्थापना की इससे ही सिद्ध होती है। चाफल में जिस राममूर्तिकी उन्होंने अनेक वर्षो तक उपासना की वो मूर्ति उनको स्वप्नमें जो आदेश हुवा था उसके अनुसार अंगलुर में कृष्णा नदी में गहरे पानी में मिली थी। रामदास ने जो दासबोध में बारबार मूर्ति पूजा का निषेध किया है उसको पढकर किसीको भी ऐसे लग जायेगा कि मूर्तिभंजक या नास्तिक भी इससे अधिक निषेध क्या कर सकता है। चित्रलेप काष्ट या पाषाण की मूर्ति नाशवन्त है, उसमें यह विश्व निर्माण करने की शक्ति नहीं, ऐसे कहकर वे पुनश्च मानस-पूजा करने का उपदेश करते हैं। मानसपूजा से भगवन्तको

समर्पण करने की सद्बुद्धि आ सकती है, किन्तु 'मानसपूजा व प्रत्यक्ष दर्शन' इनमें महदंतर है ऐसे कहकर मानसपूजा ही अंतिम ध्येय नहीं ऐसे वे बताते हैं। इसके पश्चात् राम कृष्णादि अवतारों का पुराणांतर्गत वर्णनानुसार कल्पना निर्मित चित्रों की पूजा जो लोग करते हैं उनको वे कहते हैं क्रि गतगोष्ठीका वर्णन करनेसे हाथमें क्या पुण्य आयेगा। इसके ऊपर कोई कहेगा कि रामकृष्णादि अवतारोंसे ही परे उनके आभारभूत ब्रह्मा, विष्णु महेश ऐसे जो तीन महान् देव हैं उनकी भक्ति करनी चाहिए। ये तीन देव सबसे बडे हैं ऐसे मान करभी रामदास पूछते हैं कि जो ब्रह्मदेव सबके भालपर भावी घटनाओंका लेख लिखते हैं उनके भालपर कौन लिखता है? जो विष्णु जगतका पालन कर्ता है उनका पालन कौन करता है? और जो शंकर सब सृष्टीका संहारकर्ता है उनका संहार कौन करता है? ऐसा जो देवाधिदेव होगा उसका दर्शन लेना और उसके साथ संभाषण करना यही एक पारमार्थिक दृष्टिसे महत्वकी बात है, ऐसे रामदास कहते हैं। इसका अनुभव चाहते हो तो गुरुगम्य मार्गके बिना दूसरा मार्ग नहीं ऐसा ही उनका सिद्धान्त था। गुप्तेश्वरको प्रकट करके प्रत्यक्ष बताना यही श्रेष्ठ सद्गुरुका काम होता है, व इसीलिए वे अपने शरणागत शिष्योंको नाममंत्र देते हैं। वह नाम भी स्वयंप्रज्ञासे निर्माण नहीं करते, किन्तु जो ईश्वराज्ञासे उनको श्रवणगोचर होता है वही वे देते हैं। इसका अर्थ यह हुवा कि देव व भक्त इनको जुडानेका ही कार्य सद्गुरु करते है इसके पश्चात् जो कुछ साधन करके परमार्थ बढाना व दृढ करना है वो सब शिष्य को ही करना पडेगा। मंत्रका प्रतिदिन (छः या आठ घंटे) श्वासके साथ या मानस जप करना, पारमार्थिक वाङ्मय पढना व उसपर मनन करना, गुरुसेवामें रत रहना व नीतियुक्त आचरण करके लोकसेवा करना उससे ईशकृपा अवश्य होगी व देवदर्शन होनेसे मानवजन्मका साफल्य होगा यही रामदासके पारमार्थिक उपदेशका सार है।

दासबोधके इस हिन्दी-अनुवादके मुद्रण-दोष निकालकर उन्हें शुद्ध करनेमें सहाय्य करनेका कार्य श्रीयुत विरेन फडके और जगन्नाथ व्यास व उनके पुत्र आनन्दकुमार व्यास ने किया इसके लिए मैं तीनोंका बहुत ऋणी हूं। कभी कभी प्रो० मोहनलाल शर्मा भी इस कार्यमें भाग लेते थे इसिलीए उनका आभारी हूं। सज्जनगढ में श्री समर्थ रामदास द्वारा स्थापित श्रीराम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तियों की प्रतिकृति और उसके साथ स्वयं श्री रामदास स्वामी के चित्र को सम्मिलित कर इस ग्रन्थ के लिए सुन्दर मुखपृष्ठ श्रीयुत फौजमल पुरोहित ने बनाया है। मैं उनको इस कार्य के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

वि. ह. दाते
६३, जसवन्त सराय
जोधपुर (राज.)

दिनांक ३ जुलाई १९७८

जोधपुरवासी श्री सद्‌गुरु समर्थ

डॉ० व्ही. एच. दाते

जन्म
१–६–१९००

निर्याण
२२–४–१९८६

जैसा कि निंबालवासी सद्‌गुरु श्री रामभाऊ महाराजने कहा है हमारा प्रयत्न एक ऐसे प्रबुद्ध समाज का निर्माण करना होना चाहिए जो वेदान्तशास्त्र के वास्तविक तत्व व अर्थ की पहचान कर सके, स्वरुपानुभव की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो और ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन कर उससे एकरूप हो सके। प्रातःस्मरणीय डॉ० व्ही. एच. दाते ने अपने गुरु की इच्छा व आदेश की पालना हेतु यह दुःसाध्य कार्य हाथमें लेकर सिद्धगिरि, कर्नाटक से जिस ज्ञानगंगा का उद्‌गम हुआ था और जो महाराष्ट्र व कर्नाटक को अपने पावन आत्मज्ञान रुपी जल से आप्लवित कर रही थी उसे ही राजस्थानमें लाकर प्रवाहित किया। अपने गुरु की आज्ञा व आशीर्वाद प्राप्त करके वे जोधपुर सन् १९३७ में आये और तबसे निरन्तर परमार्थ-प्रसार के कार्य में लगे रहे। वे एक प्रकाण्ड पंडित, अद्वितीय दार्शनिक, विचक्षण टीकाकार और अद्‌भुत वक्ता तो थे ही परन्तु ये सब विलक्षण गुण उनमें इसीलिए आ गए थे कि वे एक ऐसे आत्म-साक्षात्कारी संत थे जिन्होंने अपने समस्त गुण, शक्ति व योग्यता का प्रयोग परमार्थ के सम्पादन और प्रसार के लिएही किया। विश्वविद्यालयों में विभिन्न पदों पर कार्यरत होते हुए भी उनके जीवन की प्रमुखधारा आत्म-कल्याण व लोककल्याण की ही थी। परमार्थ ही उनका ध्येय था और परमार्थ ही उस ध्येय की प्राप्ती का साधन। ऐसे महापुरुषका जीवन-चरित्र प्रेरणादायक होता है और जो कोई उनके जीवन की विभिन्न घटनाओंको, जिनके द्वारा उनके जीवन की धारामें अनेक मोड़ आये, जानने का इच्छुक हो उसे उनकी पुस्तक 'R. D. Ranade and his Spiritual Lineage' की अनुसूचि संख्या दो– 'Misery turned into happiness' का मनोयोगपूर्वक अध्ययन कर लाभान्वित होना चाहिए। इन पंक्तियोंका उद्देश्य उन घटनाओंकी पुनरावृत्ति करना नहीं है, यहां तो उनके जीवन के उस पक्ष पर प्रकाश डाला जायेगा जिस पर स्वयं उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा है। इसके

अतिरिक्त उनके परमार्थ-पथ की एक संक्षिप्त रुपरेखा देने का प्रयत्त भी किया जायेगा ।

गुरुकृपा के महत्त्व व शक्ति का कैसा अद्भुत प्रताप है यह डॉक्टर साहिब के के जीवन चरित्र से स्पष्ट हो जाता है और इस उद्देश्य से ही डॉ० साहेब ने 'Misery turned into happiness' लिखा था । इस आंशिक आत्मकथासे प्रकट होता है कि किस प्रकार कष्टप्रद परिस्थितियोंसे, सांसारिक विपत्तियों से, और विपिन्न अवस्था की कठिनाइयोंसे संघर्ष करते हुए गुरुकृपासे उन्होंने लौकिक और पारलौकिक दोनों ही क्षेत्रोंमें प्रशसनीय सफलता प्राप्त की । परिवार के भरण-पोषण के एकमात्र आधार अपने पिताश्री को अल्प आयु में ही खो देना, मातुश्री की वेदना का साक्षी बनने को बाध्य होना, अल्पकालके लिए ही सही, भिक्षावृत्ति तक को अपनाना और भगिनी के आश्रय में रह कर जीवन की उन कठिन घडियों को बिताते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त करना, यही नहीं उसके बाद भी जीवन-निर्वाह के साधन जुटाने के लिए महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश गुजरात और राजस्थानके विभिन्न नगरोंमें एक के बाद एक वर्ष व्यतीत क़रना, ये सब ऐसी घटनाएँ हैं जो किसी का भी इश्वरमें विश्वास डिगा सकती हैं, परन्तु जो स्वयं ईश्वर द्वारा अपने कार्यके लिए चुने जाते हैं उनका विश्वास तो दृढ़ से दृढ़तर ही होता जाता है और ठीक वही डॉ० साहबके साथ भी हुआ । कैसी ही विपरीत परिस्थितियें होंवे ईश्वर-भक्तिमें दृढ़ होते गये और उनकी ईश्वर पर आश्रित रहने की भावना बढती गई । संभवतया इसीलिए गुरुकृपासे उन्हें अपने जीवनके उत्तरकाल में प्रपंच व परमार्थ दोनोंमें ही अभूतपूर्व सफलता मिली । लब्ध-प्रतिष्ठित दार्शनिक चिन्तक के रूपमें, कुशल व प्रशंसित अध्यापक के रूपमें व एक महान संतके रूपमें उनकी ख्याति फैलने लगी । पारिवारिक जीवन के समस्त उत्तरदायित्त्वों का भली प्रकार निर्वाह करते हुए निष्ठा व लगनसे उन्होंने परमार्थ.साधन का क्रम निरन्तर जारी रखा और फलस्वरूप आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर अनुभव की उच्चसे उच्चतर सीढ़ियों पर चढ़ते हुए अन्तमें ब्रह्मैक्य स्थिति प्राप्त कर मानव जीवन को सार्थक किया ।

उनके जीवन के अन्तिम दो वर्ष ब्रह्मैक्य स्थिति का मूर्त्तिमंत रूप था । गीता आदि आध्यात्मिक ग्रन्थोंमें बाह्मी स्थिति का जो वर्णन पढने को मिलता है उसका साक्षात् रूप देखनेका महतभाग्य उन लोगोंको प्राप्त हुआ जो उस समय उनके सन्निकट थे । देह रहते विदेही कैसा होता है, यह उनको देख कर ही समझा जा सकता था ।

शीत और घाम की पीड़ा से अविचलित, दुःख व सुख के आघातोंसे निरपेक्ष, स्तुति या निन्दा, भूख या प्यास, निद्रा या जागृति आदि द्वन्द्वोसे अप्रभावित ब्रह्मरूपमें स्थित, स्वयं अपने देह और देह संबंधियों का भी भान उनको नहीं था, परन्तु परमार्थमें सचेष्ट और समय समय पर अनेक उद्‌बोधक वचन कहने से उनका चैतन्य रूप प्रकट होता था।

परन्तु इस स्थिति को प्राप्त करनेसे पूर्व भी डॉ० साहेबके व्यक्तित्वमें एक अलौकिक आकर्षण था। जिस किसीने उनकी मधुरवाणी और सौजन्यपूर्ण व्यवहार का अथवा उनके सान्निध्यमें होने के कारण हृदयमें उठनेवाली आनन्द की उर्मियों का अनुभव किया है वही कह सकता है कि उनके व्यक्तित्व का कैसा विलक्षण प्रभाव था। जो कोई उनके निकट सम्पर्कमें आया वह सदैव के लिए उनका ही होकर रह गया। अतएव उनके व्यक्तित्व के प्रभावसे, वाणी के आकर्षणसे और हितोपकारी मार्गदर्शनसे प्रभावित होकर अनेक विद्यार्थी परमेश्वर प्राप्तिके मार्ग पर साधक बनकर चलने लगे। एक चुम्बक जैसे लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है वैसे वे लोगोंको अपनी ओर खींचते तथा पारस जैसे लोह-खण्ड को स्वर्णमें रुपान्तरित कर देता है वैसे ही वे ऐन्द्रिय सुखमें लिप्त व्यक्तियोंको नैतिक और पारमार्थिक पथ की ओर प्रवृत्त कर, उनकी प्रगतिमें संबल बन, उनके उद्धार का मार्ग उन्मुक्त कर देते थे। उनके ऐसे ही अथक प्रयत्नों का यह परिणाम हुआ कि राजस्थानमें, विशेषकर जोधपुरमें, एक ऐसे प्रबुद्ध समाज की स्थापना हुई जिसके सदस्य आत्मज्ञान प्राप्त्यर्थ उनके घरमें एकत्रित होते और वे न केवल आत्म-चर्चा ही करते बल्कि उस आदर्श की प्राप्ति के लिए डॉ० साहेब के मार्गदर्शनमें साधन, नेम, भजन आदि भी करते थे।

संसारमें रह कर भी परमार्थी कैसे बनाजा सकता है, प्रवृत्ति मार्गमें व्यस्त दिखते हुए भी निवृत्ति पथ का अनुसरण कैसे किया जा सकता है, अद्वैत स्थिति प्राप्त हो जाने पर भी द्वैतमयी भक्ति किस प्रकार संभव है, इनका उत्तर जानना चाहे तो डॉ० साहेब के जीवनक्रम को समझना चाहिए। उनकी दैनिक-चर्या, उसमें किये गये विभिन्न कार्यक्रम और नानाविध कार्यकलापमें एक समग्र दृष्टि होती थी और उसका आधार सदैव ही पारमार्थिक रहता था। उनका छोटे से छोटा काम भी मानो परमेश्वर की इच्छा और आज्ञासे होता था। वे स्वयं अधिक से अधिक समय नेम, भजन आदि पर लगाते थे

और दूसरेभी यही करें इसका प्रयत्न करते थे। प्राध्यापकके रूपमें उन्होंने न केवल अपनी विद्वता की छाप ही अपने छात्रों पर छोड़ी बलकि उनमें परमार्थ के लिए जिज्ञासा भी उत्पन्न की। उन्होंने परमार्थके नाम पर प्रचलित भ्रामक लोकमान्यताएँ, अन्धविश्वास, और रूढ़िगत परम्परासे चले आने वाले निरर्थक विश्वासोंकी निस्सारता को स्पष्ट कर, सच्चे सुख का मार्ग दिखाने का सफल प्रयत्न किया। अनेक जिज्ञासु व्यक्तियों को निंबाल भेजा और उनमेंसे कुछ का तो खर्चा भी स्वयं अपने पाससे दिया और इस प्रकार उन्हें परमेश्वर-प्राप्ति के मार्ग पर लगाया। वे ऐसे साधकोंके व्यवहारिक जीवन की कठिनाइयों, विपत्तियों और दुःखोंमें भागीदार बनते और उनके लिए प्रपंच व परमार्थ दोनोंमें सफलता का मार्ग प्रशस्त करते थे। स्वयं उनका जीवन एक आदर्श गृहस्थ का जीवन था। परिमितता और मध्यम मार्ग उनके जीवन-क्रम की विशेषताएँ थी। और यही शिक्षण उन्होंने अपने अनुयायियोंको भी दिया जिससे परमार्थ के साथ साथ उनका प्रापंचिक जीवन भी सुखी व समृद्ध हुआ। वे भजन, पोथी-वाचन निरूपणके द्वारा सच्चे परमार्थका रहस्य बौद्धिकरूपसे स्पष्ट करते और सतत नामस्मरण का महत्व बताते तथा उनके साथ नेममें बैठकर उनके साधन को सार्थकता प्रदान करते। इसके अतिरिक्त प्रति रविवारको परमार्थिक गोष्टी व अन्यदिवसोंको आध्यात्मिक कार्यशाला (Spiritual Workshop) द्वारा नवीन जिज्ञासुओ को आर्कषित करते व पुराने साधको को परमार्थ-पथ पर अग्रसर होनेमें सहायता करते।

जैसा कि ऊपर क़हा जा चुका है परिमितता उनके जीवनके प्रत्येक कार्यमें परिलक्षित होती थी। आहार-विहार, कार्य विश्राम, भोजन-निद्रा सभी कार्योंमें एक सीमा रेखा स्पष्ट दिखाई देती थी। ध्यान और कर्म, प्रपंच और परमार्थ इनमेंभी वे मध्यम मार्ग का अनुसरण करते थे। उनके अनुसार न तो पूर्णरुपसे प्रापंचिक जीवनमें ही व्यस्त रहना योग्य है और न ही उसकी सर्वथा उपेक्षा करना। परमार्थ और प्रपंच साथ साथ करना ही उनकी दृष्टिमें श्रेयस्कर था। नियत समय पर नाम-स्मरण करना और साथ ही व्यवहारिक कर्तव्यो के पालनमें दक्ष रहना यह उन्होने स्वयं अपने आचरण से स्पष्ट किया और उससे अन्य साधक भी प्रेरीत होने लगे।

अनवरत कठोर परिश्रम करने व जीवन की कठिनाइयोसे संघर्ष करते रहनेके कारण उनमें जहां एक ओर धैर्य, साहस और आत्म-सम्मान की भावना जागृत हुई थी वही दूसरी और निर्धन, अज्ञानी व असहाय लोगो के प्रति उनके हृयमें अपार करुणा

का स्रोत बहता था। धनी व सम्पन्न, पद व प्रतिष्ठा के मदमें चूर प्रभावशाली व्यक्तियो के साथ सामाजिक शिष्टता का पालन करते हुए भी उनके दांभिक प्रदर्शन व अहंकार पूर्ण उक्तियोंसे उन्हें एक प्रकार की वितृष्णा थी और वे कभीभी उनके सम्पर्कमें अपने आपको औपचारिकता से उपर नहीं उठा पाते थे। इसके विपरीत निर्धन परन्तु विनम्र श्रद्धालु भक्तोंके प्रति उनके मनमें अपार सद्‌भावना और प्रेम था। उनके हृदय की कोमलता का सुखद स्पर्श ऐसे ही भक्तोंके लिए सुरक्षित रहता था, अन्य लोगोंको तो उनकी शिष्टता व बौद्धिक कुशाग्रता का परिचय ही मिलता था।

परमार्थ विषयक उनकी शिक्षा अत्यन्त सरल व स्पष्ट थी जिसको वे प्रायः 'गुरुसे नाम-मंत्र लेकर उसको रटना और क्या होता है देखना चाहिए' ऐसे प्रकट करते थे। सर्व संतोंकी भांति मानव-जीवन का परम ध्येय आत्म साक्षात्कार प्राप्त करके आत्मरूप हो जाना है' ऐसा मानते थे। मैत्री उपनिषद् के अनुसार –
'अस्मात् शरीरात् समुत्थाय पर ज्योतिरूपसंपद्य स्वेन रूपेण अभिनिष्पद्यतेस आत्मा' (११-१-३) अर्थात् 'शरीरान्तर्गत प्रकाश बाहर आकर परम ज्योति से एकरूप होकर जब साधकके सामने स्वरूप लेकर प्रकट होता है तो उसीका नाम आत्मा है। (Translation from 'A Rosary from the Upanisads' by Dr. V. H. Date) वे इस औपनषदिय वचन को इतने सुन्दर ढंगसे बोलते कि बार बार उनके मुखसे उसे सुनने की इच्छा जागृत होती और फिर सुगमता की दृष्टिसे वे बताते थे कि बिनादर्पणकी सहायतासे 'अपन को आपन' देखना ही आत्म साक्षात्कार है। यही निजरूप है, यही स्वरूप है। इसका साक्षात्कार ही मानव-जीवन का लक्ष्य है। इस आत्मा को विश्वमें सर्वत्र व्याप्त देखना व सर्व विश्व को इस आत्मामें देखना ही ब्रह्मप्राप्ति, मोक्ष या सायुज्य मुक्ति है जिसकी प्राप्ति के पश्चात कुछ भी प्राप्तव्य रहता नहीं, जीवको अपनी परमगति प्राप्त हो जाती है। यह परम विश्रान्ति है, यही अखण्ड शान्ति है, इससे परे या उपर और कुछ नहीं है। जो साधक इस स्थिति को प्राप्तकर लेता है उसीका जीवन सार्थक है, उसेही देहधारी ब्रह्म कहा जा सकता है।

इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए गुरु की शरणमें जाकर उनसे अनुग्रह प्राप्त करना अर्थात् नाम-मंत्र लेकर उसका नियमित रुपसे, नियत समय पर, सुनिश्चित अवधि तक प्रेम आदर व भक्तिसे स्मरण करना यही एकमात्र साधन है। डॉक्टर साहब नियमित रुपसे कहते थे कि जिसने ईश्वर-दर्शन किया है और जो दूसरोंको दर्शन करा सकता

है' उसे ही गुरुपदका गौरव प्राप्त है। डॉ० साहब से यदि कोई पूछता कि क्या परमार्थ सिद्धि गुरुके बिना संभद ही नहीं है तो वे अत्यन्त सहज भावसे उत्तर देते कि– 'मेरे गुरु है इसलिए गुरुके बिना परमार्थ सिद्धि हो सकती है या नहीं मैं नहीं कह सकता'। परन्तु यह केवल व्यवहारिक दृष्टिसे अनावश्यक प्रश्त पूछने वालों को निरुत्तर करने का एक सौजन्यपूर्ण ढंग था। वास्तवमें उनका दृढ विश्वास था कि गुरु के बिना 'ज्ञान' की प्राप्ति संभव ही नहीं है और हम तो शायद यह भी कह सकते हैं कि गुरु होने पर ही ज्ञानप्राप्ति हो जावे तो महत्‌भाग्य मानना चाहिए। वास्तविकता तो यह हैं कि 'गुरुचे वचन प्रतिपालन हे मुख्य शिष्याचे लक्षण' अर्थात् गुरु की आज्ञा का पालन और गुरुसेवा ही ईश्वर प्राप्ति का एक सुगम साधन है। रामदास महाराजने कहा था 'सेवे करितां झाळे ज्ञान' और डॉक्टर साहब कहते थे कि– 'मुझे जो थोडा बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है वो मेरे गुरु की जो सेवा मुझसे बनपड़ी थी उसके कारण ही। वे नमस्कार परिप्रश्न और सेवा इन तीनोंमें सेवा को ही एक ऐसा गुण मानते थे जिससे परमार्थिक प्रगति निर्विघ्न व सुगम बनती है। उससे विनीत भाव, नम्रता शरणागति और ईश्वराश्रित होने के भाव दृढ़ होते हैं। सेवा द्वारा गुरु को संतोष प्रदान कर उनकी प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है और गुरुकी प्रसन्नता ही परमार्थ-सिद्धिकी कुन्जी है ऐसा डॉक्टर साहब बारबार कहते थे। नमस्कारमें पाखण्ड और दिखावा हो सकता है, प्रश्न अनावश्यक या दुष्ट बुद्धिसे पूछे जा सक़ते हैं, परन्तु सेवा इन दोषोंसे मुक्त है। गुरु द्वारा प्रदत्त नाम का अधिकाधिक स्मरण करना, उनकी आज्ञाका पालन करना, उनके वचनोंको वेदवाक्य सम प्रामाणिक मानना तथा मनसा, वाचा, कर्मणा उनको सन्तुष्ट करना इसीका ही नाम सेवा है। जो इस प्रकार सेवा करके धैर्यपूर्वक उनके कृपावलोकनकी प्रतीक्षा करता है उसके लिए परमार्थ-सिद्धि क़ठिन है ही नहीं।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे नेम के महत्वको कम करते थे। जो स्वयं अहोरात्र नाम-स्मरण का आनन्द लेते थे वे ऐसा कर भी कैसे सकते थे। अस्तु, नेम, भजन, पोथी-वाचन को आवश्यक जानते हुए भी वे सेवा और प्रार्थनाका महत्व प्रतिपादित करते थे। वे कहते थे कि सेवा की तरह प्रार्थना भी कामधेनु है जो सर्वप्रकार से इच्छित फल प्रदान कर परमार्थमें सफलता प्रदान करती है। इससे साधमें निरभिमानता व ईश-कृपा पर निर्भर रहने की भावना उदय होकर कालान्तर में दृढ़ होती है; और यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि ये गुण पारमार्थिक प्रगति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण

है। सेवा और प्रार्थनाके अभावमें नेम से भी अहंकार वृति जागृत होती है कि 'मैं बड़ा साधक हूं, नौ घंटे या दस घंटे साधन करताहूं' और यह अहंकार परमार्थ के मार्गमें सर्वाधिक बाधक है। भक्तिभावसे भजन करना अत्यन्त उपयोगी है, परन्तु वहां भी संगीतके माधुर्यका, लय-ताल आदि का आकर्षण प्रधान होकर ईश्वर-प्रेम को गौण या नगण्य बना सकता है। इसी प्रकार पोथी-वाचन बिना अर्थ बिना अर्थ समझे किया जावे तो निरर्थक होता है और निरूपण में वाक्-चातुर्य और वक्तृत्व-शक्ति के कारण अहंकार उत्पन्न हो सकता है। प्रार्थना इन दोषोंके निराकरण के लिए भी की जा सकती है और तब नेम आदि दृढ़तापूर्वक अधिकसे अधिक करने से भक्ति को संबल व दृढ़ता प्राप्त होती है। प्रार्थना तो हृदय की तरलावस्था है जो जीवनरसदायिनी सिद्ध होती है अतः इसका आश्रय नहीं छोड़ना चाहिए। यहां तक कि सांसारिक वस्तुओंके लिए भी जिस किसीके सामने गिड़गिड़ाने से तो देव व गुरु से ही मांगना उचित है। वे कहते थे 'मांगना हो तो देव से मांगो' परन्तु उत्तम प्रार्थना ईश्वर-दर्शन के लिए ही होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉक्टर साहबने स्वयं अपनी परमार्थसिद्धि के लिए व लोक-कल्याण की दृष्टिसे अहोरात्र कार्य किया। अपने ग्रन्थों द्वारा अपने प्रवचनों द्वारा, विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपने सारगर्भित भाषणों द्वारा और स्वयं अपने आचरण द्वारा लोगोंको नैतिक और परमार्थिक दृष्टि प्रदान की और भूले-भटके, भ्रान्त लोगोंको परमार्थ का सुखद मार्ग दिखाया। उनके पारमार्थिक हित के साथ ही लौकिक हित का और आध्यात्मिक दक्षता के साथ व्यावहारिक कुशलता का भी समुचित विकास करके उनके इहलोक व परलोक दोनों को सुधारने का श्रेष्ठ कार्य सफलतापूर्वक सम्पादन किया। स्वयं ब्रह्मैक्य स्थिति प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक किया तथा अपने अनुयायियों और शिष्यों को ऐसा ही करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। जैसा कि वे प्रायः कहते थे उन्होंने वह काम किया जिससे उनके पीछे देव की, उनके गुरु की व स्वयं उनकी कीर्ति अक्षुण्य हो गई।

गुरु सेवक
जगन्नाथ व्यास

Footnote :

निंबाळ रामभाऊ महाराज की तपोभूमि है। डॉक्टर साहबके परमार्थिक और व्यवहरिक जीवन को जो सही दिश प्राप्त हुई वह रामभाऊ महाराज का

ही प्रसाद था। स्वयं डॉ० साहिब ने रामभाऊ महाराज की श्रेष्ठताके विषयमें लिखा है- श्री गुरुदेव रामभाऊ रानडे के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आज तक भारतीयोंकी आध्यात्मिक कीर्ति बढाने के कारणीभूत जो महान याज्ञवल्क्यादि ऋषि, श्री मच्छंकराचार्यादि तत्वज्ञानी भाष्यकार और ज्ञानेश्वरादि संत हो गये है उनके समान उनका स्थान है।'

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

श्रीमत् रामदासकृत दासबोध

दशक प्रथम स्तवननाम

॥ श्रीराम ॥

श्रोता पूछे कौन ग्रंथ । क्या है यहां कथित । श्रवण करनेसे क्या प्राप्त । कहिए स्वामी ।१। ग्रंथका नाम दासबोध । गुरुशिष्योंका संवाद । कहा है यहां विशद । भक्तिमार्ग ।२। नवविधाभक्ति और ज्ञान । वैराग्यका भी लक्षण । बहुधा अध्यात्मनिरूपण । है कथित यहां ।३। भक्तियोगसे ही देव । प्राप्त करेगा मानव । ऐसा यहांका अभिप्राय । है निश्चयसे ।४। है कैसी मुख्य भक्ति । शुद्धजनकी कैसे प्राप्ति । किंलक्षणा आत्मस्थिति । कथित है सर्व ।५। शुद्ध उपदेश तो कैसा । सायुज्यमुक्तिका भरोसा । मोक्षप्राप्तिकी जो दशा । निश्चयसे है कथित ।६। शुद्ध स्वरूपका निश्चय । विदेहस्थितीका निश्चय । अलप्त-स्थितीका निश्चय । है कथित इसीमें ।७। मुख्य देव तो कैसा । मुख्य भक्त तो कैसा । जीव-शिवभेद तो कैसा । कथित है इसीमें ।८। मुख्य ब्रह्मका निरूपण । तत्संबंधमें मतांतर । स्वयं हूं मै कौन । ये विचार हैं सर्व ।९। मुख्य उपासनालक्षण । नाना कवित्व लक्षण । नाना चातुर्य लक्षण । कथित है ग्रंथमें ।१०। माया आई किस प्रकार । पंच भूतोंका विस्तार । तत्र कर्ताका विचार । किया है इसीमें ।११। नाना शंका नाना संशय । नाना प्रश्नोंका समाधान । श्रुत्यनुसार साधार । किया है इसीमें ।१२-१४। अनुमोदनार्थ नाना ग्रंथ । उपनिषद् और वेदान्त । शास्त्रानुसार स्वानुभव । प्राप्त होवे इसीसे ।१५-१६। मत्सरग्रस्त कोई नर । कहे मिथ्या है ग्रंथ । तो समस्त ग्रंथ निःसार । माने वह तत्क्षण ।१७। शिवगीता रामगीता । गुरुगीता गर्भगीता । उत्तरगीता अवधूतगीता । वेद और वेदांत ।१८। भगवद्गीता ब्रह्मगीता । हंसगीता पांडवगीता । गणेशगीता यमगीता । उपनिषद भागवत ।१९। ऐसे ऐसे बहुत ग्रंथ । बिना देखे कहे दोषयुक्त । वही दुरभिमानी एक । मत्सर करे ।२०-२२। मत्सरका मूल अहंकार । फल उसका द्वेषभाव । क्रोधविकार तदनंतर । उठे प्रबलतासे ।२३। जो है ऐसा अंतरदुष्ट । काम-

अहंत-क्रोधयुक्त। वो कैसे पावे ज्ञानामृत। राहु जैसा।२४-२५। तस्मात् अभिमान-त्याग। यही एक उत्तम मार्ग। तत्काल मिले श्रवणफल। सत्क्रियारूप।२६-२८। सुगम है परमार्थसाधन। संशयरहित ब्रह्मज्ञान। सायुज्यमुक्ति वरदान। मिले अकस्मात।२९। रहे ना अज्ञान दुःखभ्रान्ति। होते ही शीघ्र ज्ञानप्राप्ति। ऐसा है इस ग्रंथकी। फलश्रुती।३०। योगियोंका परमभाग्य। आवे स्वयं ही वैराग्य। विवेक और चातुर्य। साथ ही प्रकटे।३१। अवगुणी होवे सुलक्षणी। चतुर तार्किक विचक्षणी। आलसी बने उद्योगी। पापी पुण्यवान।३२-३३। बद्ध प्राणी मुमुक्ष। मूर्ख होवे अति दक्षु। स्तवन करने लगे निंदकु। भक्तिमार्गका।३४। नाना दोषयुक्त पतित। श्रवणमात्रसे होवे पुनीत। संसार-धोखा उद्वेग। हावे ना अधोगति।३५-३६। लाभे मनको विश्रांति। समाधानयुक्त उत्तमगति। यदि होय भावार्थी। अन्यथा नाही।३७-३८।

इति श्री दासबोध गुरुशिष्यसंवादे ग्रंथारंभलक्षणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

ॐ नमो गणनायक। सर्व सिद्धि फलदायक। अज्ञानभ्रांतिछेदक। बोधरूप।१। करो प्रवेश मम हृदय। सर्वकाल वहीं वास। मुझ वाक्शून्यको वाचाल। करो कृपा-कटाक्षसे।२। कृपासामर्थ्यसे केवल। होवे दूर भ्रांतिपटल। और विश्वभक्षक काल। दास्यत्व करे।३। हो अकस्मात् तव कृपा। तब विघ्न कांपे थर्थरा। अपास्त होत दशदिशा। नाम तव लेते ही।४। इसीलिए तूं विघ्नहर। हम अनाथोंका मातृघर। तुमको वंदन करते अमर। हरिहरादिक।५। मंगलनिधीको वंदन। कार्यसिद्धिका लक्षण। आघात उपाधि प्रतिबंध। बाधा न करें।६। करते ही जिसका ध्यान। होवे पूर्ण समाधान। बैठे तब नेत्रमें मन। विकल होय सर्वांग।७। महानिधि रूप सगुण। मनोज्ञ महालावण्य। करे नृत्य जब गजानन। देव सर्व तटस्थ।८। सर्वकाल मदोन्मत। सदा सानंद डोलत। हर्षनिर्भरसूर्य उदित। सुप्रसन्न वदन।९। भव्यरूप वक्रतुण्ड। भीममूर्ती महाप्रचण्ड। चर्चित विस्तीर्ण ललाट। सिंदूर रंग।१०। नाना सुगंध परिमल। गंडस्थलसे गले मदरस। उससे मोहित भ्रमरकुल। करे गुंजार।११। मोड़े सरल सूंड। जिससे शोभे भव्य ललाट। सदा तिष्ण आर्द्र अधर। स्रवे सत्वरस।१२। चतुर्दशाविद्या देव। नयन सूक्ष्म हिलावे। गंडस्थलपर आघात करे। सूपकर्णोंसे।१३। रत्नजड़ित मुकुटतेज। नाना सुरंग प्रकाशत। कुण्डल नीलमणीयुक्त। विराजत अतिसुंदर।१४। दंत शुभ्र सुदृढ। रत्नखचित हेममंडित। आधार

सुवर्णपट्टक। शोभे बहु सुंदर ।१५। डोलायमान नाभी विस्तृत। कटिवेष्टित नागबंध। क्षुद्र घंटिका मंदमंद। करती झणत्कार ।१६। चतुर्भुज लंबोदर। है वसन पीतांबर। नाभी-कमलस्थ फणीवर। फूत्कार करे ।१७। कभी वह बैठे चक्राकार। उठे कभी नाभी ऊपर देखे वहांसे चारो ओर। कुतुहलसे टकमक ।१८। कुसुममाला नाना प्रकार। अलंकारित गजानन। नाभीस्थ व्यालपर्यन्त। गलेमें शोभित ।१९। हाथमें धरे परशु एक। दूजेमें कमल शोभत। तीजा धरे अंकुश तीष्ण। प्रिय मोदक चौथेमें ।२०। कला कौशल्य नटनाटच्य नाना छंद करे नृत्य। ताल मृदंगादि साहित्य। उठे हुंकार शब्द ।२१। नाहीं स्थिर एक क्षण चाफल्यमें अग्रगण। सुन्दर मूर्ति सूलक्षण। लावण्यखान ।२२। बजते रुणझुण नूपुर। घुंघरू का गजर। दर्शन अति मनोहर। पादयुग्म ।२३। साहित्यविशारदा अष्टनायिका। होत जिसको अतिसुलभा। उस गणेश की अंबरप्रभा। शोभे ईश्वरसभामें ।२४। ऐसा सर्वांग-सुन्दर। सकल विद्याका आगर। उस गणेशको नमस्कार। साष्टांगभावसे ।२५। भ्रांत भी करे गणेशका ध्यान। होवे मतिप्रकाशकारण। गुणानुवाद करे श्रवण। तब प्रसन्न सरस्वती ।२६। जिस ब्रह्मादिक करते वंदन। मानव न करे तो पूछे कौन। इसीलिए बुद्धिहीनको उचित। है गणेशध्यान ।२७। जो कोई मूर्ख अवलक्षण। या जो हीन से भी हीन। वही होवे दक्ष प्रविण। सर्वकाल सर्वत्र ।२८। ऐसे गणेश परम समर्थ। पूर्ण करे मनोरथ। भजन चंडीविनायक। देवे स्वानुभव ।२९। ऐसे गणेश मंगलमूर्ति। स्तवन करता हूं यथामति। वांछा धरके परमार्थकी। चित्तमें मेरे ।३०।

इति श्री दासबोध गुरुशिष्यसंवादे गणेशस्तवननाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

अथ नमो वेदमाता। श्री शारदा ब्रह्मसुता। शब्दमूल वाग्देवता। महामाया ।१। जहांसे उठे शब्दांकुर। जिससे वैखरी अपार। जो शब्दोंका अभ्यंतर। प्रकट करे ।२। जो योगियोंकी समाधि। धैर्यवानोंकी निश्चयबुद्धि। विद्या-अविद्यारूप उपाधि। तोड़ डाले ।३। पुरुषोत्तमकी जो भार्या। जो अतिनिकट अवस्था तुर्या। जिसकी प्राप्तिके लिए सदा। तत्पर साधु ।४। या जो महन्तोंकी शान्ति। ईश्वरकी निजशक्ति। ज्ञानियोंकी। जो विरक्ति। नैराश्यरूपा ।५। करे अनन्तब्रह्माण्डघटना। और लीलासे ही विघटना। आदिपुरुषमें लीन होना। स्वभाव है जिसका ।६। है इन्द्रियगोचर प्रत्यक्ष। किन्तु विचार करे तो अलक्ष्य। अतः न समझे जिसका पार। ब्रह्मादिक अपि ।७। संसारनाटक-

अंतर्कला। ज्ञानस्फूर्ति निर्मला। जिससे मिले स्वानंद उज्वला। विज्ञानशक्ति ।८। जो लावण्यरुपकी शोभा। परब्रह्मसूर्यकी प्रभा। जो गुरुदत्तशब्दसे सर्वथा। संसार छेदे ।९। जो मोक्षश्रिया महामंगला। ब्रह्मरंध्रस्था जीवनकला। सत्त्वगुणछायाशीतला। लावण्यखान ।१०। अव्यक्त पुरुषकी जो इचछाशक्ति। विस्ताररूपा प्रकट व्यक्ति। या जो कलिकालनियंती। सद्‌गुरुकृपा ।११। परमार्थमार्गका विचार। बतावे जो सारासार। भवसिंधुपैलपार। तारे शब्दबलसे जो ।१२। ऐसी माया शारदा। अकेली किन्तु बहुवेषा। चतुर्विधवाचाप्रकारा। संचरे अंदर ।१३-१४। हरिहर ब्रह्मादिक। सृष्टिरचना तीनों लोक। जिससे होत प्रादुर्भूत। वो शारदा कर्त्रीरूपा ।१५। परमार्थका जो मूल। या जो सद्‌विद्या केवल। निवांत निर्मल निश्चल। स्वरूपस्थिति ।१६। जो योगियोंका ध्यान। साधकोंका जो चिंतन। रहे सिद्धोंके अंतःकरण। समाधिरूपा ।१७। जो निर्गुणब्रह्मकी पहचान। स्वानुभवका जो चिन्ह। व्यापकरूपा संपूर्ण। सर्वघट ।१८। श्रुति शास्त्र वेद पुराण। अखंड करते जिसका स्तवन। नाना रूपभेदसे नमन। करते जिसको प्राणिमात्र ।१९। जो वेदशास्त्रोंकी महिमा। निरुपम ब्रह्मकी उपमा। जिसके सापेक्षेसे आत्मा। परमात्मा कहलावे ।२०। नाना विद्या कला सिद्धी। नाना निश्चयार्था बुद्धि। ज्ञानस्वरुपा परमशुद्धि। वस्तु सूक्ष्म ।२१। जो हरिभजकोंकी भक्ति। अंतरनिष्ठोंकी अंतरस्थिति। जीवनमुक्तोंकी भी मुक्ति। सायोज्जता ।२२। जो अनंत माया वैष्णवी। अगम्य नाटक लीलाकारी। महापुरुषोंको मोहकारी। ज्ञानाभिमानसे ।२३। है सर्व जो दृश्यजात। होवे शब्दसे जो ज्ञात। जो कुछ मनको भासत। हैं उसीके रूप ।२४। भक्तिभाव स्तवनभजन। माया बिना नाहीं स्थान। इस वचन का अभिप्राय। जाने कोई स्वानुभवसे ।२५। इसीलिए श्रेष्ठसे भी श्रेष्ठ। जो देवोंमें भी मुख्य देव। उसे मेरा नमस्कार। हूं जो मैं तदंश ।२६।

इति श्री दासबोध गुरुशिष्यसंवादे शारदास्तवननाम समास तिसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

अब करूं सद्‌गुरुवर्णन। किन्तु मैं हूं अज्ञान। मुझे क्या आवे यह ज्ञान। मायास्पर्शातीत जो ।१। न समझे न समझे नेती नेती। ऐसे बोलती श्रुति। वहां मुझ मूर्खकी मति- । प्रवेश कैसा ।२। मैं न समझूं यह विचार। दूरसेही मेरा नमस्कार। गुरुदेव भो पैलपार। करावो मुझे ।३। स्तवनकी दुष्प्राप्य आशा। टूट गया मायाका भरोसा। आप ही जानो आप कैसा। सद्‌गुरु स्वामी ।४। मायाबलसे करूं स्तवन। ऐसे वांछित मेरा

मन। तो हो गई माया लज्जायमान। क्या करूं मैं देव ।५। न मिले मुख्य परमात्मा। पूजन करते लोग प्रतिमा। वैसे ही मायायोग से महिमा। वर्णू मैं सद्‌गुरु ।६। स्वभावानुसार देव चिंतन। करते लोग मन में ध्यान। वैसे ही सद्‌गुरु का स्तवन। करता हूं मैं ।७। जय जय सद्‌गुरुराज। विश्वंभर विश्वबीज। परमपुरुष मोक्षध्वज। दीनबन्धो ।८। गुरो तब अभयकर। दूर करे माया अनावर। जैसे सूर्यप्रकाशसे अंधकार। नाश होवे ।९। तथापि उपमा नाहीं उचित। अस्त होते ही आदित्य। अंधकार भरे ब्रह्माण्ड। सूर्योदयपर्यंत ।१०। तैसा नाहीं स्वामी समर्थ। करे वो जन्म मृत्यु व्यर्थ। तथा समूल अज्ञान। नाशे सर्वथैव ।११। क्या सुवर्ण होवे पुनः लोह। क्या गंगा सरित्‌प्रवाह। वैसा ही सद्‌गुरुदास। पड़े नाहीं संशयमें ।१२-१३। गंगाके साथ मिलनपूर्व। रहे सरिता प्रवाह। किन्तु स्वामीसंगसे शिष्यवर। बने स्वामी ।१४। पारस न बनावे पारस। ना लोह सुवर्ण से सुवर्ण। किन्तु गुरुसम करे उपदेश। सत्‌गुरुका अंकित ।१५। पारस या सुवर्ण की उपमा। या सागरमेरूकी उपमा। देव तो भी सद्‌गुरुमहिमा। है अगम्य अगाध ।१६। सागर है अत्यंत क्षार। क्षीरसागर भी नाशवन्त। मेरु जड़ पाषाण कठोर। सद्‌गुरु कोमल ।१७-१८। आकाश व्यापक अनंत। उसी प्रकार सद्‌गुरु होत। शब्दगुणसे सगुण आकाश। गुरुपद है निर्गुण ।१९। पृथ्वी धैर्यमें अतिश्रेष्ठ। किन्तु भंग हो जाय कल्पांत। गुरु सर्वदा अविचलित। उपमा न योग्य पृथ्वीकी ।२०। उपमा सूरजकी नाहीं उचित। है तत्प्रकाश मर्यादित। किंतु सद्‌गुरुज्ञानप्रकाश। है सर्वथा अमर्याद ।२१। फणीवर तो भारवाहक। जल हो जाय शुष्क। परन्तु स्वतन्त्र और निश्चल। है गुरुस्वरप ।२२-२३। अमृत पीते पीते देव। मृत्यपंथ जाते सर्व। सद्‌गुरु कृपामृत केवल। अमर करे यथार्थ ।२४। कल्पित फल दे कल्पवृक्ष। कल्पनातीत तो ज्ञानविचार। तस्मात् कहना न उचित। सद्‌गुरुको कल्पतरु ।२५। निश्चित कामनारहित। है एक सद्‌गुरुपद। न वो चिंतामणीसम। या न वो कामधेनु ।२६। मोक्षलक्ष्मी जिसके द्वारपर। वो क्या न लक्ष्मीवन्त। किन्तु नाहीं वो नाशवन्त। धनलक्ष्मीसमान ।२७। स्वर्गलोक इंद्रसंपत्ति। कालान्तरमें नाश होती। किन्तु सद्‌गुरुकृपाकी प्राप्ति। रहे अचल ।२८। हरिहर ब्रह्मादिक। नाश होते सकल लोक। किन्तु अविनाश एक। सद्‌गुरुपद ।२९। पंचभूतोंका विस्तार। सृष्टी नाशवन्त सर्व। इसीलिए है निरूपम। सद्‌गुरुपद ।३०। तस्मात् सद्‌गुरु वर्णनातीत। यही इनका वर्णन। अंतर्निष्ठ योगीयोंका चिन्ह। जाने अंतर्निष्ठ ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सद्‌गुरुस्तवननाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

अब नमो सन्त जन। जो परमार्थके अधिष्ठान। जिनसे हो गुह्यज्ञान। जनमें प्रकट ।१। जो वस्तू परम दुर्लभ। हो जिसका अलभ्य लाभ। वही हो जाय स्वयंभ। सत्संगसे नर ।२। है वस्तु प्रकट सत्य। किन्तु देखे न कोई प्रत्यक्ष। करे नाना साधन अभ्यास। तो भी आवे न हाथ ।३। भ्रमित हुवे परीक्षवन्त। चक्षुवन्त भी हुवे अंध। देखते देखते न देखत। निजवस्तुको ।४। नाही दीपका प्रकाश। या न किसीका अन्य। नाहीं नेत्रांजन ही विशेष। वस्तुदर्शनसमर्थ ।५। षोडशकलापूर्ण शशी। तीव्र आदित्य कलाराशी। वस्तुदर्शनार्थ समर्थ नाहीं। कोई द्दयजात ।६। अत्यंत सूक्ष्म ऊर्णतंतु। या तो अणुसम धूलबिन्दु। या हो बालाग्र परंतु। सूर्यप्रकाशसे दिख जाय ।७। तथापि वो सूर्यप्रकाश। वस्तु दर्शनमें असमर्थ। वही वस्तु साधकवश। होवे संतसंगसे ।८। निजवस्तुका करे तर्क। तो तर्क हुवा मंद। आक्षेपोंका जहां अंत। व्यर्थ वहां प्रयत्न ।९। पंगु हवा विवेक। निकले नाही शब्द एक। मनके संकल्दविकल्प। हुवे जहां निष्फल ।१०। वाचाल बहु विशेष। सहस्रमुखी जो शेष। थक गमा वही निशेष। न करे वर्णन वस्तुका ।११। वेदप्रकाशित है सर्व। न कुछ वेदविरहित। ऐसा वेद सर्वसमर्थ। धरे मौन ।१२। वही वस्तु संतसंगसे। आवे समझ स्वानुभवसे। संतमहिमा कहे शब्दसे। ऐसा कौन ।१३। अतर्क्य कलाकर्त्री माया। उसने भी नाहीं जाना। किंतु अनंत जो मायातीत। समझे संतकृपासे ।१४। है वस्तु वर्णनातीत। वही है संतस्वरूप। इसीलिए शब्दोंका कार्य। यहां है ही नाहीं ।१५। संत आनंदका स्थल। संत सुख ही केवल। नाना संतोषोंका मूल। है ऐसा संतलक्षण ।१६। सन्त विश्रांतीकी विश्रांती। यातृप्तिकी निजतृप्ति। या भक्तिकी फलश्रुति। है सत्य जान लो ।१७। संत धर्मका धर्मक्षेत्र। स्वरूपस्थितीका सत्पात्र। किं पुनः पुण्यकर्मोंकी। पुण्यभूमि पवित्र ।१८। संत साक्षात् समाधिमंदिर। या विवेकरूप भंडार। या कहो पितृमातृगृह। सयोज्यमुक्तीका ।१९। करे सत्यवस्तुका निश्चय। जन्म-साफल्यरूपजय। सिद्धस्वरूपप्राप्तिका समय। करे वो संत ।२०। मोक्षश्रीसे अलंकृत। है सन्त बहु श्रीमंत। किन्तु नृपति असंख्यात। हैं जानो दरीद्री ।२१। हैं लोग समर्थ उदार। हैं वे अत्यंत दानशूर। किन्तु उनसे यह ज्ञानविचार। मिलना है अशक्य ।२२। चक्रवर्ती महाराजे। हैं या जो आगे होंगे। वे भी नाहीं देंगे। सायोज्यमुक्ति ।२३। त्रिलोकमें जो देना अशक्य। संत उसीका करते दान। उनकी अगाध महिमा वर्णन। करे कौन ।२४। है जो त्रिलोकविलक्षण। वेदश्रुतीको अनाकलन। वही परब्रह्मज्ञान। करावे संतकृपा ।२५।

ऐसी है संतमहिमा । न चले यहां कोई उपमा । संतकृपासेही परमात्मा । होवे प्रगट ॥३६॥

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे संतस्तवननाम समास पांचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

वंदन करता हूं श्रोताजन । आप हो भक्त ज्ञानी सज्जन । विरक्त योगी गुणसंपन्न । सत्यवादी ।१। कोई सत्वगुणसागर । कोई सद्बुद्धि आगर । कोई श्रोता रत्नाकर । नाना शब्दरूप ।२। कोई अर्थामृतका भोक्ता । वक्ताओंमें श्रेष्ठ वक्ता । नाना संशय छेदता । निश्चयसे ।३। धारणा जिनकी अपार । मानो ईश्वर-अवतार । या प्रत्यक्ष सुरवर । बैठे हैं समस्त ।४। भासे ऋषीश्वर मंडल । शांतस्वरूप सत्वालय । जिनसे यह सभा अखिल । शोभायमान ।५। हृदयस्थ है वेदगर्भ । मुखमें सरस्वतीविलास । बोलते साहित्य पंडित । देवगुरुसमान ।६। पवित्र जैसा वैश्वानर । स्फूर्तिरूप किरणोंका दिनकर । होवे न ब्रह्माण्ड दृष्टिगोचर । विज्ञानमें निमग्न ।७। जो अखण्ड सावधान । जिनको त्रिकालका ज्ञान । सर्वकाल निरभिमान । आत्मज्ञानी ।८। होगा अज्ञात कुछ भी कहीं । ऐसा जिनको है नाहीं । दृश्यजात पदार्थ सर्वही । मनसे वे देखते ।९। इतर मनुष्य जो जो स्मरें । वे तो पहले ही जान लेवे । ज्ञानाभिमानी उनके सामने । कौन क्या बोले ।१०। हो आप गुण-ग्राहक । इसीलिए बोलता हूं निशंक । भाग्यवन्त पुरुष आप । सेवन करिये मम वचन ।११। सेवन करें जो दिव्यान्न । रुचिकरण अन्य अन्न । वैसे ही समझो मेरा वचन । है यद्यपि प्राकृत ।१२। लोगोंकी ऐसी ही रीत । भावानुसार पूजते ईश । वैसे ही मैं वाक्दुर्बल । पूजता हूँ श्रोतागण ।१३-१४। व्युत्पत्ति नाहीं कला नाहीं । चातुर्य नाहीं कवित्व नाहीं । भक्ति ज्ञान वैराग्य नाहीं । वचन मेरा नाहीं मृदु ।१५। तथापि बोलूं अल्पमति । आप श्रोता जगदीश मूर्ति । ऐसे बोलते भावभक्ति । समीप हूं इसीलिए ।१६-१७। व्याघ्रसिंह भयानक । देखते ही भयचकित लोक । किन्तु शावक सम निःशंक । हूं मैं संतांकित ।१९-२०। संत सज्जन प्रेमल आप । अखिल विश्वके माय बाप । हूं मैं एक मूर्ख पुत्र । चिन्ता मेरी करो आप ।२१-२२। है मेरी विनति एक । कथाकी और देवो अवधान । करो पूर्ण जो हो न्यून । कृपा दासानुदासपर ।२३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रोतेस्तवननाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

वंदन करूं अब कवीश्वर। जो शब्दसृष्टीके ईश्वर। या वे परम ईश्वर। वेदावतार ।१। अथवा वे सरस्वतीके निजस्थान। नाना कलाओंके जोवन। नाना शब्दोंके भुवन। यथार्थरूप ।२। या वे पुरुषार्थका वैभव। जगदीश्वरके महत्व। इन्हींके सत्कीर्तीस्तव। हुवे हैं निर्माण ।३। शब्दरत्नोंका सागर। या मुक्तिरूप सरोवर। नाना बुद्धीका आगर। हुवे हैं निर्माण ।४। अध्यात्मग्रंथोंकी वे निधि। या वाचायुक्त चिंतामणी। या कामदुहा गौश्रेणी। साधकहेतु निर्माण ।५। कल्पनाओंका कल्पतरु। सायोज्यमुक्तिका विस्तारू। योगियोंका गुप्तपंथु। ज्ञानीयोंका परमार्थ ।६-७। है निर्गुण निरंजनकी खूण। माया-परमात्माके लक्षण। या वेदश्रुतीका भावगर्भ। निजबोध जो सुलभ ।८-९। मुमुक्षुके लिए अंजन। साधकोंके लिए साधन। सिद्ध योगियोंका समाधान। करते हैं कवि ।१०। भक्ति वैराग्यको संरक्षण। मनोजय और स्वधर्मरक्षण। प्रेमल उपासकोंका ध्यान। बढावे कवि ।११-१३। नाना साधनोंका मूल। नाना प्रयत्नोंका फल। नाना कार्यसिद्धी केवल। कवियोंका प्रसाद ।१४। पहले कविका वाग्विलास। तभी श्रवणमें आवे रस। काव्यार्थ मतिप्रकाश। स्फुरे कविके काव्यसे ।१५। व्युत्पन्नयुक्त कवित्व। नाना रीति मुद्रा छंद। गद्यपद्य भेदाभेदा। पदप्रासकर्ते ।१६-१७। कवि सभाके भूषण। ऋषि और देव करें वर्णन। शास्त्र सामर्थ्यसेही पूर्ण। करते स्तुति ।१८-२०। न हो कवीका व्यापार। कैसे होगा जगोद्धार। इसीलिए कवि आधार। सकल सृष्टीका ।२१। वाल्मीक व्यासादि सर्वज्ञ। हुवे कविश्वर अनेक। आगे भी होंगे सर्वज्ञ। उनको करूं वंदन ।२२। नाना चातुर्योंकी मूर्ति। या वे साक्षात् बृहस्पति। निश्चय बोलते वेदश्रुति। परोपकार कारण ।२६-२७। भासे वे अमृतके मेघ। या नवरसोंका प्रवाह। नाना सुखविवेक-भंडार। प्रकट मानवरूपसे ।२८-२९। या वे आदिशक्तिके निजधन। सुखनंदकी नाव। फलित हुवा पूर्वपुण्य। विश्वजनके कारण ।३०-३१। कवि निरंजनकी संपत्ति। विराटकी योगस्थिति। ईश्वरभक्तीकी फलश्रुति। हुई है फलरूप ।३२। कविका जो प्रबंध। रचना है वो ईशकृत। इसीलिये कविको वंदन। करता हूं साष्टांग ।३३-३४।

इति श्री दासबोवे गुरुशिष्यसंवादे कविश्वरस्तवननाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

श्लोक : नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदय रवौ ।
मभ्दक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदा ॥

अब नमूं मैं सकलसभा । जहां होवे मुक्ति सुलभा । रहे स्वयं जगदीश जहां । खड़े प्रेमभर ।१। देव कहे न रहूं वैकुण्ठ । या न योगीहृदयमें वास । भक्त करे जहां गुणगान । वहां रहता हूं नारद ।२। इसीलिए सभा श्रेष्ठ । भक्तिस्थल ही वैकुण्ठ । करते है वहां नामघोष । जयजयकारकी गर्जना ।३। प्रेमल भक्तोंका गायन । भगवत्कथा हरिकीर्तन । वेदव्यख्यान पुराणश्रवण । जहां निरंतर ।४। परमेश्वरके गुणानुवाद । नाना निरूपण संवाद । अध्यात्मविद्या भेदाभेद । मंथन जहां ।५। जहां मिले सदैव तृप्ती । नाना आशंका निवृत्ति । चित्तमें बैठे ध्यानमूर्ति । वाग्विलास सामर्थ्यसे ।६। भक्त जहां प्रेमल भाविक । सभ्य गंभीर सात्विक । रम्य रसाल गायक । निष्ठावन्त ।७। कर्मशील आचरणशील । दानशील धर्मशील । शुचिष्मन्त पुण्यशील । अंतरशुद्ध कृपालु ।८। योगी वीतरागी उदास । नेमक निग्रही तापस । विरक्त और निस्पृह । अरण्यवासी ।९। दंडधारी जटाधारी । नाथपंथी मुद्राधारी । कोई बालब्रह्मचारी । योगेश्वर ।१०। पुरश्चरणी और तपस्वी । तिर्थवासी और मनस्वी । महायोगी और जनवासी । जनसमान ।११। सिद्ध साधु और साधक । मंत्रयंत्रशोधक । एकनिष्ठ उपासक । गुणाग्राही ।१२। संतसज्जन विद्वज्जन । वेदज्ञ शास्त्रज्ञ, महाजन । प्रबुद्ध और आचरणशुद्ध । समाधानी ।१३। योगी व्युत्पन्न ऋषीश्वर । धूर्त तार्किक कवीश्वर । मनोजयी मुनीश्वर । और दिगंबर ।१४। आत्मज्ञानी ब्रह्मज्ञानी । तत्वज्ञानी पिण्डज्ञानी । योगाभ्यासी योगज्ञानी । उदासीन ।१५। पण्डित और पुराणिक । विद्वान और वैंदिक । भट और पाठक । यजुर्वेदी ।१६। अतिश्रेष्ठ महाश्रोत्री । याज्ञिक और अग्निहोत्री । वैद्य और पंचाक्षरी । परोपकारतत्पर ।१७। शांतिक्षमा दयाशील । पवित्र और सत्वशील । अंतरशुद्ध ज्ञानशील । ईश्वरी पुरुष ।१८। भूत भविष्य वर्तमान । जिनको त्रिकालका ज्ञान । बहुश्रुत निराभिमान । निरापेक्षी ।१९। इसीप्रकार सभानायक । जहां नित्यानित्य विवेक । उनकी महिमा अलौकिक । वर्णूं मैं कैसे ।२०। जहां श्रवणही है उपाय । परमार्थकारण समुदाय । वहां जनहित तरणोपाय । सहज ही मिले ।२१। गुणीजनोंका जहां मिलन । विद्याकलाका जो सुखनिधान । जिनपर भगवन्तका सदा प्रेम । सभा ऐसी अनुपम ।२२-२३। प्रवृति और निवृत्ति । प्रपंची और परमार्थी । गृहस्थाश्रमी वानप्रस्थी । मिलते जहां ।२४। वृद्ध तरुण और बाल । पुरुष स्त्रियां सकल । अखंड ध्याते तमालनील । अंतर्यामी ।२५। ऐसे जो

परमेश्वरके जन उनको मेरा अभिवंदन। वे ही करेंगे समाधान। संपूर्ण मेरा ।२६। जहां होवे ऐसी सभा। जहां भगवन्तकी कथा। जहां नामगजर कीर्तन सदा। होवे वहां संदेहनाश ।२७। जहां सन्तस्वरूप भगवन्त। वहां निश्चित ही गतिउत्तम। ऐसे बोलते महन्त। अनेक ग्रंथोमें ।२८-२९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सभास्तवननाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

स्तवन करूं अब परमार्थ। जो साधकोंका निजस्वार्थ। या जो योग समर्थ। सर्वश्रेष्ठ ।१। वो योग है बहु सुगम। किन्तु कहते है दुर्गम। जिन्होंने नाही जाना मर्म। संतसंगसाधन ।२। नाहीं साधनफल उधार। यह रोकड़ा ब्रह्मसाक्षात्कार। वेदशास्त्रोंमें जो सार। आवे अनुभवमें ।३। है वह चारों और। किन्तु होता नाही दृष्टि-गोचर। उदासीनवत् रहे सर्वत्र। दिखे ना किसी दिशा ।४। आकाशमार्ग गुप्त पंथ। जान लेते योगी समर्थ। इतर जन जब गुह्यार्थ। सहसा न समझे ।५। सारका ही निजसार। अखण्ड अक्षय अपार। ले जा न सके तस्कर। करे जभी प्रयत्न ।६। उसको नाहीं राजभय। अथवा नाहीं अग्निभय। अथवा वन्य श्वापदभय। है ही नाहीं ।७। ऐसा जो परब्रह्म। उसमें न कदापि चलन। स्थानान्तर गमन। किसीसे भी हिलेना ।८। वही जीवोंका निजधन। हो जो अक्षय निधान। उसमें। नाहीं अधिक या न्यून। या न हो कदा अदृश्य ।९। किन्तु बिना गुरुअंजन। दिखे न कदा निजधन। इसीलिए कहते हैं योगीजन। अतिगृह्य परमार्थ ।१०-११। जो कोई करे शोध। मिली उसीको परमार्थ। इतर जनको तो अलभ्य। जन्मजन्मान्तर ।१२। अपूर्वता इस परमार्थकी। वार्ता नाहीं जन्ममृत्युकी। और पदवी सायोज्यताकी। सन्निध ही लाभे ।१३। नाशे माया विवेक-बलसे। सारासारविचार विलसे। परब्रह्मप्रकाश भी भासे। अंतर्याम ।१४। देखते देखते ब्रह्मप्रचण्ड। उसीमें डूब गया ब्रह्माण्ड। पंचभूतोंका थोथा अंग। लगे तुच्छ ।१५। लगे प्रपंच ही झूठा। लगे माया भी बहु मिथ्या। शुद्धस्वरूप जो आत्मा। दिखे विवेक-सामर्थ्यसे ।१६। होवे ब्रह्मस्थिति अंतरंग। संदेह जाय ब्रह्माण्ड़बाहर। दृश्यजग पुराणजर्जर। न पुनरपि रोचक ।१७। ऐसी है यह परमार्थ। जो करे उसीका निजस्वार्थ। इस समर्थ को समर्थ। कहां तक बोलूं ।१८। इस परमार्थके कारण। पावते ब्रह्मादिक विश्राम। होते योगी तन्मयमन। परब्रह्ममें ।१९। परमार्थ सबका विश्रामधाम। सिद्ध साधु महानुभाव। जड़जीवोंका भी उद्धरण। सत्संगसे ।२०। परमार्थ जन्मका सार्थक।

परमार्थ संसारतारक। परमार्थ बतावे परलोक। जिज्ञासुओंको ।२१। परमार्थ तपस्वियोंका वस्तिस्थान। परमार्थ साधकोंका आधार। परमार्थ करे पैलपार। भव-सागरसे ।२२। परमार्थी है राज्यधारी। परमार्थ नाहीं वो भिखारी। अरे इस परमार्थकी-बराबरी। करना किसके साथ ।२३। अनंत जन्मार्जित पुण्य होवे। तब ही परमार्थ घड़े। मुख्य परमात्मा ही जुड़े। अनुभवरूप ।२४। जान लिया जिसने परमार्थ। उसने किया जन्म सार्थ। इतरजनोंका जन्म व्यर्थ। कुलक्षयकारक ।२५। एवं भगवत्प्राप्ति बिन। संसार करते करते श्रमित। उन मूर्खोंका मुखावलोकन। करना व्यर्थ ।२६। तस्मात् परमार्थपथसे जावो। शरीर सार्थका करावो। पूर्वजोंका उद्धार करो। हरिभक्तीसेही ।२६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे परमार्थस्तवननाम समास नवमा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य हैं नरदेह। है वह बहुत अपूर्व। जो जो करे यहां परमार्थ। पावे वो सिद्धदशा ।१। नरदेह कारण। जावे कोई भक्तिमार्ग। कोई होके विरक्त। रहे गिरिकंदर ।२। एक करे तीर्थाटन। एक करे पुरश्चरण। एक अखण्ड़ नामस्मरण। रहे निष्ठावन्त ।३। एक लगे करने तप। एक करे योगाभ्यास। एक वेदशास्त्रव्युत्पन्न। बन गया पूर्ण ।४। एक करे हठ निग्रह। देहको पिडा देत। भावार्थबलसे अन्य। जोड़े देव निश्चित ।५। एक महानुभाव विख्यात। एक ख्यातनाम भक्त। एक सिद्ध अकस्मात्। संचरे गगन ।६। बन गया एक तेजरूप। जलसाथ हुवा जल एक। एक देखते ही अदृश्य। हुवा वायुस्वरूप ।७। बहुस्वरूप होता एक। देखत देखत गुप्त एक। एकासनस्थ होते ही एक। विचरता नाना स्थान ।८। सवार एक व्याघ्रसिंहपर। चलाता जडको चेतनसम। एक करता प्रेतसंजीवन। तप सामर्थ्यसे ।९। सूर्यतेजको करता सौम्य। या जलका वाष्पीकरण। या तो वायुनिरोधन। करता विश्वका एक ।१०। ऐसे हठनिग्रही कृतबुद्धि। जिनको प्राप्त नाना सिद्धि। ऐसे सिद्ध लज्जावधि। हुवे मानवदेहमें ही ।११। एक मनोसिद्ध एक वाचासिद्ध। एक अल्पसिद्ध एक सर्वसिद्ध। ऐसे नानाप्रकार सिद्ध। मानवदेहसे ही ।१२। नवविधा भक्तिराजपंथ। तर गए परलोक एक। एक योगी गुप्तपंथ। पा गये ब्रह्मभुवन ।१३। वैकुण्ठ गये एक। रहे सत्यलोकमें एक। कैलास जाकर एक। बने शिवरूप ।१४। इंद्रलोकमें हुए इन्द्र। या तो पितृलोकमें वास। या आकाशमें नक्षत्ररूप। या क्षिरसागरमें एक ।१५।

सलोकता समीपता। स्वरूपता सायोज्यता। ये चारों मुक्ति तत्वता। इच्छानुसार सेवते ।१६। ऐसे सिद्ध साधु सन्त। तत्पर हितार्थ अनन्त। तस्मात् नरदेह विख्यात। है वर्णनातीत ।१७। इस नरदेहके आधार। नाना साधनद्वार। सारासार विचारसे पार। गए संसार से बहु ।१८। इस नरदेहके सम्बन्ध। पा गए बहु उत्तमपद। अहन्ता छोड स्वानंद-। सुखसे तृप्त हुए बहु ।१९। केवल नरदेहकारण। हुआ बहुतोंका उद्धरण। खण्डित संशय। समूल। यहां ही होत ।२०। पशुदेहसे नाहीं गति। ऐसी सबोंकीही मति। नरदेहमेंही होगी प्राप्ति। परलोककी ।२१। सन्तमहन्त ऋषि मुनि। सिद्ध साधु समाधानी। भक्त मुक्त ब्रह्मज्ञानी। विरक्त योगी तपस्वी ।२२। तत्वज्ञानी योगाभ्यासी। ब्रह्मचारी दिगंबरा संन्यासी। षड्दर्शनी और तापसी। नरदेहकारण ।२३। इसीलिए नरदेह श्रेष्ठ। सर्व देहोंमें वरिष्ट। उसीसे टलजाय अरिष्ट। यमयातनाका ।२४। नरदेह होता है स्वाधीन सहसा न हो पराधीन। किन्तु परोपकारकारण। घिसना चन्दसम ।२५। अश्व भैस गैया वृषभ। नाना नारीयां पशु दास। कृपालु होकर कोई नर। करे संरक्षण ।२६। जब हो नरदेह। अन्ध, पंगु या बधिर। गूंगा, रोगी या अशक्त। तब परमार्थ होगा कैसे ।२७-३२। देह होवे अव्यंग। तभी न करे जो परमार्थ। उसे जानो अतिमूर्ख। फंस गया वो मायाजाल ।३३। पत्थर मृत्तिकाका घर। कहे मेरा, ऐसे मूर्ख। मनमें करे दृढ संकल्प। समझे नाहीं यथार्थ ।३४। मूषक बोले घर मेरा। माजरि बोले घर मेरा। मत्कुण बोले घर मेरा। बिच्छू सर्प कहे यही। पशु पक्षी अभ्यागत। दास दासी मित्र जन। सर्वही बोलते मेरा घर। सर्वभक्षक अग्नि भी। कौन घरमें किसकी वसती। कौन माने निश्चिन्ती। जन्म दो दिन की वस्ती। करना है कहीं भी ।३५-५०। जैसा घर वैसा देह। ममत्व न चले उस पर। वहां भी रोग या अन्यजीव। करते वस्ती जन्मभर ॥ कर्णदंतादि अवयव। हो जाते रोगजर्जर। पेट, माथा या शरीर-व्रण। इनमें जन्तु नाना॥ ऐसे शरीर व्याधिग्रस्त। क्षणभंगुर नाशवन्त। समझे मूर्ख है शाश्वत। जाते यद्यपि मृत्युपंथ॥ यदि देह परमार्थकारक। करे कोई साधक। तब ही इसका सार्थक। हो जाय यथार्थ ।५१-६२।

इति श्री दासबोध गुरुशिष्यसंवादे नरदेहस्तवननाम समास दसवां ॥१०॥

मुर्खलक्षणनाम दशक दूसरा

॥ श्रीराम ॥

ॐ नमो गजानन। एकदंत त्रिनयन। भक्तजनावलोकन। करो कृपादृष्टीसे।१। वंदन तुमको वेदमाता। श्रीशारदा ब्रह्मसुता। कृपावती स्फूर्तीरूपा। वास करो मम हृदय।२। करता हूं सद्गुरुवन्दन। स्वामी रघुनाथका स्मरण। त्यागार्थ मूर्खलक्षण। बोलता हूं अब।३। जो प्रापंचिक जन। जिनको नाहीं आत्मज्ञान। जो केवल अज्ञान। उनके बोलूं लक्षण।४-७। हुवा जन्म जिनके उदर। उनका ही करे विरोध। करे स्त्रीको ही प्यार। वह एक मूर्ख।८। छोडे सर्वही गोत्र। स्त्री-आधीन जीवित। उसको कहे गुह्य बात। वह एक मूर्ख।९। परस्त्रीपर प्रेम। श्वसुरगृहमें वास। बिना कुलपरिक्षा कन्यावरण। करे तो एक मूर्ख।१०। समर्थ पुरुषोंपर अहंता। उनके साथ माने समता। बिना सामर्थ्य करे सत्ता। वह एक मूर्ख।११। स्वयं करे निजस्तुति। भोगे स्वदेशमें विपत्ति। कहे अकारण पितरोंकी कीर्ति। वह एक मूर्ख।१२। अकारण करे हास्य। धरे नाहीं विवेक। करे बहुतोंके साथ वैर। वह एक मूर्ख।१३। स्वजनोंको करे दूर। दूसरोंके साथ मित्रभाव। रात्रीसमय बोले परन्यून। वह एक मूर्ख।१४। चारों ओर जागते जन। बीचमें करे जो शयन। परगृहमें बहु भोजन। करे तो एक मूर्ख।१५। मान अथवा अपमान। स्वयं करे प्रकटन। द्यूतादि व्यसनोंमें मन। लगावे वो मूर्ख।१६। परजनकर्तृत्वमें विश्वास। न करे स्वयं प्रयास। आलस्यमें ही संतोष। माने वो एक मूर्ख।१७। घरमें विवेक बहु जागे। और सभामें अति लाजे। मुँहसे ना फूटे शब्द। वह एक मूर्ख।१८। स्वयंसे हैं जो श्रेष्ठ। हो जभी उनके निकट। तोभी न सीखे उनके पास। होगा वह मूर्ख।१९। सुने न, उनको सिखावे। बडोंको ज्ञान बतावे। श्रेष्ठोंका संशयमें डाले। वह एक मूर्ख।२०। लज्जाहीन अकस्मात्। विषयसुखसे होके मत्त। करे वर्तन अमर्याद। वह एक मूर्ख।२१। न ले ओखद जभी व्यथा। न करे पथ्य सर्वथा। तोष न दे प्राप्त-संपदा। वह एक मूर्ख।२२। बिनासंग विदेशगमन। बिना पहचान करे संग। कूद पड़े महापूर। वह एक मूर्ख।२३। होवे जहां सन्मान। वहा करे नित्य गमन। रक्षे नाहीं मानाभिमान। वह एक मूर्ख।२४। सेवक हुवा लक्ष्मीवन्त। उसका होवे जो अंकित। सर्वकाल रहे दुश्चित। वह एक मूर्ख।२५। बिना पूछे कारण। बिना अपराध करे दंडण। अल्पहेतुस्तव जो कृपण। वह एक

मूर्ख ।२६। माने न देव या पितर । बिनाशक्ति जो मुखर । करे बहु बड़बड़ । वह एक मूर्ख ।२७। घरमें क्रोधकी आवे बाढ । बाहर हहे बापड़ा दीना । पागलसम करे वर्तन । वह एक मूर्ख ।२८। नीच जातिकी धरे संगत । परांगना साथ एकान्त । खाते खाते क्रमता मार्ग वह एक मूर्ख ।२९। जाने न करना परोपकार । किन्तु उपकारार्थ अनोपकार । बोले वहु करे स्वल्प । वह एक मूर्ख ।३०। क्रोधी कपटी और आलसी । जिव्हालोलुप मलिनमानसी धारिष्ट जिसको नाहीं । वह एक मूर्ख ।३१। विद्यावैभव ना धन । पुरुषार्थ सामर्थ्य ना मान । वृथा वाहे अभिमान । वह एक मूर्ख ।३२। कपटी लज्जाहीन कुकर्मी । शठ कातर असत्यवचनी । बढती निद्रा सदैव जिसकी । वह एक मूर्ख ।३३। दंत चक्षु और घ्राण । हस्त पाद और वसन । सर्वकाल जिसके मलिन । वह एक मूर्ख ।३४-३५। नाहीं जिसकी बुद्धि दृढ़ । अपमानवश आवे क्रोध । स्वयंकरे अपना घात । वह एक मूर्ख ।३६-३७। मित्रजनको करे खेद । न दे किंचीत् शब्द-सुख । नीचे जनको करे वंदन । वह एक मूर्ख ।३८। स्वशरीर रक्षे नाना प्रकार । किन्तु शरणागतका तिरस्कार । चंचल लक्ष्मीका विश्वास । धरे वो मूर्ख ।३९। स्त्री कन्या और पुत्र । इतना ही जिसका आश्रय । हुआ ईश्वरका विसर । वह एक मूर्ख ।४०। "जो जो करे जैसा । वो वो पावे वैसा" । जो न समझे ऐसा । वह एक मूर्ख ।४१। स्त्रियोंमें अष्टगुण काम । ऐसा है ईश्वर वचन । तथापि जो बहुपत्नीक । वह एक मूर्ख ।४२। दुर्जनपर धरे विश्वास । अमर्याद करे वर्तन । दिनमें भी रहे अन्धवत । वह एक मूर्ख ।४३। देवद्रोही गुरुद्रोही । मातृद्रोही पितृद्रोही । ब्रह्मद्रोही स्वामीद्रोही । वह एक मूर्ख ।४४। परपीड़ामें माने सुख । परसंतोषसे दुःख । गतवस्तुका करे शोक । वह एक मूर्ख ।४५। व्यर्थ बोले बिना आदर । न पूछे तो भी दे साक्ष । निंद्य वस्तूका अंगीकार । करे वह मूर्ख ।४६। तातम्यरहित संभाषण । चले छोड सन्मार्ग कुकर्मी जिसके मित्र । वह एक मूर्ख ।४७। नाहीं विश्वसार्हवचन । करे सर्वकाल विनोद । कलहार्थसज्ज जिसका मन । वह एक मूर्ख ।४८। हीन जनसाथ समत्व समर्थोंका करे मत्सर । घरमें ही करे चौर्य । वह एक मूर्ख ।५२-५३। छोड़ करके जग– दीश । मनुष्यका करे विश्वास । नाहीं जीवन जिसका सार्थक । वह एक मूर्ख ।५४। संसार-दुःखके कारण । देवको बोले दुष्ट वचन । मित्रजनका कहे न्यून । वह एक मूर्ख ।५५। क्षमा न करे अल्प अपराध । बतावे भय सर्वकाल । करे जो विश्वासघात । वह एक मूर्ख ।५६। समर्थोंके मनसे जो उत्तरे । सभासद जिसको न माने । भला बुरा क्षणक्षण होवे । वह एक मूर्ख ।५७। बहुत कालका सेवक । त्याग करके लावे नूतन । सभा जिसकी निर्नायक । वह एक मूर्ख ।५८। जोड़े अनीतीसे द्रव्य । छोड़े धर्म नीति न्याय । योग्य

पुरुषोंका छोड़े संग। वह एक मूर्ख।५९। घरमें नारी सुन्दर। तथापि धरे परद्वार। करे उच्छिष्ट अंगीकार। वह एक मूर्ख।६०। स्व-अर्थ रहे दूसरे पास। और दूसरोंका अभिलाष। हीनजनोंसे व्यवहार। करे वह मूर्ख।६१। करे अतिथिपीडन। वास करे कुग्राम। चिंतामग्न रात्रदिन। वह एक मूर्ख।६२। जहां बोले अन्य लोग। वहां ही बैठे जाकर। सुनना चाहे उनकी बात। वह एक मूर्ख।६३। स्त्री–बालकको अति स्वातंत्र्य। बैठे पिशाचके सन्निध। कुतोंको करे बहु प्यार। वह एक मूर्ख।६५। परस्त्रीसे करे कलह। जीवहत्या करे व्यर्थ। धरे मूर्खोंका संग। वह एक मूर्ख।६६। रहे खड़ा जहां कलह। और करे मनोरंजन। सत्य छोडके असत्यका मान। करे वह मूर्ख।६७। होतेही धनवान। भूल जाय पहचान। सत्ता देव ब्राह्मणपर। करे वह मूर्ख।६८। स्वकार्यसिद्धिपर्यन्त। नम्रतापूर्वक वर्तन। करे ना परकार्य। वह एक मूर्ख।६९। अक्षर छोड़कर पढ़े। या कुछ स्वयं जोड़ दे। ग्रंथरक्षण कदा न करे। वह एक मूर्ख।७०। न पढे स्वयं कदापि। पढने न दे किसीको कभी। रखे बांध कर पोथी। वह एक मूर्ख।७१। चातुर्यार्थे करो श्रवण। त्याग करके मूर्खलक्षण। संग्रह करो उत्तम गुण। सत्कीर्तिस्तव।७२–७४।

इति श्री दासबोध गुरुशिष्यसंवादे मुर्खलक्षणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

हो श्रोतागण सावधान। कथन करता हूं उत्तम गुण। जिससे समझे चिन्ह। सर्वज्ञताका।१। बिन पूछे मत क्रमो मार्ग। बिना पहचान खावो ना फल। मत लो गिरी हुई चीज। अन्य किसीकी ही।२। करो न अति वादविवाद। न धरो पेट में कपट। बिना शोध न करो वरण। कुलहिन कान्ता।३। मत बोलो बिना विचार। या कार्यारंभ बिना चिंतन। या न करो स्थानांतर। अमर्याद कदापि।४। बिना प्रीति रूठ जाना। चोरोंको पहचान देना। रात्रिसमय मार्ग क्रमना। नाहीं हितावह।५। छोड़ो न लीनता जनसाथ। जोड़ो न कदा पापद्रव्य। धरो तुम पुण्यमार्ग। सर्वकाल।६। करो मत निंदा द्वेष। या न धरो असत्संग। बलात्कारसे अपहरण। करो ना द्रव्यदारा।७। करो न प्रश्न खण्डनार्थ। भंग न करो ऐक्यभाव। छोड़ो न विद्याभ्यास। कदाकाल।८। मुख है तो करे बड़बड़। उसके साथ न करो वाद। मनमें रखना अखण्ड। संतसंग।९। करो मत अति क्रोध। सज्जनको होने न दो खेद। न हो कदा उदासीन। लोकशिक्षणकार्यमें।१०। रूठो मत क्षणक्षण। बोलो न पुरुषार्थ अप्रमाण। करनी बिना पराक्रम। कहो मत कदापि।११।

विसरो मत दत्तवचन। प्रसंग न हो बलहीन। अन्यजनको न देके दोष। करो तुम ही कुछ कार्य ।१२। मानो न आलस्यमें सुख। सुखमें न रहो लिप्त। छोड़ो न कष्ट या प्रयत्न। करो शोध निरंतर ।१३-१४। सभागृहमें न धरो लाज। न करो वहां बड़बड़। ना शर्त किसीके साथ। करो अकारण ।१५। करो न चिंता बहुत। होवो न आलस्य-रत। पाप-बुद्धीसे परस्त्रीमुख। मत देखो कदापि ।१६। किसीसे उपकार मत लेवो। लेवो तो भी मत वो रखो। परपीड़ा कभी न करो। न विश्वासघात ।१७। रहो सदा शुचिष्मन्त। पहनो सदा शुद्ध वस्त्र। करो न किसीसे प्रश्न। कहां जाते हो ऐसे ।१८। छोड़ना नाहीं व्यापक-पण। होना नाहीं पराधीन। रखो नाहीं अपना भार। अन्य किसीपर ।१९। तर्कबाहुल्य बिनाप्रमाण। हीनजनसे लेना ऋण। बिना गवाह आदिकारण। राजद्वार नहीं जाना ।२०। न करो वृथा आरोप। न दो सभाको वृथा दोष। न बोलो आदररहित। स्वभावानुसार कदा ।२१। देखा नाहीं ऐसे ढोंग। करो न कदा वा अन्याय। अंगबलसे होके प्रमत्त। वर्तन कदापि न करो ।२२। खावो न बहुत अन्न। करो न बहु शयन। रहो न बहुत दिन। दुर्जनके साथ ।२३। करो न स्वयं अपना गौरव। या न कीर्ति का वर्णन। हसो न अपनी बात पर। स्वयं आप ही ।२४। करो नाहीं धूम्रपान। या उन्मत्त द्रव्य सेवन। बहुवाचाल जनका संग। या उनसे मैत्री ।२५। रहो ना कदा बिना कर्म। न करो नीचोत्तर सहन। बिना कष्ट खावो न अन्न। पितरादि बडोंका भी ।२६। मुखसे अपशब्द न बोलना। दूसरेको देखकर न हंसना। अपनेमें दूषण न रखना। कुलवान को ।२७। अमूल्य वस्तु भी नहीं चोरना। कृपण बहुत नहीं होना। सज्जनसाथ नहीं करना। कलह कदा ।२८। मत करो किसीका घात। मत दो झूठी साक्ष्य। मत करो वर्तन अप्रमाण। कदा काल ।२९। करो न चोरी निन्दा। करो न संग परदारा। बोलो न न्यून किसीका। पीठ पीछे ।३०। प्रसंग में न छोड़ो धैर्य। या न कदा सत्वगुण। आवे जो शत्रु शरण। न दो उसे देहदण्ड ।३१। अल्पधनसे न हो उन्मत्त। हरिभजनमें न हो लज्जित। वर्तो न बनके प्रमत्त। साधुवृंदमें ।३२। मूर्खसे आनेदो न सम्बन्ध। अंधारमें न हस्त क्षेप। न हो निजवस्तुका विसर। दुश्चित कारण ।३३। छोडो न कदा संध्यास्नान। या न कोई कुलधर्म। न करो अनाचार वर्तन। आलस्यवश ।३४। हरिकथा या निरूपण। छोडो मत अकारण। न करो परमार्थका विस्मरण। प्रपंच हेतु ।३५। 'देऊंगा देवको' ऐसे वचन। दिया हुवा तो करो पालन। न करो जैसे चाहे मन। बिना विचारे ।३६। न हो मनसे निष्ठुर। जीव हत्याका विचार। जाओ न पर्जन्यमें बाहर। या हो जब भयकाल ।३७। सभा देखतेही गलित धैर्य। या जब करे कोई धिःकार। तभी न होना कातर।

देना समयोचित उत्तर ।३८। रहो न गुरुविरहित । करो न गुरु नीच जन । मानो न शाश्वत जीवन । वैभवपूर्ण तो भी ।३९। छोड़ो न कदा सत्यमार्ग । जावो न असन्मार्गपर । या न करो अभिमान । होगा जो असत्य ।४०। अपकीर्ति टाल कर । बढावो सत्कीर्ति-सत्वर । विवेक से धरो दृढ । सत्यमार्ग केवल ।४१। ऐसे जो उत्तमगुण । न लेवे वो अवलक्षण । सुनिए उसका लक्षण । समासमें आगे ।४२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उत्तमलक्षणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

श्लोक : दंमोदर्पोडेभिमानश्व क्रोध पासषमेवच ।
अज्ञानं चामिजातस्यपार्थ । संपदमासुरीम् ॥

सुनिए अब त्यागार्थ । कुविद्या का लक्षण । अवगुण हो जो प्राणी । माने न वो निरूपण ।१-३। काम क्रोध मद मत्सर । लोभ दंभ तिरस्कार । गर्व द्वेष अहंकार । विषाद विकल्प ।४। आशा ममता तृष्णा कल्पना । कामना चिन्ता भावना । असूया अविद्या ईषणा वासना । अतृप्ति लोलुपता ।५। अनीति अवज्ञा निंदा । मस्ती विपत्ती आपदा । दुर्वृत्ति स्पर्धा दुर्वासना । परम व्यथा कुविद्या ।६-७। कुरूप और कुलक्षण । अशक्त और दुर्जन । दरिद्री और कृपण । है अतिशय ।८। अज्ञानी और अविश्वासी । छलवादी और दोषी । अभक्त और भक्तोंको भी । देख न सके कदापि ।९-१२। पापी और निंदक । कष्टी और घातक । दुःखी और हिंसक । अतिशय ।१३। हीन और कृत्रिमी । रोगी और कुकर्मी । कृपण और अधर्मी । वासनारत ।१४। हीन देह और गर्विष्ट । करे अप्रमाण विवाद । भिरू और बोलत । स्वपराक्रम ।१५-१६। अल्पमति और वादक । दिनरूप किन्तु भेदक । बोले बहु त्रासदायक । कुशब्द सदा ।२०। कठिणवचनी कर्कशवचनी । कापटच-वचनी संदेहवचनी । दुःखवचनी तीव्रवचनी । क्रूर निष्ठुर दुरात्मा ।२१। न्यूनवचनी पैशून्यवचनी । अशुभवचनी अनित्यवचनी । द्वेषवचनी अनृतवचनी । करे सबका धिःकार ।२२। आत्महत्यारा स्त्रीहत्यारा । गो हत्यारा ब्रह्महत्यारा । मातृहत्यारा पितृहत्यारा । महापापी पतित ।२५। कुपात्र और कुतर्की । मित्रदोही विश्वासघातकी । कृतघ्न और तल्पकी । अघोरकर्मी सर्वदा ।२६। विद्याहीन वैभवहीन । कुलहीन लक्ष्मीहीन । शक्तिहीन सामर्थ्यहीन ।दैवहीन भिखारी ।३४। बलहीन कलाहीन । मुद्राहीन दीक्षाहीन । लक्षणहीन लावण्यहीन । अंग होय कुरूप ।३५। युक्तिहीन बुद्धिहीन । आचारहीन विचारहीन । क्रिया-हीन सत्वहीन । विवेकहीन संशयी ।३६। भक्तिहीन भावहीन । ज्ञानहीन वैराग्यहीन । शान्तिहीन क्षमाहीन । सर्वहीन क्षुल्लक ।३७। जाने न समय या प्रसंग । जाने न अभ्यास

या यत्न। जाने न मैत्री या आर्जव। जाने न कुछ अभागी ।३८। ऐसे कुविद्यालक्षण। करो त्यागार्थ श्रवण। होना अभिमानपूर्ण। विहित नाहीं ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कुविद्यालक्षणनाम समास तिसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

नाना सुकृतोंका फल। है यह नरदेह केवल। उसमें भी हो भाग्य प्रबल। तो लाभे सन्मार्ग ।१। नरदेह और ब्राह्मणजन्म। उसमें विशेष संध्यास्नान। सद्वासना भगवभ्दजन। होवे पूर्वपुण्यसे ।२। भगवभ्दक्ति है उत्तम। उसके साथ सत्समागम। करना जीवन सार्थक। यही परमलाभ ।३। प्रेम प्रीतीका सभ्दाव। और भक्तोंका समुदाय। जहां हरिकथा महोत्सव। प्रेम दुगना हो वहां ।४। मिला है जब नरदेह। तो करो उसको सार्थक। जिससे मिल जाय परलोक। परम दुर्लभ जो ।५। विधियुक्त ब्रह्मकर्म। अथवा दया दान धर्म। अथवा करो है जो सुगम। भजन भगवन्तका ।६। अवगुण तजो सानुताप। और करो भक्तियोग। धरो तुम सत्संग। साधुजनोंका ।७। नाना शास्त्र अध्ययन। अथवा करो तीर्थाटन। करो अथवा पुरश्चरण। पापक्षय कारण ।८। बहुत करो परोपकार। अथवा ज्ञान-विचार। निरूपण सारासार। विवेक सहित ।९। वेदाज्ञाका पालन। कर्मकाण्ड उपासन इसीसे होगा पात्र। ज्ञानाधिकारी ।१०। काया वाचा और मन। पत्र पुष्प फल जीवन। लगावो सब भजन काम। जन्म साफल्यकारण ।११। न हो केवल भूमिभार। करो कुछ आत्महित। यथा शक्ति वित्त चित्त। लगादो देवके लिए ।१२-१४। नाहीं सन्ध्या नाहीं स्नान। नाहीं भजन देवार्चन। नाहीं मंत्र जप ध्यान। सर्वोत्तम देवका ।१५। नाहीं भक्ति नाहीं प्रेम। नाहीं निष्ठा नाहीं नेम। नाहीं देव नाहीं धर्म। ना अतिथि ना अभ्यागत ।१६। नाहीं सद्‌बुद्धि नाहीं गुण। नाहीं कथा नाहीं श्रवण। नाहीं अध्यात्मनिरूपण। सुना नाहीं कभी ।१७। नाहीं सज्जनोंकी संगति। नाहीं शुद्ध चित्तवृत्ति। नाहीं कैवल्य-की प्राप्ति। मिथ्या मद ।१८। नाहीं नीति नाहीं न्याय। नाहीं पुण्यका उपाय। नाहीं परत्र-चिंतन। ना होवे युक्त क्रिया ।१९। नाहीं विद्या नाहीं वैभव। नाहीं चातुर्य नाहीं भाव। नाहीं कला नाहीं लाघव। सरस्वतदेवीकी ।२०। शान्ति नाहीं क्षमा नाहीं। दीक्षा नाहीं मैत्री नाहीं। शुभाशुभ कुछ भी नाहीं। साधनादि ।२१। ना शुचित्व ना स्वधर्म। ना आचार ना विचार। ना प्रपंच ना परमार्थ। मनमानी करे क्रिया ।२२। कर्म नाहीं उपासना नाहीं। ज्ञान नाहीं वैराग्य नाहीं। योग नाहीं धारिष्ट नाहीं। एक भी

नाहीं उत्तम ।२३। उपरति नाहीं त्याग नाहीं । समताका लक्षण नाहीं । आदर नाहीं प्रीति नाही । परमेश्वरकी ।२४। परगुणोंका संतोष नाहीं । परोपकारमें सुख नाहीं । हरिभक्तीका लेश नाहीं । अन्तर्याम ।२५। इस प्रकारके जो जन । वे हैं प्रेतसमान । उनसे करना ना भाषण । पवित्र पुरुषों को ।२६। पुण्यसामग्री हो पूर्ण । तब ही घड़े भगवभ्द-जन । जो जो करे जैसे ही । वो पावे तैसे ही ।२७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे भक्तिनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

देह है त्रिगुण मिश्रित । सत्वरजतमांकित । उनमें होता सत्व । उत्तमगुण ।१। सत्वगुणसे भगवभ्दक्ति । रजोगुणसे पुनरावृत्ति । तमोगुणसे अधोगति । पावते प्राणीं ।२। प्रथम करूं कथन । शुद्ध और शबल गुण । शुद्ध गुण तो निर्मल । शबल है बाधक ।३। दोनों के ही लक्षण । सुनिए सावध विचक्षण । शुद्ध तो परमार्थकारण । शबल संसारिक ।४। त्रिगुणोंसे ही चले जीवन । उनमें होते ही एक प्रधान । शेष दोनों होते गौण । सुनिए प्रथम रजोगुण ।५-६। रजोगुण आतेही शरीर । बोले मेरा घर मेरा संसार । वहां कैसे आवे देव । रजोगुण प्रभावसे ।७-८। माता पिता और कांता । पुत्र स्नुषा और दुहीता । इनकी ही वाहे चिन्ता । वो रजोगुण ।९। खाना अच्छा भोजन अच्छा । भूषण अच्छा वसन भी अच्छा । परधन प्राप्तिकी इच्छा । करे वो रजोगुण ।१०। न माने धर्म न माने दान । न माने जप न माने ध्यान । न माने पाप या पुण्य । है वह रजोगुण ।११। न माने तीर्थ न माने व्रत । न माने अतिथि अभ्यागत । मनमाना करे अनाचार । वही रजो-गुण ।१२। करे धनधान्य संचय । द्रव्यासक्त होवे मन । अत्यंत कृपण जीवन । करे वो रजोगुण ।१३। मैं तरुण मैं सुन्दर । मैं बलाढच मैं चतुर । में हूं सबोंमें श्रेष्ठ । माने वो रजोगुण ।१४। मेरा देश मेरा गांव । मेरा घर मेरा ठांव । इतना ही रक्खे भाव । वह रजोगुण ।१५। होने दो दूसरोंका नाश । चाहे अपने लिए ही उत्तम । करे ऐसी वांछा मन । जानो वो रजोगुण ।१६। कापटच और मत्सर । आवे मनमें तिरस्कार । अथवा आवे कामविकार । वो रजोगुण ।१७। कन्यापुत्रों पर ममता । प्रीतिपात्र लगे कांता । विषयोंपर लुब्धता । वह रजोगुण ।१८। आप्तजन आते ही दुःखित । संसारकारण कष्ट सहे । मनको लगे संकट । वह रजोगुण ।१९-२०। गत भोग-सुखका स्मरण । न हो दुःख विस्मरण । ऐश्वर्यका अनुसंधान । करे वो रजोगुण ।२१-२२। देखे जो जो पदार्थ ।

उसको मांगे मन। अलभ्य होतेही दुःख। होवे रजोगुणसे।२३। विनोदार्थ मन तल्लीन श्रृंगारिक करे गायन। हास्य निंदा विवाद। करे वो रजोगुण।२४-२५। उठे आलस्य प्रबल। मनोरंजनार्थ नाना खेल। या भोगरत होवे मन। है वह रजोगुण।२६। बहुरूपी कलावन्त। द्यूतमें धन अर्पण। मद्यपानमें रममाण। होवे रजोगुण।२७-२८। तस्कर-विद्याकी वासना। और परन्यून बोलना। किन्तु भजनार्थ मन मानेना। वो रजोगुण।२९। लज्जा आवे देवकारण। उदरभरणार्थ करे कष्ट। प्रपंचमें अत्यंत स्नेह। है वही रजोगुण।३०। प्रेमसे करे मिष्ठान्न भोजन। अत्यादरसे पिण्ड पोषण। करे ता कदा उपोषण। वह रजोगुण।३१। श्रृंगाररसमें बहु प्रेम। भक्तिवैराग्यका क्या काम। नाना कलाओंमें रंगे मन। वह रजोगुण।३२। जाने नाहीं परमात्मा। इतर विषयमें अति कामना। उनमें ही जन्म खोना। वो रजोगुण।३३-३४। ऐसा है रजोगुण। जिससे न छूटे संसार। वासनासक्त जो मन। होगा कैसे मुक्त।३५। यदि न होवे विरक्ति। उपाय एक भगवभ्दक्ति। तस्मात् यथानुशक्ति। करो देवको भजन।३६। काया वाचा और मन। पत्र पुष्प फल जीवन। मनसे ईश्वरको अर्पण। करो भक्तिभावसे।३७। यथानु-शक्ति दानपुण्य। करके होवो भक्त अनन्य। सुखदुःखमें भी चिंतन। देवका ही।३८। आदि अंत एक देव। बीचमें माया चंचल। इसीलिए पूर्ण भाव। रखो भगवन्तमें।३९। ऐसा शबल रजोगुण। किया संक्षेपमें कथन। तथापि है वो साधन। भजनमूल।४०-४२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे रजोगुणलक्षणानाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

कथन किया रजोगुण। क्रिया सहित लक्षण। अब सुनिए तमोगुण। दुःखदायक।१। अद्‌भुत आते ही क्रोध। माता पिताका राखे ना मान। बंधु बहिन कांताको करे ताडन। वह तमोगुण।२-३। अनावर क्रोधके कारण। करे पिशाच्चवत् वर्तन। स्वघात या परघात। करे वो तमोगुण।४-६। युद्धदर्शनार्थ उत्सुक। निद्रित या भ्रांतचित्त। न करे कदा निश्चय एक। वो तमोगुण।७-८। बढ़े क्षुधा अधिकाधिक। समझे न जिव्हा रस-स्वाद। अत्यंत जो बुद्धिमंद। वो तमोगुण।९। प्रीतिपात्र होते ही मृत। चाहे स्वदेहका मरण। उठे आत्महत्याकारण। वो तमोगुण।१०। चींटी कीड़ा या श्वापद। उद्यत उनके वधार्थ। है बहुत कृपामंद वो तमोगुण।११। स्त्रीहत्या बालहत्या। द्रव्यार्थ करे ब्रह्म-हत्या। या करना चाहे गोहत्हा। वह तमोगुण।१२। मूर्खताके कारण। विषप्राशन भी

चाहे मन। मस्त कपटी उद्धट। वो तमोगुण ।१३-१४। युद्ध देखना या करना। स्वयं मरना या मारना। कलह करना या करवाना। वह तमोगुण ।१५-१६। भक्तीमें करे विघ्न। देवालयोंका विध्वंस। फलवृक्षोंका छेदन। करे तो तमोगुण ।१७। सत्कर्मोंका द्वेष। दोषोंके लिए संतोष। चित्तमें न पाप-भय। वह तमोगुण ।१८। ब्रह्मवृत्तिका उच्छेद। जीवमात्रको देवे खेद। चाहे करना नाना प्रमाद। वह तमोगुण ।१९। अग्निप्रलय शस्त्र-प्रलय। भूतप्रलय विषप्रलय मत्सरहेतु। जीवक्षय। करे वो तमोगुण ।२०। प्राप्त होते ही संपत्ति। लोगोंपर लावे विपत्ति। दया न आवे किंचिदपि। वह तमोगुण ।२३। न माने भक्ति न माने भाव। न माने तीर्थ न माने देव। न माने वेद न माने शास्त्र। वह तमोगुण ।२४। नाहीं नियम नाहीं स्नान। नाहीं संध्या नाहीं स्वधर्म। देखे कर्तव्यहीन भ्रष्ट। वह तमोगुण ।२५। ज्येष्ठ बंधु मा बाप-वचन। न माने न करे सहन। शीघ्र कुपित हो करे गमन। वह तमोगुण ।२६। करे भोजन निश्चित। पडा रहता है निश्चित। स्मृतिभ्रष्ट वर्ते सतत। वह तमोगुण ।२७। चेटकविद्याका अभ्यास। शस्त्रविद्या पर मानस मल्लवि-द्याका उल्हास। होवे तो तमोगुण ।२८। लगाऊं स्वगलेमें फांस। करूं जिव्हाछेद या अग्निदिव्य। ऐसे फलार्थ देवसन्निध। बोले वह तमोगुण ।२९। शिरपर अग्निधारण। या ज्योतीसे अंगदहन। या शस्त्रसे देहछेदन। चाहे वह तमोगुण ।३०। देवद्वारमें शिर अर्पण। या पर्वतसे देह लोटन। लटकावे द्वारमें देह अधोमुख। वह तमोगुण ।३१-३२। निराहार उपोषण। पंचाग्नि धूम्रपान। गाड़े भूमीमें स्वदेह। वह तमोगुण ।३३। सकाम करे अनु-ष्ठान। या तो वायुनिरोधन। अथवा धरे जो मौन। वह तमोगुण ।३४। बढावे नाखून और केश। रखे सतत उर्ध्वहस्त। करे अखण्ड भूमिशयन। वह तमोगुण ।३५। नाना निग्रह-पीड़ा। नाना देह दुःख आपदा। देखते ही देवमूर्ति तोड़ना। चाहे वो तमोगुण ।३६। निंदा करे जो देवकी। वह आशाबद्ध अघोरी। धरे न जो संतसंग कभी। वो तमो-गुण ।३७। ऐसा है यह तमोगुण। जो पतनका कारण। किन्तु त्यागार्थ निरूपण। किया है मैंने ।३८-३९। कृत कर्मोंका फल। प्राप्त होगा ही सकल। जन्म है दुःखका मूल। टूट न जाय कदापि ।४०। करना चाहो जन्मखण्डण। तो धरो सत्वगुण। उसका ही निरूपण। करूं अगले समास ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे तमोगुणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

कथन किया तमोगुण। जो दुःखदायक दारुण। अब सुनिए सत्वगुण। परम दुर्लभ जो।१। जो है भजन-आधार। योगियोंका अधिष्ठान। जिससे नाशे संसार। दुःखमूल जो।२। जिससे होवे गति उत्तम। मिले मार्ग ईश्वर-धाम। और भी मिले मोक्ष। सायोज्यता नाम।३। है जो आश्रय भक्तोंका। या जो भवार्णवमें भरोसा। या जो मोक्ष-लक्ष्मीकी दशा। वह सत्वगुण।४। परमार्थका जो मण्डण। जो महंतोंका भूषण। रज-तमोंका खंडण। करे तो सत्वगुण।५। जो सुखकारी परम। जो आनन्दकी लहर। जो जन्ममृत्यु-निवारण। करे तो सत्वगुण।६। जो अज्ञानका अंत। पुण्यका जो मूलपीठ। जिससे मिल जाय पंथ। परलोकका।७। ऐसा जो सत्वगुण। देहमें होते ही प्रकट। तब होवे क्रियाका लक्षण। इसीप्रकार।८। ईशप्रेम अधिकाधिक। प्रपंच संपादन लौकिक। सदा सन्निध विवेक। वो सत्वगुण।९। करे संसार-दुखका विसर। बतावे विमल भक्तिमार्ग। भजनक्रियाका जनक। वो सत्वगुण।१०। लगे परमार्थ बहु प्रिय। प्रेमयुक्त भावार्थ। तत्पर परोपकार्थ। वो सत्वगुण।११। स्नानसंध्या पुण्यशील। अभ्यंतर अति निर्मल। शरीर वस्त्र सोज्वल। वो सत्वगुण।१२। यजन और याजन। अध्ययन और अध्यापन। करे करावे दानपुण्य। वो सत्वगुण।१३। हरिकथा निरूपण। सुने जो प्रेम-पूर्ण। क्रिया होवे शुद्ध। वो सत्वगुण।१४। अश्वदान गजदान। गोदान भूमिदान। नाना रत्नोंका दान। करे वो सत्वगुण।१५। धनदान वस्त्रदान। अन्नदान उदकदान। करे ब्राह्मणसंतर्पण। वो सत्वगुण।१६। कार्तिकस्नान माघस्नान। दानार्थ व्रत उद्यापन। तीर्थादि उपोषण निःकाम। करे वो सत्व गुण।१७। सहस्त्र भोजन लक्ष भोजन। विविध प्रकारके दान। करे सकाम रजोगुण। सत्वगुण तो निःकाम।१८। तिर्थस्थानमें भूमि-दान। सरोवर वपी निर्माण। बांधे देवालय-शिखर। वो सत्वगुण।१९। वृंदावन धर्म-शाला। पावडिया दीपमाला। अश्वत्थपार बांधना। करे सत्वगुण।२०। बनावे वन उप-वन। उनमें पुष्पवाटिका जीवन। जिससे संतोष तापस-मन। करे वो सत्वगुण।२१। संध्यामठ तलघर। घाट बांधे नदीतीर। देवके लिए भंडारगृह। बांधे वो सत्वगुण।२२। नाना देवके नाना स्थान। वहां नन्दादीप स्थापन। नाना अलंकार अर्पण। करे तो सत्व-गुण।२३। नाना वाद्य सुस्वर। टाळमृदंगादि सुंदर। रखे देवालयमें सज्ज। हरिभजनार्थ।२४-२५। मंडप पालकी सुखासन। छत्र चामरादि ध्वज। रंगमाला तुलसीरोपण। करे वो सत्वगुण।२६-२८। देवके लिऐ नैवेद्य। फलादि अनेक पदार्थ। भावसे करे अर्पण। वो

सत्वगुण ।२९। तिथि महोत्सवपर। होवे जिसका अंतर्भाव। राखे निर्मल देवद्वार। ऐसे करे दास्यत्व ।३०-३१। संसारमें जो महाकृत्य। छोड़ दे करे देवदर्शन। गंधपरिमलादि साहित्य। ला दे अतितत्पर ।३२-३४। बडप्पन छोडके दूर। खड़ा रहे देवद्वार। नीच सेवाका अंगीकार। करे भक्तिके कारण ।३५। देवप्रीत्यर्थ उपोषण। वर्जे तांबूल भक्षण। नित्य नेम जपध्यान। करे वो सत्वगुण ।३६। शब्द न बोले कठिण। अमर्याद ना आचरण। जिससे संतुष्ट योगीजन। वह सत्वगुण ।३७। निराभिमान निःकाम। स्वयं करे हरि-कीर्तन। आवे स्वेद रोमांचस्फुरण। वो सत्वगुण ।३८। करे मनमें देवध्यान। उससे हुवे सजल नयन। देहभावका विस्मरण। वो सत्वगुण ।३९। हरिकथामें इतनी प्रीति। हो न सके जिसमें विकृति। बढत बढत बढ़े भक्ति। वह सत्वगुण ।४०। बजावे ताली मुखमें नाम। नाचत गावे प्रभुगुणगान। शिरपर संतचरण धूल। धरे वो सत्वगुण ।४१। नासे देहाभिमान। आवे वैराग्य प्रबल। माया मिथ्या ऐसे ज्ञान। होवे तो सत्वगुण ।४२। अब कुछ करूं उपाय। जिससे टूटे संसारपाश। ऐसी वासना आवे हृदय। तो सत्वगुण ।४३। हुवा संसारमें उद्विग्न मन। अब मैं करूं ईशभजन। ऐसे उठे मनमें ज्ञान। तो सत्वगुण ।४४। हो जभी आश्रमस्थ। वर्ते नित्यनियम अत्यादर। प्रीति रामचरणोंपर। वो सत्वगुण ।४५। लगे न किसीमेंभी रुचि। परमार्थमें अत्यंत रति। आघातमें धरे धृति। वह सत्वगुण ।४६। सर्वकाल उदासीन। भोगजातसे विन्मुख। स्मरण करे भगवभ्दजन। वह सत्वगुण ।४७। विषयोंमें न लगे चित्त। मनमें सदा भगवन्त। मनमें ऐसा है दृढ भावार्थ। वह सत्वगुण ।४८। कहेंगे हुवा है वो विकृत। तो भी प्रेम करे अधिक। बनै निश्चय अधिक दृढ। वो सत्वगुण ।४९। स्फुरे स्फूर्ति अभ्यंतर। सस्वरूपमें भरे तर्क। दुष्ट संदेहका नाश। करे सत्वगुण ।५०। केवल परमार्थ कारण। करूंगा देह रक्षण। ऐसे वांछता जिसका मन। वो सत्वगुण ।५१। शांति क्षमा और दया। शक्त्यनुसार देवे सदा। घरमें हो आपदा। न जाय कोई विन्मुख ।५२-५५। जीत ली जिसने रसना। तृप्त जिसकी वासना। नाहीं किसीकी कामना। वो सत्वगुण ।५६। होगा होना वैसा होत। हुवा प्रपंचमें आघात। तो भी अवि-चल जिसका चित्त। वो सत्वगुण ।५७। भगवन्त कारण जिसने केवल। छोड़ दिया सर्व सुख। देहका भी होगा जो हित। वो सत्वगुण ।५८। वासना धावे विषय सुखार्थ। तो भी विचल नाहीं चित्त। धरे जो दृढ धारिष्ट। वो सत्वगुण ।५९। देह हो व्याधिग्रस्त। या क्षुधा तृषासे त्रस्त। तो भी करे ईशचिंतन। वह सत्वगुण ।६०। श्रवण और मनन। निजध्यास समाधान। हुवा शुद्ध आत्मज्ञान। वो सत्वगुण ।६१। नाहीं जिसको अहंकार। नैराश्यता जिसका अलंकार। है जो सदा कृपावन्त। वो सत्वगुण ।६२। सभीके साथ नम्र वचन।

मर्यादाशील वर्तन। करे संतुष्ट सर्व जन। वह सत्वगुण।६३। सभीके साथ आर्जव। नाहीं अणुमात्र विरोध। करे आमरण परोपकार। वह सत्वगुण।६४। स्वकार्यपूर्तिकी अपेक्षा। परकार्यसिद्धिकी करे चिंता। मरणोत्तर कीर्तीकी वांछा। धरे तो सत्वगुण।६५। दूसरोंके दोषगुण। जानते हुवे भी पूर्ण। राखे समुद्रसमान। अंतःकरणमें।६६। सहे नीच उत्तर। देवे नाहीं प्रत्योतर। आया क्रोध करे संवर। वो सत्वगुण।६७। बिना दोष या अन्याय। करते पीडा बहुत लोग। तो भी सहन करे चित्त। वो सत्वगुण।६८। शरीर कष्ट करते करते। निंदक दुर्जन जो जो होते। उनपर उपकार करे। वो सत्वगुण।६९। धावे चारों ओर मन। तो भी करे मनःसंयम। और करे इन्द्रियदमन। वो सत्वगुण।७०। उत्तम-क्रियाका आचरण। अधम क्रियाका करे त्याग। चले सदा भक्ति-पंथ। वो सत्वगुण।७१। लगे अच्छा प्रातःस्नान। अच्छा लगे पुराणश्रवण। करे मंत्रोका देवार्चन। वो सत्वगुण।७२। पर्वकालमें सादर। वसंतपूजादि में तत्पर। जयंत्यादि उत्सव अपार। करे प्रेमभर।७३। मरे कोई परदेशीं नर। तो उसका अंत्यसंस्कार। कर्त्तव्यबुद्धीसे करे सत्वर। वो सत्व-गुण।७४। कोई दूसरे को ताड़न। करे तो उसका निवारण। अथवा करे बंधनमुक्त। वो सत्व-गुण।७५। लक्षसंख्या शिवलिंग। करके करे अभिषेक। नामस्मरणमें विश्वास। धरे तो सत्व-गुण।७६। होतेही संतदर्शन। प्रेमसे भरे अंतःकारण। भावपूर्ण करे नमन। वो सत्वगुण।७७। होवे संतकृपा जिसपर। हुवा उद्धार उसका वंश। वही ईश्वरका अंश। सत्वगुणरूपसे।७८। बतावे जनको सन्मार्ग। करना कैसे हरिभजन। अज्ञानीको सिखावे ज्ञान। वो सत्व-गुण।७९। ईशपूजा साहित्य। माला आसन वसन। राखे निर्मल पवित्र। वो सत्वगुण।८२। परपीडासे जो दुःखित। परसंतोषसे जिसे सुख। वैराग्यदर्शनसे होवे हर्ष। तो सत्व-गुण।८३। परभूषण माने स्वभूषण। परदूषण माने स्वदूषण। परदुःखसे होवे दुःख। वो सत्वगुण।८४। कहना क्या अब बहुत। देवधर्ममें जिसका चित्त। भजे कामनारहित। वो सत्वगुण।८५। ऐसा यह सत्वगुण। संसारसागर–तारक। इसीसे आवे विवेक। ज्ञान-मार्गका।८६। सत्वगुणसे भगवद्भक्ति। सत्वगुणसे ज्ञानप्राप्ति। सत्वगुणसे सायोज्यमुक्ति। मिल जाय सहज।८७। ऐसी सत्वगुणकी स्थिति। कही मैंने यथामति। अब श्रोता सावध बुद्धि। दीजिए अवधान।८८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सत्वगुणानाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए सद्विद्यालक्षण। करो विचार सावधान। जिससे आवे शुद्ध परम। स्व-देहमें वहीं ।१-२। भाविक सात्विक प्रेमल। शान्ति क्षमा दयाशील। लीन तत्पर केवल। अमृतवचनी ।३। परम सुंदर और चतुर। परम सबल और धीर। परम संपन्न और उदार। अतिशय ।४। परम ज्ञाता और भक्त। महा पण्डित और विरक्त। महातपस्वी और शान्त। अतिशय ।५। वक्ता और नैराश्यता। सर्वत्र और सादरता। श्रेष्ठ और नम्रता। सभीके साथ ।६। राजा और धार्मिक। शूर और साविवेक। तरुण और नियमबद्ध। अतिशय ।७। वृद्ध राजा और कुलाचरी। युक्तहारी निर्विकारी। धन्वंतरी परोपकारी। यशदायक ।८। कार्यकर्त्ता और निरभिमान। गायक और वैष्णवजन। वैंभव और भगवद्भजन। करे अत्यादरसे ।९। तत्वज्ञ और उदासीन। बहुश्रुत और सज्जन। मंत्री और बहुगुण। नीतिवन्त ।१०। साधु पवित्र पुण्यशील। अंतरशुद्ध धर्मशील। कर्मनिष्ठ और निर्मल। निर्लोभी अनुतापी ।११। भाव भक्ति परमार्थप्रीति। सन्मार्ग सत्क्रिया धारणा धृति। श्रुति स्मृति लीलायुक्ति। स्तुति मति-परिक्षा ।१२। दक्ष धूर्त योग्य तार्किक। सत्यसाहित्य नेमक भेदक। कुशल चपल चमत्कारिक। नाना प्रकारसे ।१३। आदर सन्मान तारतम्य जाने। प्रयोग समय प्रसंग जाने। कार्यकारण चिन्ह जाने। विचक्षण वक्ता ।१४। सावध सोक्षेपी साधक। आगमनिगमशोधक। ज्ञान विज्ञानबोधक। निश्चयात्मक ।१५। पुरश्चरणी तीर्थवासी। दृढव्रती कायाक्लेशी। उपासक और निग्रही। सद्विद्या सेवक ।१६। सत्यवचनी शुभवचनी। कोमलवचनी एकवचनी। निश्चयवचनी सौख्य-वचनी। सर्वकाल ।१७। वासनातृप्त गंभीर योगी। भव्य सुप्रन्न वीतरागी। सौम्य सात्विक शुद्धमार्गी। निष्कपटी निर्व्यसनी ।१८। संगीतज्ञ गुणग्राही। अनापेक्षी लोक-संग्रही। सर्वजनसख्यकारी। आर्जवसहित ।१९। द्रव्यशुद्ध दाराशुद्ध। न्यायशुद्ध अंतर-शुद्ध। प्रवृत्तिशुद्ध निवृत्तिशुद्ध। सवृशुद्ध निःसंग ।२०। सन्मित्र परहितकारी। मधुरवाची परशोकहारी। सामर्थ्यवथ रक्षणकारी। करे पुरुषार्थ जगमित्र ।२१। वक्ता विशाल संशय-छेदक। श्रोता भी ज्ञानबोधक। जाने सकल शब्दार्थ। कथानिरूपण ।२२। विवादरहित संवादी। संगरहित निरूपाधी। दुराशारहित अक्रोधी। निर्दोषी निर्मत्सरी ।२३। विमलज्ञानी निश्चयात्मक। समाधानी और भजक। होते हुए भी सिद्ध। करे साधन ।२४। सुखरूप संतोषरूप। आनन्दरूप हास्यरूप। ऐक्यरूप आत्मरूप। प्राणीमात्र सर्व ।२५। भाग्यवन्त जयवन्त। रूपवन्त गुणवन्त। आचारवन्त क्रियावन्त। विचारवन्त ।२६।

यशवन्त कीर्तिवन्त। शक्तिवन्त सामर्थ्यवन्त। वीर्यवन्त वरदवन्त। सत्यवन्त सुकृती।२७। विद्यावन्त कलावन्त। लक्ष्मीवन्त लक्षणवन्त। कुलवन्त शुचिष्मन्त। बलवन्त दयालु।२८। युक्तिवन्त गुणश्रेष्ठ। बुद्धिवन्त बहुधारिष्ट। दीक्षावन्त सदा संतुष्ट। निस्पृह वीतरागी।२९। ऐसे ऐसे उत्तमगुण। ये ही सद्विद्याके लक्षण। अभ्यासार्थ निरूपण। अल्पमात्र किया कथन।३०। रूपलावण्य न अभ्यासजन्य। सहज गुणों पर न उपाय। इसीलिए सद्विद्याके गुण। ग्रहण करो अभ्याससे।३१। है ऐसी सद्विद्या। सभीके लिए शुभदा। विरक्तको अभ्यास करना चाहिए अवश्य।३२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सद्विद्यनिरूपणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए विरक्तलक्षण। जिससे आवे अंगमें सामर्थ्य। और सत्कीर्ति यथार्थ। महिमा योगियोंकी।१-२। जिससे बढे परमार्थ। सद्विद्या सुख आनन्द। और भाग्यश्री मोक्षसहित। पूर्णकामा सरस्वती।३-५। विवेक अध्यात्म धारिष्ट। इंद्रियदमन और भजन। अनुभवजन्य ब्रह्मज्ञान। प्रकट होवे।६-८। सात्क्रिया शान्ति भक्ति। नैराश्यता पूर्वक निवृत्ति। धर्मस्थापना क्षमा नीति। संभाल करे सादर।९-११। राखे सन्निध सन्मार्ग। परमार्थ पोषक सत्वगुण। करे भक्तजनोंका संभाल। शरणागतों का आधार।१२-१३। होगा विरक्त परमदक्ष। होगा वो अंतर साक्ष। जुडावे परमार्थ अखण्ड। वक्तृत्व सामर्थ्यसे।१४-१५। भक्तिवैभव उपासना मार्ग। बढावे हरिकीर्तन निरूपण। जिससे होवे निंदक दुर्जन। अपने आप लज्जित।१६-१८। करे सभीपर उपकार। देवालयोंका जीर्णोद्धार। पुण्यमार्गका विस्तार। करे विरक्त पुरुष।१९। स्नान सन्ध्या जप ध्यान। तीर्थयात्रा भगवभ्दजन। नित्यनेम पवित्रपूर्ण। अंतरशुद्ध विरक्त।२०। धरे दृढ निश्चय। करे सुखरूप संसार। उद्धार करे विश्वजन। संसर्गमात्रसे।२१। है धीर उदार तत्पर। करे निरूपण सावधान। संत योगी सज्जनसाथ। जोड़े मैत्री।२२-२४। बढावे नाना उपाधि। किन्तु ना छोड़े उदासवृत्ति। राखे न कोई दुर्बुद्धि। किसीके साथ।२६। जब है वो अंतरनिष्ठ। तो कैसे होवे क्रियाभ्रष्ट। होगा नाहीं कनिष्ठ। या पराधीन।२७। जाते समय प्रसंग। जाने सर्व सर्वत्र। जाने कैसे कौन कौन। अभ्यासपूर्वक सर्वजन।२८-२९। हरिकथा निरूपण। सगुणभजन ब्रह्मज्ञान। पिण्डज्ञान तत्वज्ञान। जाने विरक्त

सर्व ही ।३०। कर्ममार्ग उपासनामार्ग । ज्ञानमार्ग सिद्धांतमार्ग । प्रवृत्तिमार्ग निवृत्तिमार्ग । जाने वो सर्वही ।३१। प्रेमळ स्थिति उदास स्थिति । योगस्थिति ध्यानस्थिति । विदेह-स्थिति सहजस्थिति । जानता है विरक्त ।३२। ध्वनि लक्ष मुद्रा आसन । मंत्र यंत्र विधि विधान । नाना मतमतांतरदर्शन । छोडे परीक्षा करके ।३३। होना चाहे जगमित्र । चाहे होना स्वतंत्र । होना चाहे हरिभक्त । नित्यमुक्त अलिप्त ।३४-३५। शास्त्राभ्यास के आधार । करे पाखण्डमत खण्डण । जिससे मिले शुद्धमार्ग । मुमुक्षु जनको ।३६-३७। करे निंदकको नमस्कार । होवे साधक तो देवे बोध । जिससे बद्धजन भी जागृत । होंगे मोक्षइच्छासे ।३८। उत्तम गुणोंका अंगिकार । अवगुणोंका करे त्याग । जिससे परमार्थपथमें अपाय । हो जाय भंग ।३९। ऐसे उत्तम गुणोंका वर्णन । स्वभावानुसार किया कथन । किन्तु आप हैं सज्जन । चाहे तो लेना ।४०-४१।

इति श्री दासबोवे गुरुशिष्यसंवादे विरक्तलक्षणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

बताया विरक्तलक्षण । जिससे मुर्ख होवे सुलक्षण । सुनिए अब लक्षण । पढतमूर्खोंके ।१-२। बहुश्रुत और वित्पन्न । प्रांजल बोले ब्रह्मज्ञान । दुराशा और अभिमान । धरे पढतमूर्ख ।३। निर्बंधक्रिया प्रतिपादन । सगुणभक्ति-उच्छेदन । निन्दा करे स्वधर्म-साधन । वो पढतमूर्ख ।४। ज्ञानाहंकार कारण । देखे सबमें दूषण । या किसीप्रकार न्यून । वो पढतमूर्ख ।५। शिष्य करे आज्ञाभंग । या उसपर आवे संकट । तो भी करे वाक्प्रहार । वो पढतमूर्ख ।६। रज और तम के कारण । कपटयुक्त अंतःकरण । वैभव देखतेही प्रशंसन । करे वो पढतमूर्ख ।७। बिना पढे समग्र ग्रंथ । व्यर्थ ही देवे दूषण । गुण न देखते, अवगुण । देखे वो पढतमुर्ख ।८। ज्ञानका अभिनिवेश । क्रोध मत्सर अनावर । क्रिया नाहीं शब्दानुरूप । नीतिभ्रष्ट पढतमूर्ख ।९-१०। अधिकार बिना वक्ता । दोषदर्शी विद्वान श्रोता । कठोरवाणी वाचालता । ऐसा वो पढतमूर्ख ।११-१२। दूसरों में देखे दोष । वे ही हैं उसके पास । किन्तु जाने नाहीं स्वमानस । वो पढतमूर्ख ।१३। करते करते अभ्यास । सकल विद्या जाने पूर्ण । जनको न दे समाधान । वो पढतमूर्ख ।१४। ऊर्णतंतुसे गजका बंधन । मधुलोभसे भ्रमरका मरण । वैसा जो प्रपंचमें मग्न । वो पढतमूर्ख ।१५। स्त्रियोंका धरे संग । उनके किए करे निरूपण । निंद्य वस्तुका अंगीकार । करे वो पढतमूर्ख ।१६। जिससे आवे हीनपण । वही दृढ धरे अंतःकरण । न हो देहबुद्धि

मलिन। वो पढतमूर्ख ।१७। माने नाहीं श्रीपति। किन्तु करे जो नरस्तुति। या किसीको भी करे कीर्ति। वो पढतमूर्ख ।१८। स्त्रियोंका अवयव-वर्णन। करे हावभावपूर्ण। विसरे देवको जो मानव। वो पढतमूर्ख ।१९। कोई वैभवके मदसे। जीवमात्रको तुच्छ समझे। पाखण्ड मत का विस्तार करे। वो पढतमूर्ख ।२०। है ध्युत्पन्न वीतरागी। ब्रह्मज्ञानी महायोगी। तो भी बोले भविष्यवाणी। वो पढत मूर्ख ।२१। परगुणोंका होतेही श्रवण। करने लगे उनका मत्सर। देखने लगे गुणोंमें दोष। वो पढतमूर्ख ।२२। नाहीं भक्तिमार्गका ज्ञान। नाहीं वैराग्य नाहीं भजन। साधनबिना ब्रह्मज्ञान। बोले वो पढतमूर्ख ।२३। माने न तीर्थ या क्षेत्र। माने न वेद या शास्त्र। पवित्र कुलमें जो अपवित्र। वो पढतमूर्ख ।२४। आदर हो तो करे सन्मान। न हो योग्य तभी गुणगान। पश्चात करे निन्दा अनादर। वो पढतमूर्ख ।२५। पहले एक पश्चात एक। ऐसा जिसका वर्तन संकेत। बोले एक करे अन्य। वो पढतमूर्ख ।२६। प्रपंचमें अतिसादर। परमार्थमें अनादर। जानबूझ जावे अज्ञानमार्ग। तो पढतमूर्ख ।२७। टाले यथार्थ वचन। करे जीवित पराधीन। तदनुसार बोले वचन। वो पढतमूर्ख ।२८। ऊपरसे ढोग संपादन। अकर्तव्य करे वर्तन। सन्मार्ग छोड़ होवे मत्त। वो पढतमूर्ख ।२९। रातदिन करे श्रवण। तथापि छोड़े ना अवगुण। जाने न अपना हित। वो एक पढतमूर्ख ।३०। आगये निरूपण-स्थान। विख्यात संत महंत। वहां बोले जो वाणी क्षुद्र। वो पढतमूर्ख ।३१। हुवा शिष्य अनाधिकार। गुर्वाज्ञा करे अनादर। उसीका धरे विश्वास। वो पढतमूर्ख ।३२। बैठा है श्रवणार्थ। देह किंचित होता व्यथित। क्रोधसे उठे मनमें क्षोभ। है वह पढतमूर्ख ।३३। आतेही वैभवका पूर। करे जो गुरुका अनादर। गुरुपरंपरा न करे प्रकट। वो पढतमूर्ख ।३४। बोले ज्ञान साधे स्वार्थ। कृपणवत् अर्थ संचय। अर्थ के लिऐ लावे परमार्थ। वो पढतमूर्ख ।३५। बिना वर्तन सिखावे जन। बिना विचार बोले ब्रह्मज्ञान। ऐसा गोसांई पराधीन। है वह पढतमूर्ख ।३६। जिससे भंगे भक्तिमार्ग। जिससे आवे अपने पर न्यून। ऐसे घडे जिससे कर्म। वो पढतमूर्ख ।३७। गया हाथसे प्रपंच। परमार्थका न मिला लेशे। देवब्राह्मणोंका करे द्वेष। वो पढतमूर्ख ।३८। त्यागार्थ। मैंने अवगुण। बताए पढतमूर्खलक्षण। आप श्रोता विचक्षण। न्यून हो तो क्षमस्व ।३९। परम मूर्खोंमें वो मूर्ख। माने जो संसारमें सुख। इस संसारदुःखके सम। नाहीं अन्य दुःख ।४०। उसका ही आगे निरूपण। जन्म दुःखका लक्षण। गर्भवास अति दारुण। कथन मैं करूंगा ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पढतमुर्खलक्षणनाम समास दसवा ॥१०॥

सगुण परीक्षा दशक तीसरा

॥ श्रीराम ॥

जन्म दुखोंका अंकुर । जन्म शोकका सागर । जन्म भयोंका पर्वत । है अटल ।१। जन्म कर्मोंका मूल । जन्म पातकोंकी खान । काल करे पीड़ा दारुण । जन्मभर ।२। जन्म कुविद्याका फल । लोभरूपी कमल सुंदर । किन्तु वो भ्रान्तिरूप पटल । है ज्ञानहीन ।३। जन्म जीवोंका बन्धन । जन्म है मृत्यु का कारण । न समझे क्यों अकारण । फंसावे अनर्थ-जालमें ।४। जन्म विसरावे सुर्वसुख । हो जाय चिंताका आगर । वासनाओंका विस्तार । करे जन्म ।५। है डाकिण ममतारूपा । या वह मायाका फेरा । या वह विघ्न क्रोधरूपा । मोक्षमार्गमें ।६-७। जन्म जींवोंका जीवपण । जन्म अहंताका गुण । जन्म साक्षात् विस्मरण । परमात्माका ।८। जन्म विषयसुखलालसा । दुराशारूपी शृंखला । कालमुखमें भासता । ग्रासरूप ।९। है जन्मकाल बहु अशुभ । अति अमंगल उसका उद्‌गम । शरीर तो नर्कका कुण्ड । चर्मव्याप्त ।१०-१४। कुण्ड धोनेसे होवे शुद्ध । धोवो शरीर प्रतिदिन । किन्तु न होगा वो मलहीन । दुर्गंधयुक्त जो ।१५। कैसा देह अस्थिपंजर । नसों-नाडियोंका आधार । भरा है मेद मांस रुधिर । मल व्याधिकी कोठडी ।१६-१८। सर्वांगमें शिरभूषण । वहां है नेत्रकर्णयुक्त मुख । उसको कहते चंद्र समान । जभीं श्लेष्मादियुक्त ।१९-२८। इस कारागृहमें वास । नवमास तक होवे दुःख । होवे नवद्वार निरोध । बिना वायु ।२९। माता खावे कटुतीक्ष्णअन्न । गर्भ तो त्वचारहित । उसे कैसे हो सहन । बोले देवको वहींसे ।३०-३३। छुडावो मुझे चक्रहस्त । ऐसे बोले आर्तवचन । करूंगा मैं मेरा हित । आपका स्मरण ।३४-३५। होवे कुछ पूर्वपुण्य । तो बाहर आवे सुगम । न हो तो जाय मृत्युपंथ । माताके भी साथ ।३६-४६। गर्भस्थ बोले सोहं सोहं । बाहर आतेहीं बोले कोहं । दुखका हुवा विस्मरण । ईश्वरभाव जाते ही ।४७-४८। शून्यकार हुई वृत्ति । आवे न किसीकी स्मृति । मानने लगा अज्ञान भ्रान्ति । सुखरूप सर्वथा ।४९। देहतो विकृतियुक्त । सुखदुःखसे मिश्रित । ऐस मायाजालमें आसक्त । हुवा है वो अज्ञानी ।५०। होना चाहे कोई मुक्त । तो देवकी जावो शरण । भगवभ्दक्त ही केवल । होगा ज्ञानी विरक्त ।५१-५२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे जन्मदूःखनिरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

संसार एक दुःखमूल। है दुःखरूप अनल। उसीको ही सुखरूप। माने जग जन्मसे ही ।१। गर्भवासका दुःख। विसर गया बालक। बढने लगा उसका देह। दिवस दिवस ।२ बालपनमें त्वचा कोमल। दुःखसे होय विव्हल। किन्तु वाचाहीन उसी काल। करे सहन अतिदुःख ।३। क्षुधा-तृषासे पीडित। या हो अन्यकारण व्यथित। समझे न माता भी कारण। जिससे होगी दुःखित ।४-६। नाना आघात अपघात। अंधारमें या अग्निसंग। हो जाय अवयव हीन। तो दुःखही अनिवार ।७-८। हो न पूर्वपुण्यसे ऐसे। तो माताको देखे प्रेमसे। माता बिना रुदन करे। दुखसे बहु ।९-१०। न उसको कोई माता समान। ना लक्ष्मी ना ब्रह्मादि देव। वो न सहे मातावियोग। माता उसकी सर्वस्व ।११-१३। जब क्वचित् दूर करे माता। या हो वह किंचित् कुपिता। तोभी मातापासही तत्वता। जाये वो निर्भय ।१४। ऐसी माता परमप्रिय। दुर्दैवसे जाय मृत्युपंथ। तो पर्वतप्राय महान। होवे दुःख ।१५-१६। माता माता ऐसे बोलत। रुदन करे आक्रंदत। आयेगी आयेगी ऐसे चिंतित। सहे काल दुःखरूप ।१७। स्त्री कोई आ जाय। माने आ गई माता मम। बहु आशासे मुखकी ओर। देखे तो निराशा ।१८। ऐसे अहर्निश दुःख दारुण। उससे देह ही होगया क्षीण। मातृहीन कोमल बाल। दिखे अत्यंत दीनरूप ।१९। या सुदैवसे किसीकी माय। रह जायेगी जीवित। तो बालही आनंदरूप। वर्धता है अनुदिन ।२०। बाप सिखावे पेटका धन्धा। या कोई संसारकी विद्या। किन्तु खेलमग्न होनेसे सदा। स्मरे ना मायबाप ।२१-२४। खेलते खेलते अकस्मात्। फूट गये चक्षु या दन्त। टूट गया पांव या हस्त। ऐसे आया दुर्दैव ।२५। उदरशूल या ज्वर। अनेक व्याधिके प्रकार। भूतबाधा ब्रह्मसंमंध। ग्रहपीडा चेटक ।२६-३०। ऐसे ऐसे कर्म भोग। आवे साक्षात् रोगरूप। उन्हींसे देहरक्षणार्थ। आ गये वैद्य पंचाक्षरी ।३१। एक कहे यह न रहेगा। एक कहे यह न मरेगा। एक कहे कौन क्या करेगा। भोगना पडे पापफल ।३२। विसर गया गर्भदुःख। किन्तु भोगार्थ आया त्रिविध-ताप। तो भी भाग्यवशात सुखरूप। हुवा रोग मुक्त ।३३। अनंतर लौकिकार्थ। और उदरभरणार्थ। की विद्या संपादन। किया बहु प्रयत्न ।३४। कुल गोत्र-नामरक्षण। करेगा अब तरुण। ऐसे बोलते ग्रामजन। हुवा वो विवाह योग्य ।३५। देखते ही वधूसौंदर्य। और बरातका वैभव। पलट गया मनका रंग। विसर गया मावापको ।३६। स्त्री देखतेही हर्षित। ना दिखे तो दुःखित। बंधु भगिनीका दर्शन। अप्रयि उसको हो गया ।३७-३९। संबंधपूर्व इतना प्रेम।

BVBSSMV

तदंतर होगा ही असीम। स्त्रीको न देखे एकक्षण। तो हाय उतावला ।४०-४२। ऐसा अविद्या-वेष्ठित नर। कामक्षरसे भूल गया सर्व। ध्यानमें लाये स्त्री मुखकमल। शब्द मृदुमंजुल ।४३। परस्पर नेत्रकटाक्ष। बताते कामसंकेत। वहां कैसा मनोनिग्रह। बढे काम अनावर ।४४। व्यवसाय करे बाहर। मन जाय स्त्रीमंदिर। क्षणक्षण अभ्यंतर। स्मरण होय कामिनीका ।४५। 'आप हो मेरे जीवके जीव'। स्त्री शब्द ऐसे सुनते ही नर। भूल गया जगत सर्व। हरा स्त्रीने चित्त ।४६। इसी प्रकार आयुष्य। स्त्रीकारण गया व्यर्थ। किन्तु छोड़े ना कामिनीप्रेम। मनमें जो गुप्तरूप ।४७-४८। लेवे भार्यापक्ष स्वाभिमान। मांबापको कटुवचन। तिरस्कार करके छोड़े सदन। अलग रहे पत्नीसह ।४९। स्त्रीकारण लज्जाहीन। स्त्री कारण विवेकहीन। स्त्री कारण मित्र स्वजन। छोड़ दिये सर्व ही ।५०-५१। स्त्रीकारण अतिनम्रता। स्त्रीकरण पराधीनता। स्त्रीकारण लोलंगता। बना लोभी धर्महीन ।५२। नाहीं तीर्थ नाहीं स्वधर्म। नाही स्वहित परमार्थ। नाहीं विचारणा शुभाशुभ। स्त्रीको सर्व अर्पण ।५३-५४। स्त्रीकरण छोड़े भक्ति। स्त्रीकारण छोड़े विरक्ति। होती हो यदि सायोज्यमुक्ति। वो भी तुच्छ स्त्रीकारण ।५५-५६। एवं एक स्त्रीकारण। माने ब्रह्मांण्ड भी अल्पप्रमाण। तो अकस्मात् आया दैव दारुण। मर गयी भार्या ।५७-५८। महत्घात होतेही अपार। बढा मनमें शोकसागर। कहे मेरा डूब गया संसार। अब मैं त्यागूं सर्व ।५९-६०। छोड़े नाहीं स्त्रीप्रेम। पीटे छाती शोकग्रस्त। हुवा श्रमिष्ठ लज्जाहीन। आक्रंदे दुःखसे ।६१-६२। क्वचित वैराग्यकारण। बने जोगी जाय कानन। अथवा क्वचित् कालान्तर। उपशम होवे शोकका ।६३। विचार करे फिर मानस। क्यों करूं मैं वनवास। इससे श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम। करुं मैं विवाह पुनः ।६४। हो गया द्वितीय संबंध। हुवा पुनरपि आनन्दमग्न। सुनिए आगे श्रोताजन। कहानी संसारकी ।६५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणपरीक्षानाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

होतेही द्वितीय संबंध। विसर गया पूर्व दुःख। मानने लगा बहुत सुख। संसारमें ही ।१। हुवा अत्यंत कृपण। पेट भर खाये न अन्न। कौड़ी कारण विव्हल प्राण। कैसी होवे सद्वासना ।२-३। न करे न करावे धर्म। जाने न तीर्थ ना व्रत। या न अतिथि अभ्यागत। साधुनिन्दा सर्वकाल ।४-६। देव-भक्तोंका उच्छेद। निष्ठुर शब्दसे करे खेद।

892

अनीतिका अवलंब। करे गर्विष्ट मदांध ।७–१०। न करे स्नान न करे संध्या। माने वो कैसी हरिकथा। वित्तसंचयार्थ सर्वथा। करे विश्‍वासघात ।११। यौवनमदसे अति उन्मत्त। अकर्तव्य करे महापाप। हो पर-युवती या गोत्रज। करे संग दुरात्मा ।१२–१५। राजदंड हुवा तो भी निर्लज्ज। करे पुनः पुनः पाप अमाप। तो शरीरमें रोग अकस्मात्। हुवा राजयक्ष्मा ।१७-१८। देह हुवा अत्यंत क्षीण। तारुण्यमें ही व्याथाधीन। दुर्गंधयुक्त हुवा घ्राण। कुलक्षण सर्वांग ।१९-२०। शक्तिहीन कांपे अंग। हस्तपादादि व्यंग-भंग। पड़ गये कृमी सर्वांग। आयी प्रेतकला देहको ।२१-२२। देखते ही लोक थूक जाते। हाय हाय करके प्राणी आक्राशे। तो वित्त ही सर्व हरण हुवे। ऐसा दुर्दैव विचीत्र ।२३-२६। जहां करे मलमूत्र। वहां ही पड़ा रहे असहाय। बोले मनमें 'अब मरण। देवो मुझे देवराय' ।२७। दिया वैद्यने दिव्यौषध। हो गया व्याधीका उपशम। पापसामग्री ही साथ साथ। हुई सर्व अशेष ।२८। मरते मरते बच गया। मानो है पुनर्जन्म हुवा। व्यवहार भी करने लगा। लोगोंके साथ ।२९। पुनरपि स्त्रीसहित। संसारमें धरे लोभ। मिला पुनः वैभव वित्त। किन्तु सन्तान नाहीं ।३०–३१। वंध्या स्त्री निपुत्र पुरुष। वहां कैसा संतोष इसीलिए व्रत उपवास। करने लगे पतिपत्नि ।३२-३३। देवदेवीको नाना भोग। पूजा-अर्चादि जपतप। ऐसे करते करते कुलदैवत। हुवा प्रसन्न दैववशात् ।३४। किन्तु हुवा जो अपत्य। उसको ही आया मृत्य। ऐसे होते हैं पूर्वपाप। घात करे अकस्मात् ।३५-३६। पुनरपि हुवे अपत्यहीन। किमर्थ अब द्रव्यार्जन। क्यों हो गया कुलक्षय। बोलते एसे ।३७-३९। पुनरपि करत आराधना। कुलस्वामिनी और दैवत नाना। गुंसाई ब्राह्मणको दान देना पुत्रलोभके कारण ।४०-४४। नाना मंत्रतंत्र विधान। नाना दोष पिशाचसाधन। फलित वृक्षोंका दहन। पुत्रलोभकारण ।४५-४६। पुनः प्रसन्न कुलदैवत। हुवे पतिपत्नि आनंदित आगे कहानी का विस्तार। सुनिए श्रोताजन ।४७-४८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणपरीक्षानाम समास तिसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

अपत्यें हो गयी अनेक। तो लक्ष्मी गई बाहर। न खानेको पेटभर। मांगते भीख घरघर ।१। दिन दिन बढता रहा खर्च। कम हुवा प्राप्ति-मान। हो गई कन्या उपवर। विवाहार्थ नाहीं धन ।२-३। मायबाप थे संपन्न। था कुलका सन्मान। आगयी अवस्था विपन्न। कैसें करूं अब ।४-८। लिया था लोगोंसे ऋण। दिया त मूल न ब्याज।

तब कौन देगा मुझे द्रव्य । कन्या-पुत्र–विवाहार्थ ।९-१०। बैल भैंस और चीज । बेच दिया राखी लाज । लोक बोलते स्तुतिपर । धन्य पितासम है पुत्र ।११-१४। ऐसे दंभ लौकिकार्थ । करके गया देशान्तर । द्रव्यार्जन कारण किया यत्न । कर ली सेवा नीच अति ।१५-१६। पुनः दो वर्षांनंतर । आगया स्वदेश स्वगृह । तो हुवे स्त्री पुत्रादि हर्षित । क्योंकि वे थे बुभुक्षित ।१७-२३। आनन्दमें गये चार दिन । सबने खाया-पिया उत्तम । किन्तु तदनंतर हुवे चिंतामग्न । उदरभरणार्थ सर्वही ।२४। मनमें इच्छिती स्त्रीपुत्र । पिताका विदेश जाना है उचित । द्रव्यार्जन करके अन्न-वस्त्र । देगा हम सबको ही ।२५। हैं संसारमें सब सुखस्वार्थी । क्यों न हो स्त्री प्रीतीकी । कौन देखे दूसरों की कष्टस्थिति । ऐसो है वास्तविकता ।२६। तो सुमुहूर्त देखके सत्वर । हो गया सिद्ध गमनार्थ नर । अवलोके स्त्रीमुख सुंदर । हुवा कण्ठ सद्‌गदित ।२७–३१। धीर धरके हुवा सवार । किन्तु प्रेमभरसे बारंबार । मुड़ मुड़ देखे पुत्रकलत्र । होवे न सहन वियोग ।३२-३३। गांव रह गया पीछे । चित्त भ्रमें संसार दुःखसे । तो माता के प्रेम स्मरे । अकस्मात् ।३४-३५। पुत्र वैभवहीन भिखारी । माता उसका अंगीकार करी । पुत्रदुःखसे होवे दुःखी । है माता अनुपम ।३६-३८। यदि वो डाकिण तो भी माता । क्या करना है सहस्र जाया । किन्तु व्यर्थ ही मैं भूला । मकरध्वज कारण ।३९। है ऐसा रतिसुख काम । जिससे अंतर पड़े स्वजन । प्रिय मित्रभी लगते अप्रिय । सुखमें ही मग्न कामी ।४०-४३। इसीलिये धन्य वो प्रपंची जन । जिनको प्रिय मांबाप-भजन । किन्तु अन्य सर्व कामाधीन । भूल गये देवको ।४४-४७। ऐसे सोचते सोचते नर । करे पुत्रकलत्र चिंतन । प्रेमभरसे तारस्वर रुदन । हुवा पुनः मार्गस्थ ।४८-५४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणपरीक्षानाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

रहा विदेशमें दो चार वर्ष । बहुत किया द्रव्यार्जन । पुनरपि आया स्वदेश ग्राम । वहां तो था अकाल ।१-३। दैन्यरूप कन्यापुत्र । देखतेही हुवा दुःखित । तो आ गये सब बुभुक्षित । अन्न दो अन्न दो बोलत ।४-७। ले गये गठडी सत्वर । हाथमें आतेही भक्षण । किन्तु अनशन या अजीर्ण । कारण हुवा मृत्युका ।८-९। एक या दो अपत्य । सिवा सब गये मृत्युपथ । कन्यापुत्र मातारहित । भार्यारिहित वो नर ।१०। हुवा देशमें सुकाल । किंतु

स्वयं करना अन्न पाक। इसका हुवा बहु त्रास। किया उसने तृतीय विवाह ।११-१३। पुनरपि गया परदेश। द्रव्यार्जन के कारण। किन्तु आतेही वापस। देखा घरमें कलह ।१४। स्त्री युवति ऋतुदर्शन। भरतार वृद्ध शक्तिहीन। पुत्र कामुक विवेकहीन। घरमें नाहीं किमपि सुख ।१५। कलहनिवारणार्थ। आ गये लोगोंमें से पंच। उन्होंने किया बाटा-निवाडा। मान्य न हुवा पुत्रोंको ।१६-१८। पिता को ताडन करते पुत्र। माताको हुवा अत्यंत दुःख। लोग देखते साश्चर्य। मिटा दिया कलह ।१९-२२। किया मातापिताको बाहर। बांध दी झोंपडी एक और। रहने लगे स्त्रीपुरुष। तरुणी और वृद्ध ।२३-२५। उसमेंहीं मिले आनन्द। विसर गया सर्व दुःख। तो आ गया अकस्मात्। परचक्र ।२६-२७। ले गये कांताको बलपूर्वक। किया उसको जाती भ्रष्ट। ऐसे सुनतेही भूमीपर। गिरा अति दुःखसे ।२८-३०। लोटे सव्य अपसव्य। नयनोंसे बहे अश्रुस्राव। चित्त हो गया दग्ध। दुःखानलसे ।३१। नाहीं कान्ता नाहीं द्रव्य। नाहीं शक्ति नाहीं स्थान। नाहीं मुझ वृद्धको अब। तुम सिवा हे देव ।३२-३४। पहले न किया देवपूजन। भूल गया वैभवसे मानव। वृद्ध हुवा तब अनुताप। करने से क्या लाभ ।३५। सूख गया सर्व अंग। वात पित्त करे जोर। कफसे भर गया कण्ठ। बोल न सके शब्द वाचा ।३६। मुख नाकसे बहे श्लेष्मा। अंग कांपे थर्थरा। नेत्र देख सके ना सर्वथा। श्रोत्र श्रवणार्थ असमर्थ ।३७-४०। मुख हुवा दंतहीन। पांव हुवे शक्तिहीन। क्षुधा तृषा होत ना सहन। खावे तो भी अजीर्ण ।४१-४३। विष्टा मूत्र बमन शयन। करे एक ही स्थान। अत्थंत दुर्गंधसे जन। आते नाहीं सन्निध ।४४। नाना दुःख नाना व्याधि। वृद्धपणमें न स्थिर बुद्धि। तो भी वृद्धि आयुष्यकी। इच्छित अनावर ।४५। हुवे शुभ्र सर्व केश। शिथिल हुवे देह अवयव। छोड़ गये स्वजन मित्र। बोले क्यों न मरे यह ।४६-४७। किया जिनका पालन पोषण। वही हुवे विन्मुख जन। ऐसा मृत्युकाल विषम। आ गया बहु समीष ।४८। गया तारुण्यका बल। गया संसार-उत्साह। गये चारो ओर स्वजन। शरीर और संपत्ति ।४९। स्वार्थसुखके कारण। कष्ट किये आमरण। किन्तु नाहीं किंचित् भय। यमयातनाका ।५०-५१। जन्म सर्वथा दुःखमूल। या वो दुखरूप अनल। इसीलिए इसीकाल। करो तुम्हारा हित ।५२। है वृद्ध-पण दुःख दारुण। जावो भगवन्तकी शरण। अन्यथा अंतकालमें अनुताप। नाहीं कोई कामका ।५३-५४। अवश्य होगा जन्मान्तर। रहना पड़े मातृ-उदर। संसार चक्र अति दुस्तर। लगा रहेगा सदैव ।५५। सिवा भगवभ्दजन। छूटेना जन्मान्तर। तापत्रयोंका कष्ट। सुनिए आगे ।५६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणपरीक्षानाम समास पाचवा ।।५।।

॥ श्रीराम ॥

तापत्रयसे दग्ध जो नर। संतसंगसे होता है शान्त। जैसे क्षुधातृषाक्रांत। होगा अन्नजीवनसें।१-३। बंदीस्थ हो बेड़ीपार। या पूरग्रस्त पैलपार। या कोई स्वप्नभय दुःखित। हो गया जागृत।४। मरणासन्न को जीवदान। रुग्णोंको आरोग्य प्रदान। वैसे संसारतप्तोंको परमार्थ। देता सुख बहु।५-६। संसार दुःखसे जो दुःखित। त्रिविध तापोंसे जो तप्त। वही है जानो पात्र। परमार्थ हेतु।७-१२। प्रथम कहता हूं आध्यात्मिक। जिससे देहेन्द्रियां प्राण। सुख-दुखसे हैरान। करते हैं जीवमात्रको।१३-१५। निद्रा देहव्याधि विकार। क्षुधा तृषा शैत्य उष्ण। आलस्य भय और दुश्चित। हैं अध्यात्मिक ताप।१६-२८। कर्णदुःख नेत्रदुःख। गर्भांध और नपुंसकत्व। मूकत्व बधिरत्व पागलपन। है सर्व अध्यात्मिक।२९-४१। गर्व संताप मत्सर। कामुकता हेवा तिरस्कार। अवगुण और पाप। हैं ताप अध्यात्मिक।४२-४६। नाना रोग नाना चिन्ता। नाना दुःख नाना आपदा। रहे देह क्षीण सर्वदा। हैं ताप अध्यात्मिक।४७-५४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अध्यात्मिक-ताप निरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

हुवा आध्यात्मिक तापका निरूपण। अब सुनिए आधिभौतिक। है जो भूत-संयोगज। सुखदुःखरूप।१-२। लगे चोट लगे शस्त्र। दंश करे वृश्चिक सर्प। या हो मधुमक्षिकासे भय। या व्याघ्र सिंह सूकरसे।४-८। जलमें डूबा अकस्मात्। ले गया पानीमें मगर। अश्व वृषभ जंबुक खर। इनसें पीडा वो भौतिक।९-१२। वृक्ष भित्ती पर्वतशिखर। गिरे अकस्मात् अंगपर। दिया किसीने विषप्राशन। या शाप चेटक।१३-१५। पड़े पांव अग्निपर। आवे शिला हाथपर। ले जाय किसीको तस्कर। जातिभष्ट करावे अन्य।१६-१९। न कर सके शीतोष्ण सहन। होवे जीवित पराधीन। कर्ण नासिकादि छेदन। औषध अति दारुण।२०-३२। नाना सुंदर मंदिर। नाना रत्नोंके भण्डार। नाना धान्य पशु मानव। होते अग्नीमें भस्म।३३-४४। तस्करादि दुष्ट जन। ले जावे पुत्रकलत्र। करते उनका संहार। धान्य फलोंका मूषक जैसे।४५-५०। न हो मनपसंद संसार। कुरुप कर्कश स्त्री क्रूर। विधवा कन्या मूर्ख पुत्र। नाम इसका आधिभौतिक।५१-५४। भूत

पिशाच-बाधा करे। क्रूर ग्रहोंका भय धरे। कालतिथि नक्षत्र बाधा करे। देखे शकुन अपशकुन ।५५-५८। दुःखस्वप्नसे भयभीत। श्वान रुदनसे शंकित। राजदण्ड के असंख्य प्रकार। हैं सब आधिभौत्तिक ।५९-७८। मनुष्यहानि वित्तहानि। वैभवहानि महत्वहानि। पशुहानि पदार्थहानि। नाम इसका आधिभौत्तिक ।७९। बालवस्थामें मरे माता। तारुण्यमें मरे कान्ता। वृद्धपणमें मरे सुता। है यह आधिभौत्तिक ।८०-८१। दुःख दारिद्र और ऋण। विदेशमें सर्वापहरण। आपदा अकाल और कदान्न। शोक चिन्ता अपमान ।८२-८६। ऐसे ऐसे अपार। दुःख शोकके पर्वत। हैं ये सब प्रकार। आधिभौत्तिक तापके ।८७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आदिभौतिकताप निरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए अब आधिदैविक ताप। है जो शुभाशुभ कर्मज। नाना स्वर्ग–नर्क-भोग-दायक। यमयातना संयुक्त ।१–३। अंगबल द्रव्यबल। मनुष्यबल राजबल। नाना सामर्थ्य-बल। करते उपयोग अकृत्य कारण ।४। आंखे मींचके स्वार्थ बुद्धि। नाना अभिलाष कुबुद्धि। द्रव्य दारा भू हरण करती। अनीतिमार्गसे ।५–६। हुवा वैभवसे उन्मत्त। करे जीवघात कुटुंबघात। करे क्रिया अप्रमाण। इसीलिए यमयातना ।७। हो यदि ग्रामा–धिपति। या वो देशाधिपति। या राजा चक्रवर्ती। तो भी अटल यमयातना ।८-१२। देवाज्ञासे ही यम। करावे नाना यातना भोग। इसीलिए नीतियुक्त वर्तन। करना चाहिए अवश्य ।१३-१५। वेदाज्ञा न माने। हरिभक्ति न करे। उसको यमयातना होवे। यह ताप बहु कठिण ।१६–१८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आधिदैविकतापनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

संसार नाम मृत्युकी ओर। हो गये हैं सर्व ही सवार। हो रही है देहकी गिनती। घडी पर घडी रोकड़ी ।१। नित्य मृत्युसाथ संगति। समझे नाही भावी गति। कर्मानुसार जन्मे प्राणी। स्वदेश या विदेशमें ।२। हो जाय संचित निःशेष। तो न मिले क्षण अवकाश। निमिषार्धमें ही अवश्य। चलना पडे ।३। अकस्मात् आते हैं यमदूत। ले जाते हैं

मृत्युपंथ। करते हैं मार्गमें ताडन। उनको कैसे आवे दया ।४। होतेही कालकी आज्ञा। कौन करे उसकी अवज्ञा। कौन वा संरक्षणकर्ता। सर्व ही जाते यथाकाल ।५। मृत्युरूपी डंडा बहु कठिण। शिर पर प्रहार सहे कौन। महाराजे भी बलवान। ठहरे ना उसके आगे ।६। मृत्यु न माने यह है क्रूर। माने नाही यद संपन्न। न माने है संग्रामशूर। समरांगणमें ।७। हो कोई कोपी प्रतापवान। या हो कोई उग्ररूप। क्यों व हो बल-धनाढय। माने न मृत्यु ।८-९। विख्यात श्रीमंत भूपति। या हो पराक्रमी चक्रवर्ती। या कोई हयपति गज-पति। माने न किसीको ही ।१०-१२। हो सके कोई राजकारणी। या ब्राह्मण वर्णाश्रमधर्मी। या राजकन्या परनारी। माने न मृत्यु किसीको ।१३-१६। होगा पण्डित बहुश्रुत। पुराणिक वैदिक याज्ञिक। या कोई श्रोत्री अग्निहोत्री। पूर्णागमी शास्त्रज्ञ ।१७-२१। करे कोई ब्रह्महत्या। स्त्रीबालकादि की अन्य हत्या। तो भी वो डरे बिना। ले जाय सबको ।२२। रागज्ञानी तालज्ञानी। तत्वज्ञानी योगाभ्यासी। गोसांई संन्यासी तपस्वी। किसीको वो न माने ।२३-२६। प्रसिद्ध वैद्य पंचाक्षरी। दिगंबर हठयोगी राजयोगी। वीतरागी जटाधारी ब्रह्मचारी। निराहारी योगेश्वर ।२७-२९। संत हो या महन्त। स्वाधीन या पराधीन। हो सके गुप्त अकस्मात। सबको प्राशन करे मृत्यु ।३०-३१। बाल तरुण सुलक्षण। उदार सुंदर विचक्षण। हरिदास या पुण्यपुरुष। माने ना मृत्यु किसीको ।३२-३५। चत्वर खाणी चत्वार वाणी। चौरासी लक्ष जीवयोनी। जन्मजात सब ही प्राणी। जायेंगे मृत्युमुखमें ही ।३६-३७। मृत्युभयसे जाये दूर। तो भी आवे मृत्यु-हाथ। हो स्वदेश या परदेश। है मृत्यु अटल ।३८-३८। हरिहरादि अवतार। या भगवन्तके अवतार। या कोई उपवासी निरंतर। तो भी जाये मृत्युपथ ।४०। यहां न धरना कोप संशय। यह है ही मृत्युलोक। इसीलिए प्राणीमात्र अवश्य। जायें मृत्युकी ओर ।४१-४३। तस्मात् करक विचार। करना चाहिए जन्म सार्थक। जिससे रहे नर मरणोत्तर। कीर्तिरूप ।४४। गये गये आयुष्मंत। गये गये बहु बलवन्त। गये बहु विद्यासागर। धनवन्त कुबेर ।४५-५०। मृत्यु सामने कैसा पुरुषार्थ। मृत्यु सामने कैसा विक्रम। कौन रहेगा धर्मरक्षक। परोपकार कर्ता ।५१-५२। प्रताप सत्कीर्ति या नीति। पांडित्य या मायावादी। संसार या वेषधारी। मृत्यु सामने क्या करे ।५३-५७। गये गये ऐसे सबही। किन्तु न जायेंगे वे ही। जो हुवे है आत्म ज्ञानी। स्वरूपाकार ।५९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मृत्युनिरूपणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

संसार नाम महापूर । उसमें जलचर अपार । दंश करने के लिये सतत । आते हैं कालसर्प ।१। 'मगररूप' आशा ममता । हैं देहकी बेड़ी तत्वता । अहंकार नक्र डुबा देता । संसार जल-सागरमें ।२-३। ढीली न हुई काम पकड । टूट न जाय तिरस्कार । कम न हो मदमत्सर । भूल गया निजरूप ।४। वासना सर्पिणी लिपटी गल । करे वमन बारबार गरल । बतावे जिव्हा भयानक्र । कौन करे छुटकारा ।५। शिर पर लेके प्रपंचका भार । डूबते डूबते ही न छोडे गर्व । मेरा मेरा यह सर्व । ऐसे बोले कुलाभिमानसे ।६। भ्रांतिरूप अंधकार । वहां आया अभिमान चोर । लुटाया उसने सर्वस्व । तब ही न छोड़े अहंता ।७। संसार-नदी आवर्त । बह गण प्राणी बहुत । किन्तु बुलाया जिसने भगवन्त । भावार्थ बलसे ।८। उसको करे पैलपार । कूद पडे स्वयं देव । संकट मोचन करके रक्षण । करता है सर्वकाल ।९-१०। देवको लगी है भावकी भूख । भाव देखतेही संतुष्ट । दूर करे संसार-दुःख । निज दासोंका सदैव ।११। ईश्वरांकित भाविक जन । उनको मिलता स्वानंद । धन्य धन्य उन्हींका जन्म । जिनकी चिन्ता देवको ।१२। जिसका जैसा भाव । उसी प्रकार बने देव । प्राणीमात्रका अंतर्भाव । जाने वो अंतरसाक्षी ।१३। नवल एक नद्‌भुत । हो जाय भाव मायिक । तब देव भी होवे महाठग । जैसा भाव वैसा ।१४। जैसे जिसका भजन । वैसे देवे समाधान । भाव हो जाय किंचित न्यून । तो दूर जाये देव ।१५। दर्पणमें दिखे जो प्रतिबिम्ब । होता बिंबानुसार अभिन्न । किन्तु इसका कारण सूत्र । रहे अपनेही स्वाधीन ।१६। दर्पण सन्मुख हम जो करें । वैसेहो प्रतिबिंब करे । आखें विस्तृत करे देखें । तो दर्पणमें वैसे ही ।१७। भ्रकुटि उठा कर दखें । तो प्रातिबिंब भी क्रोधसे देखे । यदि हास्यवदन होवे । तो हास्यवदन दर्पणमें भी ।१८। इसीप्रकार भावानुरूप । देव है प्रतिबिंबत । भजनानुसार फल ही देत । यथायोग्य ।१९। मिलते हैं सज्जन भक्तिपेठ । करते कराते । मोक्षका व्यापार । वहां सदभावके नाना प्रकार । आते हैं दृष्टिपथ ।२०। तस्मात् भाव भजन हे श्रेष्ठ । देव करे भक्तोंको पावन । भावभक्तिसे होवे उद्धरण । पूर्वजोंका भी ।२१। तर जाये स्वयं भक्त । लोगोंको भी होगा सहायक । ईश यश सुनते ही अभक्त । बन जाते भावार्थी ।२२। है उसकी जननी धन्य । जो करे हरीका भजन । उसने किया अपना जन्म । पूर्णतया सार्थक ।२३। पक्षपाती जिनका भगवन्त । करे पैलपार उत्तीर्ण । उन भक्तोंकी श्रेष्ठता वर्णन । करे ऐसा कौन ।२४। इस नर देहका विशेष । मिले जो जन्मांतर सहस्त्र । करावे प्रभूकी भेंट । जिससे कटे जन्ममृत्यु ।२५। इसीलिए धन्य भाविक जन । जिन्होने पाया

हरिरूप निधान। अनंत जन्मार्जित पुण्य। आया उनका फलरूप।२६। आयुष्य यही रत्नपेटी। रखो उसीमें भजन-रत्नावली। आनन्दसे उसको ईशप्रति। करो तुम अर्पित।२७। हरिभक्त जभी वैभवमें कनिष्ट। है ब्रह्मादिकसे भी वरिष्ठ। सदा सर्वदा संतुष्ट। नैराश्य बोधसे।२८। ईश-पल्लव आधार। करे संसार आशा-नाश। उस भाविकका जगदीश। संभाल करे सबाह्य।२९। जिस संसारके दुःख। पढ़तमूर्ख माने सुख। वही विवेक करके भक्त। करते हैं सुखरूप।३०। देव पर जिनका अत्यंत प्रेम। वे ही लेते स्वानंद सुख। अक्षय उनका निधान। अलौकिक सदैव।३१। होते ही अविनाश सुख। विसर गये संसार-दुख। श्रीरंग-रंगमें विषयरंग। रहा ही नाहीं लवलेश।३२। उनके लिये यह नरदेह। ईश्वर-भेट कारण। है एक अमोल साधन। भाग्यहीन गये व्यर्थ।३३। मिला निधान अकस्मात्। गवांया कौड़ी समान। ऐसे ही आयु व्यर्थ। गया अभाविक लोगोंका।३४। तपप्रभावसे पारस। मिल जाय किसीको अनायास। किन्तु होगा वो दैवहीन। तो कैसे भोगे वैभव।३५। वैसे ही प्राणी संसारिक। फंस गया मायाजाल। गया अकेला अंतकाल। छोड़ के सर्वस्व।३६। इस नरदेह कारण जन। पा गये गति उत्तम। किन्तु बहुतसे अन्य। हुवे जन्ममृत्युके आधीन।३७। नरदेह है जब तक सहायक। तभी करो रे उसका सार्थक। संतसंगसे अति सत्वर। अन्यथा अटल जन्मदुःख।३८। आ जाय समय कैसा कौन। समझे ना चले न तर्क। जैसे पक्षी दश दिशा ओर। उड जाते वृक्षसे।३९। वैसे वैभव यह सकल। पुत्र कलत्रादि प्रियजन। बिगड जावे कौन काल। समझे नाहीं कोईभी ही।४०। आयुष्य जात है घड़ी घड़ी। देह गिरते ही नीच योनी। वहां कैसी उत्तम गति। भोगना दुःख अवश्य।४१-४४। कौन तेरी माता कौन तेरा पिता। कौन बहन कौन भ्राता। कौन सुहृद कौन भार्या। पुत्र कन्यादि सर्व।४५। हैं सब ही माया निर्मित। आप आपके सुख कारण। वे हैं नाहीं सुखकारक। यद्यपि तव संगतीमें।४६। क्या है प्रपंच क्या है कुल। क्यों हुवे तुम व्याकुल। धनधान्य लक्ष्मी सकल। हैं नाशवन्त।४७। क्या है घर क्या है संसार। किमर्थ करते कष्ट अपार। मृत्युसमय में यह भार। छोड़ना निश्चित।४८। तारुण्य हो या वैभव। या सुख संतोष महोत्सव। यह सबही जानो मायिक। आशाश्वत।४९। इसी क्षण हो देहान्त। तो रघुनाथ से पड़े अंतर। क्यों फिर तुम अहर्निश। मेरा मेरा बोलते हो।५०। भोग लिया पुनरावृत्ती। तेरे मां-बाप कितने होती। कितने कन्या पुत्र स्त्री। होत जात असंख्यात।५१। कर्म योगसे मिले सकल। जन्हुवा एकस्थल। इसीलिये तुम मूर्ख। मानते हो मेरे ऐसे।५२। क्या है बोलो यह शरीर तव। तो क्यों करना इतर विचार। अब तो एक भगवन्त साचार। धरो भावार्थबलसे।५३। दुर्भर पेटके कारण।

करना सेवा हीन जन। नाना प्रकार स्तुति स्तवन। मर्यादाशील वर्तन ।५४। जो अन्न देव उदरार्थ। उसको देह दिया सेवार्थ। जो देता है जन्म भगवन्त। उसको क्या विसर जाना ।५५। वही भगवन्त अर्हनिश। जिसकी सत्ता से बरसे मेघ। मर्यादा न छोडे सागर। चिन्ता करे जीवमात्रकी ।५६। शेषरूपसे धरे पृथिवी। प्रकाशरूपसे भासे गभस्ती। ऐसे चलाता है सृष्टी। स्व-सत्तासे ही जो ।५७। ऐसा ही जो दयार्णव। करे सकल जीवोंका संभाल। है वह एक देवाधिदेव। उसको क्यों न जानो ।५८। ऐसा सर्वात्मा जीवोंका छोड़के धरते विषय काम। प्राणी वे दुरात्से अधम। भोगते कर्मकाल ।५९। राम बिना जो जो आशा। वही होगी आखिर निराशा। थक जाय रे प्राणी पूरा। कहते कहते मेरा मेरा ।६०। करो तुम विषय चिंतन। न मिले तो कष्टी जीवन। छोंडे राम आनंदघन। तो कैसा होगा समाधान ।६१-६२। चाहने हो केवल सुख। तो करो रघुनाथ-भजन। और तजो सकल जन। हैं जो केवल दुःखमूल ।६३। जहां होवे वासनासक्ति। वहां ही आए दुःख। जो करे वासना-नाश। वही एक सुखी ।६४। विषयजनित है जो सुख। वही बने परम दुःख। पहले रोचक अंतमें शोक।। भविष्य ऐसे निश्चित ।६५। आमिष-लोभसे जैसे मीन। निःसंशय पावे मरण। या जैसे बाण-विद्ध आते मृग। मुखमें केवल आते ही ।६६। वैसे ही विषय-सुख। लागे प्रिय करे अनिष्ट। इसीलिए करो प्रेम। रघुनाथ पर ।६७। श्रोता पूछे भाविक। कैसे होगा सार्थक। टल जाय कैसे यमलोक। कहिए स्वामी ।६८। कहां देवका वस्तिस्थान। मुझे कैसा होगा दर्शन। कैसा होगा नाश। दुःखमूलका ।६९। निःसंदेह भगवत्प्राप्ति। जिससे टले अधोगति। ऐसा उपाय कृपामूर्ति। कहिए मुझ दीनको ।७०। वक्ता बोले भगवतभजन। करो तुम एकभावपूर्ण। उससे होगा समाधान। अनायास ।७१। पुनरपि बोले श्रोता वचन। किस रीतीसे करना भजन। कहां मैं रखूं मेरा मन। कहिए स्वामी दयार्णव ।७२। ऐसे बोले म्लान वदन। धरे सुदृढ गुरुचरण। अनुताप दुःखसे सद्‌गदित कण्ठ। हुवा अश्रुपात नयनोंसे ।७३। देखतेही शिष्यकी अनन्यता। हुवे दयार्द्र सद्‌गुरु दाता। हो जाय कैसी आनन्द-वर्षा। सुनिए अब यही वार्ता ।७४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे वैराग्यनिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

नवविधा भक्तिनाम दशक चौथा

।। श्रीराम ।।

जयजय जी गणनाथ । आप विद्यावैभव समर्थ । अध्यात्मविद्या परमार्थ । बोलो मेरे मुखसे ।१। नमो शारदे वेदजननी । सकल सिद्धी प्रदायिनी । स्फूर्तिरूप करो स्वामिनी । मन मेरा मनन मग्न ।२। अब करूं मैं स्मरण । परात्पर सद्‌गुरुचरण । जिससे प्रकाशे आत्मज्ञान । अंतःकरणमें अनायास ।३। पूछा है श्रोताने प्रश्न । कैसे करना भगवदभजन । वही सुनिए नवविधा भजन । शास्त्रोंमें जो पंथराज ।४-६। श्लोक-श्रवण किर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् । अर्चन वंदन दास्यं सख्यमात्मनिवेदन ॥ प्रथम भजनका नाम श्रवण । इसीलिए हरिकथा पुराणश्रवण । नाना अध्यात्मनिरूपण । श्रवण करो ।७। कर्ममार्ग उपासनामार्ग । ज्ञानमार्ग सिद्धांतमार्ग । योग मार्ग वैराग्यमार्ग । करो श्रवण ।८। नाना व्रत तीर्थ महिमा । नाना दान स्थान महिमा । नाना तप पुरश्चरण महिमा । करो श्रवण ।९-१०। दुग्धाहारी निराहारी । फलाहारी पर्णाहारी । तृणहारी नाना हारी । कैसे वे श्रवण करो ।११। उष्णवास जलवास । शीतवास अरण्यवास । भूगर्भ और आकाशवास । कैसे वो श्रवण करो ।१२। जपी तपी तामस योगी । नाना निग्रह हठयोगी । शाक्त आगम अघोर योगी । कैसे वो श्रवण करो ।१३। नाना मुद्रा नाना आसन । नाना चमत्कार लक्ष्यस्थान । पिण्डज्ञान तथा तत्वज्ञान । कैसे वो श्रवण करो ।१४। नाना सृष्टिरचना भूगोल । चंद्रसूर्य तारा-मंडल । ग्रहमंडल मेघमंडल । एकवीस स्वर्ग पातल ।१५-१६। ब्रह्मा विष्णु महेश स्थान । इन्द्रदेव ऋषिस्थान । वायु वरुण कुबेर स्थान । कैसे वे श्रवण करो ।१७। नव खण्ड चतुर्दश भुवन । अष्ट दिग्पाल के स्थान । विद्याधर गंधर्वगण । करो श्रवण ।१८। अष्ट नायिका संगीत विचार । यक्ष किन्नर नारदतुंबर । राग ताल वाद्य नृत्य । कैसे वो श्रवण करो ।१९-२०। चतुर्दश विद्या चौंसठ कला । सामुद्रिक मंत्रसिद्धि नाना । नाना औषधि वल्ली नाना । करो वह श्रवण ।२१-२२। कैसी नवविधा भक्ति । कैसी चतुर्विधा मुक्ति । कैसे होगी उत्तम गति । करो वह श्रवर ।२३-२५। वेदशास्त्र पुराण । महावाक्यविवरण । तनु चतुष्टय निरसन । करना कैसे ।२६-२८। ऐसे सकल करो श्रवण । किन्तु करो सार-ग्रहण । असारका त्याग पूर्ण । नाम इसका श्रवणभक्ति ।२९। सगुणदेवका चरित्र । निर्गुण ब्रह्मका अध्यात्म । दोनों ही परम पवित्र । सुनना ही सतत ।३०-३१। जयंत्युत्सव उपोषण । मंत्र यंत्र नाना साधन । कीर्ति स्तवन और भजन । सुनो यह नानाविध ।३२।

ऐसी है श्रवणभक्ति। जिससे छूट जाय विविध बुद्धि। देव शोधनार्थ मति। उपजे अनायास ।३३-३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रवणभक्ति निरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए कीर्तन भक्ति। जिससे बढे भगवत्कीर्ति। अखण्ड वदे वैखरी। हरिकी कथा ।१-२। करो बहुत पाठान्तर। धरो कण्ठस्थ संत वचन। करो हरिकथा नित्य। स्वकल्याण के कारण ।३-४। किर्तन-प्रिय है भगवन्त। कीर्तनसे मिले समाधान। कलिमें है महत्साधन। प्रेमयुक्त कीर्तन ।५-७। मनमें करो मूर्तिध्यान। साकार अलंकार भूषण। तदनुसार करो वर्णन। कथा हरिकी ।८। यश कीर्ति प्रताप महिमा-। वर्णन प्रेमसे परमात्मा। जिससे भगवदभक्तोंका आतमा। संतुष्ट होवे ।९। प्रसंगानुसार शब्द-पांडित्य। गीतगान पाठांतर। कथा कहानी नामघोष। करनालिका सहित ।१०। मृदंग ताल संगीत नृत्य। कीर्तनमें करो अवश्य। हरिकथाका अनुसंधान। छूटना न चाहिए ।११। करुणा आ जाय देवको। आनंद हो जाय श्रोताओंको। ऐसी कथा करे कोई करे जो। उसकी अवस्था कैसी होगी ।१२। कण्ठ हो जाय सद्गदित। प्रेमाश्रुसहित रोमांच। करे देवको नमस्कार। बारंबार लोटांगण ।१३। अनेक घाटी मुद्रा छंद। विर आदि रसयुक्त। पद दोहा श्लोक प्रबंध। गावो अतिप्रेमसे ।१४। बोलो वचन शास्त्राधार। भक्तिज्ञानवैराग्य पर। नीतिन्याय स्वधर्मपर। साधनमार्ग अध्यात्म ।१५-१६। बिना पूर्वपक्षखण्डन। करो सिद्धांत निरूपण। अप्रासंगिक वार्तालाप। करो ना कदापि ।१७-१८। करो वेद पारायण। कहो जनको पुराण। मायाब्रह्मका विवरण। कहो सविस्तर ।१९। राखो ब्राह्मण्य सादर। उपासना का भजनद्वार। गुरुपरंपराका आचार। राखो अविचल ।२०। राखो वैराग्य ज्ञानलक्षण। जिससे न भंगे समाधान। ना भंगे परमार्थसाधन। ऐसे निःसंदेह कीर्तन ।२१-२२। यदि किर्तनकार हो आचारवान। कहे अनुभवज्ञान। तब ही होवे रक्षण। सगुण और निर्गुण ।२३-२४। बतावे सन्मार्ग उत्तम। करे ईश गुण कीर्तन। भगतप्राप्ति निःसंदेह। यह है श्रवण भक्ति ।२५-२७। कीर्तनसे होवे निर्दोष। कीर्तनसे वाचा पवित्र। कीर्तनसे सुशील सत्पात्र। हो जावे प्राणीमात्र ।२८। कीर्तनसे होवे मन

अव्यग्र। निश्चययुक्त संदेहरहित। कीर्तनसे ब्रह्मसुत नारद। हुवे नारायणरूप ।२९-३०। कीर्तनमहिमा है अगाध। जिससे परमात्मा हो संतुष्ट। हरिकीर्तनमें सर्वतीर्थ। वास करेंगे सर्वदा ।३१

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कीर्तनभजन निरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

कथन किया कीर्तन लक्षण। जो करे सबको पावन। अब सुनिए विष्णुस्मरणं। तीसरी भक्ति ।१। करो भगवन्तका स्मरण। अखण्ड जपो उन्हींका नाम। नामस्मरणसे समाधान। होगा जानो निश्चित ।२। नित्यनेम प्रातःकाल। मध्यान्हकाल सायंकाल। नामस्मरण सर्वकाल। करते जावो ।३। सुख दुःख उद्वेग चिन्ता। या आनन्दरूप अवस्था। नामस्मरण बिना सर्वथा। रहना नाहीं ।४। हर्षकाल विषमकाल। पर्वकाल अनुतापकाल। विश्रांतिकाल निद्राकाल। करो नामस्मरण ।५। नाना संसार संकट। होत विघ्नदायक। या मानस चिन्ताग्रस्त। तो भी करो नामस्मरण ।६। चलते चलते धंधा करते। सुखसे भोजन करते। नाना उपभोग भोगते। न करो विसर नामका ।७। संपत्ति अथवा विपत्ति। हो जाय जैसी कालगति। नामस्मरणकी स्थिति। छोड़ो मत ।८। सामर्थ्य सत्ता या वैभव। मिलते जब पदार्थमात्र। भोग घड़े भाग्यश्री उत्कट। करो न विसर नामका ।९। हो जाय दशा उत्तम। या तो होय अनुत्तम। जैसा तैसा हो प्रसंग। तो भी छोडो ना नाम ।१०। नाम है संकट नाशक। नाम है विघ्न-निवारक। नामस्मरणसे होते लाभ। उत्तमोत्तम पदोंका ।११। भूत पिशाच नाना छंद। ब्रह्महत्या ब्राह्मणसमंध। मंक्रचळ नानाखेद। नाम-निष्ठासे नाशे ।१२। नामसे विषबाधाहरण। चेटकादि-भय-विमोचन। अंत-कालमें गति उत्तम। देवे एक नाम ही ।१३। बालत्व या तारुण्य। या कठिन वृद्धाप्यकाल। या तो हो अंतकाल। स्मरण करो नाम ।१४। नाम महिमा जाने शंकर। करे नामका उपदेश। वाराणसी मुक्तिक्षेत्र। रामनाम के कारण ।१५। किया रामनामका उलट जाप। तो भी तर गया वाल्मिक। रघुनाथचरित्र भविष्य। कथन किया शत कोटी ।१६। तर गया हरिनामसे प्रल्हाद। हो न सका उसको आघात। नारायण नामसे हुवा पावन। अजामिल महापापी ।१७। रामनामसे तर गये पाषाण। असंख्यात भक्त-उद्धरण। महांपापी भी परम पवित्र। हुवे रामनमसे ।१८। परमेश्वरके अनंत नाम। स्मरण करे जो नित्यनेम। तर जाय वो निःसंदेह। कैसे होगी यमबाधा ।१९। सहस्त्र नामोंमें कोई एक। स्मरण करे तो होय सार्थक। नामस्मरणसे

पुण्यश्लोक। हो जाय मानव ।२०। साधन न करे कुछ भी अन्य। जपे रामनाम अनन्य। उससे चक्रपाणी संतुष्ट। संभाल करे भक्तोंका ।२१। नामस्मरण करे निरंतर। जानो उसे पुण्यशरीर। महादोषोंके गिरीवर। नाशे रामनामसे ।२२। नाम-महिमा वर्णनातीत। उद्धारगति गये बहुत। हालाहल विषका उपशम। हुवा चन्द्रमौलीका ।२३। चतुर्वर्णको नामाधिकार। यहां न भेद वृद्ध तरुण। जड़ मूढको भी रामनाम। करे पैल पार ।२४। इसीलिये नाम अखण्ड। स्मरण सहित रूपचिंतन। कथन की भक्ति तृतीय। नाम-स्मरणरूपा ।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे नामस्मरणभक्तिनाम समास तिसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिये भक्ति पादसेवन। है जो सद्गतिकारण। काया वाचा मनोभाव। सेवा करो सद्गुरुपाद ।१-२। सद्गुरुप्रति अनन्यपण। है जन्ममृत्युविमोचन। उसीका नाम पादसेवन। चतुर्द भक्ति ।३। बिना सद्गुरुकृपा अन्य। नाहीं नाहीं भवतरणोपाय। इसीलिये सत्वरसे सत्वर। करो सेवन सद्गुरुचरण ।४। सद्वस्तुको बतावे सद्गुरु। सकल सारासार विचारु। जिससे परब्रह्म-साक्षात्कार। होरे स्थिर अंतर्याम ।५। चर्म चक्षुको अगोचर ब्रह्म। है वो मनोभासातीत। होगा नाहीं अनुभव। नाहीं जब संगत्याग ।६। जगत् संगका त्याग। होवे अनुभव स्थितीमें अनायास। किन्तु करे आग्रहसे त्याग। तो क्या होगा अनुभव। यह सर्व अनुभव अंग। जाने अनुभव कोई एक। किन्तु लौकिक अन्य जन। जाने नाहीं इसका मर्म ।७। संगत्याग और निवेदन। विदेहस्थिति अलिप्तपण। सहजस्थिति उन्मनी विज्ञान। यह सप्त एकरूप ।८। सिवाय अन्य संकेत नाम। जिससे होगा समाधान। किन्तु सब ही आवे समझ। गुरुपादसेवनसे ।९। वेद वेदगर्भ वेदान्त। सिद्धभावगर्भ सिद्धसिद्धांत। अनिर्वाच्य अनुभव। सत्यवस्तु ।१०। अनुभवके सभी अंग। समझे संतसंगसे केवल। पादसेवन कारण। ब्रह्म होवे प्रकट ।११। प्रकट है तो भी न दिखे। है गोप्य किन्तु आभासे। विलक्षण भासाभाससे। है यह गुरुगम्य ।१२। मार्ग है किन्तु अंतरिक्ष। जहां न कोई पूर्वपक्ष। देखने जाय तो अलक्ष। लक्ष्यातीत ।१३। ब्रह्म जो लक्षका लक्ष्य। या जो है ध्यानका ध्यान। वही होना है स्वरूप। गुरुशास्त्रसंमत ।१४। ऐसा जो ब्रह्मानुभव। जिसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार। होवे जब सारासार विचार। सज्जनके संगमें ।१५। सत्य देखे तो नाहीं असत्य। देखे असत्य तो नाहीं सत्य। ब्रह्म सत्य या

असत्य । होवे जैसे प्राणी देखे ।१७। द्रष्टा जिसको जिसको देखे । वो द्रष्टारूपसे ही दिख जाये । तब ही जानो मिले । सावधान पूर्ण ।१७। परमार्थ मार्गमें समाधान । आवे सद्गुरु-कारण । सद्गुरुबिना सन्मार्ग । अशक्य है सर्वथा ।१८। प्रयोग और साधन सायास । करते नाना विद्याभ्यास । प्राप्त न हो गुरुगम्यमार्ग । आयास करे तो भी ।१९। जो न हो अभ्यास से साध्य । या न साधनों से प्राप्य । वो ब्रह्म क्या होवे प्राप्त । सद्गुरु बिना ।२०। इसीलिए ज्ञानमार्ग । तब ही आवे समझ । मिल जाय जब सत्संग । अन्यथा नाहीं ।२१। सद्गुरु चरण सेवन । यही पादसेवन भक्ति जान । देव महानुभाव ब्राह्मण । इनमें धरो सदभाव ।२२-२३। यह है लौकिकप्रमाण । प्रवृत्तीमार्गका रक्षण । किन्तु सद्गुरुपादसेवन । पावन करे त्रिलोक ।२४। पादसेवन चतुर्थ भक्ति । देवे भक्तको सायुज्यमुक्ति । जिससे पैलपार पावती । साधक जन ।२५-२६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पादसेवनभक्ति निरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए सावधान । पंचम भक्तिलक्षण । अर्चन यानि देवता पूजन । करना चाहिए शास्त्रोक्त ।१-२। देवके कारण उपकरण । वस्त्रासन अलंकार । मानस पूजा मूर्तिध्यान । नाम इसका अर्चन ।३। देव-ब्राह्मण अग्नि-पूजन । साधु संत अतिथि-पूजन । यति महानुभाव गायत्री पूजन । है यह भक्ति पंचम ।४। धातु पाषाण मृत्तिका पूजन । यति महानुभाव पूजन । गृहदेवता का पूजन । नाम इसका अर्चन ।५। शीला सप्तांकित नवांकित । शालि ग्राम या चक्रांकित । शिवलिंग सूर्यकान्त सोमकान्त । नर्मदा नदीके पाषाण ।६। भैरव भगवति मल्लारी । नृसिह और वनशंकरी । नाना प्रकार नागनागिण । पंचायतन पूजा ।७। गणेश शारदा विठ्ठल मूर्ति । रंगनाथ जगन्नाथ तांडव मूर्ति । श्रीरंग हनुमन्त गरुड मूर्ति । है पूजनीय सर्वही ।८। मत्स कूर्म वराह मूर्ति । नृसिह वामन भार्गव मूर्ति । राम कृष्ण हयग्रीव मूर्ति । पूजनीय सर्वथा ।९। केशव नारायण माधव मूर्ति । गोविंद विष्णु मधु-सदन मूर्ति । त्रिविक्रम वामन श्रीधर मूर्ति । ऋषिकेश पद्मनाथ ।१०। दामोदर संकर्षण वासुदेव मूर्ति । प्रद्युम्न अनिरुद्ध पुरुषोत्तम मूर्ति । अधोक्षज नारसिंह अच्युत मूर्ति । जनार्दन उपेन्द्र ।११। हरिहरकी अनंत मूर्ति । भगवन्त जगदात्मा जगदीश मूर्ति । शिवशक्ति की विविध मूर्ति । अवश्य करना अर्चन ।१२। अश्वत्थ नारायण सूर्यनारायण । लक्ष्मीनारायण त्रिमल्लनारायण । श्री हरिनारायण आदिनारायण । शेषशायी परमात्मा ।१३। परमेश्वर

मूर्ति इसी प्रकार। है अर्चन भक्तिका आधार। कुलधर्म उत्तम मध्यम। करना सर्वही।१४-१६। जावो नाना तीर्थ क्षेत्र। करो अर्चन वहां के देव। गंधाक्षता-पुष्पों सहित। परिमल द्रव्य पंचामृत।१७-१८। धूप दीप निरांजन। कर्पूरारति खाद्य नैवद्य। नाना फल तांबुल। अलंकार दक्षिणा।१९। वनमाला दिव्यांबर। पालकी छत्र सुखासन। ध्वज निशाण सूर्यापान। मृदंगादि वाद्य।२०। नाना देव महोत्सव। नाना भक्तसमुदाय। गाते हरिदास सदभाव। भगवन्तके कारण।२१। वापी कूप सरोवर। नाना देवालय शिखर। देवांगण मनोहर। तुलसी वृंदावन।२२। देव द्वारमें धर्मशाला। मठ मंडप नक्षत्र माला। अन्नोदकपात्र पुष्पवाटिका। पर्णकुटीयां तपस्वीकारण।२३-२६। शुक्र सारिका मयूर। चक्रवाक और चकोर। कोकिल सांबर मार्जार। देवालयामें अर्पण।२७। गैसा भैंस वृषभ वानर। नाना पदार्थ सुंदर। करो देवालयमें अर्पण। देव पूजा कारण।२८। काया वाचा और मन। चित्त वित्त जीव प्राण। सदभावसे करो अर्चन। ऐसी भक्ति पंचम।२९। इसीप्रकार सद्‌गुरुभजन। करो भक्तिभावसे अनन्य। यही है भगवभ्दजन। पंचम भक्ति।३०। न हो ऐसी द्रव्ययुक्त पूजा। तो करो तुम मानस पूजा। भगवन्तको मानस पूजा। देव संतोष निश्चयसे।३१। मनसे ही पूजो भगवन्त। उत्तमोत्तम स्वकारण। चाहते वही समर्पण। करो देवको।३२-३३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अर्चनभक्तिनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए सावधान। छठवी भक्ति के लक्षण। देवको करो वन्दन। और संत सज्जन को।१-२। सद्‌गुरुको साष्टांग नमस्कार। वैसे ही प्रतिमा को सांष्टांग। अन्यत्र करो विचार। अधिकार है या नाहीं।३-४। वसुंधरा में विष्णुमूर्ति। वैसे ही पशुपति और गभस्ती। वंदन करो मारुति। साष्टांग भावसे।५। इनके नित्यनेमसे दर्शन। और करो साष्टांग नमस्कार। होगा वो दोष रहित। वंदन भक्ति के कारण।६। भक्त ज्ञानी वीतरागी। महानुभवी तापसी योगी। और हो सत्पात्र कोई। देखतेही करो वंदन।७। वेदज्ञ शास्त्रज्ञ सर्वज्ञ। पण्डित पुराणिक विद्वज्जन। याज्ञिक वैदिक पवित्र जन। वंदन करो सर्व ही।८। होंगे जहां विशेषगुण। वहां है सद्‌गुरुका अधिष्ठान। इसीलिए गुणी जनोंको नमन। करो अत्यादर से।९। नाना शक्ति शारदा गणेश। हरिहरके अवतार। इन सबको करे जो वंदन। होवे भगवन्तको मान्य।१०-१२। जो जो हो देवस्थान। या

सद्‌गुरुका अधिष्ठान। उन सभी को नमस्कार। करते जावो।१३। लीनता घड़े विकल्प मोड़े। सख्य घड़े दोष नाशे। मैत्री जड़े समाधान घड़े। नमस्कार करने से।१४-१५। देव-भक्तोंको करके नमस्कार। हो जावो तुम कृपापात्र। प्रसन्न होंगे श्रीगुरुदेव। और मुख्य परमेश्वर।१६-१७। पतित होते हैं पावन। टल जाय जन्ममरण। पर्वत-प्राय दोषोंका भंग। संतोकी शरण जाने से।१८-१९। जभी कोई अन्यायी परम। करे साष्टांग नमस्कार। तो करते हैं श्रेष्ठ पुरुष। कृपा उस पर।२०। बिना कष्ट बिना मोल। बिना सामग्री बिना उपकरण। नमस्कार है अति सुगम। करो अनन्य भावसे।२१-२३। तब ही साधकों की चिन्ता। लगे साधूको तत्वता। जिससे अन्य साधन बिना। मिले सद्‌बुद्धि सत्पथ।२४। इसी कारण नमस्कार श्रेष्ठ। संतोषमानस होते वरिष्ट। कहा मैंने यहां स्पष्ट। छठवी भक्ति वंदन।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे वंदनभक्तिनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

अब दास्यभक्तीका लक्षण। सुन लीजिये सावधान। देवद्वार के सन्निध। रहो जैसे दास।१-२। संभाल करो देवका वैभव। न्यून होते ही करो पूर्ण। बढत बढत बढावो भजन। परमेश्वरका।३। भग्न देवालयों का जीर्णोद्धार। ओरी धर्मशाला सरोवर। करते रहो देव कार्य। नूतन हो या न हो।४। गज रथ तुरंग सिंहासन। चौकी शिबिका सुखासन। मंचक पलंग विमान। करो नूतन।५-६। छत्र चामर निशाण। आसनादि यान सुवर्णमय। कोठी पेटी मांदुस। धनधान्यसे भरी पूर्ण।७-९। भूमि अन्दर गुप्त स्थल। हो कोई गुप्त विवर। उनमें करो संचय। रत्न-हेमादि अलंकार।१०-११। भक्त बनावे विश्रान्तिकारण। पुष्पवाटीका सुंदरभवन। धर्मशाला और पाकगृह। खाद्य पदार्थ से समृद्ध।१२-१६। इसीप्रकार ईश वैभव। बढावे जो प्रेमपूर्वक। रहे सदा सर्वदा तत्पर। भक्त सेवा कारण।१७। जिसको देखते ही स्वर्गस्थ देव। तटस्थ होते साश्चर्य। ऐसी दास्य भक्ति करे नित्य। जयंत्यादि महोत्सव।१८। देव समीप करे गायन। गुणवर्णनपर कीर्तन। देवांगणमें समार्जन। करे प्रेम भावसे।१९। देव स्नानार्थ शुद्धोदक। गंधाक्षता वस्त्र भूषण। धूप दीप खाद्य नैवेद्य। फलादि उत्तमोत्तम।२०। पानार्थ लावे जल शीतल। सुगंध पुष्पादि परिमल। भोजनोत्तर तांबूल। देव अत्याचारसे।२१-२४। करे सेवा अधिकारानुरूप। अभ्यागतों का आतिथ्य। मृदुवचनसे राखे अंतर। सकल जन

भक्तोंके ।२५-२६। ऐसी है दास्यभक्ति। कथन की मैंन यथामति। हो न प्रत्यक्ष करो तो भी। मानसरूपसे निरंतर ।२७। करना जैसे देवका दास्य। वैसे ही सद्गुरुका दास्य। न हो जभी प्रत्यक्ष। करो मानसिक ।२८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे दास्यभक्ति निरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

किया पीछे निरूपण। सप्तम भक्तीका लक्षण। अब सुनिये सावधान। अष्टम भक्ति ।१। देवसे करो परम सौख्य। देव-प्रीतीसे जोड़ो निजप्रेम। अष्टम भक्तीके लक्षण। है ये ऐसे ।२। देवको जिसकी अत्यंत प्रीति। वर्तन करो वैसी ही रीति। तब सख्य घड़े निश्चित ही। देवके साथ ।३। भक्ति भाव और भजन। निरूपण और कथाकीर्तन। प्रेमळ भक्तोंका गायन। प्रिय है देवको ।४। जैसे देवको लगे प्रिय। स्वयं वैसे ही करो वर्तन। घड़े ईशइच्छानुसार। तभी सख्य नेमस्त ।५। देवके सख्यत्वकारण। छोड़ दो अपना सुख। अनन्य भावसे जीवप्राण। शरीर का भी अर्पण ।६। तजो अपनी संसार व्यथा। करो उस देवकी चिन्ता। निरूपण कीर्तन कथा वार्ता। करो देवकीही ।७। देव सख्यत्व के कारण। आवश्यक हो तो तजो आप्त मित्रत्व। और अर्पण करते करते सर्व। करो प्राण भी देवार्पण ।८। जाने दो अपना सर्वस्व। किन्तु रखो देवसे सख्यत्व। ऐसी प्रीति भगवन्तपर। करो जीवभावसे ।९। देव है अपने प्राणका प्राण। करो न उसका निर्वाण। परम प्रीतिका लक्षण। है ही ऐसे ।१०। भक्त करे परम सख्यता। तो देवको लगे उसकी चिन्ता। करी उसने पांडवों की रक्षा। लाखागृह-अग्निसे ।११। अचल रहे देव–सख्यत्व। मर्म इसका अपने ही पास। ध्वनिके अनुसार आवे वचन। प्रतिध्वनिरूप ।१२। भक्त बने अनन्मभाव। तो देव भी प्रसन्न तत्काल। लेवे कोई स्वयं त्रास। तो देव भी त्रासे ।१३।

॥ ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैन भजाम्यहम् ॥

जैसे जिसका भजन। वैसे ही बन जाय देव। तस्मात् जानो है सर्व। अपने ही पास ।१४। घड़े नाहीं मनानुसार। तो निष्ठाभंग है संभव। यह तो बात अपने पर। आती है सहज ही ।१५। न हो वृष्टी तो भी चातक। मेघ के प्रति रहता अनन्य। चंद्रोदय न हो समयपर। तो भी चकोर अनन्य ।१६। इसी प्रकार सख्यत्व। होना चाहिए विवेकपूर्ण।

भगवन्तके प्रति ममत्व। छोडो ना कदापि ।१७। मानो भगवन्तको ही सखा। गणगोत्र माता पिता। धन वित्त लक्ष्मी विद्या। सकल ही परमात्मा ।१८। देव-विरहित नाहीं कोई। ऐसे बोलते सर्व ही। परन्तु उनकी निष्ठा नाहीं। बोलते वैसी ।१९। इसीलिए न करो ऐसा वर्तन। सख्य करो देवसे सत्य। धरो नित्य मनमें सुदृढ। परमेश्वर को ।२०। होते ही निष्फल मनोगत। क्रोधयुक्त होते बहुत लोग। किन्तु यह नाहीं लक्षण। सख्य भक्तिका ।२१। देव का होवे जो मनोगत। मानो उसीमें अपना हित। स्व-इच्छा न हो पूर्ण। तो भी न छोड़ो भगवन्त ।२२। देवकी इच्छा मानो प्रमाण। तदनुसार करो वर्तन। तब ही आवे तुझे समझ। है कृपालु देव ।२३। देव-कृपा है अपार। तुच्छ है माताका प्रेम। माता वध करे अर्भक। विपत्ती काल आते ही ।२४। देव ने भक्तका वध किया। ऐसा न देखा न सुना। किन्तु शरणागत को होता। वज्रपंजर देव ।२५। देव भक्तोंका लेवे पक्ष। देव पतितोंका उद्धारक। देव है अनाथ-रक्षक। सहाय्यकर्ता ।२६। देव अनाथोंके कारण। करे संकटो में रक्षण। धावत आया गजेन्द्रकारण। अंतर साक्षी ।२७। देव है कृपासागर। देव करुणाजलधर। देवको भक्तोंका विसर। होगा नाहीं कालत्रय ।२८। कम न होती देवकी प्रीति। इसीलिये साधो देवकी मैत्री। लौकिक मित्रजन की प्रीति। है सर्वथा निकामी ।२९। देव का सख्यत्व है अटूट। देवकी प्रीति न हो च्युत। पलटे नाहीं देवका प्रेम शरणागतों के लिये ।३०। इसीलिये करो देवसे सख्य। कहो उसको ही मनोगत। यही जानो है लक्षण। अष्टम भक्तीका ।३१। जैसा देव वैसा गुरुदेव। शास्त्र कहते हैं यह विचार। इसीलिए सद्गुरुके साथ। करो सख्यत्व ।३२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सख्यभक्ति निरूपणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिये भक्ति नवम। नाम जिसका आत्मनिवेदन। देवको करो समर्पण। अपनेको ही स्वयं ।१-३। मैं हूं भक्त ऐसे कहना। विभक्त रहके भजन करना। यह एक समझना। है विलक्षण ।४। लक्षण और विलक्षण। ज्ञान और अज्ञान। वैसे भक्त और विभक्त-पण। है परस्पर विरुद्ध ।५। जब है भक्त तो विभक्त कैसा। जब हो विभक्त तो भक्त कैसा। बिना तत्वविचारणा। समाधान कैसे ।६। तस्मात् करो तत्वविवरण। पहचानो देव कौन। कौन हो तुम इसका शोधन। करो अंतर्याम ।७। मैं कौन हूँ ऐसा विचार। करते करते उड़ जाय असार। भूत पंचकोंका भी नाश। होगा तब रहे कौन ।८। होवे जब तत्त्वमें तत्त्वका लय। कहां रहे अहं इति भ्रम। इसी प्रकार आत्मनिवेदन।

सहज ही होगा ।९। भासे पंचतत्वोंका विस्तार । किन्तु विचारान्त होता नाश । होगा जब प्रकृति निरास । रहे आत्मा, न अहम् ।१०। एक मुख्य परमेश्वर । दूजी प्रकृति जगदाकार । वहां कहांसे आ जाय चोर । अहंरूप जीव ।११। ऐसा ही है जब सिद्धांत । मिथ्या होगा देह-अहंकार । नाना व्यक्ति पिण्ड ब्रह्माण्ड । है केवल तत्वविस्तार ।१२-१३। मैं हूं साक्षी ऐसे ज्ञान । होते ही पंचतत्व भिन्न । साक्षित्व ही जब होवे लीन । तब रहे आद्यन्त आत्मा ।१४। आत्मा एक स्वानंदघन । अहमात्मा यह श्रुतिवचन । तब अहं और आत्मा भिन्न । हैं ही नहीं ।१५। "सोऽहं अहं सः" ऐसे वचन । इसके अर्थका करो चिंतन । तो समझमें आवे है अभिन्न । अहं जीव, सः आत्मा ।१६। है आत्मा निर्गुण निरंजन । उसके साथ हो अनन्य । जब तुम नाहीं उससे अन्य । तो कैसे आवे अहं-भाव ।१७। आत्मा केवल अद्वैत । नाहीं वो द्वैताद्वैत । वहां अहंभावका दर्शन । होगा ही नाहीं ।१८। आत्मा परिपूर्ण संपूर्ण । जहां नाहीं गुण अवगुण । आत्मा निश्चल निर्गुण । वहां कैसे अहंभाव ।१९। तत्पद त्वंपद असिपद । जब तीनों होंगे एकरूप । है वस्तु भेदातीत । तो रहे ना अहंभाव ।२०। होवे स्वरूपमें दृढबुद्धि । तो नाशे जीव-शिव उपाधि । जब होगी नाहीं भेदबुद्धि । तो कहासे आवे अहंभाव ।२१। मैं हूं मिथ्या, देव सत्य । देव भक्तोंमें अनन्यभाव । इन वचनोंका अभिप्राय । जानते हैं सन्त ।२२। ऐसी स्थितिका जो अनुभव । उसीका नाम आत्मनिवेदन । उससे होता है समाधान । ज्ञानियोंको ।२३। पंचभूतोंमें जैसे आकाश । सकल देवोंमें जैसे जगदीश । ऐसे नवविधा-भक्तीमें विशेष । है आत्मनिवेदन ।२४। नवमी भक्ति आत्मनिवेदन । न हो तो न टले जन्ममरण । है यह वचन सत्य । अन्यथा नाही ।२५। ऐसी नवविधा भक्ति । करे जो पावे सायुज्यमुक्ति । कल्पांतमें सायुज्यमुक्ति । पावे नाहीं नाश ।२६। सलोकता समीपता सरूपता । और चौथी सायुज्यमुक्तता । है नाश तीनों मुक्तीका । सायुज्यमुक्ति अविनाश ।२७-२९। ये चारों मुक्ति मानव । पावे भगवदभजनके आधार । यही निरूपण श्रोताजन । सुनिए आगे ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मनिवेदनभक्तिनाम समास नौंवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

था पहले ब्रह्म निराकार । वहां स्फूर्तिरूप हुवा अहंकार । हुवा उससे जो पचभूतोंका विस्तार । वर्णू मैं आगे ।१। वायुरूप अहंकार । उससे निर्माण हुवा तेज । तेजको आधारसे आप । आवरणरूप विस्तार ।२। जलाधारसे अनंत शेष । धारण करे पृथ्वीका

भार। जो हुई छप्पन्न कोटी विस्तृत। सप्तसागर वलयांकित।३। उसके मध्यभागमें मेरू पर्वत। सुवर्णमय और धराधर। चौरासी सहस्त्र विस्तार। है जिसका।४-५। अष्ट दिक्-पाल रक्षित वसुंधरा। उसमें पर्वत सहस्त्र सोलह। उनमें वो मेरू ऊंचा। है एक अमर्याद।६। उसके चारों ओर। पर्वत-श्रेणी लोकालोक नाम। उनसे पहले है हिमालय। जहां तक गये पांडव।७। धर्म और श्रीकृष्ण। गये हैं उसके पार। किन्तु आगे जाना कठिण। महासर्प मार्गमें।८। इसके पहिले ही बद्रिकाश्रम। जहां रहते हैं बद्रिनारायण। जहां जाते हैं महातापस। निर्वाण देह-त्यागार्थ।९। इसके पहले बद्रिकेदार। जहां जाते हैं यात्री सकल। ऐसा है सब विस्तार। मेरू पर्वतका।१०। उस मेरू पर्वतके पृष्ठभाग में। हैं तीन श्रृंगें वसतिस्थाने। परिवार सहित रहते हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश।११। ब्रह्मश्रृंग पर्वतरूप। विष्णुश्रृंग मरकतरूप। शिवश्रृंग स्फटिकरूप। नाम जिसका कैलास।१२। वैकुण्ठ नाम विष्णुश्रृंगका। सत्यलोक नाम ब्रह्मश्रृंगका। अमरावती नाम इंद्रका। है स्थान इनके नीचे।१३। वहां और उसके चारों ओर। हैं गण गंधर्व लोकपाल। चौदह लोक सुवर्णाचल। तेतीस कोटी देव ही।१४। हैं वहां कामधेनु असंख्य। अपार कल्पवृक्षोंके वन। जगह जगह पर सरोवर। अमृतसे परिपूर्ण।१५। हैं वहां अगणित चिन्तामणि। पारस की बहुत खाणी। है सुवर्णमय धरणी। लखलखायमान।१६। परम रमणीय जिसकी प्रभा। ऐसी रत्नसम पाषाण शिला। वहा अखण्ड हर्षवेला। आनन्दमय।१७। है वहां अमृतभोजन। दिव्य सुमन दिव्य गंध। अष्ट नायिका गंधर्वगायन। है वहां निरंतर।१८। लोपे न कदा तारुण्य। रोग व्याधीका न उदभव। वृद्धाप्य और मरण। न होवे कदा काल।१९। एक एकसे सुंदर। एक एकसे चतुर। धीर उदार और शूर। मर्यादा नाहीं।२०। वहां दिव्य देह ज्योतिरूप। विद्युल्लतासम स्वरूप। और यश कीर्ति प्रताप। सीमारहित।२१। ऐसे यह स्वर्गभुवन। सकल देवोंका वसतिस्थान। वहांका स्थल-महिमान। करे उतना अल्प।२२। यहां जिस देवका करेंगे भजन। उसी प्रकार देवलोक संपादन। यही जानो है लक्षण। सलोकता मुक्तीका।२३। सलोकता नाम लोकमें वास। समीपता सन्निध वास। सरूपता नाम होना देवसम रूप। ऐसी हैं तीन मुक्ती।२४। देवसमरूप हो गया देही। श्रीवत्स कौस्तुभ लक्ष्मी नाहीं। ऐसी है तीसरी मुक्ति। सरूपता नाम।२५। सुकृत है जब संचित। तब स्वर्गमें मिले भोग। सकृत सरते ही होते च्युत। देव रहते हैं स्वर्गमें।२६। इसीलिए तीनों नाशवन्त। सयोज्यमुक्ति शाश्वत। सुनिए उसका लक्षण। करता हूं कथन।२७। कल्पांतमें ब्रह्माण्डका नाश। पृथ्वी ही जलेगी पर्वत-सहित। स्वर्ग और स्वर्गस्थदेवोंका अंत। कहा रहेगी तीनों मुक्ति।२८। रहे शेष निर्गुण

निश्चल। निर्गुण भक्ति भी अचल। यही जानो है लक्षण। सयोज्यमुक्तिका।२९। है निर्गुण परमात्मा। उससे अनन्य होना ही सायोज्यता। सायोज्यता का नाम स्वरूपता। निर्गुण भक्ति।३०। सगुण भक्ति है चल। पिर्गुणभक्ति है अचल। किन्तु यह सब आवे समझ। सद्गुरुकृपासे।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मुक्तिचतुष्टयनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक पांचवा मंत्रोंका

॥ श्रीराम ॥

जय जय सद्गुरु पूर्णकाम। परम पुरुष आत्माराम। अनिर्वाच्य है आपका महिमान। मैं कैसे वर्णूं।१। वेद जिसको न पावे समझ। जो शब्दसे जानना भी दुर्बोध। वो सत्शिष्यको मिले साक्षात्। अलभ्य वस्तु।२। जो योगियोंका निजमर्म। श्रीशंकरका निजधाम। जो विश्रांतीका विश्राम। परम गुह्य अगाध।३। वही ब्रह्म सद्गुरुके कारण। होवे स्वयं कोई साधक। होगा जभी संसार दुर्घट। पलटे नाहीं ब्रह्म-स्थिति।४। स्वामीकृपांकित हूं मैं जब। बोलूं जो गुरु-शिष्य लक्षण। उसके अनुसार शरण। जाना चाहिए मुमुक्षूको।५। 'वर्णानां गुरु ब्राह्मण'। है ऐसे शास्त्रवचन। तस्मात् उसीकी शरण। जावो अनन्य भावसे।६। (अंबऋषि) ब्राह्मणके कारण। लिये नारायणने अवतार। विष्णुने श्रीवत्सभूषण। किया अंगिकार आनंदसे।७। ब्राह्मण-वचन प्रमाण। कहते हैं वेद-पुराण। धातु पाषाणमें देवपण। आता है ब्राह्मणमंत्रसे।८। मौंजीबंधन विरहित। है ब्राह्मण भो शूद्र। निभ्रांत। मौंजीबन्धन है दूसरा जन्म। द्विज ऐसे नाम उसका।९। सबसे पूज्य हैं ब्राह्मण। है ऐसी वेदाज्ञा प्रमाण। वेदविरहित बोलना अप्रमाण। अप्रिय भगवन्नको।१०। ब्रह्मणका करे याग तप दान। ब्राह्मण करे तीर्थाटन। कर्ममार्गका बिना ब्राह्मण। होगा नाहीं आचरण।११। ब्राह्मण वेद मूर्तिमंत। ब्राह्मण साक्षात् भगवन्त। पूर्ण होते मनोरथ। ब्राहमणके आशिर्वादसे।१२। ब्राहमण-पूजनसे वृत्ति शुद्ध। भगवन्तमें जुड़े चित्त। ब्राहमण तीर्थसे गति उत्तम। पावते प्राणी।१३। देव कोई लक्षभोजन।

माने पूज्य प्रथम ब्राह्मण। किन्तु भगवन्तको है भाव प्रमाण। नाहीं अन्य कोई प्रिय ।१४। हो शब्दज्ञानी अत्यंज। तो भी क्या ब्राह्मणसम वंद्य। ब्राह्मण है सुरवर-वंदित। अंत्यज रहे अपूज्य ।१५-१६। वेद विरहित है जो मत। उसका नाम पाषाण्डमत। किन्तु हैं जो हरिहरदास। उनका विश्वास ब्राह्मणपर ।१७-१८। तथापि कहे कोई जब। ब्राह्मणसे पावे देवाधिदेव। तो मिलना परमार्थधन। बिना सद्गुरु अशक्य ।१९। स्वधर्मकर्ममें पूज्य ब्राह्मण। किन्तु बिना सद्गुरु नाहीं ज्ञान। ब्रह्मज्ञान नाहीं जबतक। टले ना जन्ममृत्यु ।२०-२१। ज्ञान विरहित जो जो कर्म। वह सर्व जन्मका कारण। इसीलिये सद्गुरुके चरण। धरो धरो सुदृढ ।२२। जभी चाहो देवका दर्शन। तो धरो गुरुका सत्संग। सत्संग बिना देवाधिदेव। मिले ना कदाकाल ।२३। नाना साधन बापडी। सद्गुरु बिना संसार-बेड़ी। गुरुकृपा बिना प्राणी कष्टी। व्यर्थ ही होत ।२४। कार्तिकस्नान माघस्नान। व्रत उद्यापन दान। गोरांजन धूम्रपान। साधन पंचाग्नीका ।२५। हरिकथा पुराणश्रवण। करते सादर निरूपण। तीर्थस्थान परम कठिण। विचरते प्राणी ।२६। लखलखीत देवतार्चन। स्नान संध्या दर्भासन। तिलक माला गोपीचंदन। या मुद्रांकित सर्वांग ।२७। अर्घ्यपात्र संपुष्ट गोकर्ण। स्तुति स्तोत्र और स्तवन। घणघण घंटा आसन ध्यान प्रदक्षिणा नमस्कार ।२८-२९। कर ली पूजा पंचायातन। लक्षानुलक्ष मृत्तिका शिवलिंग। बेल नारिकेलादि सकल सांग। साहित्यपूजा ।३०। उपोषणनिष्ठा नेम। परम सायासयुक्त कर्म। किन्तु सब फलाशाकारण। चूक गये प्राणी मर्म ।३१। यज्ञादि कर्म करते। हृदयमें फलाशा धरते। स्वइच्छासे करते। योजना पुनर्जन्मकी ।३२। नाना सायासपूर्व। चौदह विद्याओंका अभ्यास। और रिद्धि-सिद्ध सर्व। हो गई प्राप्त ।३३। तथापि सद्गुरुकृपा विरहित। सर्वथा न घडे स्वहित। यमपुरीका अनर्थ। चुके नाहीं ।३४। जब नाहीं ज्ञानप्राप्त। तब न टले जन्ममरण। गुरुकृपा-बिना गर्भवास। चुके ना अधोगति ।३५। ध्यान धारणा मुद्रा आसन। भक्तिभाव और भजन। सकल ही होंगे निर्फल। जब नाहीं ब्रह्मज्ञान ।३६। सद्गुरुकृपा न जोड़े। और इधर उधर भ्रमण करे। तो अंधसम गिर पड़े। कीचड गर्तमें ।३७। जैसे नेत्रमें लगाते ही अंजन। दृष्टीसे देखे निधान। वैसे ही सद्गुरुवचन। ज्ञानप्रकाश करावे ।३८। सद्गुरुबिना जन्म निर्फल। सद्गुरुबिना दुःख सकल। सद्गुरुबिना अंतः-कारण। समाधान पावे ना ।३९। सद्गुरुका अभयकर। करावे प्रकट ईश्वर। संसार-दुख अपार। नाश होवे ।४०। हो गये पीछे असंख्य। संत महन्त मुनेश्वर। उनको ही ज्ञान-विज्ञान विचार। मिला सद्गुरुमुखसे ।४१। श्री रामकृष्णादि अवतार। गुरुभजनमें अति तत्पर। सिद्ध साधु संतजन। किया उन्होंने गुरुदास्य ।४२। सकल सृष्टीके चालक। हरिहर

ब्रह्मादिक। वे ही सद्गुरूपदांकिकर। बताते नाहीं स्वमहत्व ।४३। इसीलिए मोक्षका जो इच्छुक। उसको धरना सद्गुरुपथ। सद्गुरुबिना मोक्षप्राप्त। होगा नाहीं कल्पांतमें ।४४। अब सदगुरुस्वरूप कैसा। नाहीं अन्य गुरु ऐसा। शुद्ध ज्ञान जिसकी कृपा। प्रकाशे सतत ।४५। इसीका ही निरूपण। सद्गुरुकी पहचान। करो आप श्रवण। कहूंगा मैं ।४६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे गुरुनिश्चयनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

बताते हैं जो करामात। उनको गुरु ऐसे संबोधित। किन्तु मोक्षदाता वे न होत। सद्गुरु ऐसे ।१। सभामोहन और चेटक। साबरीमंत्र कुटिल अनेक। नाना असंभाव्य चमत्कार। करते जो ।२। कहते हैं औषधि प्रयोग। या सुवर्ण बनानेका मार्ग। वांछित दृष्टिबंधन ।३। साहित्य संगीत रागज्ञान। गीत नृत्य तान मान। सिखाते हैं वाद्य-वादन। गुरु हैं ऐसे ।४। पंचाक्षरी टोटके नाना। या पेट भरनेकी नाना विद्या। जाति अनुरूप व्यापार धंधा। ऐसे हैं गुरु अन्य ।५-६। हैं गुरु माता-पिता। या गायत्री मंत्रका दाता। किन्तु पैलपार जो करवाता। वो ज्ञानगूरु अलौकिक ।७-८। करे जो ब्रह्मोपदेश। अज्ञान अंधार विनाशक। जिवात्मा परमात्मा ऐक्य। करावे वो सद्गुरु ।९। देवमें भक्तमें जो भेद। जीवमें शिवमें जो भेद। उनको करे जो एकरूप। वह एक सद्गुरु ।१०। भवरूप व्याघ्र अत्यंत क्रूर। चाहता है गोवत्स संहार। ऐसे देखते ही उनका संरक्षण। करे वो सद्गुरु ।११। फंस गये प्राणी मायाजाल। संसार दुःखसे हुवे व्याकुल। उन सबको करे जो मुक्त। वही ऐक सद्गुरु ।१२। वासना नदीमहापूरमें। दीन जीव जो डूबते। स्वयं उनका करे तारण। वो एक सद्गुरु ।१३। गर्भवास अति संकटमय। इच्छारूप बेड़ी बंधन। वही तोड़े, देवे ज्ञान। वो सद्गुरु स्वामी ।१४। शब्दकवचके अंदर। बतावे वस्तु निजसार। वही गुरु मातृघर। हो जाय अनाथोंका ।१५। जीव अल्पमात्र बापडे। उनको बनावे रोकडे। संसारदुःख सबही नाशे। वचन प्रभावसे ।१६। वेदोंका जो अभ्यंतर। वही उद्धारवचन कवल। शिष्यको समझके पुत्रसम। करे उसको उपदेश ।१७। वेदशास्त्र महानुभाव। सबका एक ही अनुभव। वही अद्वैत ऐक्य-रूप्र। देता है गुरुदेव ।१८। जलावे संदेह निःशेष। पांले स्वधर्म सादर। वेदविरहित-अप्रमाण। करे ना वाद ।१९। जो जो करे मन अंगीकार। करे वैसे ही मुक्त आचार। वो कैसा गुरु, फिरे द्वार द्वार। मांगता भीख ।२०। शिष्यसे न करवाते

साधन। ना तो इंद्रियदमन। ऐसे गुरु टकेके तीन। मिल जावे तो भी छोड़ो।२१। करे जो कोई ज्ञानबोध। छेदे अविद्या समूल। प्रतिपादे इन्द्रियदमन। वही सद्‌गुरु जानो।२२। हो गये शिष्यांकित। या जो धनिकोंके आधिन। अति दुराशासे हुवे बद्ध। ऐसे गुरु दीनरूप।२३। शिष्य करे जो जो वांछा। वैसे ही करे मनकी धारणा। ऐसी पापिणी कामना। उठे उसके अंतर्याम।२४। शर्मिंदा होवे कोई गुरु। या चोर मंद पामरु। जानो वह है द्रव्यभोंदू। अधमसे भी अधम।२५। जैसा दुराचारी वैद्य। करे रुग्णका द्रव्य अपहार। है नाहीं व्याधि दुर्धर। ऐसे कहके करे घात।२६। ऐसा जो गुरु अनुपयुक्त। उससे मिले ना देव। व्यर्थ हो बतावे नाना भेद। बंधन मात्र अधिकाधिक।२७। है जहां शुद्ध ब्रह्मज्ञान। और क्रियारूप साधन। वही सद्‌गुरु निधान। बतावे शिष्यको।२८। बताते बाह्यांग जगमग। मंत्र फूंकते कर्ण रंध्र। इतना ही है जिनका ज्ञान। उनसे भगवन्त अति दूर।२९। आत्मानुभवके साथ। गुरु-शास्त्रानुभवोंका ऐक्य। वो है गुरु सुलक्षण। उसीकी शरण जावो।३०। अद्वैत निरूपणमें अगाध वक्ता। किन्तु विषयोंमें लोलुपता। ऐसे गुरुसे सार्थकता। होगी हो नाहीं।३१। आवे जैसा निरूपणमें समय। वैसा बोले वचन व्यर्थ। इससे न होगा बुद्धि-निश्चय। शिष्योंका भी।३२। निरूपणमें सिद्धियोंका वर्णन। उससे होगा दुराशा-बन्धन। होते ही नाना चमत्कार श्रवण। बुद्धि होवे विचलित।३३। मनमें आता है विचार। कि पहले थे विरक्त भक्त। थे वे सब भगवन्त-सदृश। सिद्धि-सामर्थ्यसे भी युक्त।३४। उनकी तुलनामें क्या हैं हम। व्यर्थ ही हमारा ज्ञान। ऐसा सामर्थ्यरूप स्वार्थ। आ जाय अभ्यंतर।३५। निशेःष दुराशा टूटे। तब ही भगवन्त भेटे। दुराशा धरते जो शब्दज्ञाते। हैं वे कपटी कामुक।३६। बहुत ही ज्ञानी बापडे। कामनावश मूर्ख हो गये। कामना इच्छिते इच्छिते। मर गये अकस्मात्।३७। निःशेष कामनारहित। ऐसा तो विरला संत। अबाधित है जिसका बोध। असामान्य अलौकिक।३८। सबका ही है अक्षय धन। किन्तु जाता नाहीं देहममत्व। इसीलिए ईश्वरका मार्ग। चूकता है मानव।३९। सिद्धि और सामर्थ्य। इनसे आवे देह महत्व। तब मिले कैसे अक्षय सुख। कामना दुःख विरहित।४०–४१। ईश्वर विरहित जो कामना। उसीसे होवे नाना यातना। कर्मफल भी पावते नाना। किन्तु टले ना पतन।४२। जब हो शरीरका अन्त। तब रहे नाहीं सामर्थ्य। अंतर पडे भगवन्त। कामनाओंके कारण।४३। इसीलिये निःकाम विचार। दृढ बुद्धिका निर्धार। हैं जहां, वही संसारपार। करवाता है सद्‌गुरु।४४। मुख्य सद्‌गुरुका लक्षण। प्रथम चाहिए विमल ज्ञान। निश्चयपूर्वक समाधान। स्वरूप-स्थिति।४५। होगा वैराग्य प्रबल। वृत्ति उदासीन केवल। आचार विशेष निर्मल।

स्वधर्मानुसार ।४६। और अध्यात्मश्रवण । हरिकथा निरूपण । परमार्थका विवरण । करे निरंतर ।४७। करे सारासारविचार । जिससे होगा जगोद्धार । नवविधाभक्तीका आधार । देवे जनको निरंतर ।४८। हो जहां साधन प्रतिष्ठा । भजन भक्ति नवविधा । उसीको जानिए श्रोता । सद्गुरुके लक्षण ।४९। अभ्यंतरमें शुद्ध ब्रह्मज्ञान । करे जो निष्ठाका साधन । उसके पास बहुत भक्त । पाते है विश्राम ।५०। नाहीं उपासनाका आधार । वो परमार्थ निराधार । बिना साधन बिना कर्म । होते हैं भ्रष्ट केवल ।५१। इसीलिए ज्ञान वैराग्य भजन । स्वधर्मकर्म और साधन । कथा निरूपण भजन मनन । नीति न्याय सर्वदा ।५२। इसीमें होवे एक भी न्यून । तो होगा सब विलक्षण । इसीलिए सर्व ही लक्षण । होते हैं सद्गुरुमें ।५३। वो बहुतोंका पालनकर्ता । बहुतोंकी करे चिन्ता । नाना उपाय साधना । करवाता है सद्गुरु ।५४। होगा नाहीं ऐसा सामर्थ्य । तो भ्रष्ट होगा परमार्थ । इसीलिये महानुभाव । रखते हैं दूरदृष्टि ।५५। छोड़े जो उपासना आचार । हैं वे भ्रष्ट अभक्त । क्यों न हो वे महन्त । जलने दो वो श्रेष्ठता ।५६। कर्म-उपासनाका हो अभाव । तो है वहां केवल बड़बड़ । अनाचारियोंका समुदाय । हंसे उनपर प्रपंची भी ।५७। नीच जातीका गुरु होय । तो वहां भी होगा भ्रष्टाचार । जैसे ब्रह्मसभामें कोई चोर । छिपावे मुख ।५८। नीच गुरुका तीर्थप्रसाद । न ले ब्राह्मण तो गुरुक्षोभ । और लेवे जब सादर । तब क्षोभे ब्राह्मणवृंद ।५९-६१। इसीप्रकार दोनों पक्ष । खड़े रहें संकट । इसीलिए नाहीं प्रशस्त । गुरू नीच जातीका ।६२-६४। संक्षेपमें करूं वर्णन । जहां दिखे उत्तम गुण । वे सर्व ही हैं लक्षण । समर्थ सद्गुरुके ।६५। एक मंत्रगुरु एक यंत्रगुरु । एक तंत्रगुरु एक उस्ताद गुरु । कुलगुरु राजगुरु विद्यागुरु । जातिगुरु भी एक ।६६-६७। एक माता-गुरु एक पितागुरु । एक देवगुरु एक जगद्गुरु । एक दीक्षागुरु एक प्रतिमागुरु । स्वयं बने गुरु एक ।६८-७०। ऐसे हैं गुरु अनेक । बोले मत-मतांतर । किन्तु मोक्षदायी अलौकिक । है गुरु निराला ।७१-७२। सद्विद्याजनित नाना गुण । विशेषरूपसे कृपालुपण । हैं ये सद्गुरुके लक्षण । जान लो आप ।७३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे गुरुलक्षणनाम समास दूसरा ॥२।

॥ श्रीराम ॥

हुवा अबतक विशुद्ध । सद्गुरुलक्षण निरूपण । अब कहूं सच्छिष्यकी पहचान । सुनिये सावधान ।१। सद्गुरु बिना सच्छिष्य । होगा निर्फल निःशेष । वैसे सच्छिष्य बिना

सद्गुरु । पावेगा कष्ट ।२। है भूमी उत्तम शुद्ध । वहां बोया बीज कीड़ । या है बीज उत्तम । पाषाण पर कैसे बोवे ।३। वैसे है सच्छिष्य सत्पात्र । किन्तु असद्गुरु कहे मंत्र तंत्र । वहां नाहीं कुछ भी हित । अरत्र या परत्र ।४। अथवा गुरु कृपा करी पूर्ण । किन्तु है अनधिकारी शिष्य । भाग्य पुरुषोंका पुत्र । है जैसे भिखारी ।५। तैसे एक बिना एक । हो जाय सर्वथा निरर्थक । परलोकका सार्थक । होवे कैसे ।६। इसीलिए सद्गुरु और सच्छिष्य । जहां हैं वहां अप्रयास । साधे परमार्थ-अभ्यास । दोनोंका ही साथसाथ ।७। है सुभूमी और उत्तम कण । आवे ना अंकुर पर्जन्य बिन । वैसे न हो निरूपण । तो परमार्थ बढ़े ना ।८। बोया बीज आया अंकुर । किन्तु निगाह नाहीं तो गया व्यर्थ । साधन बिना परमार्थ । वैसेही व्यर्थ ।९। जब तक हाथ न आया धान्य । तब तक करना चाहिए प्रयत्न । धान्य आने पर भी स्वस्थ । रहना न चाहिए ।१०। हुवा है आत्मज्ञान । तो भी करना चाहिए साधन । किया एक बार भोजन । तो भी चाहिए सामग्री ।११। सद्गुरु और साधनाभ्यास । सच्छिष्य और शास्त्रविचार । सद्वासना और सत्कर्म । पार करे भवसागर ।१२। सद्उपासना सत्कर्म । सत्क्रिया और स्वधर्म । सत्संग और नित्यनेम । निरंतर जहां ।१३। वहां ही होगा विमल ज्ञान । छोड़के अपना अवगुण । होवे वो सद्गुणसंपन्न । अन्यथा पाखण्ड मत ।१४। यह सब करता है सद्गुरु । किन्तु यदि न हो वो सद्गुरु । तो सच्छिष्यसे पालटे ना असद्गुरु । कदाकाल ।१५-१६। तस्मात् अवश्य है सद्गुरु मिलना । तब ही सन्मार्गकी आशा करना । न मिले तो होना । पाखण्डमति नास्तिक ।१७-१८। तथापि सच्छिष्यका लक्षण । सद्गुरुवचनमें विश्वास पूर्ण । अनन्यभावसे उनकी शरण । जावे वो सच्छिष्य ।१९। शिष्य चाहिए आचारशील । अनुतापि विरक्त निर्मल । निष्ठावन्त शुचिष्मंत नेमस्त । सर्व प्रकार ।२०-२१। चाहिए वो उद्योगी विशेष । धीर उदार दक्ष तत्पर । परब्रह्म जो अलक्ष । लक्षे उसको ।२२-२३। होगा वो परोपकारी । परम शुद्ध निर्मत्सरी । परम सावध उत्तमगुणी । अर्थान्तरमें प्रवेशकर्ता ।२४-२५। प्रज्ञावन्त प्रेमल भक्त । नीतिवन्त युक्तिवन्त । संतासंत–विचारवन्त । दृढव्रती पुण्यशील ।२६-२८। सात्विक भजक साधक । गुणालंकृत सत्पात्र । स्वतन्त्र और जगमित्र । कायाक्लेशी परमार्थी ।२९-३१। चाहिए वो सद्विद्याभजक । चाहिए सदभावधारक । चाहिए उसका अंतःकरण । परम शुद्ध ।३२। होगा नाहीं वो अविवेकी । या वो गर्भसृखी । होना चाहिए संसारदुःखी । संतप्त देही ।३३। संसारदुखसे पाया दुःख । त्रिविध तापसे हुवा तप्त । उसीको है अधिकार । परमार्थका ।३४। भोग लिया जिसये बहु दुःख । उसको परमार्थकालाभका संभव । संसारदुःखके कारण । आ सके वैराग्य ।३५। हुवा जिसे संसारमें

त्रास। उसके मनमें आवे विश्वास। विश्वाससे सद्गुरुचरण। धरे वो सुदृढ ।३६। अविश्वाससे छोडते चरण। ऐसे बहुत संसारमग्न। उनको सुखदुःखरूपी जलचर। तोडते निःशंक ।३७। इसीलिए दृढ विश्वास। धरे वो है सच्छिष्य। मोक्षाधिकारी विशेष। है वो अग्रगण्य ।३८। हुवा सद्गुरुवचनसे शांत। उसीको सायुज्यमुक्तिका लाभ। संसार संकटोंसे व्यथित। होगा नाहीं मन उसका ।३९। सद्गुरूसे देव श्रेष्ठ। माने उसका भाग्य नष्ट। उसके मनमें निःसंशय। वसे सामर्थ्यकी वांछा ।४०। सद्गुरूस्वरूप है शाश्वत। मानवनिर्मित देव आशाश्वत। वहां न रहे सामर्थ्य। हरिहर देवोंका भी ।४१। सद्गुरु-सामर्थ्य है सर्वाधिक। वहां कैसे ब्रह्मादिक। अल्पबुद्धि मानव रंक। समझे नाहीं यह बात ।४२। गुरु और देव समसमान। माने वो शिष्य अधम। भ्रांतिकारण अभ्यंतर। समझे ना सिद्धांत ।४३। मनुष्यके भावानुरूप। मंत्र फले देवरूप। सद्गुरु तो कल्पनातीत। इश्वरको भी अचिंत्य ।४४। सद्गुरु एक परिपूर्ण। देवोंसे अधिक कोटी गुण। करते करते जिसका वर्णन। होता है वाद शास्त्रोंमें ।४५। सदगुरुपद तो असामान्य। कौन है उनके समान। देवसामर्थ्य तो अति अल्प। मायाजनित ।४६। होवे सद्गुरु कृपांकित। उस पर न चले किसका सामर्थ्य। ज्ञानबलसे उसने वैभव। किया तृण–सामान ।४७। सद्गुरुकृपा और अपरोक्षज्ञान। होते ही दोनों एकत्र। मायासहित ब्रह्माण्ड। आवे ना दृष्टिपथ ।४८। ऐसा है सच्छिष्यवैभव। सद्गुरुवचनपर दृढ विश्वास। इसी कारण स्वयं ही ब्रह्म। होता है सच्छिष्य ।४९। अनुतापतप्त मानस। सद्गुरुवचनसे हुवा शान्त। उससे ही वो सच्छिष्य। होता है शुद्ध ।५०। जब वो धरे साधनमार्ग। सद्गुरुके वचनानुसार। तो पलटे ना शुद्ध भावार्थ। जभी हो औंधा ब्रह्माण्ड ।५१। सद्गुरुकी आये शरण। वे ही हैं सच्छिष्य जान। हुवे सत्साधनके कारण। ईशसम पावन ।५२। इसी प्रकार सदभाव-मानस। वे ही करें मोक्षसेवन। इतर मायिक असच्छिष्य। हैं वेषाधारी ।५३। पढतमूर्ख जो होत। देखत विषयोंमेंही सुख। परमार्थ-संपादनका ढोंग। व्यर्थ ही करते ।५४। उनकी वृत्ति अनावर। धरे दृढ संसार-विषय। परमार्थ चर्चा विचार। मलिन होवे ।५५। परमार्थमें करे आलस्य। संसारमें बहु उत्साह। कुटुंबभार वाहे नित्य। माने ना कष्ट ।५६। प्रपंचमें माने आनन्द। परमार्थमें विनोद। भ्रान्त मूढ मतिमंद। कामासक्त मन ।५७। जैसे सूकरका पूजन। भैंसको चंदन-विलेपन। वैसे विषयीजनको ब्रह्मज्ञान। होगा व्यर्थ विवेकबोध। ।५८। ऊखण्डमें लोटे रासभ। क्या वो सूंघे परिमल। संचरे अंधारमें उलूक। कैसे उसको हंसगति ।५९। तैसा जो विषयसुखासक्त। होवे उसका अधःपतन। उसको कैसे भगवन्तप्रेम। या कैसे सत्संग ।६०। उपर करके दंतावली। श्वान करे चर्वण

हड्डी। तैसा विषयसुखकारण विषयी। तडपता रहे।६१। श्वानमुखमें मिष्ठान्न। मर्कटको दिया सिंहासन। तैसे विषयासक्तको ज्ञान। होगा कैसे पचन।६२। रासभ-पालनमें गया जन्म। वो कैसे पावे पण्डितोंमें मान। वैसा ही विषयासक्त जिसका मन। नाहीं उसको परमार्थ।६३। जहां राजहंसोंका मेला। वहां गया एक कौवा। ध्यान धरे अभक्ष्यका। कहावे हंस हूं मैं।६४। वैसे ही सत्संगमें विषयी जन। कहलाते हैं हम सज्जन। विषयरूप अभेद्य-ध्यान। करते हैं मनमें सदा।६५। कांखमें लेकर वनिता। चाहता है संन्यासी बनना। वैसे विषयग्रस्त नाना कल्पना। बड़बड़े ज्ञान।६६। एवं है जो पढतमूर्ख। वो क्या जाने अद्वैतसुख। नाना-योग्य प्राणी भोगते। स्वइच्छासे नर्क।६७। करे जो वेश्याकी सेवा। वो क्या होगा मंत्री भला। वैसे विषयदासको मानना। भक्तराज कैसे।६८। विषयासक्त बापड़े। वाचाल शाब्दिक बड़बड़े। परम नष्ट शिष्य ऐसे। ज्ञानहीन दुर्जन।६९-७०। तथापि हों जभी ऐसे पापरूप। दीर्घदोषी वज्रलेप। उनके लिए प्रायश्चित। है अनुतापरूप।७१। यदि उनको होना है शुद्ध। तो जाना चाहिए सद्गुरुकी शरण। उनको करके संतुष्ट। होवे कृपासे पुनीत।७२। घड़े जिससे स्वामीद्रोह। जाय नरकमें यावच्चन्द्र। उसके लिये है न उपाय। स्वामीसंतोषसे अन्य।७३। आतेही श्मशान वैराग्य। डाले कोई लोटांगण। इतनेसे क्या होगा ज्ञान। विषयासक्त मानवको।७४। नाहीं भाव किंचित् भी स्थिर। किन्तु ले लिया गुरुसे मंत्र। इससे हो गया वो शिष्य। चार दिवस के लिए।७५। इसी-प्रकार गुरु अनेक। स्मरे शब्द भी पाखण्ड। तो बन गया बहुत वाचाल। किन्तु ज्ञानहीन।७६। घड़ीमें रोवे घड़ींमें नमन करे। घड़ीमें वैराग्य चढे। घड़ीमें अहंभाव जड़े। ज्ञानी हूं ऐसे।७७। घड़ीमें धरे विश्वास। घड़ीमें करे वादविवाद। ऐसे करे नाना छंद। जैसे कोई पागल।७८। कामक्रोध मद मत्सर। लोभ मोह नाना विकार। अभिमान कापटय तिरस्कार। हृदयमें जिसके।७९। अहंकार और देहप्रेम। अनाचार और विषय संग। संसार प्रपंच-उद्वेग। वसे अभ्यंतर।८०। दीर्घसूत्री कृतघ्न पापी। कुकर्मी कुतर्की विकल्पी। अभक्त अभाविक शीघ्रकोपी। निष्ठुर परघातक।८१। हृदयशून्य और आलसी। अविवेकी और अविश्वासी। अधीर और अविचारी। दृढ़ धरे संदेह।८२। आशा ममता तृष्णा कल्पना। कुबुद्धि दुर्वृत्ति दुर्वासना। अल्पबुद्धि विषयकामना। हृदयमें जिसके।८३। ईषणा असूया तिरस्कार। करे निन्दा सतत। देहाभिमानकी उद्गार। बोले बारबार।८४। सहे ना क्षुधा-तृष्णाका वेग। होवे सत्वर निद्राधीन। कुटुंब-चिन्ता न हो क्षीण। भूला माया-भ्रान्तिसे।८५। बोले बहु शाब्दिक। लेशमात्र नाहीं वैराग्य। ना अनुताप साधन धारिष्ट। मार्ग न धरे परमार्थका।८६। भक्ति विरक्ति ना शांति। लीनता दमन ना

सद्वृत्ति। कृपा दया ना तृप्ति। कैसे होगी सुबुद्धि ।८७। कायाक्लेश करे तो शक्तिहीन। धर्मविषयमें परकृपण। हृदय जिसका बहु कठिण। आवे नाहीं सत्क्रिया ।८८। जनके प्रति नाहीं आर्जव। है जो सज्जनको अप्रिय। मनमें जिसके अहर्निश। परन्यून वसे ।८९। सदा सर्वकाल असत्य। या बोले द्व्यर्थी मायिक। क्रिया विचार नाहीं एक। विश्वासार्ह वो कैसा ।९०। परपीडा करनेमें तत्पर। जैसे बिच्छु और सर्प। से कुशब्दसे अंतःक-रण। भेद सकल लोगोंका ।९१। छिपावे स्व-अवगुण। दूसरेको कठोरवचन। मिथ्या ही दोषारोपण। लगावे लोगोंको ।९२। है स्वयं पापात्मा। दूसरेको न करे क्षमा। जैसे हिंसक दुरात्मा। परदुःखसे न दुःखित ।९३। परदुःख उदासीन। करते कराते पीड़ा दारुण। जब होते वे दुःखविव्हए। तब माने संतोष ।९४। ऐसा जो परदुःख-संतोषी नर। जो स्वदुःख न कर सके सहन। उसको ले जाते हैं यमदूत। ताड़ना करते यमपुरीमें ।९५। ऐसे जो अधम मदांध। उनको कैसे मिले भगवन्त। जिनको पूर्वपातक कारण। आवे ना सुबुद्धि ।९६। जब आवे देहान्तसमय। जब होवे सर्वांग क्षीण। छोड़े उसको जब मित्र बांधव। तभी समझेगा वो पापी ।९७। इसके विपरीत जो सच्छिष्य। जिसके पास है सदभाव। उसके लिए है स्वानंद-भोग। परमार्थजन्य ।९८। जहां है कुलाभिमान। हैं जहा प्रपंचसंग। वहां ही होगा दुःखपर दुःख। कष्टमय जीवन ।९९-१००। संसारसंगसे सुख हुवा। हमने ना देखा ना सुना। किन्तु जानबूझ सुख माग। हैं वे पढतमूर्ख अंध ।१०१-१०२। भले करो सुखसे प्रपंच। किन्तु परमार्थ भी बढावो साथ। डुबाना समूल परमार्थ। नाही यह उचित ।१०३। हो गया यहांतक निरूपण। गुरुशिष्योंकी पहचान। अब सुनिए आगे लक्षण। उपदेशका ।१०४।

॥ श्रीराम ॥

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शिष्यलक्षनाम समास तिसरा ॥३॥

मंत्रोपदेश हैं असंख्य। देता है कोई नाममंत्र। कोई करवाते हैं जप। ओंकारका ।१-२। शिवमंत्र भवानीमंत्र। विष्णुमंत्र महालक्ष्मीमंत्र। अवधूत गणेशमंत्र। मार्तण्ड मंत्र और भी ।३। मत्स्य कूर्म वराह मंत्र। नृसिह वामन भार्गव मंत्र। राममंत्र कृष्णमंत्र। कहते हैं कोई ।४। भैरव मल्हारी हनुमंत। यक्ष शेष अघोर मंत्र। नारायण पांडुरंग गरुड मंत्र। वायु वेताल झोटिंग ।५-६। बाला बगला काली कंकाली। बटुकादि मंत्र नाना शक्ति। असंख्य देवोंकी मंत्रावली। सुगम और कठिण ।७-१०। मंत्रसामर्थ्य अद्भुत।

उत्तरे सर्पादिका विष। भूत पिशाच बाधा समस्त। शीतादि व्यथा ही नासे।११। ऐसे नाना प्रकारके मंत्र। उपदेश करते कर्णपात्र। जप ध्यान पूजा यंत्र। कहते हैं विधानयुक्त।१२। शिव हरी विठ्ठल कृष्ण। विष्णु अच्युत नारायण। अनंत दत्त मेघश्याम। ओंकार राम परमेश्वर।१३-१६। गुरु विघ्नहरु गरुडध्वज। अधोक्षज केशव भार्गव। तुकाई मल्लारी विश्वनाथ। ऐसे नाम शिवभक्तीके।१७-२१। सिवाय इनके मुद्रा चत्वारी। खेचरी भूचर चाचरी अगोचरी। आसनप्रकार भी नानापरी। करते हैं उपदेश।२२। बतावे एक अद्‌भुत। अनाहत ध्वनीका लक्षण। पीण्डज्ञानी गुरु एक। पिण्डज्ञान बतावे।२३। कर्ममार्ग उपासनामार्ग। अष्टचक्र अष्टांग योग। तत्वज्ञान अजपा जप। कहते हैं अन्य।२४-२५। सगुण निर्गुण निरूपण। महावाक्योंका विवरण। सर्वब्रह्म और तींर्थाटन। कहते हैं गुरु अन्य।२६-२७। शाक्तमार्ग इंद्रियपूजन। मुक्तमार्ग वशीकरण। स्तंभन मोहन उच्चाटन। चेटक नाना प्रकार।२७-२९। ऐसे हैं उपदेश असंख्य। किन्तु ज्ञान न हो तो निरर्थक। एतद्विषय सुनिए एक। है जो भगवद्वचन।३०-३१।

नानाशास्त्रं पठेल्लोको नानादैवतपूजनम्। आत्मज्ञानं विना पार्थ सर्वकर्म निरर्थकम् ॥
शैवशाक्तागमाद्या ये अन्ये च बहवो मताः। अपभ्रंशसमास्तेऽपि जीवानां भ्रांत्तचेतसाम् ॥
न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिद मुत्तमम् ॥

इसीलिए आत्मज्ञान सम। नाहीं अन्य पवित्र उत्तम। तस्मात् उपदेश वरिष्ठ। है आत्मज्ञान का।३२-३३।

यस्य कस्य च वर्णस्य ज्ञानं देहे प्रतिष्ठितम्। तस्य दासस्य दासोऽहं भवे जन्मनि जन्मनि ॥

आत्मज्ञान की महिमा। जाने नाहीं चतुर्मुख ब्रह्मा। प्राणीं बापडा जीवात्मा। वह क्या जाने।३४। सकल तीर्थोंकी संगती। स्नानदानोंकी फल श्रुती। उनसे आत्मज्ञानकी महती। है कोटिगुण विशेष।३५।

पृथिव्यां यानी तीर्थानि स्नानदोनेषु यत्फलम्। तत्फलं कोटिगुणितं ब्रह्मज्ञानसमोपमम् ॥

एवं है जो आत्मज्ञान। वह गहनोंमे ही गहन। सुनिए उसका लक्षण। करता हूं मैं आगे।३६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उपदेशनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

जब नाहीं ज्ञान प्रांजल। तब है सब निर्फल। ज्ञानरहित अस्वास्थ्य। जायेगा नाहीं।१। करते ही 'ज्ञान' ऐसा उच्चार। उठे प्रश्न, 'क्या इसका अर्थ'। इसीलिए भ्रम निरसनार्थ। करूंगा अब ज्ञानचर्चा।२। भूत भविष्य वर्तमान। जनता है पदार्थ प्रच्छन्न। इसको कहते है ज्ञान। किन्तु नाहीं वह सत्य।३। बहुत किया विद्यापठण। संगीतशास्त्र रागज्ञान। वैदिकशास्त्र वेदाध्ययन। किन्तु नाहीं वह सत्य।४। नाना व्यवसायोंका ज्ञान। नाना दीक्षाओंका ज्ञान। नाना परीक्षाओंका ज्ञान। है वह नाहीं सत्य।५। नाना वनिता नाना नर। नाना अश्व गज श्वापद। नाना पशु पक्षी भूत यान। परीक्षा इनकी ज्ञान नाहीं।६-९। वस्त्र शास्त्र धातु रत्न। नाना पाषाण काष्ठ वाद्य। भूमिजल तेज रस बीज। परीक्षा इनकी ज्ञान नाहीं।१०-१२। अंकुर वल्ली पुष्प फल। दुःख रोगचिन्ह मंत्र यंत्र। क्षेत्र मूर्ति गृह पात्र। इनकी परीक्षा ज्ञान नाहीं।१३-१७। समय तर्क अनुमान परीक्षा। विद्या कला चातुर्य परीक्षा। शब्द अर्थ भाषा परीक्षा। यह नाहीं सत्य ज्ञान।१८-२१। स्वर वर्ण लेखन परीक्षा। मतमतान्तर वृत्ति परीक्षा। रूप रसना सुगंध परीक्ष। है ही नाहीं सत्य ज्ञान।२२-२४। सृष्टिज्ञान पदार्थ परीक्षा। नेमक बोलना प्रतिवचन देना। शीघ्र ही कवित्व करना। नाहीं यह सत्य ज्ञान।२५-२६। नेत्रपल्लवी नादकला। करपल्लवी भेदकला। स्वरपल्लवी संकेतकला। ये भी नाहीं सत्य ज्ञान।२७। काव्य कौशल्य संगीतकला। गीत प्रबंध नृत्यकला। सभा चातुर्य शब्दकला। नाही यह सत्य ज्ञान।२८। वाग्विलास मोहनकला। रम्य रसाल गायन कला। हास्य विनोद काम कला। नाहीं यह सत्य ज्ञान।२९। चित्रकलादि चौसठ कला। चौदह विद्या सिद्धि सकला। विद्याकलाओंमें प्रवीणता। नाहीं यह सत्य ज्ञान।३०-३१। उपर्युक्त नाना ज्ञान। सत्य ऐसा होता भास। किन्तु मुख्यज्ञानका लक्षण। है प्रकृतीका निरास।३२-३३। अंतर्ज्ञानसे कोई जाने। जो अन्य मनमें होवे। अगाध है ज्ञान कहते। किन्तु नाहीं वो आत्मज्ञान।३४। कोई एक करे मानसपूजा। बतावे प्रमाद उसको दूजा। लोग कहेंगे, "कैसा वो परम ज्ञाता। जानता है अंतरस्थिति"।३५। इस प्रकार नाना ज्ञान। हैं केवल आभासमात्र। किन्तु जिससे होवे सायुज्य। वो ज्ञान है अलौकिक।३६-३७। उस आत्मज्ञानका लक्षण। करूंगा आगे निरूपण। श्रोताओं दीजिए अवधान। होगा पूर्ण समाधान।३८-३९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बहुधाज्ञाननाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए ज्ञान का निरूपण। ज्ञान का अर्थ है आत्मज्ञान। स्वयं ही स्वरूप-दर्शन। यह ज्ञान है शाश्वत।१। मुख्य देव को जानना। सत्य स्वरूप पहचानना। नित्यानित्य विचारणा। इसीका नाम ज्ञान।२। होवे जहां दृश्य प्रकृतीका अंत। जहां न रहे पंचभौतिक। जहां समूल द्वैत निवारण। वहां है ज्ञान शाश्वत।३। मनबुद्धिसे अगोचर। न चले वहां तर्क विचार। परावाणी से ही पर। ज्ञान सत्य वो मानो।४। जहां न दृश्यका संपर्क। जहां ज्ञातृभाव हो अज्ञान। उसको कहो स्वरूपज्ञान। विमल शुद्ध।५। सर्वसाक्षि अवस्था तुरीय। कहते हैं जिसको ज्ञान। जानो वह केवल व्यर्थ। पदार्थज्ञान।६। दृष्य पदार्थोंका ज्ञान। है वह पदार्थज्ञान। शुद्ध स्वरूपका ज्ञान। है वह शाश्वतज्ञान।७। जहां नाहीं 'सर्वका' भान। वहां कैसे होगा साक्षित्व। इसीलिए तुरीया जो ज्ञान। है नाहीं शुद्ध।८। है वही ज्ञान अद्वैत। तुर्या तो प्रत्यक्ष द्वैत। तस्मात् शुद्धज्ञान संतत। है एक असामान्य।९। शुद्ध ज्ञान का लक्षण। शुद्ध स्वरूप दर्शन। इसको ही कहो तुम। शुद्ध ज्ञान।१०। "ब्रह्मास्मि" इति महावाक्य। है भला उसका उपदेश। किन्तु करना चाहिये विचार। जप न उसका केवल।११। लेना हो महावाक्य-सार। तो करो उसीका मनन। उसके जपसे भ्रान्ति अंधार। जायेगा नाहीं।१२। महावाक्यार्थानुसंधान। करे तो स्वयं ब्रह्मरूप। किन्तु जप करे तो होवे भिन्न। और व्यर्थ थकावट।१३। महावाक्य का करना विवरण। है यही मुख्य ज्ञान लक्षण। करते ही शुद्ध लक्ष्यानुसंधान। होता है ब्रह्मरूप।१४। स्वयंको स्वयंका लाभ। यह ज्ञान परम दुर्लभ। आदि अंतमें जो स्वयंभ। स्वरूप ब्रह्म।१५। होवे जहां से जग उत्पन्न। और जहां होवे उसका विलय। इसका जब होगा अनुभव। तब ही नाशे भ्रान्ति।१६। मत या अन्य मतान्तर। होते हैं जहा निरर्थक। उस स्थितीका करे जो विचार। वो होवे उससे ऐक्यरूप।१७। है जो चराचर का मूल। वो स्वरूप है शुद्ध निर्मल। उसी का नाम है ज्ञान। वेदान्त मान्य।१८। शोध करो अपना मूल स्थान। तो उड़ जाय सहज अज्ञान। इसका ही नाम ब्रह्मज्ञान। मोक्षदायक।१९। करते करते शोध अपना। स्वयं ही आवे सर्वज्ञता। तब एक देशीय ज्ञानावस्था। रहेगी नाही।२०। कौन मैं हूँ ऐसा संकल्प। करके देखो तो तुम देहातीत। देखते देखते ही निश्चित। हो जावोगे स्व-रूप।२१। अस्तु एवं, अब पूर्वकाल। कौन कौन गये पार। इसी ज्ञानसे साचार। सुनलो श्रोता सज्जन।२२। व्यास वसिष्ठ महामुनी। शुक नारद समाधानी। जनकादिक महाज्ञानी। तर गये इसी ज्ञानसे।२३।

वामदेवादिक योगेश्वर। वाल्मीक अत्रि ऋषेश्वर। शौनकादि जिन्होने अध्यात्मसार। ग्रहण किया वेदान्तमत ।२४। सनकादिक मुख्य मुख्य। आदिनाथ मच्छेन्द्र गोरक्ष। और अनेक संत महंत। स्वानुभवी अगाध ।२५। सिद्ध मुनी महानुभाव। सकलोंका जो अंतर्भाव। जिस सुखसे महादेव। डोलते हैं सर्वकाल ।२६। वेदशास्त्रोंका जो सार। गुरु-शिष्योंका जो अनुभव। जिसकी प्राप्ति भाग्यानुसार। भावकोंको होवे ।२७। साधु संत और सज्जन। भूत भविष्य वर्तमान। सबोंका ही जो गुह्य ज्ञान। उसका करूं कथन अब ।२८। प्राप्त नाहीं जो तीर्थ-व्रतोंसे। या न तप-दान धूम्रपानसे। पंचाग्नी गोरांजनसे। जो न जुड़े किंचिन्मात्र ।२९। सकल साधनोंका फल। ज्ञान राशी जो केवल। जहां सब देहमूल। टूटे निःशेष ।३०। छप्पन भाषा छप्पन ग्रंथ। उनमें मुख्य वेदान्त। इन सबोंका गहनार्थ। है एक ही ।३१। जिसको जानते नाही पुराण। न करे वेदवाणी कथन। वही मैं बोलूं इसी क्षण। गुरु कृपाबोधसे ।३२। नाही देखा संस्कृत। या न कोई महाराष्ट्र ग्रंथ। किन्तु मेरा स्वामी कृपावन्त। वास करे मम हृदय ।३३। अब न आवश्यक संस्कृत। या न कोई प्राकृत। सद्गुरु स्वामी कृपासहित। है हृदय में मेरे ।३४। किया न मैं वेदाभ्यास। अथवा श्रवणसायास। विना प्रयत्न प्रसादरूप। आती है सद्गुरुकृपा ।३५। महाराष्ट्र भाषा में है जो ग्रंथ। होंगे उससे श्रेष्ठ संस्कृत। संस्कृत ग्रंथोंमें भी वरिष्ठ। होगा वो वेदान्त ।३६। उस वेदांत से ही श्रेष्ठ। नाही कुछ बोलते लोक। क्योंकी वेद ही हुवे प्रगट। वेदान्तरूपसे ।३७ ऐसा ही जो वेदान्त। उस वेदान्तकाही मथितार्थ। अति गहन जो परमार्थ। वही सुनिये अब ।३८। अरे गहनोमें ही गहन। जानो है एक सद्गुरुवचन। सद्गुरुवचनसे ही समाधान। है निश्चत नि-संदेह ।३९। सद्ररुवचन ही वेदान्त। सद्गुरुवचन ही सिद्धान्त। अनुभव में भी सद्गुरुवचन। आवे प्रत्यक्ष अपने आप ।४०। अत्यंत गुप्त और गहन। है जो मेरे स्वामी के वचन। जिससे मेरा समाधान। हो गया पूर्ण ।४१। वही चाहता हूं कहना अब। श्रवण करो तुम सावधान। सुनते ही शिष्य म्लानवदन। धरे चरण सुदृढ़ ।४२-४३। गुरुदेव ने कहा महावाक्य। हो वो जभी अतर्क्य। तो भी 'अहं ब्रह्मस्मि' का अर्थ। है गुरू-शिष्य ऐक्या रुप ।४४। यही जानो इसका मर्म। स्वयं तुम ही हो ब्रह्म। एद्विषय संदेह भ्रम। धरो ही मत ।४५। नवविधाप्रकार भजन। उनमें मुख्य आत्मनिवेदन। उसका ही समग्र व्याख्यान। करता हूं अब ।४६। हैं जो यह पंचभूत। इनका होगा ही प्रलय। कल्पान्त में प्रकृति और पुरुष। होते हैं ब्रह्मरूप ।४७। होगा जव दृश्यका नाश। तो कहां रहेगा पृथक् जीव। ब्रह्मैक्यमें ही मूलतः ऐक्य। है सब वस्तुओं का ।४८। जब सृष्टीकी नाही वार्ता। तब प्रथम से ही है ऐक्यता। पिण्ड ब्रह्माण्ड देखने जाता। तो हैं ही नाही ।४९। ज्ञानवन्ही

होवे प्रज्वलित। तो जल जाय कचरा दृश्यजात। भिन्नत्व ही पावे नाश। रहे एक ज्ञान-वन्ही ।५०। प्रवृत्ति नाशे मिथ्यत्व भानसे। तो दृश्य रहते ही नष्टप्राय होवे। तब सहज ही हो जाये। आत्मनिवेदन ।५१। होवे गुरुप्रति अनन्यभाव। तो क्यों होते तुम चिंतित। भिन्न रुद से अभक्त। होवो ना पुनरपि ।५२। तस्मात् करो सद्गुरुभजन होवे जिससे अनन्यभाव। सद्गुरुभजन से समाधान। होता है निःसंदेह ।५३। इसीका नाम आत्मज्ञान। आत्मज्ञान से समाधान। तब कैसा भवभय बंधन। है जो समूल मिथ्या ।५४। देह मैं हूं ऐसी मति। धरे जो वो आत्मघातकी। देहाभिमान से पुनरावृत्ति। भोगता ही रहेगा ।५५। तुम हो चत्वार देह से भिन्न। जन्मकर्म से भी हो भिन्न। तुम ही अंतर्बाह्य व्यापक। चराचर सकलोंका ।५६। है न किसीको बंधन। भ्रान्ती से भूल गये जन। दृढ़ धरते हैं निष्कारण। देहाभिमान ।५७। बैठो रे तुम एकान्त। लेवो स्व-रूप में विश्राम। जिससे होगा दृढीकरण। परमार्थ तेरा ।५८। अखंड घड़े श्रवण मनन। तब ही होगा समाधान। पूर्ण होते ही ब्रह्म ज्ञान। भरे वैराग्य अंगमें ।५९। हो गया हूं मैं मुक्त। ऐसे मान कर भ्रमयुक्त। करोगे इंद्रियां अनर्गल। तो न होगा मनः स्वास्थ्य ।६०। उपजे विषयों में वैराग्य। तो समझो हुवा ज्ञान पूर्ण। धरे विषयरूप मणीका लोभ। तो गया परमार्थ ।६१-६२। सुनो तुम शिष्य सावधान। कहता हूं भविष्यवचन। जिसको है जिसका ध्यान। वही पावे वो पुरुष ।६३। इसीलिये अविद्याका त्याग। करके धरो सद्विद्या संग। जिससे तुम जगद्वंद्य। हो जावो सत्वर ।६४। सन्निपात व्याधी में जैसे। दृष्टी से भयानक देखे। किंतु औषध लेते लेते। पावे आरोग्य आनंद ।६५। वैसे अज्ञानरूप सन्निपात। होते ही देखे मिथ्या भास। किन्तु सेवन करे जो ज्ञान-औषध। उसको नाहीं मिथ्याभान ।६६। मिथ्या स्वप्नसे भयभीत। करे व्यर्थ आक्रोष। किन्तु होता है जागृत। तो पूर्ववत निर्भय ।६७। मिथ्या तो भी भासे सत्य। इसीलिए बहुत दुःख। मिथ्या कहने से ही केवल। होवे ना नाश संसार ।६८। है जो नर सदा जागृत। वो ही कहेगा मिथ्या जग। जागृत है तो नाहीं भय। जभी हो निद्रा कालमें ।६९। अविद्यानिद्रा का पूर। सर्वांग में भरे परिपूर्ण। इसीलिये जागृति भी पूर्ण। होने दो श्रवण-मनन से ।७०। जागृती की पहचान। सुनो उसका लक्षण। विषयों में विरक्ति पूर्ण। अंतःकरणपूर्वक ।७१। नाहीं ऐसा जो विरक्त। समझो है वो नाहीं साधक। करना चाहिये उसको साधन। बडप्पन छोड़के ।७२। माने नाहीं जो साधन। वो सिद्ध होते हुए भी बद्ध। उससे भला मोक्ष इच्छुक। ज्ञानाधिकारी ।७३। शिष्य ने पूछा तब प्रश्न। बद्ध मुमुक्षुओं का क्या लक्षण। साधक सिद्ध पहचान। किस प्रकार होगा स्वामी ।७४। इसका उत्तर अगले समास। देऊंगा मैं सविस्तार। श्रोताओं कथानुसंधान। करिए

अवधानपूर्वक ।७५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शुद्धज्ञातनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

चराचर सृष्टीमें अपार जीव। उनमें चत्वार प्रकार मानव। बृद्ध मुमुक्षु साधक सिद्ध। विशद अब करता हूं ।१-५। प्रथम बद्ध तो जान ऐसा। अंधारमें अंध जैसा। चक्षुबिना दशदिशा। शून्याकार ।६। भक्त ज्ञानी तापसी। योगी वीतरागी संन्यासी। देखे तो भी जावे नाहीं। उनके पास ।७। न जाने न देखे कर्माकर्म। न जाने न देखे धर्माधर्म। न जाने न देखे परमार्थ। होगा सुगम जभी ।८। देखे न वो सच्छास्त्र। सत्संगति सत्पात्र। है सन्मार्ग जो पवित्र। न देखे उसको ।९। समझे ना सारासार विचार। समझे ना स्वधर्म आचार। समझे ना कैसा परोपकार। दान पुण्य ।१०। नाहीं हृदयमें भूतदया। नाहीं सुचिष्मंत काया। नाहीं मृदुवचन कदा। संतोषकारी ।११। भक्ति ज्ञान वैराग्य ध्यान। सद्विवेक मोक्षसाधन। माया और परमार्थलक्षण। समझे नाहीं एक ही ।१२-१३। क्या है जीवोंका जन्ममूल। नाना साधनोंका क्या फल। कैसा है अध्यात्म-निरुपण। नाहीं निश्चय किसीका ही ।१४-१५। समझे ना बंध-मुक्तिके लक्षण। समझे न ब्रह्म विलक्षण। समझे ना 'हूं स्वयं कौन'। निजस्वार्थ भी अपना ।१६-१७। जिसको नाहीं आत्मज्ञान। जिसको संकल्पसे बंधन। जिसको न तीर्थ व्रत दान पुण्य। है प्राणी वह बद्ध ।१८। दया नाहीं करुणा नाहीं। आर्जव नाहीं मैत्री नाहीं। शान्ति नाहीं क्षमा नाहीं। नाम इसका बद्ध ।१९। नाहीं जहा ज्ञान किंचिन्मात्र। वहां होंगे नाना दोष। उनसे ही माने परम संतोष। वही बद्ध है जानो ।२०-२१। काम क्रोध गर्व मद। खेद द्वंद्व दर्प दंभ। बहु जिसको विषय-लोभ। वह बद्ध है जानो ।२२-२३। बहु कर्कश बहु मत्सर। बहु असूया तिरस्कार। बहु पापी बहु विकार। लक्षण यह बद्धका ।२४। अभिमान कुकर्म कापट्य। कुतर्क विवाद भेदाभेद। करे बहु कृपामंद। नाम उसीका बद्ध ।२५-२५। अधर्म अभिलाष निंदा द्वेष। भ्रष्ट अविचार अनाचार। कुविद्या क्रोध परघातक। लक्षण यह बद्धका ।२७-२९। कलहप्रिय और स्वार्थी। दंशधर्ता और दुर्मती। दुराशायुक्त बहु पातकी। है वह बद्ध ।३०। कल्पना कामना तृष्णा वासना। ममता विकल्प विषाद भावना। प्रपंची बहु उपाधी नाना करे तो बद्ध ।३१-३२। बहु पाखंडी बहु वाचाल। बहु पैशून्य बहु दुर्जन। बहु आलस्य बहु नास्तिक। है वह बद्ध ।३३-३४। परमार्थ-विषयमें अनादर। प्रपंच-

विषयमें ज्ञानादर। संसार भार से असमाधान। है जिसको वह ब्रद्ध ।३५-३७। सत्संगकी नाहीं रुचि। संतनिन्दाकी बहु प्रीति। देहबुद्धीकी सदा बेड़ी। है यह बद्ध लक्षण ।३८। है जपमाला करस्थ। किन्तु द्रव्यदाराका करे ध्यान। सत्संगका सदा दुकाल। है यह बद्ध लक्षण ।३९। देखना चाहे द्रव्यदार। सुनना चाहे द्रव्यदारा। चिंतनार्थ भी द्रव्य दारा। ऐया है वो बद्ध ।४०। काया वाचा और मन। चित्त वित्त जीव प्राण। द्रव्यदारा का ही भजन। करे वो बद्ध ।४१। इंद्रियां करके चंचल। होने न दे निश्चल एक पल। द्रव्यदाराकरण ही सर्व। समझो वो बद्ध ।४२। द्रव्यदारा उसका तीर्थ। द्रव्यदारा उसका परमार्थ। द्रव्यदारा सकल स्वार्थ। माने जो वह बद्ध ।४३। जाने न दे व्यर्थ क्षण, संसार-चिन्ता सर्वकाल। कथा वार्ता भी संसार पर। करे जो वह बद्ध ।४४। नाना चिन्ता नाना उद्वेग। नाना दुःखोंका संसर्ग। करे परमार्थका त्याग। है वह बद्ध ।४५। घटि पल या निमिष। दुश्चित्त न करे अन्तर। करे सर्वकाल ध्यान। द्रव्य-दारा-प्रपंचका ।४६। तीर्थ यात्रा दान पुण्य। भक्ति कथा निरूपण। मंत्र पूजा जप ध्यान। द्रव्य-दारा कारण ।४७। जागृति स्वप्न रात्रि दिवस। लगा रहे विषयध्यास। नाहीं क्षणभर अवकाश। है यह बद्ध-लक्षण ।४८। इसी प्रकार बद्धलक्षण। मुमुक्ष-अवस्थामें पलटे जान। मुमुक्ष की भी पहचान। सुनिये अगले समास में ।४९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बद्धलक्षणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

संसारमदके कारण। नाना हीन कुलक्षण। जिसका मुखावलोकन। है दोष-कारक ।१। ऐसा प्राणी जो बद्ध। मूर्खवत् जिसका वर्तन। उसको हो गया खेद। कालान्तर ।२। संसार-दुःखसे हुआ दुखित। त्रिवधतापसे हुआ तप्त। और निरूपण श्रवण से पश्चात्ताप। आया अभ्यंतर ।३। हुआ प्रपंचमें उदासीन। उठा मनमें विषयत्रास। कहने लगा अब न संसार। करूं मैं इतःपर ।४। जाएगा प्रपंच सकल। संसार-भ्रम है निर्फल। अब कुछ अपना काल। करुं मैं सार्थक ।५। हुवा ऐसा पछतावा। मनमें लगी बहु चिंता। स्मरण होते ही कृतदोष नाना। कहे गई व्यर्थ आयु ।६-७। किया न मैंने पुण्यसंचय। पाप मेरा पर्वतप्राय। अब कैसे तरुं संसार दुस्तर। हैं भय यमयातनाका ।८-९। छिपाकर अपने अवगुण। लगाया मेंने सज्जनोंको दोष। व्यर्थ मैंने साधु संत। किये बहु निन्दा-

स्पद ।१०। निन्दा समान दोष न अन्य । वही किया मैंने विशेष । मेरे अवगुणोंमें आकाश । डूब जाय निःशंक ।११। पहचाना नाहीं मैने संत । न किया अर्चन भगवन्त । या न अनिथि अभ्यागत । किये सन्तुष्ट ।१२। मेरे पूर्व पापकाही फल । मुझसे न हुवा किंचित पुण्य । असन्मार्ग पर मन । रहा मेरा सर्वकाल ।१३। किया न कुछ शारीरिक कष्ट । किया न किंचित परोपकार । रहा न शुद्ध आचार । काममदके कारण ।१४। डुबादी मैंने भक्तिमाता । किया नष्ट शांति विश्रामता । मूर्खतासे सद्बुद्धि सद्वासना । बिगाड़दी मैंने ।१५। अब कैसे होगा सार्थक । दोष किये निरर्थक । हुवा सबही अविवेक । अब कौन उपाय ।१६। अब कैसा परलोक । कैसे मिले देवाधिदेव । दंभयुक्त कर्म लौकिक । बिना सदभाव किया मैने ।१७-१८। उदरभणार्थ कीर्तन । लगायी देव की दूकान । धिक है मेरा जीवन । बुद्धि मेरी बहु दृष्ट ।१९। हृदयस्थ मेरा अभिमान । किन्तु बोलता था निराभिमान । धनवांच्छा धरके अंतर । ध्यानस्थ मैं होता ।२०। व्युत्पत्तीसे फंसाये लोक । संतनिंदा उदरपोषणार्थ । सत्यखंडन असत्यमंडन । ऐसे किये नाना दोष ।२१-२२। इसी प्रकार पश्चात्ताप । होते ही पलट गया अंतरंग । हुवा संसारमें विरक्त । वांछा करे सत्संग की ।२३-२४। गये चक्रवर्ती अनेक । कितना अल्प मेरा वैभव । अब धरूं सत्संग पुण्यमार्ग । सोचे जो वह मुमुक्ष ।२५। कैसा हूं मैं अनुपकारी । हूं मैं कैसा दंभधारी । क्या अब मैं करुं अनाचारी । ऐसे दुःख से जो बोले ।२६-२७। मैं हूं पतित चण्डाल । मैं हूं दुराचारी खल । मैं हूं पापी केवल । ऐसे बोले वो मुमुक्षु ।२८। मैं हूं अभक्त दुर्जन । में हूं हीनसे ही हीना मै हूं जन्मसे पाषाण । ऐसे बोले वो मुमुक्ष ।२९। मैं हैं दुरभिमानी नाना व्यसनी । हूं मैं कातर आलसी। कुटिल मूर्ख वाचाल निकामी। ऐसे बोले वो मुमुक्ष ।३०-३२। मैं हूं अत्यन्त अज्ञानी । मैं हूं अघोरी अनाधिकारी । मैं हूं बहुत ही स्वार्थी । बोले ऐसे वो मुमुक्ष ।३३-३४। हूं न मैं परमार्थी । हूं मैं अवगुणों की राशी । भारभूत हो गयी भूमि । जन्मसे मरे ।३५-३६। ऐसी करने लगा स्व-निंदा । धरे सत्संगकी इच्छा । करने लगे तीर्थक्षेत्र नाना । शमदमादि साधन ।३७-३८। इससे भी न हुवा समाधान । ग्रंथोंमें भी अनुमान । ऐसे सोचकर संतों की शरण । जावे वो मुमुक्ष ।३९। देहाभिमान कुलाभिमान । द्रव्याभिमान नानाभिमान । छोड़के सब संत चरण । लोगे वो मुमुक्ष ।४०-४१। होगा बड़प्पन से लज्जित । लगावे शरीर परमार्थ कारण । संतचरणपर जिसका विश्वास । है वह मुमुक्ष ।४२। छोडकर प्रपंचका स्वार्थ । धरे परमार्थ सहर्ष । बोले हूं मैं सज्जन–अंकित । मुमुक्ष है वो जानो ।४३। इसी प्रकार मुमुक्ष लक्षण । कह दिये मैंने संकेत चिन्ह । आगे साधक लक्षणार्थ । अवधान दीजिए

श्रोतागण ।४४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मुमुक्षुलक्षणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

अब बोलूं साधकलक्षण। सुनिए श्रोताओं सावधान। अवगुणोंका करके त्याग। धरे साधक सत्संग ।१-२। जो आया संतोकी शरण। मिला संतोका आश्वासन। उसको कहते हैं साधक। ग्रंथकर्ते ।३। हुवा आत्मज्ञानका उपदेश। टूट गया संसारबंधन। दृढताके कारण करे साधन। वो है साधक ।४। धरे श्रवणार्थ प्रेम। सुने अध्यात्म-निरूपण। मननसे शोधे अर्थान्तर। वो है साधक ।५। होवे जहां सारासार विचार। सुने वहांजो अति तत्पर। स्वसंदेह छेद के दृढ़तर। देखे आत्मज्ञान ।६। नाना संदेहनिवृत्ती। करनेको धरे सत्संगती। आत्मशास्त्रगुरु प्रचिती। करे ऐक्यरूप ।७। देहबुद्धि विवेकसे निवारे। आत्मबुद्धि सुदृढ़ धरे। श्रवण मनन करते ही करे। वो है साधक ।८। छोड़े सर्वदृश्यभान दृढ धरे आत्मज्ञान। विचारसे राखे समाधान। है वो साधक ।९। उपाधी-द्वैतकी तोड़े। अद्वैत वस्तु साधनसे साधे। ऐक्यरूप समाधि लावे। वो है साधक ।१०। आत्मज्ञान जीर्ण जर्जर। उसका करे जिर्णोद्धार। विवेक से पावे पैलपार। वह है साधक ।११। साधूके उत्तमोत्तम लक्षण। करे स्वयं अंगीकार। होवे प्रसह्य स्वरुपकार। वह है साधक ।१२। छोड़ दी उसने असत्क्रिया। बढ़ा दी केवल सत्क्रिया। करली दृढ़ स्वरूपावस्था। वह है साधक ।१३। अवगुण तजे दिवस दिवस। करे उत्तमगुणोंका अभ्यास। लगावे स्वरूपमें ध्यास। वह है साधक ।१४। होते ही दृढ़ निश्चय। दृश्यका होवे अस्त। तदा स्वरूपमें समरस। है वह साधक ।१५। प्रत्यक्ष माया करे अलक्ष। अलक्ष्य वस्तु लक्षे अंतर। सदा आत्मस्थिति धारण। है वह साधक ।१६। है ब्रह्म जनवंचित। अनुमान वर्जित मनातीत। वही जिसने किया दृढ। है वह साधक ।१७। है जो वाचा प्रगोचार। जिसको देखते ही देखे ना जग। वही करे साध्य नाना प्रकार। है वह साधक ।१८। साधनोंसे न होसाध्य। देखने जाय तो न दर्शन। वही जिसको स्वानुभवप्रमाण। है वह साधक ।१९। जहां होवे मन उन्मन। पंगु होवे जहा तर्क। उसकाही य नसे करे अनुभव। है वह साधक ।२०। स्वानुभवके आधार। हो जाय स्वयं वस्तुरूप। करे एवं वस्तु साध्य। वह है साधक ।२१। जाने अनुभवके अंग प्रत्यंग। जाने योगियोंके चिन्ह। किसी प्रकार होते ही स्वयंभ। रहे वो साधक ।२२। बलसे हटा देके उपाधि। असाध्य वस्तु साधनसे

साधी। स्वरूपथी करे दृढ़बुद्धि। है वह साधक।२३। देव-भक्तका मूल। शोध शोध देखे सकल। साध्य ही बने तत्काल। वह है साधक।२४। विवेक बलसे हुवा गुप्त। अपने आप जनु अस्त। उसको देखते देखते ही लोक। देखते नाहीं कोई भी।२४। छोड़ दिया पहले ही अहंभान। शोधा स्वयं ही स्वयंका रूप। गया तुरीयावस्था अतीत। उसका नाम साधक।२६। आगे उन्मनीके आखीर। स्वयं की स्वयं से अखण्ड भेंट। स्वानुभवमें अखंड दर्शन। होगा जिसको वह साधक।२७। तोड़ दिया द्वैतका सम्बन्ध। तोड़ दिया आभास का भास। देह होते हुए भी विदेह। नाम उसका साधक।२८। स्वरूपस्थितिमें अखण्डवास। नाहीं देहाहंभाव। सकल संदेहनिवृत्त। है जो वह साधक।२९। पंचभूतोंका विस्तार। जिसको लगे स्वप्नाकार। निर्गुणमें विश्वास पूर्ण। है जिसको वह साधक।३०। स्वप्नमें लगा जो भय। जागृति आते ही हुवा अभय। सकल मिथ्या ऐसा निर्धार। हुवा जिसका वो साधक।३१। मायाका प्रत्यक्षपण। जिनके लिए है प्रमाण। किन्तु स्वानुभवसे अप्रमाण। जिसने किया वो साधक।३२। निद्रा छोड़के जागृत हुवा। वो स्वप्नभयसे बच गया। माया छोड़के वैसा गया। साधक स्वरूपमें।३३। हुई ऐसी अंतरस्थिति। बाह्य निस्पृहता भी बन गयी। त्याग दी संसार-उपाधि। जिसने वो साधक।३४। काम क्रोध मद मत्सर। छोड़ दिया कुलाभिमान। लज्जित की लोकलाज। बढ़ाया परमार्थ विरक्तीसे।३५-३६। अविद्या प्रपंच और लाभ। हाथसे गया अकस्मात। बडप्पन महत्त्व और वैभव। तुच्छ किया साधकने।३७-३८। तोड़ दी भेदकी कमर। नीचे गिरा दिया अहंकार। संदेहशत्रुका भी नाश। कर दिया आपाद-मस्तक।३९। विकल्पका किया वध। थोप दिया भवसागर। सकल भूतोंका विरोध। तोड़ दिया साधकने।४०। भवभयको दे दिया भय। तोड दी काल की टांग। फोड़ा जन्ममृत्युका मस्तक। किया घात कल्पनाका।४१-४२। अपमृत्युको किया ताड़न। लिया जीत लिंग देह। नास्तिकोंका पराजय। किया विवेकबलसे।४३। गर्वके ऊपर कियागर्व। स्वार्थका किया अनर्थ। अनर्थ भी किया निर्दलन। नीति न्याय से।४४। किया नाश खंड खंड। दुःख मोह और शोक। द्वेषकी निकाला देशबाहर। काटा गला अभावका।४५। फाड़ा कुलका उदर। अवगुणोंका किया संहार। तब बढ़ा ज्ञान विवेक निश्चय। वैराग्य बलसे।४६। अधर्मका स्वधर्मने। कुकर्मका सत्कर्मने। अविचारका विचारने। लूट लिया सर्वस्व।४७-४८। विषाद द्वेष तिरस्कार। पांवसेकिया चकनाचूर। कूटा कापटय और क्रोध। अभ्यंतरमें ही।४९। हुवा इससे विश्वजन-सख्य। तो भी छोडा सुहृयसंग। प्रवृत्ति त्यागसे निवृतिपंथ। साध्य हुवा ज्ञानयोग।५०-५१। विषयासक्तीको दिया धोखा। कुविद्या को लगाया बेड़ा। संरक्षण कर लिया अपना। आप्तजन-तस्करोंसे।५२। दुराशा ममता

पराधीनता। क्रोधसे इनको दे दी यातना। दीर्घोद्योगकी कर दी प्रतिष्ठा। स्वरूपानुसंधानसे ।५३-५४। अभ्यासका धरलियां संग। साधन प्रयत्न मिले दो मित्र। हुवा साधक नित्यानित्यदक्ष। धरे सत्संग केवल ।५५-५६। इसी प्रकार संसार। विवेकबलसे किया सुखरूप। शुद्धाचार से अनाचार। हट गया सर्व ।५७। विसरको गया विसर। आलस्यका किया आलस्य। दुःचित्तपर हुवा दुःचित्त। छोड़े ऐसे ऐसे अवगुण ।५८-५९। ऐसा जानबूझ करे त्याग। उसीको समझो साधक। होगा सिद्ध किंलक्षण। यह सुनिए अगले समास ।६०। उठे यहां एक संशय। जब त्याग है आवश्यक। तो करे कैसे सांसारिक। यह भी आगे सुनिये ।६१-६२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे साधकलक्षण निरूपणनाम समास नौंवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

निस्पृहसम सांसारिक। कैसा होता है साधक। अब इसका विचार। सुनिए श्रोता लोग हो ।१। असन्मार्गका करके त्याग। सन्मार्गका अवलंबन। कुबुद्धि-त्याग सुबुद्धि धारण। ऐसा है त्याग-विचार ।२-३। आवे अलं-बुद्धि प्रपंचकारण। तब ही परमार्थमार्ग अवलंबन। तब ही मनसे घड़े त्याग। विषयवासनाओंका ।४। अभावका घड़े त्याग। संशयोंका घड़े त्याग। अज्ञानका घड़े त्याग। किन्तु शनैः शनैः ।५। ऐसा सूक्ष्म अंतरत्याग। है संसारिकको आवश्यक। निस्पृहको तो बाह्यत्याग। और भी होना चाहिए ।६। सांसारिकको भी प्रसंगानुसार। बाह्य याग होता है आवश्यक। क्योंकि नाहीं बिना त्याग। नित्यनेम या श्रवण ।७। एवं बिना त्याग नाहीं साधक। इससे हुवा संशयनिवारण। अब कहूंगा मैं लक्षण। सिद्ध पुरुषों के ।८-९। साधु हुवा ब्रह्मरूप। संशय गया ब्रह्माण्डबाहर। चले कैसे उसका निश्चय। हुवा है वो सिद्ध ।१०। बद्धावस्थाके अवगुण। मुमुक्षु अवस्थामें न होत जान। मुमुक्षुओंके लक्षण। साधकावस्थामें नाहीं ।११। साधकोंकी संदेहवृत्ति। नष्ट होके आती निवृत्ति। इसीलिये निःसदेहवृत्ती। है लक्षण साधूका ।१२। संशयरहित ज्ञान। यही है साधुलक्षण। सिद्धपुरुषों को संशय। आ जाय कैसे ।१३। कर्म मार्ग संशयसे परिपूर्ण। साधने करते आता है संशय। सर्व ही होवे संशय-मिश्रित। साधु तो निःसंदेह ।१४। संशय युक्त ज्ञान नाहीं सत्य। संशययुक्त वैराग्य भी पाखंड। संशयमिश्रित भजन भी व्यर्थ। है जो केवल निर्फल ।१५। है जिसको संशय। व्यर्थ उसका देव भाव।

व्रत तीर्थ परमार्थ। निश्चय बिना सर्व व्यर्थ।१६-१७। भक्ति प्रीति या संग। गति व्युत्पत्ति या कर्म। पठन पाठ या मोक्ष। सर्व ही व्यर्थ संशयसे।१८-२१। संशय रहे तो कैसा संत। संशय रहे तो कैसा पंडित। संशय रहे तो कैसा व्युत्पन्न। श्रेष्ठ या ज्ञाता।२२-२३। निश्चय बिना सर्व कर्म। अणुमात्र नाहीं प्रमाण। व्यर्थ वल्गना वाचालपण। बहे संदेह प्रवाहसे।२४-२६। इसीलिए संदेहरहित ज्ञान। निश्चयपूर्ण समाधान। यही है सिद्धलक्षण। निश्चयसे।२७। करे श्रोता यहां प्रश्न। करना है किसका निश्चय। निश्चयका क्या है लक्षण। कहना मुझे हे स्वामी।२८। उत्तर देते गुरु सत्वर। करो मुख्यदेवका निश्चय। जिससे हो न जाय संशय। नाना देवके कारण।२९। जिसने निर्माण किया चराचर। उसीका करो विचार। शुद्ध विवेकसे परमेश्वर। पहचानो पहले।३०। मुख्य देवके साथ साथ। समझ लेवो भक्त लक्षण। असत्य छोड़के पहचान। करो सत्य वस्तुकी।३१। पहचानो प्रथम मुख्यदेव। तब देखो कि तुम कौन। संगत्याग करके वस्तुरूप। रहो तुम सदैव।३२। तोड़दो संशय-बंधन। करो मोक्षविषय निश्चय। देखो पंचभूतोंका प्रभव अन्वय। और विलय व्यतिरिक्त।३३। खंडित पूर्वपक्ष सिद्धान्त। देखो तुम प्रकृतीका अन्त। मिल जावो तब निवांत। देवरूपमें निश्चयसे।३४। देह सम्बन्धसे संशय। करे समाधान का क्षय। इसीलिए करो निश्चय। आत्मतत्त्वका।३५। सिद्ध होते हुए भी आत्मज्ञान। बढ़ावे संदेहको देहाभिमान। इसीलिए करके आत्मनिश्चय। राखो अपना समाधान।३६। स्मरण होते ही देहबुद्धि। उड़ जाये विवेक-शुद्धि। इसीलिए आत्मबुद्धि। धरो तुम सुदृढ़।३७। निश्चयपूर्ण आत्मबुद्धि। यही है दशा मोक्षश्रीकी। "अहं हूं आत्मा" यह बुद्धि। विसरना नाहीं कदापि।३८। कथन किया निश्चय-लक्षण। किन्तु यह न समझे सद्गुरुविन। जावोगे जब संतकी शरण। तब ही टूट संशय।३९। इसीलिए सिद्धका मुख्य लक्षण। है एक निःसंदेहपण। सिद्धस्वरूपमें नाहीं देह। तो वहां कैसा संदेह।४०-४१। जहां है देहसंबंध। कह सके वहां लक्षण। किन्तु देहातोत अवस्थाका लक्षण। कैसे करुं वर्णन।४२। जब न हो चक्षुगोचर। तो कैसे हो सके वर्णन। निर्मल ब्रह्म स्वतःसिद्ध। क्या है वो लक्षणयुक्त।४३। 'लक्षण' शब्दका अर्थ है 'गुण'। ब्रह्म वस्तु है निर्गुण। वही है सिद्धोंका लक्षण। सिद्ध केवल वस्तुरूप।४४। ज्ञान दशकमें करुंगा कथन। अभी इतना ही मानो पूर्ण। जो कुछ होगा न्यून। इसीलिए क्षमस्व।४५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिद्धक्षलणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक छठा देवशोधन नाम

॥ श्रीराम ॥

सुचित्त करो मन। बोलूं उस पर धरो ध्यान। हो जावो सावधान। किंचित काल ।१। कीसी एक ग्राममें या देश। करना है जब वास। तब उस देशके प्रभूकी भेट। न करे तो कैसे सौख्य ।२। है जिसको जहां रहना। तो वहां प्रभूकी भेट लेना। जिससे हो जाय श्लाघ्यता। सर्व प्रकार ।३। जब न लेवो प्रभूकी भेट। तो क्या रहे तुम्हारा महत्व। होगा जो लोगोंमें मान। नाशे अल्पकालमें ।४। इसीलिए हो राजा या रंक। सबका होता है कोई मुख्य। उसकी भेट लेना है उचित। ऐसे जानते विवेकी ।५। बिना मिले रहे उसीके नगर। तो अकारण कहेंगे चोर। प्रभुदर्शन लेना ही उचित। है सूज्ञपुरुषको ।६-७। ग्राममें श्रेष्ठ ग्रामाधिपति। उससे श्रेष्ठ देशाधिपति। देशाधिपतिसे श्रेष्ठ नृपति। नृपतीसे श्रेष्ठ वो राजा ।८। राष्ट्रका प्रभु वो राजा। बहुराष्ट्रका प्रभु महाराजा। महाराजाओं का भी राजा। है वह चक्रवर्ती ।९। एक नरपति एक गजपति। एक हयपति एक भूपति। श्रेष्ठतम है चक्रवर्ती। सकलमें ।१०। एवं सबका निर्माणकर्त्ता। है एक देव ब्रह्मा। उस ब्रह्म देवका ही निर्माता। है कौन ।११। ब्रह्मा विष्णु और हर। इनका निर्माता वही देव। पहचानो वो परमेश्वर। करके नाना यत्न ।१२। जब न मिले वो देव। तब यम-यातना अटल। देखा नाहीं ब्रह्माण्डनायक। तबतक कैसे मांगल्य ।१३। जिसने दिया मानव जन्म। जिसने किया ब्रह्माण्ड-निर्माण। उसकी न करे जो पहचान। जानो है वो पतित ।१४। इसीलिए करो देवदर्शन। उसीसे जन्मका सार्थक। न समझो तो धरो सत्संग। होगा जिससे बोध ।१५। जिसको हुवा है भगवन्तका दर्शन। उसीको देवो संत नाम। जो शाश्वत और अशाश्वत। करे स्पष्ट ।१६। ना चले ना हिले देव। ऐसा जिसका अंतर्भाव। जानो है वह संत महान। अनुभवी साधु ।१७। जनमें रहते ही जिसका ज्ञान। है इतरजनसे असामान्य। जिसके अभ्यंतर ज्ञान जागृत। रहता है वो साधु ।१८। परमात्मा है निर्गुण। इस अनुभव को कहो 'ज्ञान'। ऐसा नाहीं जब अनुभव। तो अज्ञान सर्वथा ।१९। करे उदर-भरणार्थ। नाना विद्या-अभ्यास। कहते हैं उसको ज्ञान। नाहीं उससे सार्थक ।२०। देवका साक्षात् दर्शन। वही ज्ञान वही सार्थक। इतर सर्व निरर्थक। उदर-भरण की विद्या ।२१।

आजन्म किया उदरभरण। किया देहसरंक्षण। किन्तु सबही गया व्यर्थ। आगे अंतकालमें ।२२। एवं उदरभणार्थ की विद्या। वो है ही नाहीं सद्विद्या। सर्वव्यापक ब्रह्मकी विद्या। कहो उसीको ज्ञान ।२३। ऐसा है जिसका ज्ञान। वो ही जानो है 'सज्जन'। उसके पास जाके समाधान। पूछना चाहिए ।२४। अज्ञानीको मिले अज्ञानी। तो क्या होवे वो ज्ञानी। जैसे होवे भाग्यहानी। कर्मफूटाके दर्शनसे ।२५। रुग्ण को मिला दूसरा रुग्ण। तो क्या होंगे आरोग्यपूर्ण। या निर्बल के पास गया निर्बल। ती कौन किसका करे रक्षण ।२६। पिशाचके पास गया पिशाच। उन्मत्तके पास उन्मत्त। या भिखारी भिखारीके पास। देखे कौन समझावे कौन ।२७। वैंसे दीक्षाहीनसे दीक्षा। या कृष्णपक्षसे चंद्रिका। बद्ध लोगोंसे सिद्धता। मिल जाय कैसे ।२८-२९। देहीके पास गया देही। वो क्या होगा विदेही। वैसे ज्ञानियोंके बिना नाहीं। ज्ञानमार्ग ।३०। इसीलिए जावो ज्ञानीकी शरण। लेवो उसीसे अनुग्रह। करो सारासार विचार। जिससे होवे मोक्ष ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देवशोधनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए उपदेश-लक्षण। सायुज्य प्राप्तीका साधन। नाना मतोंका प्रदर्शन। नाहीं किसी कामका ।१। ब्रह्मज्ञान व्यतिरिक्त उपदेश। तो क्या होगा उसमें विशेष। बिना धान्यका भूस। खाये क्या कोई मानव ।२। घास कूटनेसे निकले ना तेल। ना तक्र-मथनसे नवनीत। खावे कोई केले की छाल। तो क्या होगा समाधान ।३-४। वैसे ब्रह्मज्ञान रहित। करे कोई उपदेश। तो सार छोड़के असार। सेवन करे क्या सूज्ञ ।५। इसीलिए ब्रह्म जो निर्गुण। उसका करूंगा निरूपण। करो सुचित अंतःकरण। श्रोताओं आप ।६। सृष्टिरचना जो कुछ सर्व। कारण इसका पंचभूत। किन्तु वे न रहें शाश्वत। सर्वकाल ।७। आदिअंतमें ब्रह्म निर्गुण। शाश्वत है इसका चिन्ह। इतर सर्व पंचभौतिक। हैं नाशवन्त ।८। व्यवहारमें 'भूत' शब्दका अर्थ। करते हैं पिशाच या गतार्थ। उस शब्दसे जगन्नायक। कैसे होगा निर्दिष्ट ।९-१०। पृथ्वी आप तेज वायु आकाश। इनके सबाह्य है जगदीश। पंचभूतोंका है नाश। आत्मा अविनाशरूप ।१२। पंचभौतिक रूप और नाम। हैं वो समूल भ्रम। नामरूपातीत मर्म। जान लो अनुभवसे ।१३। पंचभूत और त्रिगुण। ऐसी अष्टधा प्रकृति जान। अष्टधा प्रकृतीका नामाभिधान। दृश्य ऐसे वेदान्तमें ।१४।

है वो दृश्य नाशवन्त। ऐसे वेद श्रुति बोलत। निर्गुण ब्रह्म शाश्वत। बोलते ज्ञानी।१५। जो न टूटे शस्त्रसे। जो न जले पावकसे। ना मिश्रित होवे जलसे। है वो परब्रह्म।१६। उड़ न जाय जो वायुसे। गिरे न जो या न क्षरे। छिपे न जो या न घड़े। है वो परब्रह्म।१७। जिसको है नाहीं कोई वर्ण। है जो सबसे विलक्षण। किन्तु अस्ति-रूप जो सर्व-काल। वो है परब्रह्म।१८। अदृश्य होते ही सर्वत्र। है ब्रह्म सर्वव्यापक। सूक्ष्म किन्तु परिपूर्ण। है वो जहां तहां।१९। चर्मचक्षू का यही काम। कि दृश्यका ले दर्शन। किन्तु देखना चाहिए गुप्त धन। है जो गोप्य।२०। चक्षु-प्रकट जानो आसार। गुप्त है वो सार। किन्तु गुरुमुखसे ही यह विचार। समझमें आवे।२१। न समझे वो समझ लेना। न दिखे वो देख लेना। दुर्बोधका ही बोध लेना। विवेकबलसे।२२। प्रगट करो है जो गुप्त। करो साध्य है जो असाध्य। अति गहनका ही अभ्यास। करो सावकाश।२३। वेद विरंची और शेष। थक गए जहां निःशेष। साध्य करो वही विशेष। परब्रह्म वस्तु।२४। किस प्रकार करना वो साध्य। कहता हूं अनुभवसार। करना अध्यात्म श्रवणसाधन। जिससे प्राप्त परब्रह्म।२५। पृथ्वी नाहीं आप नाहीं। तेज नाहीं वायु नाहीं। वर्ण नाहीं व्यक्त नाहीं। अव्यक्त है वो ब्रह्म।२६। उसको ही कहना देव। अन्य लोगोंका अन्य भाव। जितने गांव उतने देव। सामान्य लोग कारण।२७। ऐसे हुवा देवका निश्चय। आया अनुभव देव निर्गुण। अब मैं कौन हूं इसका विचार। करो शोध-शोध।२८। कहने को ही यह 'मेरा शरीर'। तुम तो हो शरीर से भिन्न। 'मन मेरा' ऐसे कथन। मनसे भी भिन्न तुम।२९। क्या है देह ऐसा विचार। करे तो वो तत्त्वविस्तार। किन्तु तत्वविलयानंतर। जो बचे वो आत्मा।३०। देहरूप तत्व-गठडी। छोड़े विचारसे कोई। तत्वप्रलय होते ही। रहे आत्मा निरंतर।३१-३३। कहां है यहां अहंको स्थान। कहां है मृत्यु या जन्म। कहां है पुण्य या पाप। एक ब्रह्मरूप में।३४। पापपुण्य यमयातना। नाहीं निर्गुणमें होना। जभी अहंभाव ब्रह्म होगा। तो किसको लगे पापपुण्य।३५। देहबुद्धीसे हुवा बद्ध। सारासार विवेकसे मुक्त। होतेही देहातीत। पाया मोक्षपद।३६। जन्मका हुवा सब सर्थक। निर्गुण आत्मा 'अहं' एक। किन्तु यह अनुभव-विचार। करतेही रहो।३७। जागृतिमें स्वप्न विलय। जैसे विवेकसे दृश्यप्रलय। वैसे स्वरूपानुसंधानसे होय। उद्धार जीवों का।३८। ऐसे करे स्वयंको निवेदन। तो न रहे अहंभाव। इसका ही है कहो नाम। आत्मनिवेदन।३९। करो प्रथम अध्यात्मश्रवण। तदनंतर गुरुपादसेवन। तदनंतर आत्म निवेदन। सद्गुरुकृपासें।४०। आत्मनिवेदनानंतर। निखिल वस्तु निरंतर। हूं मैं आत्मा ऐसा बोध। आवे अभ्यंतर।४१। एवं ब्रह्मबोधसे ही ब्रह्म। होतेही उड़ा संसार-खेद। छोडा प्रारब्ध-

प्रवाहमें देह । संदेहरहित होतेही ।४२। इसीका नाम आत्मज्ञान । इसीसे पावो समाधान । परब्रह्मसे अभिन्न । हो गया भक्त ।४३। अब होना है तो होने दो । जना है तो जाने दो । भय जन्ममृत्यु हटने दो । मनसे पूर्ण प्रकार ।४४। समाप्त अब संसार-यातना । प्राप्त हुई देव-भक्तैक्यता । मुख्य देवकी साक्षात्कारता । मिली गयी सत्संगसे ।४५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे ब्रह्मपावननाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

निर्गुण आत्मा आकाशसदृश । है वो निर्मल निश्चल । किन्तु आकाशसे भी अतिसूक्ष्म । अखंड अपार ।१-२। है वो अदृश्य अनाभास । हैं वो अज अमर । आवे न जावे अन्यत्र । परब्रह्म वो ।३। जो चले न हिले । जो न टूटे न फूटे । जो न रचे न गिरे । परब्रह्म वो ।४। रहे जो सन्मुख सर्वकाल । जो निष्कलंक निर्मल । सर्वान्तर आकाश-पाताल । व्यापक जो ।५। अविनाश ब्रह्म निर्गुण । विनाशवती माया सगुण । सगुण और निर्गुण । हुवे हैं मिश्रित ।६। इन दोनोंका संकर-विचार । करना जानते योगेश्वर । जैसे क्षीर और नीर । करते भिन्न राजहंस ।७। जड़ औपाधिक पंचभौतिक । उनमें आत्मा व्यापक । करे जो नित्यानित्यविवेक । उसको आवे समझ ।८। गन्नेमें से लेवो रस । छोड़ दो उसकी छाल । वैसे ही जगमेंसे जगदीश । जानो विवेकबल से ।९। किन्तु रस है विरल नाशवन्त । आत्मा निश्चल शाश्वत । रस अपूर्ण आत्मा केवल । जानो वो परिपूर्ण ।१०। यदि हो आत्मासम अन्य । तो दे सके उसका दृष्टान्त । जभी देवे कोई दृष्टान्त । तो बोध-कारण केवल ।११। है जब व्यापक आत्मस्थिति । तो कहां से माया कैसे आई । आकाशमें जैसे उत्पन्न हुई । वायूकी लहर ।१२। वायूसे उत्पन्न हुवा तेज । तेजसे उत्पन्न जल । जलसे हुवा भूमंडल । आकारसंपन्न ।१३। भूमंडलमें जीव उत्पत्ती । कौन जाने उनकी गिनती । किन्तु ब्रह्म अंत या आदि । है सर्वव्यापक ।१४। जो जो हुवा निर्माण । है वो सब नाशवन्त । किन्तु ब्रह्म जो है सर्वगत । रहे वो वैसेका वैसा ।१५। घटपूर्व है आकाश । घटमें भी उसका भास । घट फूटे तो भी आकाश । पावे न भंग कदाकाल ।१६। तैसे परब्रह्म केवल । अचल और अढळ । किंचित्काल बीचमें सकल । होतजात चराचर ।१७। जो कुछ हुवा है निर्माण । वो से पहले ही ब्रह्मव्याप्त । होवे जब सबका ही नाश । तो भी ब्रह्म अविनाश ।१८। ऐसे जो ब्रह्म अविनाश । सेवन करते ज्ञानी पुरुष । तत्वनिरसन होते ही लाभ । होवे अपनेको आप ।१९। तत्व-तत्वका मिलन । उसका देह ऐसा नाम ।

किन्तु जिसने किया वो तत्व विभाग। वो है ज्ञानी ।२०। तत्व-निरसत निःशेष होता। अस्तंगता देह अहंता। निर्गुण ब्रह्म से ऐक्यता। हुई सारासार विवेकसे ।२१। स्वदेहको देखे विवेकदृष्टि। तो विलय होवे तत्वसृष्टि। अहंभाव की स्थिति-गति। रहे नाहीं किंचिन्मात्र ।२२। अपनेको आप लेवे शोध। तो 'अहं' की वार्ता होवे मायिक। तत्वांतमें रहता है एक। निर्गुण ब्रह्म ।२३। अहंता बिना ब्रह्मज्ञान। यही आत्मनिवेदनका मर्म। तत्वोंके साथ गया भ्रम। मैं तू इनका भिन्न भाव ।२४। शोधशोधसे मिले ना अहं। तब जानो वो है अचल ब्रह्म। स्वयं ही निर्गुण ब्रह्म। किन्तु समझे ना सद्गुरुबिना ।२५। सारासार विचार होवे पूर्ण। तो होगा असारका नाश। बचा रहे तदनंतर सार। वही है परब्रह्म ।२६। सृष्टीपूर्व था ब्रह्म केवल। अनंतर भी ब्रह्म व्यापक। सृष्टीका होते ही संहार। पुनरपि ब्रह्म वैसेका वैसा ।२७। ऐसा है विवेक संहार। इसका ही नाम सारासार विचार। ऐसे करे तो 'अहं कौन'। यही आवे समझमें ।२८। अहंभाव है कल्पनाजनित। शोध करतेही होवे निरसन। एवं अहंभावका होते ही नाश। रहे आत्मा निर्गुण ।२९। एक बार भी होवे तत्व-निरसत। तो मैं हूं आत्मा निर्गुण। ऐसा अनुभव आने पर। रहेगा क्या अहंभाव ।३०। तत्वोंके साथ अहं का प्रलय। होते ही अनायास निर्गुण। आया अहं आत्माका अनुभव। ऐसे हुवा आत्मनिवेदन ।३१। होते ही आत्मनिवेदन। देव-भक्त-ऐक्य पूर्ण। विभक्ततता छोडके भक्त। बना प्रत्यक्ष देवरुप ।३२। निर्गुणको नाहीं जन्ममरण। निर्गुणको नाहीं पापपुण्य। निर्गुणसे से होते ही अनन्य। होता है मुक्त ।३३। तत्वोंसे वेष्टित जब तक जीव। तब तक रहे वो संशयग्रस्त। आप ही अपनेको भूल जात। बोले मैं हूं कौन ।३४। तत्व-वेष्टित बोले 'कोऽहम्। विवेकयुक्त कहे 'सोऽहम्'। अस्तंगत होवे अहं सोऽहं। जब ब्रह्म से भक्त अनन्य ।३५। इसी स्थितीका जिसको अनुभव। है वो संत स्वरूप। देह होते हुए भी देहातीत। ब्रह्मरूप केवल ।३६। जाते हुए भी न जाय संदेह। इसीलिये वही बात। करता हूं बारंबार। क्षमस्व आप श्रोताओं ।३७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मायोद्भवनाम समास तिसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

कृतयुग सत्रालक्ष अठ्ठावीस सहस्त्र। त्रेतायुग बारा लक्ष छहाण्णव। द्वापर आठ लक्ष चौसष्ट सहस्त्र। अब सुनिये कलियुगकी गिनती ।१। कलियुग चार लक्ष बत्तीस

सहस्त्र । चतुर्युग त्रेचालीस लक्ष-वीस सहस्त्र । ऐसे चतुर्युग सहस्त्र । तो ब्रह्मदेवका एक दिन ।२। ऐसे ब्रह्मदेव सहस्त्र । तो घटि विष्णुकी एक । होते जब विष्णु सहस्त्र । तो ईश्वर का एक पल ।३। ऐसे ईश्वर भी जब सहत्र । तो शक्तीका पल एक । ऐसी अनंत शक्ति होत जात । तो भी ब्रह्म अखण्ड ।४-५। श्लोक : गत कलि चार सहस्त्र सातसौसाठ । बाकी चार लक्ष सत्तावीस सहस्त्र । दोनो सौ चालीस संवत्सर । और है ऊपर ।६-८। ऐसे एक से एक श्रेष्ठ । है अनंत सचराचर । विष्णु रुद्र शक्ति देव । वे भी श्रेष्ठ एकसे एक ।९-१०। परन्तु हैं सब नाशवन्त । 'यद्दष्टं तन्नष्टं' बोले वेद । जन धरे उपासनाका अभिमान । किन्तु सत्य का निश्चय करे साधु ।११-१२। साधुका निश्चय ऐसा । व्यापक सर्वत्र एक आत्मा । और सब चराचरकी वार्ता । है मायाजनित ।१३। है एक सेनाका चित्र । उसमें कौन बड़ा कौन सान । चित्ररूपसे समसमान । ऐसा मायाका प्रकार ।१४। स्वप्नमें देख लिया बहुत । उनमें कौन बड़ा कौन सान । जागृन होतेही सर्व अभिन्न । स्वप्नरचना मायिक ।१५-१७। 'हूं मैं बड़ा' कहते हैं सर्व । गये वे सब मृत्युपंथ । इसका विचार करे श्रेष्ठ । ज्ञानी पुरुष ।१८। हुवा जिसको आत्मज्ञान । वही श्रेष्ठ महाजन । वेद शास्त्र पुराण । ऐसे ही बोलते ।१९। एवं सबसे वरिष्ठ । है एक परमेश्वर । उसमें ही हरिहर । होत जाते ।२०। वो है निर्गुण निराकार । जहां न उत्पत्ति न विस्तार । स्थान मानादि अनुमान । रहे न ब्रह्म प्रलयमें ।२१-२२। है ब्रह्म प्रलयातीत । ब्रह्म नामरूपरहित । ब्रह्म सदा सर्वकाल । वैसेका वैसा ।२३। करते जो ब्रह्मनिरूपण । जानते ब्रह्मसंपूर्ण । जानो हैं वे ब्राह्मण । ब्रह्मविद ।२४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे ब्रह्मनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

अथ सुनिये प्रश्नानुरूप । माया-ब्रह्मका निरूपण । श्रोता-वक्ताका संवाद । समझो लक्षणोंसे ।१। ब्रह्म निर्गुण निराकार । माया सगुण साकार । ब्रह्मका नाहीं पारावार । मायाको कर सके पार ।२। ब्रह्म निर्मल निश्चल । माया-चंचल चपल । ब्रह्म निरोपाधि केवल । माया उपाधीरूप ।३। माया दिखे ब्रह्म न दिखे । माय भासे ब्रह्म न भासे । माया नाशे ब्रह्म न नाशे । कल्पान्तकाल ।४। माया करे रचना, न करे ब्रह्म । माया क्षर ब्रह्म अक्षर । माया रोचक ब्रह्म न रोचक । अज्ञानी जनको ।५। मायाको है जन्म ब्रह्म अज । माया मरे ब्रह्म अमर । माया बुद्धिगम्य ब्रह्म अगम्य । धारणातीत ।६। माया

फूटे ब्रह्म ना फूटे। माया टूटे ब्रह्म न टूटे। माया पलटे ब्रह्म न पलटे। अविनाश ब्रह्म।७। विकारी माया निर्विकारी ब्रह्म। माया कर्त्री न करे ब्रह्म। माया धरे नानारूप। ब्रह्म केवल अरूप।८। माया पंचभूतीका अनेक। ब्रह्म शाश्वत एक। माया:ब्रह्मका विवेक। विवेकी जानते।९। मायासान ब्रह्मपुरातन। माया असार ब्रह्म सार। माया को है अदि अंत। ब्रह्मको नाहीं।१०। अद्भुत मायाका विस्तार। हुई ब्राह्मी स्थिति आच्छादित। किन्तु साधुजन लेते ब्रह्मानुभव। हंस-क्षीर न्यायसे।११। आकाशसम ब्रह्म निर्मल। माया पृथ्वीसम शबल। ब्रह्म है अति सूक्ष्म। माया स्थूलरूपी।१२। ब्रह्म नाहीं इन्द्रियप्रत्यक्ष। है जैसे माया दृश्य। 'समं ब्रह्म' बोले वेद। माया विषमरूपी।१३। माया होवे लक्ष्य-विषय। ब्रह्म सर्वथा अलक्ष्य। मायाका साक्षी होवे मानव। ब्रह्मका साक्षी कैसा कौन।१४। माया पूर्वपक्ष ब्रह्म सिद्धान्त। माया अनित्य ब्रह्म नित्य। मायामें पक्षोपपक्ष। पक्ष नाहीं ब्रह्ममें।१५। ब्रह्म अखंड धन। माया पंचभौतिक विरल। ब्रह्म निरंतर परिपूर्ण। माया जीर्णजर्जर।१६-१७। माया कठिन ब्रह्म कोमल। माया अल्प ब्रह्म विशाल। माया सर्वकाल नाशवन्त। नाशे नां ब्रह्म कल्पान्त।१८-२०। वस्तु 'नाहीं बोली जाय'। माया बोल के आधीन। काल न आवे वस्तुपास। माया पर झडप डाले।२१। नाना रूप नानारंग। लेवे माया प्रसंगानुरूप। माया भंगे ब्रह्म अभंग। जैसे तैसे।२२। क्या करुं अब विस्तार। चलता है जो चराचर। वही माया, किन्तु पमेश्वर। है सबाह्य अभ्यंतर।२३। सकल उपाधिरहित। परमात्मा है अद्वय। जलमें होतेही आकाश। जलसे अस्पृष्ट जैसे।२४। माया-ब्रह्मका विवरण। करता टले जन्ममरण। संतोंकी जावे शरण। तो होवे मोक्ष-लाभ।२५। अरे इन संतोंकी महिमा। कौन भोले, नाहीं सीमा। जिनके संगसे परमात्मा। हृदयमें आवे।२६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मायाब्रह्मनिरूपणनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

हो जब सृष्टीपूर्व ब्रह्म। और है जब सृष्टि दृश्य सांप्रत। तो क्या है सृष्टी सत्य। या मिथ्या।१। आप गुसांई सर्वज्ञ। करो आशंका निरसन। ऐसा श्रोता विनति-प्रश्न। करे सद्गुरुको।२। सुनिए इसका प्रत्योत्तर। हो कथानुसंधान तत्पर। वक्ता सर्वज्ञ उदार। बोलने लगा।३। 'जीवभूतःसनातन'। ऐसे गीताका वचन। इसी वाक्यसे सत्यपण। आगया सृष्टीको।४। 'यत् दृष्टं तन्नष्टं'। इसी वाक्यसे मिथ्यापण। तब सत्यामिथ्या ऐसे

कौन। कहेगा निश्चयसे ।५। सत्य कहो तो नाशे। मिथ्या कहो तो दिखे। अब बोलूं मैं यथार्थ। है जैसे वैसे ।६। सृष्टीमें है बहुत जन। सज्ञान और अज्ञान। इसीलिए समाधान। होता नाहीं ।७। सुनो अज्ञानका मत। सृष्टी है शाश्वत। देव धर्म तीर्थ व्रत। सत्य ही हैं ।८। तो बोले सर्वज्ञों का राजा। मूर्ख करे प्रतिमापूजा। वो क्या जाने ब्रह्म वार्ता। बोले तो निरर्थक ।९। तो पूछे अज्ञानी नर। तब क्यों करते हो संध्यास्नान। गुरुभजन या तीर्थाटन। करना किस कारण ।१०।

तीर्थे तीर्थे निर्मलं ब्रह्मवृन्दं। वृंदे वृंदे तत्वचिंतानुवादः। वादे वादे जायते तत्वबोधः। बोधे बोधे भासते चंद्रचूडः ।।

ऐसे चंद्रचूडाके वचन। सद्‌गुरुका उपासना। गुरुगीता निरूपण। किया है श्री शंकरने ।११। कैसे करना गुरुभजन। पहले करना उनकी पहचान। उनसे लेना चाहिए समाधान। विवेकरूप ।१२।

ब्रह्मानंद परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति। द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यं। एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधोसाक्षिभूतं। भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि ॥

गुरुगीताका यह वचन। ऐसा सद्‌गुरुका ध्यान। वहां सृष्टीमिथ्याभान। रहेगा कैसे ।१३। ऐसी सद्‌गुरुपहचान। होते ही सृष्टीका मिथ्यापण। बुद्धीको होवे ज्ञान। एवं बोले सज्ञानी ।१४। यह न माने वो अज्ञानी। अधिक ही विवाद प्रवृत्ति। पूछे क्या है गोविन्द अज्ञानी। जिसने गीता-कथन किया ।१५-१७। देव ज्ञानी प्रत्योत्तर। गीता-वचनका क्या है अर्थ। न आवे तुझे यह समझ। इसीलिए व्यर्थ खेद ।१८। श्लोक 'विभूति मेरी पिप्पल'। ऐसे कथन करे गोपाल। किन्तु क्या न तोड़ा जाता तत्काल। पिप्पलका वृक्ष ।१९।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

शस्त्रसे न जाय टूट। अग्नीसे न जाय जल। न हो उदकमें मिश्रित। ऐसे है स्वरूप मेरा ।२०। पिप्पल टूटता है शस्त्रसे। पिप्पल जलता है पावकसे। मिश्रित होवे उदकसे। ऐसा पिप्पल नाशवन्त ।२१। टूटे जले डूबे उड़े। गीतावचन सार्थ कैसे। इसीलिए यह समझमें आवे। सद्‌गुरुमुखसे ।२२। 'इन्द्रियाणां मनश्चास्मि'। मानते कृष्णवचन सर्व ही। तो क्यों करो निवारण उर्मी। चंचल मनकी ।२३। किया श्रीकृष्णने कथन। था

हेतु साधनमार्ग दर्शन। जैसे मूलाक्षरों का ज्ञान। देव शिशुओं को शिक्षक।२४। इसी प्रकार वाक्यार्थ भेद। जाने सर्वही गोविन्द। वहां देहबुद्धिका विवाद। कामका नाहीं।२५। श्रुति स्मृति वेद शास्त्र। वहां वाक्यभेद अवश्य होत। किन्तु सबकाही सुखसंवाद। करे एक सद्‌गुरुवचन।२६। वेदशास्त्रोंके मतमतान्तर। शस्त्रसे तोड़े ऐसा कौन। साधुविना इसका समाधान। होगा नाहीं कल्पांतमें।२७। पूर्वपक्ष और सिद्धान्त। शास्त्रों में जिनका संकेत। इनका पूर्ण निश्चितार्थ। होवे साधुमुखसे ही।२८। अन्यथा सब वादविवाद। उत्तर और प्रत्योत्तर। एक से एक उच्चतर। वेदशास्त्रोंमें असंख्य।२९। इसीलिए वादविवाद। छोड़के करो सुख संवाद। जिससे होवे ब्रह्मानंद। स्वानुभाव प्रमाण।३०। प्रभाव कल्पनाका अद्‌भुत। जिससे उत्पन्न सृष्टि अनंत। तो क्या कल्पना-सृष्ट पदार्थ। सत्य होते।३१। कल्पनासे बनाया देव। किया वहां ही दृढ़भाव। किन्तु देव होते ही भंग। भक्त पावे महादुःख।३२। पाषाणका किया देव। एक दिन हुवा भंग। भक्त हुवा बहु दुःखित। गिरे रोवे आक्रंदे।३३। खो गया एक घरमें। ले गया एक चोरके। एक देव दुराचारीने। फोड़ दिया बलात्कार।३४। भ्रष्ट किया एक देव। डाल दिया उदकमें एक। किया एक देव का उपयोग। नींव भरने के लिए।३५। क्या कहूं तीर्थ-महिमा। वहां की सत्व-सामर्थ्य गरिमा। किन्तु आया एक दुरात्मा। उसने सब किया नाश।३६। बनाया सुनारने सोनेसे देव। या अन्य धातूका एक। या कारीगर का पाषाण-देव। ऐसे होते बहुत देव।३७। नर्मदागंडिका तीर। पत्थरके देव लक्षानुलक्ष। चक्रतीर्थमें चक्रांकित। ताम्र-स्फटिकादि ही देव।३८। ऐसे देव जाने कौन। सत्य हो या असत्य। रमेश-सूत्र ही क्यों न देव। जब न टूट जाय वो।३९-४०। कोई करे मृण्मय देव। धरे विश्वास जब मनोरथ पूर्ण। किन्तु होते ही वे निष्फल। करे विस्मय दुःख बहु।४१-४३। धातु पाषाण मृत्तिका। चित्रलेप काष्टादि नाना। वहां कैसा देव मूर्खा। भ्रांति तव केवल।४४। अरे है यह सब कल्पना। कर्मानुरूप फल नाना। ईश्वर के चिन्ह समझना। है और अन्य बात।४५। कल्पना है मायाभ्रमण। सृष्टि मिथ्या कोटिगुण। वेद-शास्त्र-पुराण। ऐसे ही बोलते।४६। साधुसंत महानुभाव। उनका ऐसा ही अनुभव। कि पंचभूतातीत देव। सृष्टि मिथ्या।४७। सृष्टिपूर्व सृष्टि अनेक। होत जात संहारत। किन्तु आदि अंतमें शाश्वत। है एक देव।४८। ऐसा सब संतों का निश्चय। उनको नाहीं कोई संशय। अन्वय और व्यतिरेक। दोनो ही कल्पनारूप।४९। एक कल्पनाके कारण। अष्ट सृष्टि होती उत्पन्न। उसकी कथा भी श्रवण। करो सावधान।५०। एक कल्पनामय सृष्टि। दूसरी है शाब्दिक सृष्टि। तीसरी प्रत्यक्ष सृष्टि। देखते हैं सर्व।५१। चौथी चित्रलेप सृष्टि।

पांचवी स्वप्न सृष्टि। छठवी गंधर्व सृष्टि। ज्वरसृष्टि सातवी ।५२। आठनी दृष्टिबंधन। ऐसी अष्टसृष्टि जान। इनमें कौन श्रेष्ठ कौन सत्य। कैसे समझना ।५३। इसीलिये सब सृष्टि नाशवन्त। ऐसे जानते संत महंत। सगुण देव को भजो निश्चित। जिससे हो जाय निश्चय ।५४। सगुण भक्तिका हो आधार। तब ही पावे निर्गुण निर्धार। इसीलिये सारासार विचार। करो संतसंगमें ।५५। क्या कहना है बहुत। संतसंगसे समझो निश्चित अन्यथा चित्त दुश्चित। होवे संशय-ग्रस्त ।५६। इतनेमें बोले शिष्य। समझमें आया सृष्टि-मिथ्यत्व। तब क्यों होते दृष्टिगोचर। कहिए स्वामी ।५७। दृश्य है तो प्रत्यक्ष। इसीलिये मानता हूं सत्य। तो करूं मैं कैसे अब। कहिए मुझे ।५८। प्रत्योत्तर इसका उत्तम। अगले समासमें करुंगा कथन। श्रोताओं करो श्रवण। सावधान चित्त ।५९। एवं सृष्टि मिथ्या जान। तो भी करो सगुण रक्षण। यही है अनुभवके चिन्ह। जानते हैं ज्ञानी ।६०।

इति श्री दासबोवे गुरुशिष्यसंवादे सृष्टिकथन नाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्मज्ञानसे होगा मिथ्या दृश्य। तो क्यो पुनः भजन आवश्यक। उससे क्या होता है लाभ। कहिए स्वामी ।१। ज्ञानसे श्रेष्ठ नाहीं अन्य। तब क्या उपासनाका प्रयोजन। उपासनासे क्या प्राप्त। हो जाय लोगों को ।२। मुख्य सार है निर्गुण। वहां न सगुणकेलिये स्थान। तो कहिए क्या होगा गुण। भजन करनेसे ।३। जो समस्त नाशवन्त। भजन उसका किंनिमित्त। सत्य छोडके असत्य। भजन करना किमर्थ ।४। असत्यका आया प्रत्यय। तो भी क्यों भजन-नेम। सत्य छोडके निरर्थक। करना क्यों भजन ।५। निर्गुणसे होता मोक्ष। ऐसा जब प्रत्यक्ष अनुभव। सगुण क्या देता है फल। कहिए स्वामी ।६। कहते हो आप 'सगुण नाशवन्त'। फिर भी कहते 'करो भजन'। तो किमर्थ करुं मैं भजन। कहिए मुझे ।७। आपके लिए बहु आदर। इसीलिए देना न चाहूं उत्तर। साध्य होने पर करना साधन। मानता नहीं मन मेरा ।८। इसीप्रकार अटक-अटक प्रश्न। करे श्रोता सविनय। सुनिए इसका प्रत्युत्तर। कहे वक्ता ।९। गुरुका वचन प्रतिपालन। यह मुख्य परमार्थका लक्षण। वचन भंग करे तो विलक्षण। सहज ही होवे ।१०। इसीलिए आज्ञा-वंदन। करके मानना सगुण-भजन। क्या होगा इसमें देव-प्रयोजन। ऐसे पुनरपि बोले श्रोता ।११। क्या इसमें गुरुपकार-स्मरण। क्या हैं साक्षात्कार लक्षण। क्या प्रारब्धमें

लिखे हुवे अक्षर। देव करता है सुधार ।१२। जब होना है वह पलटे ना। तो क्या हमें भजन से करना। अनुमान इसीमें चलेना। हमारा कोई ।१३। स्वामी-आज्ञा है ही प्रमाण। कौन कर सके अप्रमाण। परन्तु इसका है जो गुण। वो मुझको बतलावो ।१४। वक्ता बोले प्रतिवचन। कहो मुझे ज्ञान का लक्षण। तुझे कुछ कर्तव्य व कर्म। करना है या नहीं ।१५। करना लगे भोजन। करना लगे उदक प्राशन। करना लगे मल-मूत्र विसर्जन। न करनेसे कैसे चले ।१६। रखते हो लोग-समाधान। जानते हो स्व-पर जन। किन्तु टालना चाहते हो भजन। यही क्या ज्ञान तेरा ।१७। मिथ्या है जब ज्ञान व्यतिरिक्त। तो भी नाहीं छोड़ा तुमने सर्व। तो भजनका ही अपवाद। किमर्थ करना चाहते हो ।१८। धनीको लोटांगन करना। उनके सामने नीच बनना। और देवको ही न मानना। यही क्या ज्ञान तेरा ।१९। हरिहर ब्रह्मादिक। हैं जिसके आज्ञाधारक। उस देवको तू एक रंक। माने ना तो क्या हानि ।२०। हमारे कुलमें रघुनाथ। है हमारा परम अर्थ। जो समर्थोंमें भी समर्थ। छुड़ाया जिसने देवों को ।२१। उसीके हम सेवक जन। सेवासे हुवा हमको ज्ञान। वहां जब हो जाय अभाव। तो पतन हमारा निश्चित ।२२। कहते हैं गुरु सारासार। वो कैसा होगा असार। सुजन जानते हैं यह विचार। जभी तुम न जानो ।२३। समर्थ मनमें हो असंतोष। तो जानो वह अभाग्य। जैसे राज्यपदसे होवे च्युत। कर्मफूटा कोई एक ।२४। मैं हूं श्रेष्ठ ऐसे मानी। वो नाहीं ब्रह्मज्ञानी। है वो केवल देहाभिमानी। मूर्तिमंत प्रत्यक्ष ।२५। वस्तु स्वयं करे भजन। या वो न करे भजन। यह तुझ वस्तुभिन्न को नाहीं ज्ञान। तब व्यर्थ है अनुमान ।२६। ना है ज्ञान ना है भजन। व्यर्थ ही आया देहाभिमान। तव उदाहरण ही यहां प्रमाण। बोलता न हूं अनुमानसे ।२७। तस्मात् करो न ऐसे अब। धरो रघुनाथ-भजन-मार्ग। जिससे बोलना है शक्य। ज्ञान लक्षण अचल ।२८। करे दुर्जनोंका संहार। भक्तजनको होवे आधार। ऐसा है रामभजन का चमत्कार। प्रत्यक्षानुभव ।२९। मनोरथ होवे सफल। नाश होवे विघ्न। समूल। कृपा करे जब रघुनाथ। आती है प्रचीत ।३०। रघुनाथभजनसे होवे ज्ञान। रघुनाथभजनसे बढे महत्व। इसी लिये करो तुम त्वरित। रघुनाथभजन ।३१। यह तो है मेरा अनुभव। किन्तु तुझे न आई प्रचीत। तथापि भजनधारसे नेमस्त। लेवो तुम भो अनुभव ।३२। हो रघुनाथस्मरणयुक्त कार्य। तो होवे वह तत्काल सिद्ध। 'कर्ता राम' यह बुद्धि सुदृढ़। रहने दो अभ्यंतर ।३३। कर्ता राम मैं न हूँ कर्ता। ऐसी सगुण निवेदन की वार्ता। निर्गुण निवेदन होता। निर्गुण ही स्वयं ।३४। 'मैं कर्ता' ऐसे मानोगे। तो तब कुछ भो तेरेसे न घड़े। इसको ही अनुभव तुम चाहे। तो लेवो बा सात्वर ।३५। स्वयं

हूं कर्ता ऐसे मानना। तो स्वयं कष्टी दुःखी होना। राम कर्ता ऐसे मानना। तो पावो यश कीर्ति प्रताप।३६। कर्तुविषय अहंभावना। करे तो देवसे दूर जाना। किन्तु रामकर्ता ऐसे मानना। तो पा लेना रामकृपा।३७। दो दिनका मानव-जीवन। अनंत कालका आत्माराम। मनुष्यको जाने दो तीन। देवको जानता है त्रैलोक्य।३८। इसीलिए रघुनाथभजन। मान्य करते बहुत जन। ब्रह्मादिक बुबुधगण। रामभजनतत्पर।३९। ज्ञानबलसे उपासना। हम भक्त जब मानूं ना। तो अभक्तपनसे पात्र होना। दोषरूप पतनार्थ।४०। अहंभावसे देवकी उपेक्षा। करे वो जाने स्व-दुर्दशा। अप्रमाण जो, वो श्लाध्यता। पावे कैसे।४१। देहान्तकालतक देहकारण। उपासना करते है सज्जन। किन्तु अंतरस्थिति उन्हींकी जान। अहंत विरहित सर्वदा।४२। सकल मिथ्या होत जात। यह रामभजनका है फलित। दृश्य अखिल होवे स्वप्नवत। ऐसा निश्चय ज्ञानियों का।४३। मिथ्या जैसी स्वप्नरचना। वैसी ही सृष्टिकी रचना। साधुजनकी ऐसी भावना। रहती है ज्ञानयुक्त।४४। अब श्रोताओंका आक्षेप। सृष्टि मिथ तो क्यों गोचर। इसका उत्तर अगले समास। देतां हूं सविस्तर।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणभजन नाम समास सातवां ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

पिछले समासका आक्षेप। सृष्टि मिथ्या तो क्यों गोचर। इसका उत्तर सावधान। सुनिए अब।१। चक्षुसे देखा वही सत्य। यह नाहीं ज्ञानीयोंका मत। किन्तु उसीको मानते हैं सत्य। जड़ मूढ अज्ञानी।२। 'चक्षुसे देखा' इतनेसे। होंगे ग्रंथकोटि असत्य कैसे। या संतमहंत कहते जैसे। नाहीं मानना क्या सत्य।३। मैं देखूं यही प्रमाण। अन्य सभी हैं अप्रमाण। ऐसी दुराग्रहकी भाष। करना नाहीं उचित।४। मृगने देखा मृगजल। देखते ही धावे भ्रमिष्ट। देखा था उसने मिथ्याजल। तो क्या प्रमाण पशुदृष्टि।५। देख लिया रात्रीमें स्वप्न। मिला उसमें बहुत धन। किया व्यवहार भी जन साथ। तो क्या स्वप्नसत्य।६। कुशल चित्रकार एक। उसने निर्माण किया चित्र। देखतेही मन हो प्रसन्न। किन्तु है वो मृत्तिका।७। चर्मकृत वनिता हस्ति अश्व। रात्रिमें देखते ही भूले मन। किन्तु दिनमें देखे तो केवल चर्म। जिससे आवे घृणा मात्र।८। पाषाणसे बनी पुतली। लगे परम सुन्दरी। उनमें रमे मन भी। किन्तु वहां पाषाण।९। देवालय-गोपुर पर। वनिताकृति बहु सुन्दर। वक्रांगे वक्रदृष्टि मनोहर। किन्तु वहां चूना, बालू, कंकर।१०।

करते दशावतारके नाटक। वहां नारियोंका आविष्कार। करते वे नेत्रकटाक्ष। किन्तु रहते हैं वे सब पुरुष ।११। सृष्टि बहुरंगी असत्य। बहुरूपी मायाका कृत्य। जभी तुझे लगे दृश्य सत्य। है वो सब अविद्या ।१२। देखा मिथ्या सत्य-समान। किन्तु करना चाहिये विचार। कि दृष्टि होती है भ्रान्त। इसीलिए मिथ्या लगे सत्य ।१३। ऊपर देखे औंधा आकाश। जलमें देखे तो उतान। उसीमें तारोंका प्रकाश। है किन्तु सब मिथ्या ।१४। जितने बुलबुले होत। सब से आते मुखके प्रतिबिंब। किन्तु वे सबही होते मिथ्यारूप। फूटते ही बुलबुले ।१५-१८। नदीतीरस्थ वृक्ष या नर। दिखे औंधा प्रतिबिंबित। या तलवार गतियुक्त। दिखे द्विविध ।१९-२१। बहुत दीपोंके पंक्तीकारण। दिखजाती हैं छाया अनेक। वैसे माया भ्रमके कारण। भासती है सत्य ।२२-२४। गारुडीविद्या भासे सत्य। राक्षसोंकी माया अद्भुत। श्रीराम प्रभुभी हुवे वंचित। मायामृगसे पंचवटीमें ।२५-२७। दानव-माया अति विचित्र। वस्तु एक होती अनेक। क्षणार्धमें पलटे शरीर। रक्तबिंदुसे भी जन्मते ।२८। रावणाने बनाया कृत्रिम शिर। भासेजो रामके मस्तक। कृष्ण ने मारे बहुत दैत्य। थे सबही कपटरूप ।२९-३०। वैसेही भगवन्तकी माया। भासे सत्य किन्तु है मिथ्या। जैसे मिथ्या स्वप्नमें देखा। वो भासे सत्य ।३१-३७। ऐसे होनेका कारण। है दृश्यभास अविद्यात्मक। मानव देह ही तदात्मक। निर्माण करे अविवेक ।३८। दृश्यने देखा दृश्य। मन बैठा आभास पर। तत्काल बना वासनादेह। लिंगदेह अविद्यात्मक ।३९। जब देह है अविद्यामय। और अविद्या-ही देखे अविद्याके प्रकार। तब सहजही होता है विश्वास। अविद्यापर ।४०। देह हूं मैं ऐसा भ्रम। यही है देहबुद्धि लक्षण। इसीसे हुवा दृश्य प्रमाण। सत्यसम केवल ।४१। एक ओर देह सत्य। दूसरी ओर दृश्य सत्य। ऐसे दोनों और संदेह। बढ़ गया अपार ।४२। करली देहबुद्धि अतिदृढ़। ब्रह्मको देखना चाहे धीट। तो दृश्योंने रोका अकस्मात्। परब्रह्ममार्ग ।४३। तब सहजही माने दृश्य सत्य। ऐसा ही हो गया निश्चय। हा हा! हुवा कितना घात। भ्रमरूप अकस्मात ।४४। अस्तु, एवं प्राणिमात्र। अहंतासे न पावते ब्रह्म। उनमें हैं सर्व लक्षण। दृश्यदेहबुद्धिके ।४५। अस्थिपिंजरमें मांसपिण्ड। चाहे देखना ब्रह्मवैभव। वो अज्ञानी क्या होगा संत। है वो अंध मूर्ख ।४६। जो जो मनोभास दृष्टिगोचर। वह सब कालान्तर नाशवन्त। इसीलिये दृश्यातीत। है एक परब्रह्म ।४७। परब्रह्म है शाश्वत। माया तो अशाश्वत। ऐसा ही है निश्चितार्थ। नानाशास्त्र ग्रंथोंमें ।४८। त्यागकर, देहबुद्धिका लक्षण। बनो देव से अनन्य। तभी तुम पावोगे समाधान। यथार्थ रूप ।४९-५०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे दृश्यनिरसननाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

गुप्त है बहुत धन। क्या जानते सेवक जन। उनको है ज्ञान। बाह्य पदार्थोंका ।१। रखा गुप्त बहुत अर्थ। और प्रकट हैं बहु पदार्थ। किन्तु है जो नर सूज्ञ। शोधे वो स्वार्थ ।२। वैसे दृश्य है मायीक। देखते है सकल लोक। किन्तु जानते जो मायातीत। हैं वे विवेकी ।३। लोग कहते हैं सरोवर। जाने ना उसीमें है द्रव्य। उसका ऐसा ज्ञान। है समर्थ पुरुषोंको ।४। वैसे हैं जो समर्थ। वे जान सकते परमार्थ। इतर जन करे स्वार्थ। दृश्य पदार्थोंका ।५। उठाते हैं बोझा एक। संचय करते एक गोबर। काष्ट भार लेते हैं एक। कर्मभोग जैसा वैसे ।६। श्रेष्ठ भोगते अमोलिक रत्न। नृपाति करते सारसेवन। होंगे सुखासन पर सवार। है जिनको सुविचार ।७-८। कोई भक्षण करे दिव्यान्न। कोई मलमूत्र संमार्जन। किन्तु छोड़े नाहीं अभिमान। स्वकीय कर्मोंका ।९। सार सेवन करते श्रेष्ठ। असार सेवे वृथापुष्ट। सारासारका विचार। कहते हैं सज्ञानी ।१०। गुप्त पारस चिंतामणि। प्रकट है कांचमणी। गुप्त हेम-रत्न खाणी। प्रकट पाषाण मृत्तिका ।११। दक्षिणावर्ती शंख या वेल। गुप्त वनस्पति अमोल। एरंड धोत्रा हैं बहुत। प्रकट सींप अनेक ।१२। दिखे नाहीं कल्पवृक्ष। असंख्य थोर विस्तार। क्वचित् मलयागिरि चंदन। बेर बबूल अमर्याद ।१३। कामधेनु इन्द्रसदन। पृथिवीपर गाय भैंस अपार। नृपवर भोगे महदभाग्य। इतर कर्मानुसार ।१४। नाना व्यापार करते जन। बोलते सकल हम श्रीमंत। किन्तु कुबेरका महिमान। आवे नाहीं किसीको ही ।१५। वैसा ज्ञानी योगेश्वर। गुप्तार्थलाभका ईश्वर। इतर जन पेटके किंकर। ढूंढते फिरते नाना मत ।१६। तस्मात् न दिखे है जो सार। दिखे किन्तु जो असार। सारासारका विचार। जानते साधु ।१७। सामान्य जनको क्या कहना। कौन जाने सत्य या मिथ्या। संतों की चिन्ह वार्ता। संत ही जाने ।१८। न दिखे जो गुप्त धन। उसके लिए चाहिए नेत्रांजन। गुप्त परमात्मा सज्जन-। संगतिमें शोधो ।१९। होते ही राजाके सन्निध। होवे अनायास श्रीमंत। तैसेही धरे जो सत्संग। लाभे उसको सदवस्तु ।२०। सदवस्तूको लाभे सदवस्तु। असदवस्तुको असदवस्तु। विवेकवान को विवेकु और ज्ञानसाधन ।२१। इसीलिए यह दृश्यजात। है सकल आशाश्वत। परमात्मा अच्युत अनंत। है दृश्यसे निराला ।२२। दृश्यसे निराला दृश्याभ्यंतर। सर्वात्मा सचराचर। ऐसा विचार करे अंतर। तो दृढ़ होवे निश्चय ।२३। न करते संसारत्याग। न छोड़ते प्रपंच सोपाधिक। तो भी जनमें सार्थकत्व। लाभे विचारसे ।२४। यह मेरे प्रचितीके बोल। देखो आप भी विवेक-प्रचित। प्रचित देखे वो सूज्ञ। अन्यथा नाहीं ।२५।

सम्प्रचित और अनुमान। उधार और रोकड़ा धन। मानसपूजा और प्रत्यक्ष दर्शन। इनमें महादान्तर ।२६। जन्मांतरमें मिल जाय फल। विश्वास ऐसा है उधार। वैसा नाहीं सारासार विचार। लाभ उसका तत्काल ।२७। तत्काल होता है लाभ। संसारसे छूटे मानव। टूटे समूल संशय। जन्ममरण-विषयक ।२८। इसी जन्ममें इसीकाल। संसारसे होवो अलग। मोक्ष पावो निश्चल। स्वरूपाकार ।२९। करे जो इसमें अनुमान। सिद्ध हो तो भी उसका पतन। कहे कोई इसको अप्रमाण। तो शपथ उपासन की ।३०। है यह यथार्थ बोल। होवो तुम शीघ्र मुक्त। होते हुए भी जनसाथ। रहो तुम विदेही ।३१। देवपद है निर्गुण। देवपदमें अनन्यपण। यही अर्थ देखो पूर्ण। जिससे होवे समाधान ।३२। देह होते हुए भी विदेह। कर्म करते हुए भी अकर्म। जीवन्मुक्तोंके लक्षण। जानते जीवन्मुक्त ।३३। अन्य जन मानते ना सत्य। अनुमान उनका बढ़ावे संदेह। किन्तु संदेह टूटे समूल। सद्‌गुरुवचनबोधसे ।३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सारशोधन नाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

पूछता जब समाधान लक्षण। तो कहते वह है शब्दातीत। तब आप ही कहो मुझे सर्व। सद्‌गुरु स्वामी ।१। गूंगेने जो खाया गुड़। कह न सके वो कैसा मधुर। कहते वैसे है समाधान। पर मुझे न आवे समझ ।२। पूछता हूं अनुभव। तो कहते हैं अनिर्वाच्य। किसके पास जाऊं अब। पूछने को समाधान ।३। कहते हैं है अगम्य। मुझे न आवे प्रचित। इसलिये मेरा समाधान। करिए स्वामी ।४। ऐसी श्रोता की आशंका। तो बोले उत्तर वक्ता। सुनिए अब कहूंगा। सावधान ।५। है जो समाधान का स्थान। या जो केवल अनुभव। बोलता हूं मैं प्रांजल। देव का स्वरूप ।६। बोलने से भी न समझे देव। समझेगा कैसे बिना बोल। जहां न कल्पना का प्रवेश। रहेगा वो अज्ञात ।७। वो ही जानों तुम परब्रह्म। है जो वेदों का गुह्य परम। किन्तु धरे जो संत समागम। उसको होता है ज्ञात ।८। उसीका विवरण। है जो अनिर्वाच्य गंभीर। सुनो तुम मेरा वचन। अनुभवजन्य ।९। अनिर्वाच्य को भी करना वाच्य। गुड स्वाद चाहो तो देना गुड। बिना सद्‌गुरू ऐसे कर्म। होगा नाहीं ।१०। सद्‌गुरू कृपा आवे समझ। जो अपने का ही करे शोध। उसके अनुभवमें अपनेआप। आ जाय वस्तु ।११। दृढ़ करके बुद्धिबल। शोधना चाहिए स्वयं कौन। उससे मिल जाय अकस्मात।

समाधी सुख ।१२। करते करते शोध अपना। उड़ जाये मायिक वार्ता । माया लुप्त होते ही तत्वता । होगा साक्षात्कार ।१३। आत्मा है साक्षी रूप । कहना यह पूर्व पक्ष । जो कोई लक्षे सिद्धान्त । वह एक सिद्ध ।१४। सिद्धान्तवस्तु ब्रह्म । जब है ध्यान का लक्ष्य । तबतक है आत्माका साक्षित्व । वस्तुतः वो अवस्थातीत ।१५। जब नाहीं पदार्थज्ञान । तब क्या है द्रष्टाका द्रष्टुत्व । नाश होगा उसी समय । अहंता-भ्रम ।१६। अहंभावका समूल नाश । वही अनुभवका है चिन्ह । उसीको कहो समाधान । है जो अनिर्वाच्य ।१७। अत्यंत विचारयुक्त बोल । वे भी होते जहां मायीक । शब्दाभ्यंतर शब्दसे बाह्य । है अर्थ गंभीर ।१८। शब्द अर्थ-वाहक । अर्थानुभवमें शब्द निरर्थक । कहता है शब्द यथार्थ । तो रही कहां अहंता ।१९। शब्द सहायसे वस्तु तो भास । दिखे वस्तु नाशे शब्द । शब्द डफोल अर्थ घन । शब्दमें जभी ।२०। है धान्य भूस के साथ । भूस छोड़के लेते हैं धान्य । शब्द जानो भूससमान । अर्थ तो धान्य ।२१। डफोलमें रहे ब्रह्म घन । किन्तु घनमें न रहे डफोल । वैसे ही रहे ना शब्द । परब्रह्मरूपमें ।२२। बोलने पर शब्द होवे स्तंभित । किन्तु शब्दपूर्व भी है अर्थ । इसीलिए शब्दका साहचर्य । न लगे परब्रह्मको ।२३। जैसे भूस छोड़के लेते कण । वैसे वाच्यांश अपेक्षा लो लक्ष्यांश । जिससे आवे अनुभव शुद्ध । परब्रह्मस्थितिका ।२४। दृश्यको छोड़कर जो बोल । वो जानो वाच्यांश । वाच्यांशका है जो अर्थ । जानो वह लक्ष्यांश ।२५। इसीप्रकार जो लक्ष्यांश । वही जानो है पूर्वपक्ष । स्वानुभव तो अलक्ष्य । लक्ष्यातीत वस्तु ।२६। आकाशातीत है ब्रह्म । उसीका जो है अनुभव । वो ही जहां कल्पनामय । भासे वर्णन करते ही ।२७-२८। दूजा बिना अनुभव । यह बोल भी है निरर्थक । इसीलिए 'ब्रह्मका अनुभव' । ऐसे वर्णन ही अनुचित ।२९। 'अनुभव शब्दसे त्रिपुटी का भान । सूचित करे अनुभविता अनुभाव्य । अद्वैतमें कैसे द्वैत । इसीलिए अनिर्वाच्य ब्रह्म ।३०। दिवस-रजनीका भिन्नज्ञान । करावे वो नित्य आदित्य । किन्तु जब न हो आदित्य । तो कौन सी वो अवस्था ।३१। शब्द-मौन का वैसे ज्ञान । है ओंकार कारण । किन्तु ओं ऐसे न हो मूल । तो होगा उच्चार ।३२। वैसे अनुभव और अनुभविता । है सब मायीक वार्ता । किन्तु जहां माया भी समूल मिथ्या । वह कौन सी अवस्था ।३३। ब्रह्मवस्तु और जीव । ऐसे होते भिन्न भिन्न । तो अनुभवका विवेक । बोलना आवे सुखसे ।३४। जीव-शिव भिन्नत्वकी माता । है वंध्या-सुता-सम मिथ्या । इसीलिए अभिन्नता । मूलतः ही सिद्ध ।३५। सोया था अजन्मा जीव । उसने देखा संसार स्वप्न । उस दुःखसे गया शरण । सद्-गुरुकी ।३६। सद्गुरुकृपा कारण । हुवा संसार अर्थहीन । ज्ञान होते ही गया चिन्ह । अज्ञान भ्रांतीका ।३७। है जितना जितना सर्व । हुवा नहींके समान । 'है' 'नहीं' ये दोनों जाने पर ।

रहे वो परब्रह्म ।३८। शून्यत्वातीत शुद्धज्ञान। होते ही हुवा समाधान। ऐक्यरूपसे अभिन्न। सहजस्थिति ।३९। अद्वैत निरूपण होता। समाप्त हुई द्वैतकी वार्ता। करते जाते ज्ञान चर्चा। आ गयी जागृति ।४०। श्रोता तुम हो सावधान। लगावो अर्थमें मन। अनुभवमें आवे जब ब्रह्मचिन्ह। तभी होगा समाधान ।४१। तथापि बोलोगे जो जो ज्ञान। वो जानो स्वप्नसमान। इसीलिए अनिर्वाच्य सुख। है जानो शब्दातीत ।४२। वहां है शब्दबिन ऐक्यता। ना अनुभव ना अनुभविता। ऐसी निवांत सुखावस्था। है सत्य जागृति ।४३। इस जागृतिरहित जो जागृति। तो स्वप्नमें भी स्वप्नस्थिति। जहां हो शब्द कुंठित-गति। है वो सत्य जागृति ।४४। यही निरूपणका मूल। पुनरपि करता हूं प्रांजल। जिससे हो अंतर निर्मल। समाधानरूप ।४५। शिष्य भी बोले विनयपूर्वक। करो जी स्वामी पुनःनिरूपण। कहिए पूर्ण निजचिन्ह। जिससे होवे अनुभव ।४६-४७। अजन्मा तो कैसा कौन। उसने देखा कैसा स्वप्न। करना इसका निरूपण। मेरे हितके कारण ।४८। जान लिया शिष्यका आदर। स्वामी देते प्रत्योत्तर। वही सुनिए अतितत्पर। श्रोताजन ।४९। तुम ही हो अजन्मा शिष्य। तेरा स्वप्न है यह संसार। यहां किया जो तुमने सारासर विचार। और शरण सद्‌गुरुकी ।५०। उससे हुवा जो शब्दातीत ज्ञान। वही जानो जागृति सत्य। तथपि ज्ञानचर्चा या निरूपण। है जागृति स्वप्नकाल की। ।५१-५२। निवांत विश्रांती का स्थान। वहां कैसे ज्ञानचर्चा या बोल। अनुभवप्राप्तीका भी भान। जहां है केवल भ्रांती ।५३-५५। नाहीं अनुभव का भिन्नभान। ऐसा आवे तुमको अनुभव। तो भी जानो है वो स्वप्न। आयी नाहीं जागृति सत्य ।५६। स्वप्नसे होते ही जागृत। स्वप्नउर्मी जावे ना पूर्ण। इसीलिये कहते हो तुम। मैं हूं अजन्मा ।५७। स्वप्नमें लगता है 'मैं हूं जागृत'। तो क्या होते जागृत यथार्थ। वैसे ही अनुभवरूपी भिन्न ज्ञान। स्वप्नसम भ्रमरूप ।५८। जागृति सत्य इससे अतीत। मैं न बोल सकूं यथार्थ। जहां विवेक-धारणाका भी अंत। होता है निश्चयसे ।५९। इसीलिये समाधानका लक्षण। है अनिर्वाच्य ऐसे जान। पहचानो निःशब्द स्थितीका चिन्ह। और रहो उसीमें ही ।६०। ऐसे है समाधान। कोई बोल न सके जान। इतना ही है चिन्ह। निःशब्द ब्रह्म-स्थितीका ।६१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अनिर्वाच्यनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक सातवां, चतुर्दश नाम

॥ श्रीराम ॥

विद्यावंतोंका पूर्वज। गजानन एकदन्त। त्रिनयन चतुर्भुज। फरशपाणी ।१। कुबेरसे मिले अर्थ। वेदोंसे परमार्थ। देवी लक्ष्मी से भाग्य। पाया समर्थ पुरुषोंने ।२। वैसी मंगलमूर्ती आद्य। उससे सकल विद्या निर्माण। गद्य-पद्य-कौशल्यपूर्ण। हो गये सत्पात्र कवि ।३। जैसे कि समर्थोंके अपत्य। नाना अलंकार-भूषित। वैसे ही मूल पुरुष कारण। कवि होते मंडित ।४। ऐसा जो गणेन्द्र। विद्याप्रकाश पूर्णचन्द्र। जिससे बोधसमुद्रमें आवे भर। वंदन उसको ।५। है जो सर्वकर्तुत्वारंभ। मूलदरुष मूलारंभ। परात्पर स्वयंभ। आदि अंत में ।६। उसीसे प्रगटी प्रमदा। इच्छाकुमारी शारदा। जैसे सूर्यसे आती पर्जन्य धारा। और मिथ्या मृगजल ।७। मिथ्या नाटकी मायीक। सबमें निर्माण करे भूल। करे वक्ता ब्रह्मनिरूपण। तो भी गिरे मायावश ।८। है द्वैतकी जननी। और अद्वैतकी भी खाणी। अनंत-ब्रह्माण्ड व्यापिनी। है वो मूलमाया ।९। कि वो आकाश-व्यापिनी वल्ली। अनंत ब्रह्माण्ड को फलवती। मायारूप मूलपुरुषजननी। है दुहिता परब्रह्मकी ।१०। वंदू मैं ऐसी वेदमाता। आदि पुरुषकी सत्ता। अब मैं स्मरण करता। सद्‌गुरु समर्थका ।११। जिसकी होते ही कृपादृष्टि। होवे आनंद की वृष्टि। जिस सुखसे सर्व सृष्टि। होवे आनंदमय ।१२। कि वो आनंदका जनक। सायुज्यमुक्तीका नायक। या जो कैवल्यपद-दायक। अनाथबंधु ।१३। मुमुक्षु-रूपी चातक सुस्वर। चाहता है करुणाजल। सुनतेही कृपाजलधर। करे वृष्टि सद्‌गुरु ।१४। है वो या भवार्णवमें नाव। करे बोधसे पैलपार। महाआवर्तमें आधार। भाविकोंका ।१५। कि वो कालका नियंता। या संकट मोचन कर्ता। या भाविक जनकी माता। कृपालु परम ।१६। कि जो परलोकका आधार। या विश्रांतिका विश्राम। या है सुखका मातृघर। आनंदरूप ।१७। ऐसा सद्‌गुरु परिपूर्ण। भेदाभेद विनाशक। उस प्रभूको लोटांगण। करता हूं मनमें ।१८। साधु संत और सज्जन। वंदन करता हूं श्रोताजन। अब कथानुसंधान। सुनिए होके तत्पर ।१९। संसार यही दीर्घस्वप्न। लोभसे भमिष्ट हुवे जन। मेरी कान्ता मेरा धन। कन्या पुत्र हैं मेरे ।२०। हुवा ज्ञानसूर्य अस्त। लुप्त हुवा प्रकाश। भग गया ब्रह्मगोल पूर्ण। अज्ञानांधकारसे ।२१। सात्विक चंद्रप्रकाश नाहीं। अंधारमें दिखे ना मार्ग कोई। भ्रांतचित्त होते अधिक ही। हुई अंध दृष्टि ।२२। देहाहंकार कारण। सो गये सब सुगाढ़। तो भी विषयसुख-कारण। आक्रंदते हैं दुःखसे ।२३। सोते सोते मर गये। जन्मातरमें भी सो गये। ऐसे आये

और गये । असंख्य लोक ।२४। अज्ञान-निद्रामें इसीप्रकार । बहुत किया अवागमन । भोग लिया बहुत ही कष्ट । नाहीं जाना परमेश्वर ।२५। उन कष्टोंके निरसनार्थ । आवश्यक है आत्मज्ञान । इसीलिए होता निरूपण । अध्यात्म ग्रंथोंमें ।२६। सकल विद्याओंमें सार । अध्यात्म विद्याका विचार । दशमोऽध्यायमें शारंगधर । बोले गीतामें ।२७।

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥१॥

तस्मात् है जो अद्वैत ग्रंथ । अध्यात्मविद्या-परमार्थ । उसको समझ सके समर्थ । हैं जो सर्वांग श्रोता ।२८। होगा जिसका चंचल-हृदय । छोड़ना न चाहिए यह ग्रंथ । छोड़े तो होगा अलभ्य । परमार्थ उसको ।२९। किन्तु जोड़ लिया है परमार्थ । तो भी अवश्य पढ़ना यह ग्रंथ । शोधशोधते समझे अर्थ । होवे परमार्थी निश्चयसे ।३०। जिसको मिला नाहीं परमार्थ । वो न समझे यहांका अर्थ । नेत्रबिना निधान-स्वार्थ । कैसे मिले अंधको ।३१। अरे यह मराठी भाषामें ग्रंथ । सुने कौन इसको सूज्ञ । ऐसे बोले कोई मूर्ख । वो क्या जाने अर्थान्वय ।३२। लोहेकी बनाई पेटीका । रख दिये उसमें रत्न नाना । अभागेने किया त्याग उसका । करके तुच्छ लोहेको ।३३। है वैसी भाषा प्राकृत । किन्तु वहां है अर्थ वेदान्त । अजानते हो करे त्याग । मंद भ्रान्तबुद्धिस्तव ।३४। अनायास मिले जो धन । उसका त्याग करना मूर्खपण । किन्तु करना उसका संचय । है आवश्यक ।३५। आंगनमें देखा पारस । मार्गमें चिंतामणि एक । अथवा कूपमें देखा वेल । दक्षिणावर्ती अमोलिक ।३६। वैसे प्राकृतमेंसे अद्वैत । सुगम और सप्रचित । या लाभे उसमें अध्यात्म । तो लेवो वह अवश्य ।३७। बिना व्युत्पत्ती श्रम । शास्त्रार्थ होगा सुगम । संतसमागमका मर्म । है ही ऐसा ।३८। जो न समझे विद्वत्तासे । वो समझे संतसमागसे । सकल शास्त्रार्थ ही आवे । स्वानुभवमें ।३९। इसीलिये संतसमागम श्रेष्ठ । वहां न लगे व्युत्पत्तीका श्रम । जन्मसार्थकता-का मर्म । है ही कुछ और ।४०।

भाषाभेदाश्च वर्तन्ते ह्यर्थ एको न संशयः ।
पात्रद्वये यथा खाद्यं स्वादभेदो न विद्यते ॥२॥

भाषा पलटे तो भी । अर्थ हानि होगी नाहीं । करना है जो कार्यसिद्धी । रहे तो वही अर्थके पास ।४१। है जो प्राकृत भाषामें अर्थ । उसीसे ही संस्कृतको महत्व । अन्यथा वह

गुप्तअर्थ। जानेगा कौन ।४२। तस्मात् न दो भाषाको महत्व। किन्तु लेवो उसीमेंसे अर्थ। सत्वको लेके करो त्याग। निःसत्व छिलका ।४३। अर्थ सार भाषा डफोल। करो प्रयत्न समझो अर्थ। शाषादिका अहंभाव। रोके मोक्षकी बाट ।४४। कहते हो लक्ष्यांस शोध। तो कैसे रहेगा वाच्यांश। भगवन्त-महिमा अगाध। समझना चाहिए ।४५। मौनपण ही जिसका बोल। जाने वह दूसरा कौन। स्वानुभवका चिन्ह। जाने कोई स्वानुभवी ।४६। अध्यात्मका अर्थ जाने। ऐसा श्रोता कैसे मिले। जिसके साथ बोलते बोलते। होवे वाचा संतुष्ट ।४७। रत्नपारखीको रत्न। बतावे तो समाधान। वैसे ज्ञानियोंके पास ज्ञान। बोलता सौख्य ।४८। माया-संगसे दुश्चित्त नर। वो क्या जाने निरूपण। समझ न सके सांसारिक। परमार्थ गहन ।४९।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेव कुरुनंदन ।
बहुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयोऽ व्यवसायिनाम् ।।३।।

व्यवसाय करे मलिन-मानस। समझे ना वो निरूपण। चाहिए होना सावधान। अतिशय सर्वदा ।५०। नाना रत्न नाना नाणक। लेवे कोई दुश्चित्त नर। हानि उसकी निश्चित। फंस जाये सर्वथा ।५१। वेसे ही न समझे निरूपण। या न समझे मराठी बोल। इसीलिए होना आवश्यक। सुचित मानस ।५३। हो जहां गंभीर अनुभव। और तदनुसार निरूपण। जानो वो अध्यात्म श्रवण। संस्कृत से भी श्रेष्ठ ।५३। कौन माया कौन ब्रह्म। इसका ज्ञान ही अध्यात्म। सुनो माया का लक्षण। कहता हूं प्रथम ।५४। माया सगुण साकार। माया सर्वथा विकार। माया है विस्तर। पंचभूतोंका ।५५। माया दृश्य चक्षुगोचर। माया मनका आभास। माया है क्षणभंगुर। नाश पावे विवेकसे ।५६। माया अनेक विश्वरूप। माया विष्णूका स्वरूप। माया है असीम। वाचाका प्रान्त ।५७। माया बहुरूपी बहुरंग। माया ईश्वरका संग। माया भासती अभंग। अज्ञानी जनको ।५८। माया करे सृष्टिरचना। माया स्वकीय कल्पना। टूटे ना तोड़ने से भी माया। बिना ज्ञान ।५९। ऐसे मायाका निरूपण। स्वल्प संकेतसे किया कथन। आगे करूं ब्रह्मनिरूपण। जिससे नासे माया-भान ।६०-६१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मंगलाचरण नाम समास पहला ।।१।।

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म निर्गुण निराकार ब्रह्म निःसंग निर्विकार। ब्रह्मका नाहीं पारावार। ऐसे

बोलते हैं साधु ।१। ब्रह्म सर्वव्यापक। ब्रह्म अनेकमें एक। ब्रह्म शाश्वत वस्तुका विवेक। कहते हैं शास्त्र ।२। ब्रह्म अच्युत अनंत। ब्रह्म सदोदित संत। ब्रह्म कल्पनारहित। निर्विकल्प ।३। ब्रह्म दृश्यसे विलक्षण। ब्रह्म है शून्यातीत। ब्रह्म न होवे इंद्रियगोचर। कदाकाल ।४। ब्रह्म न है चक्षुगोचर। न उसको मूर्खको ज्ञान। ना आवे उसका अनुभव। साधुबिना दूसरे को ।५। सबमें ब्रह्म वरिष्ठ। ब्रह्मसम नाहीं अन्य सार। ब्रह्म सूक्ष्म अगोचर। ब्रह्मादि देवको ।६। शब्द से बोलते ब्रह्मलक्षण। किन्तु शब्दसेब्रह्म विलक्षण। तथापि श्रवण अभ्याससे ब्रह्म। प्राप्त होवे निश्चयसे ।७। है अनंतनामी ब्रह्म। किन्तु ब्रह्म नामातीत। ब्रह्मके हेतु दृष्टान्त। न दे शोभा किंचिदपि ।८। ब्रह्मव्यतिरिक्त कोई अन्य। है ही नाहीं यह सत्य। ब्रह्मको दृष्टान्त उत्तर। स्पर्श ना कदा ।९।

यतो वाचा निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ॥१॥

जहां वाचा होती निवृत। ब्रह्म मनको भी अप्राप्य। ऐसे सिद्धान्त वचन। कहता है श्रुति। ।१०। कल्पना रूप है मन। ब्रह्म कल्पनातीत। इसीलिए श्रुतिवचन। हो न सके अन्यथा ।११। अब मन से भी जो अप्राप्य। तो कैसे होगा वह प्राप्त। तो जानो बिना सद्‌गुरु। होगा नाही प्राप्त ।१२। भरा है भंडारगृह। किन्तु है वो बंद। कुंजी न आये जब हाथ। तो सर्व ही अप्राप्य ।१३-१४। सद्‌गुरुकृपा है कुंजी। उससे प्रकाशे बुद्धि। द्वैत कपाटी होंगी। खुली। अकस्मात ।१५। वहां आवे सुखकी बाढ। जहां न मन का प्रवेश। मनके बिना साधन। करना चाहिए ।१६। बिना मन ब्रह्मकी प्राप्ती। वासना बिना होवे तृप्ति। वहां न कल्पनाकी गति। या व्युत्पत्ती कोई ।१७। ब्रह्म है परात्पर। मनबुद्धि अगोचर। छोड़तेही दृश्यसंग। पावे ब्रह्म सत्वर ।१८। अपना ही छोड़ो संग प्रथम। उसके पश्चात् देखो ब्रह्म। लेवे इसका कोई अनुभव। तो आवे सुख ।१९। 'अपना' यानि अहंभव। अहंभाव यानि जीवभाव। जीवभाव यानि अज्ञान। संग ऐसा अनिवार ।२०। तोड़ो तुम इसका संग। तब निसंग ब्रह्मसे एक्य। होगा प्राप्त कल्पनारहित। अधिकार श्रेष्ठ ।२१। न जानना 'मैं' हूं कौन'। इसो का नाम अज्ञान। अज्ञान जाते ही परब्रह्म। प्राप्त होवे निश्चित ।२२। देहबुद्धि का महिमान। परब्रह्ममें न चले जान। वहां होता है निर्वाण। अहंभावबुद्धिका ।२३। नाही वहां उच्च नीच का भेद। हो रंक अथवा राय। या हो स्त्री अथवा पुरुष। सबका ही एक पद ।२४। ब्राह्मण के लिए ब्रह्म पवित्र। शूद्रके लिए ब्रह्म अपवित्र। ऐसा भिन्न भिन्न प्रकार। ब्रह्ममें नाहीं ।२५। उच्च ब्रह्म है राजाके लिए।

नीच ब्रह्म परिवारके लिए। ऐसा भेद कदापि न मिले। परब्रह्ममें।२६। सबके लिए ब्रह्म एक। वहां न हैं प्रकार अनेक। रंक हो या ब्रह्मादिक। सबही मिले ब्रह्ममें।२७। स्वर्ग मृत्य और पाताल। इनमें से ज्ञानी सकल। इन सबके लिए विश्रान्तिस्थल। है ब्रह्म एक।२८। गुरु शिष्यों को एक पद। वहां नाहीं भेदाभेद। किन्तु इस देह का संबंध। तोड़ देना चाहिए।२९। जब देदबुद्धि का होवे अंत। तब सबको प्राप्त एकपद। एकं ब्रह्म ऐसे श्रुतिवचन। द्वितीयं नास्ति।३०। दिखते हैं साधु अनेक। किन्तु मिलते स्वरूप में जब। तब सबही होते एकरूप। देहातीत वस्तु।३१। ब्रह्म नाहीं पुराना या नवीन। ब्रह्म नाहीं अधिक या न्यून। जो कोई कहेगा न्यून। है वो देहबुद्धि।३२। देहबुद्धि है जिसके पास। उसका होवे समाधानक्षय। मिथ्या जानकर देहबुद्धि लक्षण। सूज्ञ करे देहकी निंदा।३३-३४। आमरण रहे देहाभिमान। मरणोत्तर भी पुनरागमन। ऐसे है देहबुद्धि का फल। भोगना पड़े।३५। हित तो है देहातीत। ऐसे कहते हैं संत। देहबुद्धि से अनहित। होगा ही निश्चित।३६-३७। योगियोंका भी देहबुद्धि। सामर्थ्यबल से बांधती। देहबुद्धि की उपाधि। बढती ही जावे।३८। इसीलिए देहबुद्धि हटे। तब ही परमार्थ घड़े। देहबुद्धिसे बिगडे। ऐक्यता ब्रह्मकी।३९। विवेक चढे ब्रह्म की ओर। देहबुद्धि गिरावे सुदूर। इतनेमें अहंता आके निकट। जीवको करे विभक्त।४०। इसीलिए है जो विचक्षण। वो करे अध्यात्म श्रवण। देहबुद्धि त्याग से साचार। घड़े मिलन परब्रह्ममें।४१। कैसे है सत्यब्रह्म। ऐसा श्रोता करे प्रश्न। वक्ता देवे प्रत्योत्तर। है ब्रह्म एक ही।४२। किन्तु ब्रह्म भासे बहुविध। जैसा जैसा जिसका अनुभव। इसीलिए नाना मत। धरते हैं लोक।४३-४४। ब्रह्म नामरूपातीत। जभी वो बहु नामांकित। निर्मल निश्चल निवांत। निजानंद।४५। अरूप अलक्ष अगोचर। अच्युत अनंत अपरंपार। अदृश्य अतर्क्य अपार। ऐसे नाम।४६। नादरूप ज्योतिरूप। चैतन्यरूप सत्तारूप। साक्षरूप सस्वरूप। ऐसे नाम।४७। शून्य और सनातन। सर्वेश्वर और सर्वज्ञ। सर्वात्मा जगज्जीवन। ऐसे नाम।४८। सहज और सदोदित। शुद्धबुद्ध सर्वातीत। शाश्वत और शब्दातीत। ऐसे नाम।४९। विशाल विस्तीर्ण विश्वंभर। विमल वस्तु व्योमाकार। आत्मा परमात्मा परमेश्वर। ऐसे नाम।५०। परमात्मा ज्ञानधाम। ऐक्यरूप पुरातन। चिद्रूप और चिन्मात्र। नाम अनामी ब्रह्मके।५१। ऐसे नाम असंख्यात। किन्तु वो परेश नामातीत। ब्रह्मलक्षण निश्चितार्थ। है नाम महत्व।५२। वो विश्रांती का विश्राम। आदिपुरुष आत्माराम। वो एक ही है परब्रह्म। दूजा नाहीं।५३। यही समझने के कारण। चौदह ब्रह्मों के लक्षण। करूंगा आगे कथन। श्रवण करो निश्चयार्थ।५४। असत्य जाते ही बचे सत्य। वहां ही करो

विश्वास । शास्त्राधारसे चौदह ब्रह्म । लक्षण अब कहता हूं ।५५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे ब्रह्मनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

श्रोता हो जावो सावधान। कहता हूं मैं ब्रह्मज्ञान। जिससे होवे समाधान। साधकोंका ।१। खानसे लेना चाहो हीरा। तो छोड़ना चाहिए मृत्तिका। वैसे चाहो परब्रह्म जानना। तो सुनो नानाब्रह्म-निरूपण ।२। दृश्य नाहीं तो नाम। द्वैत नाहीं तो दृष्टान्त। पूर्वपक्ष नाहीं तो सिद्धान्त। बोलना कठिन ।३। प्रथम करो मिथ्या की पहचान। छोड़ो वो तदनंतर। पश्चात् रहेगा जो सत्य। वो रहे स्थिर अंदर ।४। वैसेही चतुर्दश ब्रह्मनिरूपण। है समझने के लिए सिद्धान्त। इसीलिए श्रोताओं सावधान। रहो क्षण एक ।५। पहले है शब्दब्रह्म। दूजे एकाक्षरब्रह्म। तीसरे 'खं' ब्रह्म। श्रुत्यनुसार ।६। जानो चौथे सर्वब्रह्म। पांचवे चैतन्यब्रह्म। छठवे हैं सत्ताब्रह्म। साक्षब्रह्म सातावें। आठवे सगुणब्रह्म। नवम निर्गुणब्रह्म। वाच्यब्रह्म तो दशम। जानो ऐसे यथाक्रम ।८। अनुभव एकादश। आनंदब्रह्म द्वादश। तदाकार त्रयोदश। चतुर्दश अनिर्वाच्य ।९। इसीप्रकार चौदहब्रह्म। कह दिया सबकाही नाम। अब सुनिये स्वरूपमर्म। यथानुक्रम सर्वोंका ।१०। बिना अनुभव जो भ्रम। उसका नाम शब्दब्रह्म। ओं इति अक्षरब्रह्म। वही जानो एकाक्षरब्रह्म ।११। खं है आकाशका नाम। महदाकाशका व्यापकधर्म। कैसे है सूक्ष्म सर्वब्रह्म। बोलता हूं अब। ।१२। दिख जाय जो जो पदार्थ। है सब पंचभूतात्मक। किन्तु बोलते हैं श्रुतिआर। सर्वब्रह्म ऐसे ।१३-१४। अब पंचभूत है जो माया। उसको जो चैतन्य देता। नाम है चैतन्य उसीका। या कहो चैतन्यब्रह्म ।१५। चैतन्यको जिसकी सत्ता। वही सत्ताब्रह्म तत्वत्ता। उस सत्ताका ही जो ज्ञाता। वो है साक्षब्रह्म ।१६। साक्षित्व जहासे उत्पन्न। वो है गुणोंका निधान। उसीको देते हैं नाम। सगुणब्रह्म ऐसे ।१६। जहां नाहीं गुणवर्ता। वो निर्गुणब्रह्म तत्वता। बिना अनुभव बोले वाचा। वो जानो वाच्यब्रह्म ।१८-१९। तदनंतर अनुभवब्रह्म। आनंदरूप अनुभव लक्षण। आनंदसे जीव अभिन्न। तो हो तदाकार-ब्रह्म ।२०। जब टूट जाय संवाद। तो होगा अनिर्वाच्यब्रह्म। ऐसा चौदह ब्रह्मका विचार। करे तो भ्रममुक्त ।२१-२२। जानो ब्रह्म है माया अशाश्वत। चौदह ब्रह्मका विचार। विचार। होगा स्पष्ट ।२३। शब्दब्रह्म है शाब्दिक। बिना अनुभव मायीक। शाश्वत वस्तु विवेक। वहां कैसा होगा ।२४। ब्रह्म ना क्षर ना अक्षर। तो वो कैसे ओं अक्षर।

शाश्वतका विचार। वहां भी नाहीं।२५। 'खं' यानि आकाश या शून्य। या कहो उसको अज्ञान। ज्ञान से है उसका नाश। तो वहां भी नाहीं शाश्वतता।२६। सबका है प्रलयान्त। पंचभूतोंका भी है नाश। तो क्या होगा शाश्वत। सर्वब्रह्म।२७-२८। अचलको कैसे चलन। निर्गुणमें कैसे गुण। निराकारको आकार। माने ना सूज्ञ।२९। पंचभूतोंको है जनन। इसीलिए वे नाशवन्त। सर्वब्रह्म ऐसे यथार्थ। होगा ही नाहीं।३०। 'सर्व' शब्द के साथ साथ। गया भिन्नत्व भेदभाव। तो कोन द्रष्टा कौन दृश्य। शाश्वत परब्रह्ममें।३१। अब दृश्यजात जगत् सर्व। है जब माया का स्वभाव। तब चैतन्यदाता हो कौन। क्या है भेद दोनोंमें।३२। जब नाहीं ब्रह्मको परिवार। तो सत्ता शब्द भी निरर्थक। उसी प्रकार जब पदार्थों का अभाव। तो साक्षित्व भी मिथ्या।३३। गुणों का है प्रत्यक्ष नाश। तो सगुण ब्रह्म भी नाशवन्त। जब नाही एक भी गुण। तो 'निर्गुण' शब्द अर्थहीन।३४-३५। बिना गुण ब्रह्मका गौरव। है यह मृगजलसम। या है केवल मिथ्यारूप। कल्पना का बादल।३६। 'ग्रामो नास्ति कुतः सीमा'। अज कैसा जीवात्मा। वैसे अद्वैत को द्वैत की उपमा। देव तो क्या शोभा।३७। माया विरहित सत्ता। पदार्थ बिन जानता। बिना अविद्या चैतन्यता। किसको होगी।३८। सत्ता चैतन्यता साक्षित्व। हैं सर्व गुणों के आधीन। किन्तु निर्गुण ब्रह्म स्वयंसिद्ध। वहां कैसी गुणवार्ता।३९। ऐसे जो गुणरहित। वहां नामों का जो संकेत। वही जानो है अशाश्वत। वाच्यब्रह्म।४०-४१। आनंदका अनुभव। यह है वृत्तीका स्वभाव। तदाकार होते ही मन। हो जाय निवृत।४२। वासना है तो वृत्ति। वासना नहीं तो निवृत्ति। इसीलिए अनिर्वाच्यस्थिति। आवे आपोआप।४३। ऐसी अनिर्वाच्य निवृत्ति। यही है उन्मनी स्थिति, निरूपाधि विश्रान्ति। योगियों की।४४। यह ब्रह्म वस्तु निरूपाधि। उसका नाम सहज समाधि। जिससे टूटे आधि-व्याधि। भवदुःखरूप।४५। जो उपाधि का अंत। है जानो वो सिद्धान्त। स्वानुभवरूप वेदान्त। आत्मभाव।४६। ऐसे है शाश्वत ब्रह्म। नाहीं वहां मायाभ्रम। अनुभवी जाने मर्म। स्वानुभवसे।४७। स्वानुभवसे ही जान। कल्पनाका करो नाश। रहो स्वानुभमें ही स्थित। सर्वकाल।४८। निर्विकल्पकी करो कल्पना। जिससे नासे विकल्पभावना। न हो जीवस्वभाव तो भी रहना। शाश्वत सुखमें निरंतर।४९। कल्पनाका है एक उत्तम गुण। करते करते होती मनोरथ। स्वरूपमें करे प्रवेश। तब होवे निर्विकल्प।५०। निर्विकल्पकी कल्पना। तो नाशे इतर कल्पना। निःसंगसे मिलते जाना। तो होंगे आप निःसंग।५१। नाहीं ब्रह्म दृश्य पदार्थ। कि जो लेवे कोई हाथ। है वो स्वानुभव का विषय। सद्गुरु कृपा से।५२। करूं आगे इसीका अन्वय। किया है जिसका निश्चय। जिससे होगा

अनुभव। केवल ब्रह्मका ।५३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चतुदर्शब्रह्म निरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म नभसे निर्मल। नभसम भासे शून्य। अरूप और विशाल। अमर्याद ।१। एकवीस स्वर्ग सप्त पाताल। मिलके एक ब्रह्मगोल। ऐसे अनंत ब्रह्मगोल। हैं व्याप्त ब्रह्मसे ।२। सृष्टीमें अनंत ब्रह्माण्ड। अनंत ब्रह्माण्डके अधऊर्ध्व। नाहीं नाहीं एकही स्थल। जहां नाहीं ब्रह्म ।३। जल स्थल काष्ट पाषाण। और अनंत जीवजात। सर्व ही हैं ब्रह्मसे व्याप्त। कुछ भी नाहीं अव्याप्त ।४। जलचरोंको जैसे जल। बाह्याभ्यंतर जलमय। वैसे है ब्रह्म केवल। चराचर व्यापक ।५। जल व्यतिरिक्त है दिग्भाग। किन्तु जा न सके ब्रह्मके बाहर। इसीलिये उपमा नाहीं योग्य। ब्रह्मको जलकी ।६। धावे आकाश के बाहर। तो बाहर भी है आकाश। वैसे उस अनंत को अंत। है ही नाहीं ।७। तथापि है ब्रह्म अखंड। स्पर्श करता है सर्वांग। अति निकट किन्तु अलक्षित। सबसे ही ।८। जिसमें रहते हैं सर्व। जिसको जाने नाहीं कोई एक। जिसका होता है भास। किन्तु निराभास तो परब्रह्म ।९। आकाश में आते हैं अभ्र। उनसे आकाश भासे मलिन। अभ्ररूप मिथ्या भास। जाते ही आकाश निर्मल ।१०। आकाश में देखे एकाग्र। तो भासमान अनेक चक्रकार। वैसे ही दृश्य मिथ्यारूप। देखते हैं ज्ञानी पुरुष ।११। मिथ्या तो भी आवे भास। जैसे निद्रिस्त को होवे स्वप्न। जागृत होते ही आपोआप। मिथ्या लगे स्वप्न ।१२। वैसे किसी को ज्ञान-जागृति। स्वानुभवसे हो जाय जभी। तो मिथ्या मायाकी स्थितिगति। समझे अनायास ।१३। यह है ब्रह्माण्डातीत बात। जो लगती है कूटप्रश्न। उसका करता हूं हल। प्रांजलरूप ।१४। ब्रह्म ब्रह्माण्डमें अनुस्यूत। सब पदार्थों को करे व्याप्त। सब में ही है रहत। अंशमात्र ।१५। ब्रह्ममें सृष्टि भासमान। सृष्टीमें ब्रह्म वर्तमान। अनुभवसे होता है ज्ञान। अंशमात्र इसीका ।१६। सृष्टीमें है एक ब्रह्मांश। सृष्टी बाहर वो अमर्याद। ब्रह्मांडोदरमें अनंत ब्रह्म। होगा नाहीं समाविष्ट ।१७। घटाभ्यंतर आकाश। है अंशमात्र केवल। वैसे ही ब्रह्म सर्वाभ्यंतर। है वर्तमान सर्वदा ।१८-१९। पंचभूतों में ब्रह्म मिश्रीत। किन्तु है वो पंचभूतातीत। पंकमें अलिप्त आकाश। वैसे ब्रह्म सर्वदा ।२०। ब्रह्मको नाहीं दृष्टान्त। कहते हैं समझने को केवल। है ब्रह्म आकाशवत्। किन्तु है वो आकाश से भिन्न ।२१-२२। कलंक रहित पीतल। होवे तो वो सोना केवल। शून्यत्व रहित आकाश।

ब्रह्म से होवे अभिन्न ।२३। इसीलिए दृष्टांत खं ब्रह्म । और माया चंचल पवन । किन्तु उनका दर्शन । होता नाहीं कदाकाल ।२४। शब्द सृष्टि की रचना । होती जाती क्षण क्षण । किन्तु वो स्थिर रहेना । जैसे वायु ।२५। ऐसे ही मिथ्या मायीक । शाश्वत ब्रह्म है एक । है ही वो व्यापक । विश्व में सकल ।२६। पृथिवीमें है प्रविष्ट । फिर भी नाहीं ब्रह्म कठिन । कैसा है ब्रह्म का मृदुत्व । इसकी नाहीं उपमा ।२७। पृथिवी से मृदुतर जल । जलसे मृदुतर अनल । अनलसे मृदुतर पवन । पवनसे गगन मृदु अति ।२८। गगन से भी मृदु पूर्ण । है जानो परब्रह्म । जभी वज्रमें है प्रविष्ठ । तो भी ना कठिन ना मृदु ।२९-३०। पृथिवमें है व्याप्त । पृथिवी नाशे ब्रह्म अविनाश । उड़ जाय जल, ना ब्रह्म । जलमें होते हुए भी ।३१। वन्हीमें है किन्तु जले ना । पवनमें है किन्तु हिलेना । गगनमें है किन्तु आये ना । समझमें ।३२। शरीरमें भी है वो व्याप्त । किन्तु कभी न होती उसकी भेंट । अति निकट किन्तु सुदूर । ऐसे है नवल ।३३। दशदिशामें रहे सन्मुख । ब्रह्मसे ही देखे सर्व । बाह्याभ्यंतर है वो साक्षात । सर्वदा सिद्ध ।३४। उसमें है सब जीव । जीवोंमें सबाह्यांतर ब्रह्म । किन्तु न दिखे किंचिन्मात्र । जैसे गगन अदृश्य ।३५। लगता है यहां नाहीं कुछ । किन्तु वहां ही ब्रह्म परिपूर्ण । जैसे स्वयं को अपना धन । दिखे नाहीं ।३६। जो जो पदार्थ हो दृष्टिगोचर । उससे पहले दिखे ब्रह्म । हुवा है जिसको अनुभव । वो ही जाने ।३७। आगे पीछे जो आकाश । या पदार्थ बिन जो अवकाश । पृथिवीके बाहर जो महदाकाश । उनमें भी ब्रह्म एकरूप ।३८। जो जो रूप और नाम । हैं सभी मिथ्या और भ्रम । नाम रूपातीत है जो ब्रह्म । जाने उसको अनुभवी ।३९। आकाश में धूम प्रचण्ड । दिखे जैसे पर्वत वैसे मायादेवी अद्भुत । बनावे चमत्कार ।४०। तथापि माया जानो अशाश्वत । ब्रह्म एक है शाश्वत । सर्वदा सर्वस्थानमें संपूर्ण । भरा है ज्ञानधन ।४१। पढते समय पुस्तक ऊपर । अक्षरोंमें दिखे ब्रह्म । नेत्रोंमें भी रहे कोमल । ना दे दुःख ।४२। जब करे शब्द श्रवण । मन से जब करे विचार । तो भी इन्द्रियोंके अभ्यंतर । होवे अनुभव परब्रह्मका ।४३। मार्गमें चलते चलते । परब्रह्म । सर्वांग भेटें । करसे पदार्थ जब लेवे । तो पहले आवे ब्रह्म ।४४। ऐसे इन्द्रियसमुदाय । उन्हींमें है ब्रह्म सदैव । किन्तु ब्रह्मको देखती जाय । तो शांत होवे इन्द्रियां ।४५। है ब्रह्म अत्यंत निकट । परन्तु है वो गुप्त अदृश्य । उसीका जब लेवो अनुभव । तब होवे अभाव सृष्टिका ।४६-४७। ज्ञानसृष्टिसे देखो ब्रह्म । चर्मदृष्टिका नाहीं काम । अंतर्वृत्तीका जो चिन्ह । उसका अंतर्वृत्ति ही साक्ष ।४८। जाने ब्रह्म जाने माया । इस अवस्थाका नाम तुर्या । सर्वसाक्षिणी जभी वो अवस्था । तो भी है वो एक वृत्ती ।४९। उन्मन होती है जो वृत्ती । वही जातो है निवृत्ती । ज्ञानाहंताकी भी न हो

वृत्ती । तो नाम इसका विज्ञान ।५०। जहां होवे अज्ञान नष्ट । ज्ञान भी जहां होवे लीन । विज्ञानावस्था भी जहां पूर्ण । परब्रह्ममें समावे ।५१। वो ब्रह्म है शाश्वत । जहां कल्पनाओं का अंत । योगीजनोंका एकान्त । स्वानुभवसे जान लो ।५२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विमलब्रह्मनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

।। श्रीराम ।।

आपने कथन किया ब्रह्म लक्षण । तदनुसार आया अनुभव । किन्तु मायाका भी अनुसंधान । मनमें आता है स्वामी ।१। मनमें होवे ब्रह्मप्रकाश । माया भी दिखे प्रत्यक्ष । अब यह द्वैतका निरसन । कैसे करूं कहिए ।२। गुरु बोले, हो सावधान । करो तुम एकाग्र मन । जो जाने माया और ब्रह्म । करो विचार है कौन ।३। ब्रह्मका सत्य संकल्प । मिथ्या माया का विकल्प । इस द्वैतका जल्प । मन ही करे ।४। जाने ब्रह्म जाने माया । है निःसंदेह वह वार्ता तुर्या । जाने सर्व ऐसी अवस्था । है सर्व साक्षिणी ।५। सुनिए तुर्या का लक्षण । होता है सर्वका ज्ञान । किन्तु जहां नाहीं कोई सर्व । वहां किसको कौन जाने ।६। संकल्प विकल्पों की सृष्टी । है मनकी अगाध कृती । वो मन भी मिथ्या ज्ञानदृष्टि । तो साक्षी वहां कौन ।७। साक्षत्व चैतन्यत्व सत्ता । गुण ऐसे ब्रह्मके माथा । आरोपित है जानो वृथा । माया के कारण ।८। घट और मठका उपाधिभेद । उससे आकाश भासे त्रिविध । मानो जब माया सत्य । तब ब्रह्ममें आवे गुण ।९। जबतक है माया सत्य । तब तक साक्षी है ब्रह्म । माया अविद्या का होतेही नाश । कहां रहे द्वैत ।१०। इसीलिए सर्वसाक्षी मन । हो जाय जब उन्मन । तो तुर्यारूप ज्ञान । हो जाय अस्तंगत ।११। हुवा था जिसको द्वैताभास । वो मन भी हुवा उन्मन । तो टूट गया अनुसंधान । द्वैताद्वैत का ।१२। एवं द्वैत और अद्वैत । हैं वृत्तीके संकेत । वृती होते ही निवृत्त । कहां रहे द्वैत ।१३। वृत्तिरहित जो ज्ञान । वहीं पूर्ण समाधान । वहां न रहे अनुसंधान । माया अथवा ब्रह्मका ।१४। माया ब्रह्म ऐसा भेद । है मनकल्पित संकेत । ब्रह्म कल्पनारहित । अनुभव ज्ञानियोंका ।१५। मनबुद्धि अगोचर । है ब्रह्म कल्पनातीत । उसीका अनुभव साचार । होते ही द्वैत कैसे ।१६। दिखे द्वैत तो नाहीं ब्रह्म । दिखे ब्रह्म तो नाशे द्वैत । द्वैताद्वैतका भान । होता है कल्पनाको ।१७। कल्पना मायाका निवारण । कल्पना करे ब्रह्मस्थापन । धरे या छोड़े संदेह । वो भी है कल्पना ।१८। कल्पना करे बंधन । कल्पना दे समाधान । ब्रह्ममें लगावे अनुसंधान । है वो भी कल्पना ।१९। कल्पना द्वैतकी माता । कल्पना ज्ञान

तत्वता। बद्धता और मुक्तता। कल्पना योगसे।२०। होवे कल्पना प्रबल। बतावे नाना विभ्रम। कभी बतावे क्षणार्ध। स्वरूप जो निर्मल।२१। क्षण एक बतावे संकट। क्षण एक होवे स्थिर। क्षणएक होवे विस्मित। समझे या न समझे।२२। ऐसे करे नाना विकार। होती है जन्म का कारण। देव भक्तीका भी फल। और होवे मोक्षदात्री।२३-२४। है ऐसी बहुविध कल्पना। पतनार्थ कारण भी कल्पना। किन्तु करे जो परमार्थ साधना। देती उसको समाधान।२५। इसीलिए सबका ही मूल। है एक कल्पना केवल। इसीको करे जो निर्मूल। उसको होवे ब्रह्मप्राप्ती।२६। श्रवण और मनन। निजध्यायसे समाधान। मिथ्या कल्पनाका भान। उड़ जाय सर्वथा।२७। शुद्ध ब्रह्मका निश्चय करे कल्पना पर जय। होते ही निश्चितार्थ। न रहे संशय।२८। सूर्यप्रकाशसे नाशे तम। वैसे ज्ञानप्रकाशसे जान। होगा मिथ्या कल्पनाका नाश। टूटे द्वैतानुसंधान।२९-३०। कल्पना करे कल्पनाका नाश। जैसे मृगीकरण फंसे मृग। या जैसे बाण करे छेद। आकाशमें अन्य बाणका।३१। देखो शुद्ध कल्पनाका बल। नाश होवे कल्पना शबल। यही वचन करता हूं प्रांजल। सुनो सावधान।३२। शुद्ध कल्पनाका चिन्ह। है समझना स्वयं को निर्गुण। जिससे न होगा विस्मरण। स्वरूपानुसंधानका।३३। सदा स्वरूपानु-संधान। है यही द्वैतनिरसन। अद्वय निश्चयका ज्ञान। वही जानो शुद्ध कल्पना।३४। अद्वैत-कल्पना है शुद्ध। द्वैत कल्पना है अशुद्ध। किन्तु अशुद्ध ही है प्रसिद्ध। लोगोंमें इह।३५। शुद्ध कल्पनाका जो अर्थ। वही अद्वैत का निश्चितार्थ। शबल कल्पना तो व्यर्थ। है सर्व ही द्वैत।३६। जिस क्षण होगा अद्वैतप्रकाश। उसी क्षण है द्वैत का नाश। द्वैत नाशसे नाश। है शबल कल्पनाका।३७। इसीलिये जाने चतुर। कि शबल जाते ही रहे शुद्ध। और है जो शुद्ध कल्पनारूप। वही है आत्मरूप।३८। तस्मात् करते हैं वे शबलका त्याग। और शुद्धका अंगीकार। जिससे होता हैं तद्रूप। आत्मरूप स्वयं।३९-४०। होवे बुद्धिका निश्चय चलित। तब उसी क्षण आयेगा द्वैत। जैसे होते ही सूर्यास्त। पसरे अंधकार।४१। वैसे ज्ञान होते ही मलिन। आवे प्रबल अज्ञान। इसीलिए अध्यात्मश्रवण। अखण्ड करना चाहिए।४२। क्या कहना है अधिक। बोलूं संशय निरसनार्थ। होता है जो जो द्वैतभास। वो तुम नहीं सर्वथा।४३। हुवा आशंका निरसन। तुम ही हो अद्वैत ब्रह्म। अब करो वृत्ति सावध। सुनिये आगे।४४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे द्वैतकल्पना निरसनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

किया आपने ब्रह्म निरूपण। जो कल्पनारहित अद्वैत। जिससे हुवा था मैं तदाकार। क्षण एक स्वामी।१। तथापि क्यों न हूं अखण्ड। तदाकार मैं ब्रह्मस्वरूप। संसारमें अवागमन। होना न चाहिए।२। कल्पनारहित जो सुख। वहां नाहीं संसार दुःख। इसीलिए ब्रह्मरूप। क्यों न मैं होऊं।३। श्रवणाधार होना ब्रह्म। पुनरपि भोगना वृत्तिजीवन। ऐसे अटल आवागमन। क्या है उचित।४। करता हूं मन अंतर्मुख। होता हूं क्षणैक ब्रह्मरूप। वहां से गिरता हूं पुनः देख। मनोवृत्तीपर।५। प्रत्यावृतिसे बारबार। करूं कहां तक अवागमन। जैसे कीटक सूत्रबद्ध। हिल न सके परतंत्र।६। सुनता हूं जब उपदेश। होता हूं तब ब्रह्माकार। क्यों न रहता मेरा शरीर। उसी अवस्थामें।७। जानता हूं आप पर भेद। किन्तु होता हूं मैं लज्जित। ब्रह्म होने पर भी संसार। करना कैसे विपरीत।८। हुवा है जो स्वयं ब्रह्म। वही हो जाय संसारमग्न। मुझे ऐसा विपरीत ज्ञान। लगता नाहीं प्रशस्त।९। चाहे तो ब्रह्मरूप होवो। चाहे तो संसार करो। किन्तु दोनो ही एक समय। होगा कैसे।१०। निरूपण-समय ज्ञान प्रबल। होता है पश्चात् अस्तंगत। कामक्रोधादि मनोविकार। आवे कैसे ब्रह्मरूपको।११। ऐसा क्या होता है ब्रह्म। जो दोनो ओर भिन्न रूप। खींचतानी से उसका संसार। क्या न जाये व्यर्थ।१२। लेता हूं ब्रह्मसुखानुभव। तो खींचे पीछे संसार सुख। संसारसुख लेते समय। उठे प्रीति ब्रह्मानुभवमें।१३। ब्रह्मसुख गया संसार लोभसे। संसार गया ज्ञान-लालसासे। एवं असमाधानसे। दोनों ही अपूर्ण।१४। इसीलिये मेरा चित्त। होता है दुश्चित चंचल। करुं मैं क्या निश्चित। आवेना समझ।१५। करे ऐसी श्रोता विनती। रहूं अबमें कौन रीति। नाहीं होत मेरी स्थिति। ब्रह्माकार अखण्ड।१६। इसका अब प्रत्योत्तर। देगा वक्ता मर्मज्ञ। सुनिये सर्व सावधान। किंचित्काल।१७। ब्रह्मानुभवमें जो स्थित। उनको ही जब मिले मुक्ति पद। तो क्या मुनि व्यासादिक। फंस गये सर्व।१८। इस पर करे श्रोता विनति। मुक्त शुक्र वामदेव ऐसो श्रुति। इसीलिए मानती मेरी मति। मुक्त है वे दोनों।१९। वेदकथन है सुसंबद्ध। इसीलिए शुक वामदेव मुक्त। कौन करेगा अविश्वास। वेदवचनोंपर।२०। ऐसे श्रोता वेदाधार। बोले पुनरपि वचन। वक्ता बोले जब मुक्त दोही जन। तो क्या अन्य डूबे।२१-२२। बहुऋषि बहुमुनी। सिद्ध योगी आत्मज्ञानी। हो गये पुरुष समाधानी। असंख्यात।२३।

प्रल्हादनारदपराशरपुण्डरीक–

व्यासांबरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।
रूक्मांगदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्
पुण्यानिमान्परमभागवतान्स्मरामि ।।२।।
कविर्हरिरंतरिक्षः प्रबुद्धःपिप्पलायनः ।
आविर्होत्रोऽथद्रुमिलश्चमसः करभाजनः ।।२।।

इनसे अतिरिक्त श्रेष्ठतर । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । और भी अनेक दिगंबर । विदेहादिक ।२४। शुक वामदेव होगये मुक्त । और सर्व डूब गये व्यर्थ । इसपर करते हैं जो विश्वास । वे हैं पढ़तमूर्ख ।२५। तो क्या वेदकथन निरर्थक । आप कहते हो जो व्यर्थ । ऐसे सुनते ही श्रोतावचन । वक्ता दे प्रत्मुत्तर ।२६। वेदने कहां पूर्व पक्ष । मूर्ख वहांही लगावे लक्ष । साधु और व्युत्पन्न दक्ष । मानते नाहीं यह ।२७। तथापि माने जब कोई यह । तो डूबे वेद सामर्थ्य । करे किसका वेद उद्धार । कौन माने वेद को ।२८-२९। पठन करे वेदाक्षर । हो जाय वो पुण्य की राश । इसीलिये वेद सामर्थ्य । होना ना कम कदा ।३०। वेद शास्त्र पुराण । भाग्यसे हो जाय श्रवण । तो होता है पावन । ऐसे बोलते साधु ।३१। श्लोक अथवा श्लोकार्ध । न हो तो श्लोकपाद । श्रवण करे एक जभी शब्द । होवें दोष नाश ।३२। ऐसी अर्थकी वाक्य श्रेणी । वेद शास्त्र पुराण वाणी । महीमा आगाध व्यास मुनि । कहते हैं सर्वत्र ।३३। एकाक्षर हो जभी श्रवण । तो भी होवे नर पावन । इसी प्रकार ग्रंथ-महिमान । कथित है सर्वत्र ।३४। दो व्यतिरिक्त ताजा न उद्धारे । तो वेद महिमा कैसे रहे । इसीलिए चतुर एक जाने । इतर सर्व अजान ।३५। वेद शास्त्र पुराण । कैसे होंगे अप्रमाण । न हो ऐसे तो कौन । करे उद्धार लोगों का ।३६। काष्टवत विदेहावस्था । होगी वही जब मुक्तावस्था । तो शुक कैसे बोल सकता । नाना निरूपण ।३७। शुक मुक्त है यह वचन ! कौन करे अप्रमाण । किन्तु वह न हुवा अचेतन । ब्रह्मरूप होनेसे ।३८। होता शुक योगेश्वर । ब्रह्मरूप और अचेतन । तो कैसे सारासार विचार । बोल सकता ।३९। होता है जो ब्रह्मरूप । वो रहता है काष्टवत । ऐसा मानें तो शुक भागवत । कहता ना परिक्षितीको ।४०। करना है निरूपण । तो आवश्यक है सारासार विचार । और चराचर निरीक्षण । व ग्रंथावलोकन ।४१। क्षण एक होना ब्रह्म । क्षण एक दृश्य निरीक्षण । जिससे होगा संपादन । दृष्टान्त और वक्तृत्व ।४२। एवं भागवत निरूपण । करे जो शुक आपन । उसको कैसे बद्धतागुण । लगावे कौन ।४३। इसीलिए चलता बोलता । न हो निश्चेष्टित देहावस्था । मुक्ति लाभे सायुज्यता । सद्गुरुबोधसे ।४४। एक मुक्त एक नित्य-

मुक्त। एक होते जीवन्मुक्त। एक योगी विदेहमुक्त। समाधानी ।४५। मरणपूर्व देहभाव-रहित। हैं वे योगी जीवनमुक्त। मरणोत्तर भी वे विदेहमुक्त। नित्यमुक्त तो अज-अमर ।४६। स्वरूपबोधसे स्तब्धता। और बिना बोध तटस्थता। वे दोनो ही हैं देहावस्था। है उभय-विलक्षण बोधानुभव ।४७। यहां चाहिए एक अनुभव। बिना अनुभव सब निःकारण। स्वानुभवसे ही संतोष। होवे अपने आपका ।४८। किया जिसने आकण्ठ भोजन। उसको कहेगा कोई भुकिस्त। तो क्या उससे उपद्रवित। होगा वो कदाकाल ।४९। स्वरूपानुभवमें नाहीं देहभाव। वहां कैसे होगा संदेह। बद्धमुक्त ऐसा भेद। होता है देहकारण ।५०। हो देहबुद्धिसे चित्त व्याप्त। तो ब्रह्मादिक भी नाहीं मुक्त। मानो शुक थे केवल देहसे तटस्थ। तो मुक्त क्या वो कहलावे ।५१। तब मुक्त ही होवे बद्ध। मुक्तबद्धमें होगा अभेद। स्वरूप है स्वतः सिद्ध। वो न मुक्त ना बद्ध ।५२। गलेमें मुक्ततारूप पाषाण। बांधे तो जाय पाताल। इसीलिए देहबुद्धिका भाव। स्वरूपमें असंभव ।५३। किया जिसने अहंभावत्याग। वही एक हो गया मुक्त। चाहे वो बोले या धरे मौन। तो भी वो मुक्त ।५४। ब्रह्म है बंधनातीत। तो उसको कैसा मुक्तभाव। है यहां सब ही खेल। इत्यादि गुणोंका ।५५।

बद्धो मुक्त इति व्याख्या गुणतो मे न वस्तुतः।
गुणस्य मायामूलत्वान्न न मे मोक्ष न बंधनम् ।।३।।

तत्वज्ञता परमशुद्ध। वो नाहीं मुक्त या बद्ध। मुक्त बद्ध है यह विनोद। मायाके गुणों से ।५६। जहां नाहीं नाम रूप। वहां कैसे रहे मुक्तपण। मुक्त-बद्ध भाषाका विसर। होवे अनायास ।५७। बद्ध मुक्त ऐसा भेद। होता है जब देहसंबंध। किन्तु जहां नाहीं अहंभाव। वहां कौन मुक्त कौन बद्ध ।५८। एवं है यह सब ही भ्रम। अहंताकारण होता है श्रम। मायातीत जब विश्राम। किया नाहीं सेवन ।५९। एक ही मायाजनित कल्पना। करे निर्माण बद्धता और मुक्तता। वो कल्पना भी क्या वस्तुतः। हो जाय सत्य ।६०। इसीलिए यह माया-मृगजल। आकाशमें मिथ्यारूप बादल। या केवल मिथ्या स्वप्न। भासे जागृतिमें ।६१। इस संसार रूप स्वप्नमें। अपने को बद्ध या मुक्त माने। वो आया ही नाहीं जागृतिमें। तो क्या जाने अवस्था ।६२। इसीलिए मुक्त विश्वजन। जिनको हुवा है आत्मज्ञान। यही है शुद्धज्ञान। यहां न कोई मुक्त भावना ।६३। देहभावना जिसके पास। उसीको होता है-बद्ध-मुक्त-संदेह। किन्तु साधु सदा निःसंदेह। देहातीत वस्तु ।६४। अब आगे कथन करूंगा। साधक को किस प्रकार रहना। तस्मात् सुनो अब श्रोता। सावधान

मानस ।६५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बद्धमुक्तनिरूपणनाम समास छठा ।।६।।

॥ श्रीराम ॥

वस्तुकी करे कल्पना कोई। तो वस्तु है निर्विकल्प स्वभावी। तस्मात् कल्पना वास्तु की। है निरर्थक ।१। तथापि करे कोई कल्पना। तो हाथमें वस्तु आवे ना। मतिभ्रंश होवे उलटा। न हो पहचान ।२। जो न होवे दृष्टिगोचर। मनको भी न होवे भास। जहां न दर्शन न भास। होवे कैसे पहचान ।३। देखना चाहो तो निराकार। मनको भासे केवलशून्य। कल्पना करे तो अंधकार। भासता है चारों ओर ।४। भासता है कृष्णवर्ण। ब्रह्म न पीत या कृष्ण। आरक्त नील ना घूसर। हैं वर्णहीन ।५। जब न वर्ण न आकार। जब है आभाससे भिन्न। है वो केवल अरूप। तो कैसे समझना ।६। दिखे नाहीं पहचान। करनेके लिये करे यत्न। तो अधिकही होगा श्रम। जानने के लिए वस्तुको ।७।

अचिंत्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणें नमः ।।१।।

जो निर्गुण गुणातीत। जो अदृश्य अव्यक्त। जो अचिंत्य चिंतनातीत। परम पुरुष ।८। अचिंत्यका चिंतन। अव्यक्तका स्मरण। निर्गुणकी पहचान। करना कैसे ।९। है न जो चक्षुगोचर। हो न जो मन-आधिन। उस निर्गुणका दर्शन। होगा कैसे ।१०। असंगका संग धरना। निरालंब वास करना। निःशब्दके साथ करना। संभापण कैसे ।११। अचिंत्यका करे चिन्तन। कल्पनामें लाये निर्विकल्प। करे अद्वैतका ध्यान। तो उठे द्वैत अधिकही ।१२। इसीलिये छोड़े कोई ध्यान। या न करे अनुसंधान। तो होगा की संशयग्रस्त। पहलेसे भी अधिक ।१३। द्वैतसे होके भयभीत। छोड़ो जब अद्वैत ध्यान। तब क़ैसे होगा वस्तुलाभ। या कैसे समाधान ।१४। अभ्यास करे तो होगा साधन। अभ्यास करे तो वस्तुलाभ। अभ्याससे सारासार विचार। और समाधान ।१५। चिंतनमय आवे द्वैत। यह बात नाहीं असत्य। किन्तु करो न वस्तुचिंतन। तो शून्यत्व और संदेह ।१६। इसीलिये करो विवेक। ज्ञानसे करो संसार दूर। अहंभावका

अभिभव । है यद्यपि दुस्तर ।१७। है परब्रह्म अद्वैत । कल्पना करते ही आवे द्वैत । वहां हेतु और दृष्टान्त । चले ना कुछ ।१८। जिसका स्मरण ही दृश्य-विस्मरण । और विस्मरण ही दृश्य-भान । जिसे अनुभवमें हो अहंता-नाश । है वो परब्रह्म ।१९। मिलने जाय तो न मिले । न जाय मिलने तो मिले । अद्भुत नवल यह ऐसे । मौन रूप ।२०। साधन करे तो भी असाध्य । साध्य होतेही नाहीं दूर । ऐसा जिसका संबंध । निरंतर अटूट ।२१। वो है ही सर्वकाल । देखना चाहे तो न हो दृश्य । न देखे तो होवे प्रकट । जहां तहां ।२२। जहा उपाय होता है अपाय । और अपाय होता है उपाय । कौन जाने वो है समीप या दूर । अनुभवी ज्ञानी-व्यतिरिक्त ।२३। ज्ञात हो तभीजो अज्ञात । अज्ञात हो तभी ज्ञात । ऐसे है जो निवृत्तिपद । मिले वृत्तिबीन ।२४। आवे ना वो ध्यानमें । चिंतन करनेसे क्या होवे । मनमें भी न समाये । परब्रह्म वो ।२५। यदि कहो है वो जल सम । तो ब्रह्म है निर्मलनिश्चल । जलमें डूबा विश्व सकल । तो भी ब्रह्म अस्पृष्ट ।२६। है वो नाहीं प्रकाशसम । अथवा नाहीं अंधकारसम । किस प्रकार है वो ब्रह्म । कैसे मैं कहूं ।२७। ब्रह्म ऐसे निरंजग । कदा नाहीं दृश्यभान । तो कैसे करना अनुसंधान । किसके ऊपर ।२८। कथंचित् करूं अनुसंधान । तो भासे है सब शून्य । है क्या मिथ्या या सत्य । मनमें भी आवे संदेह ।२९। नाहीं सत्य तो क्या है देखना । क्या तब एकान्तमें बैठना । ऐसा अभाव सत्य स्वरूपका । ले लिया जीवने ।३०। अभावको ही कहो सत्य । तो हो जाय वेदशास्त्र असत्य । व्यासादिमुनियों का भी कथन । हो जाय मिथ्या ।३१। इसीलिये मिथ्या कहना न उचित । कहते हैं बहुत ज्ञान-उपाय । अद्वैतज्ञानका उपदेश । कहते हैं महेश पार्वतीप्रति ।३२-३३। अवधूत गीतामें ज्ञानमार्ग । गोरक्षको किया है कथन । विष्णु होके राजहंस । उपदेश किया ब्रह्मको ।३४-३५। ब्रह्माने चतुश्लोकी भागवत । किया नारदको उपदिष्ट । आगे वही विस्तृत । किया व्यास मुनीने ।३६। वैसेही रघुनाथको उपदेश । करे वसिष्ठ-ऋषि निजसार । कृष्ण कहे गीतोपदेश । अर्जुनको सप्तश्लोक ।३७। ऐसे आदिअंतमें सत्य । है आत्मज्ञान अद्वैत । उसको मिथ्या कहे प्रज्ञाहीन । तो पतन पावे निश्चित ।३८-३९। जहां शेषप्रज्ञा हो गयी मंद । धरा श्रुतिने मौन । वहां अहंतासे वदे कौन । स्वरूपस्थितीको ।४०। अपने अज्ञानके कारण । कहे जो मिथ्या आत्मज्ञान । उसीको धरना चाहिए विश्वास । सद्गुरुवचनपर ।४१। मनका स्वभाव चंचल । इसीलिए डूबा संशयसागर । हुवा मिथ्या जो वही सत्य । और सत्य मिथ्यारूप ।४२। मनको हुवा अभ्यास । करना संकल्प-विकल्प । इसीलिये होता है संदेह । धावे अहंता मार्ग ।४३। तस्मात् छोड़ दो वो दुष्ट पथ । जोड़ो परमात्माका सन्मार्ग ।

तोड़ो समूल संदेह । संत साधुसमागमसे ।४४। न टूटे शस्त्रसे अहंता । न फूटे न छूटे यत्न करता । भक्ति वैराग्य रहे न तत्वता । समझमें न आवे ब्रह्म ।४५-४६। ना प्रपंच ना परमार्थ । ना यशकीर्ति शक्तिप्रताप । रहे ना मित्रभाव प्रेम । जब हो अभिमान ।४७-४८। विकल्प, कलह, संमोह । आवे अहंतावश एकसाथ । भंग पावे ऐक्यताभाव । ऐसा प्रभाव अहंताका ।४९। कौन सहे दूसरेका अभिमान । क्या वो होवे भगवन्तको मान्य । इसीलिए अहंता करे जो दूर । वही पावे समाधान ।५०। अहंताका त्याग कैसे करना । ब्रह्मानुभव कैसे लेना । किस प्रकार प्राप्त करना । समाधान ।५१। ज्ञानसे करो अहंता त्याग । ब्रह्म बनके लो ब्रह्मानुभव । प्राप्त करो समाधान । निःसंग योगसे ।५२। और भी एक समाधान । मिले जो करे साधन । अहंता त्यागपूर्वक । आत्मज्ञान लाभार्थ ।५३। मैं हुवा हूं स्वयं ब्रह्म । अब कौन करेगा साधन । ऐसे करे जो चिंतन । तो है केवल कल्पना ।५४। ब्रह्मको कल्पना न करे स्पर्श । वही जब खड़ी हो प्रत्यक्ष । उसको जो करे शोध । वही एक साधु ।५५। निर्विकल्पकी करो कल्पना । किन्तु रहने न दो कर्तृभावना । इसी प्रकार त्याग करना । अहंभावका ।५६। इस ब्रह्मविद्याके खेलमें । होते हुवे भी न होना चाहिए । वही एक दक्ष जाने । है जो समाधानी ।५७। जिस निर्विकल्पकी करते कल्पना । वही निर्विकल्प स्वरूप जब अपना । तो आ गयी निरर्थकता । कल्पनाको ।५८। उत्तम पदसे न हो च्युत । करते रहो साधन उपाय । तव ही हो जाये सहज । संसारमें अलिप्त ।५९। राज्यधारी है जब राजा । तो सहज चले उसकी सत्ता । साध्य होनेपर भी साधना । सतत करनी चाहिए ।६०। साधन करना है देहके कारण । देह तो न हूं मैं आपन । ऐसे समझ करे जो साधन । तो है अकर्ता अनायास ।६१। जीव है देहातीत ब्रह्म । किन्तु समझे वो मैं देह । तो क्या उसको है प्रयोजन । साधन अभ्यास का ।६२। तुम तत्वतः नाहीं हो देह । तो भी साधन करनेसेही अलिप्त । इसलिए देह है तबतक साधन । करते करते बनो विदेही ।६३। बिना साधन ब्रह्मभाव । करे तो देहममता केवल । बढ़ जाय आलस्य प्रबल । ब्रह्मज्ञानमिस ।६४। परमार्थमिस बढेगा स्वार्थ । ध्यान मिस निद्रा निश्चित । मुक्तिमिस इंद्रिय भोग । शमदमादि अभावसे ।६५। निरूषण मिस निंदादोष । संवादमिस विवाद । उपाधिमिस अभिमान । जड़ जाय देहमें ।६६। वैसे ब्रह्मज्ञानमिस । आलस्य प्रवेशे अभ्यंतर । तो अनायास छोड़े साधन । बोले वह निष्कारण ।६७।

किं करोमि क्व गच्छामि किं गृण्हामि त्यजामि किम् ।
आत्मनापूरितं सर्वं महाकल्पाम्बुना यथा ।।२।।

ऐसे बोले शास्त्राधार। किन्तु न समझे है वो शस्त्र। करे स्वपर ही प्रहार। जानता नाहीं स्वहित ।६८। तैसा उपाय ही अपाय। होते ही स्वहित जाय। साधन छोड़े तो होवे बद्ध। हो यदि वो मुक्त ।६९। इतना ही नहीं किन्तु सिद्ध। हो तो भी पतन तत्क्षण। जब वो न माने साधन। परमार्थकारण ।७०। लोग कहेंगे है यह साधक। यही लगती है लज्जा एक। साधन करते हैं ब्रह्मादिक। यह समझना चाहिए ।७१। अस्तु है एवं अविद्या। अभ्यासानुसारिणी विद्या। अभ्याससे ही पावे सद्यः। पूर्णब्रह्म ।७२। अभ्यास करना तो कैसे। प्रश्न करे श्रोता ऐसे। अतएव अब कहेंगे। परमार्थ साधन ।७३। देता हूं इसका उत्तर। परमार्थका साधनमार्ग। सुनिए श्रोता सावधान। अगले समास ।७४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे साधनप्रतिष्ठानिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

सुनो अब परमार्थसाधन। जिससे होवे समाधान। हैं वो निश्चित जानो। श्रवण भक्ति ।१। श्रवणसे होवे भक्ति विरक्ति। टूटे विषयोंपर आसक्ति। होवे अभिमानकी शांति। और चित्त शुद्धि ।२-३। श्रवणसे घडे बुद्धि निश्चय। ममता का नाश और समाधान। संशयादि अवगुणोंका-निरसन। देह-अहंतका मोक्ष ।४-६। नाना अपाय संकट। लोभ मोहभय प्रसंग। श्रवणोपायसे भस्म। होते हैं सत्वर ।७। श्रवणसे ही कार्यसिद्धि। लगे अकस्मात समाधि। श्रवणसे घड़े सर्वसिद्धि। समाधान सहित ।८। सत्संग पर श्रवण। होवे तो समझे निरूपण। प्रबोध और प्रज्ञा बढते सत्वर। साधक होवे ब्रह्मरूप ।९-१०। श्रवणसे विषय वासनाका भंग। बढे सारासार विचार ज्ञान। होवे सद्बुद्धि विवेक जागृत। मन चाहे भगवन्त ।११-१२। श्रवणसे टूटे काम कुसंग। स्फुरे सद्वस्तुप्रकाश। शांति निवृत्ति गति उत्तम। पावे अचलपद ।१३-१५। श्रवण व्यतिरिक्त नाहीं सार। नाहीं अन्य भवतरणोपाय। सर्वारंभ भजनारंभ। है एक श्रवण स्वयंभ ।१६-१७। प्रवृत्ति अथवा निवृत्ति। बिना श्रवण हो न प्राप्ति। आजन्म नाहीं श्रवण, तो मति। होवे संदेहग्रस्त ।१८-२०। कहते हैं बहु साधन। किन्तु एक भी नाहीं श्रवणसम। जैसे हो न जब सूर्योदय। तब अंधकार सबओर ।२१-२२। कैसी नवबिधा भक्ति। कैसी चतुर्विधा मुक्ति। कैसी होती सहजस्थिति। बिना श्रवण ।२३। समझे नाहीं षट्कर्माचरण। समझे नाहीं पुरश्चरण। समझे नाहीं उपासन। शास्त्रविधियुक्त ।२४। नाना व्रत नाना दान। नानाताप नाना शोधन। नाना योगतीर्थाटन। श्रवण बिना

न समझे ।२५। नाना विद्या पिंडज्ञान। नाना तत्वोंका शोधन। नाना कला ब्रह्मज्ञान। श्रवण बिना न समझे ।२६। अठारह प्रकारकी वनस्पति। एक जलसे पोषण होती। एक रससे उत्पत्ती। सकल जीवमात्रकी ।२७। सकल जीवोंका आधार पृथिवी। सकल जीवोंका एक रवि। सकल जीवोंको प्राणदायी। एक वायु ।२८। सकल जीवोंका एक अवकाश। जिसको कहते हैं आकाश। सकल जीवोंका वास। एक परब्रह्ममें ।२९। सकल जीवोंके लिये सार। है एक ही साधन। वो जानो श्रवण नाम। जिससे मिले परमार्थ ।३०। नाना देश नानामत। भूमंडलमें असंख्यात। सबकेलिए श्रवण व्यतिरिक्त। है नाहीं साधन ।३१। श्रवणसे होवे उपरति। श्रवणसे होवे उत्क्रान्ति। बद्ध से मुमुक्षु मुमुक्षुसे साधक। होते उत्तरोत्तर ।३२। साधक बने सिद्ध। मनमें आतेही प्रबोध। श्रवणसे खल चांडाल। होवे पुण्यशील ।३३-३४। है जो दुर्बुद्धि दुरात्मा। वही बने पुण्यात्मा। अगाध है श्रवण महिमा। वाचा नाहीं बोल सके ।३५। तीर्थव्रतोंकी फल-श्रुति। हो जाय आगे बोलती। वैसी नाहीं श्रवणभक्ति। हाथोहाथ प्रचिति ।३६। नाना रोग नाना व्याधि। तत्काल तोड़े औषधि। वैसी है श्रवणसिद्धि। जानते अनुभवी ।३७। श्रवणका अर्थ यदि समझे। तो सहज भाग्यश्री प्रकटे। मुख्य आत्मज्ञान आवे। स्वानुभवमें प्रत्यक्ष ।३८। इसीका नाम मनन। समझे मन अर्थ सावधान। अर्थके निजध्याससे अवश्य। होगा समाधान ।३९। वचनोंका करे श्रवण। और समझे उसका अर्थ। उसको होवे समाधान। और निःसंदेहता ।४०। है जन्मका मूल संदेह। वही श्रवणसे होगा निर्मूल। तब सहज ही प्रांजल। मिले समाधान ।४१। जहां नाहीं श्रवण मनन। वहां कैसे होवे समाधान। 'हूं मैं मुक्त' ऐसा बंधन। होगा अहंभावसे ।४२। मुमुक्षु साधक अथवा सिद्ध। श्रवण नाहीं तो है वो बद्ध। श्रवण मननसे होती है शुद्ध। साधककी चित्तवृत्ति ।४३। जहां नाहीं नित्य श्रवण। वहां नाहीं परमार्थका लक्षण। रहना न चाहिए एकक्षण। उसी स्थान ।४४। जहां नाहीं श्रवणस्वार्थ। वहां कैसे हो परमार्थ। हुवा होगा जो किंचित्काल। है नाहीं वो पूरा ।४५। तस्मात् करो तुम श्रवण। धरो मनमें साधन। तरते जावो संसारसागर। श्रवणसे नित्य ।४६। अन्नपानका सेवन। जैसे करते प्रतिदिन। वैसे करो श्रवणमनन। अनुदिन परमार्थ ।४७। श्रवणभक्तिका अनादर। आलस्यसे करे जो नर। उसका होवे अपहार। स्वहित विषयमें ।४८। आलस्यका संरक्षण। परमार्थका विध्वंसन।। इसीलिए करना श्रवण। है अत्यावश्यक ।४९। किस प्रकार श्रवण करना। किस पथपर जाना। इसका तिरूपण सुनना।

अगले समासमें ।५०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रवणनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

श्रवण न करो वो भाषण। जिससे बिगड़े समाधान। या है जो कृत्रिम। निश्चशून्य ।१-३। एक ग्रंथ करे निश्चय। खंडण करे उसको अन्य। तो क्या मिलेगा फल। संशयवृद्धि व्यतिरिक्त ।४। यदि हो ग्रंथ परमार्थपर। जिससे टूटे संशय। और आशंका निवृत्ति सत्वर। श्रवण करो ऐसा ग्रंथ ।५। मोक्षमार्गका जो अधिकारी। परमार्थपथ का जो यात्री। अद्वैत-ग्रंथ पर जिसकी प्रीति। है वो विवेकी साधक ।६-७। ऐसा कोई अद्वैत-साधक। जिसको द्वैतसे। होगा क्षोभ। जैसे एक देवका उपासक। मानेना दूजी उपासना ।८-१०। प्रीतिका लक्षण है ऐसे। अनायास मनमें उठे जो। जल बहे निम्नमार्ग जैसे। आपोआप ।११। वैसा आत्मज्ञानी नर। चाहे ना आत्मज्ञानसे इतर। उसको चाहिए परमार्थ। सारासार विचार ।१२। जहां है देवी भगवती। वहां पढना चाहिए सप्तशती। वहां क्या कामकी स्तुती। उतर देवोंकी ।१३। जिसने स्वीकारा अनंत पूजा व्रत। गीता का उसको क्या प्रयोजन। फलाशाकी भाषा साधुजन। कैसे माने ।१४। हाथमें से वीरकंकण। होगा क्या नासिका-भूषण। जहां है जिसका महात्म्य। उसीका है वहां ही शोभा ।१५-१६। मल्हारमाहत्म्य द्वारकामें। द्वारका महात्म्य काशीमें। काशीमाहात्म्य व्यंकटेश–गिरिमें। ले जावे तो क्या शोभा ।१७। ज्ञानियोंको देवता–अवाहन। रत्न–पारखीको देवे पाषाण। पंडितको कहना 'सुनो गायन'। तो क्या होगा योग्य ।१८–१९। निस्पृहको कहना फलश्रुति। ज्ञानीको देना कामशास्त्र–पोथी। ब्रह्मचारीको बताना नृत्य–रीति। या निरूपणमें रासक्रीडा ।२०। राजहंसको देना जल। या अंतर्निष्ठको श्रृंगारीक पुस्तक। तो क्या किसका समाधान। होना हैं किंचिदपि ।२१–२२। राजा को आज्ञा करे रंक। अमृतको कहना तक्र। संन्यासीको देना मंत्र। हीन 'उच्छिष्ट चांडाली' ।२३। कर्मिष्ठको कहना वशीकरण। पंचाक्षरी को ब्रह्मनिरूपण। तो सहजही होगा भंग। अंतकरण उनका ।२४। वैसे पारमार्थिक जन। उनको न मिले जब आत्मज्ञान। तो कैसे उनका समाधान। होगा ग्रंथ पढनेसे ।२५। अंतः चाहे जो अपना हित। आत्मज्ञानके लिये उत्सुक। उसको एकान्तस्थलमें अद्वैत। समाधानार्थ देखना ।२६–२७। करो विचार नाना प्रकार।

किन्तु ग्रंथ नाहीं अद्वैत व्यतिरिक्त। है जो सर्वजनको तारक। परमार्थ विषयमें।२८। इतर प्रापंचिक जनके ग्रंथ। हास्य विनोद श्रृंगारपूर्ण। वे सबही अनर्थकारक। परमार्थियोंको।२९। जिससे परमार्थ बढ़े। अनुताप अंगमें आवे। भक्ति साधनकी वांच्छा जड़े। श्रवण करो वो ग्रंथ।३०। है वो श्रवणार्थ योग्य ग्रंथ। सुनते ही होवे गर्वनाश। छोड़े मन भ्रांति समस्त। करे भगवंतकी इच्छा।३१। जिससे घड़े उपरति। अवगुण सर्व पलट जाती। टल जाये अधोगति। श्रवण करो वो ग्रंथ।३२। बढ़े जिससे धारिष्ट। घड़े जिससे परोपकार। विषयवासनाको पड़े मोड़। श्रवण करो वो ग्रंथ।३३। जिससे मिले परत्रसाधन। जिससे होवे आत्मज्ञान। जिससे होवे परमपावन। श्रवण करो वो ग्रंथ।३४। जिससे न होवे विरक्त या भक्ति। बिना मोक्ष जिसकी फलश्रुति। है वो दुराशा लोभकी पोथी। देवे अधोगति जन्मोजन्म।३५-३८। पक्षी खाते हैं नाना फल। होते हैं वे उससे तृप्त। किन्तु चकोरका मानस। चाहे चंद्रामृत।३९। वैसे संसारी मनुष्य। देखे संसारकी ही बाट। किन्तु जो भगवन्तका अंश। वो चाहे भगवन्त।४०। ज्ञानीको चाहिए ज्ञान। भक्तको चाहिए भजन। साधकको चाहिए साधन। परमार्थमार्गका।४१। परमार्थीको परमार्थ। स्वार्थीजनको स्वार्थ। कृपणको चाहिए द्रव्य। अंतः करणपूर्वक।४२। योगियोंको चाहिए योग। भोगी जनको केवल भोग। रुग्णको चाहिए एक। रोग हरण मात्रा।४३। कवीको चाहिए काव्यप्रबंध। तार्किकको तर्कवाद। भाविकोंको संवाद। लगे सुखकर।४४। पंडितको चाहिए व्युत्पत्ति। विद्वानको अध्ययन-प्रीति। कलावन्तको कलासे प्रीति। होती है बहुत ही।४५। हरिदासको किर्तन-प्रेम। शुचिष्मंतको संध्यास्नान। कर्मिष्ठको विधिविधान। चाहिए अत्यावश्यक।४६। प्रेमल भक्त चाहे करुणा ध्यान। विचक्षण दक्षता चातुर्य। गायक चाहे रागज्ञान। ताल और मूर्छना।४७-४८। योगी चाहे पिण्डज्ञान। तत्वज्ञ चाहे तत्वज्ञान। नाड़ीज्ञानी मात्राज्ञान। कोकशास्त्र कामिक।४९। चेटकी देखे चेटुकमंत्र। यंत्रीदेखे नाना यंत्र। उन्मत्तको नाना छंद। तामसीको प्रमाद।५०-५१। मुर्ख होवे नादलुब्धी। निंदक देखे योग्यसंधी। पापी देखे पापबुद्धि। सर्वकाल।५२। एक चाहे वाचा रसाळ। एक चाहे अनर्गल। एक चाहे केवल। भोली भक्ति।५३। आगमी देखे आगम। शूर देखे संग्राम एक देखे नाना धर्म। इच्छानुरूप।५४। मुक्त देखेमुक्तलीला। जो जो होगी सर्वज्ञकला। ज्योतिषी करे भविष्यवार्ता। पिंगला पक्षी आवाजसे।५५। ऐसे कहूं मैं कहांतक। रुची अनुसार सुनते हैं लोग। पठण करते नाना पुस्तक। विनोदार्थ।५६। किन्तु बिना परत्र-उपाय। होगा नाहीं श्रवण साधन। जहां नाहीं आत्मज्ञान। वहां जानो मनरंजन।५७।

मधुर नहीं तो माधुर्य। नासिका बिन सुलक्षण। बिना ज्ञाननिरूपण। हो सके कैसे।५८। क्या कहूं अब बहुत। सुनिए परमार्थमार्गका ग्रंथ। जिसमें नाहीं कोई परमार्थ। वो है निकामी।५९। इसीलिए नित्यानित्य विचार। जहां कथित है सारासार। वही ग्रंथ करे पैलपार। विवेक बलसे।६०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रवणनिरूपणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

मिथ्या था वो भासे सत्य। सत्य था तो हुवा असत्य। मायाविभ्रमका कृत्य। है ऐसा ही।१। सत्य समझनेके कारण। हैं नाना निरूपण। तो टलेना प्रभाव। असत्य मायाका।२। असत्य जो मनमें भरे। अजानसे दृढ होगये। सभी सत्य गुप्त हुवे। जहां तहां।३। कहते हैं वेद शास्त्र पुराण। करते हैं सत्य का निश्चय। तो भी न आवे आत्मप्रचित। सत्य स्वरुप।४। सत्य है फिर भी आच्छादित। मिथ्या है, पर हुवा सत्य। ऐसे हुआ है विपरीत। देखते देखते।५। ऐसा माया का कृत्य। समझ में आया तत्क्षण। जब हुवा संत समागम। और निरूपण।६। हुवा ब्रह्म निरूपण। देख लिया अपनेको आपन। उससे दृढ़ हुवा लक्षण। परमार्थ का।७। उससे हुवा समाधान। चैतन्य में समा गया चित्त। निजरूपसे लिया पहचान। निजवस्तुको।८। प्रारब्धप्रवाहमें छोड दिया देह। बोधसे मिट गया संदेह। रहने या गिरनेदो अब। मिथ्या शरीर।९। ज्ञानियोंका शरीर। मिथ्यत्वें निर्विकार। जहां गिरे वही निर्मल। पुण्य भूमी।१०। साधुदर्शनसे पावन तीर्थ। पूर्ण होते उनके मनोरथ। न जाय साधु तो व्यर्थ। जीवन पुण्य क्षेत्रोंका।११। पुण्य नदीका तीर। वहां गिरना चाहिए शरीर। ऐसा सामान्योंका विचार। साधु तो नित्यमुक्त।१२। है उत्तम उत्तरायण। दक्षिणायन तो अधम। ऐसा है संदेहयुक्त भ्रम। साधु तो निःसंदेह।१३। शुक्लपक्ष और उत्तरायण। घरमें हो दीप या दिनमें मरण। अन्तकालमें रहे स्मरण। तब कहते है उत्तमगति।१४। नाहीं यह आवश्यक। योगी जीवित तो भी मुक्त। है वो स्वयं पुण्यवंत। सामान्य पुण्य के अतीत।१५। अनामयस्थितिमें देहांत। बिना कष्ट आया मरण। तो बोलते धन्य धन्य। अज्ञानी लोग।१६। जनमत होता है विपरीत। देहान्त कालमें मिले भगवन्त। इसी कल्पनासे घात। करते हैं अपना।१७। आजन्म किया ना सार्थक। आयुष्य गया सब ही व्यर्थ। बोया नाहीं अनाज बीज तो मिले कैसे धान्य।१८। जब होवे ईश्वर भजन। तब ही होगा पावन। जैसे

करनेसे व्यवहार। होते हैं श्रीमंत ।१९। देवे ना तो पावे ना। बोवे ना तो उगे ना। यह वचन नाहीं जाना। ऐसा है कौन ।२०। की नाही सद्‌गुरु सेवा। तो भी मांगे धन सेवा का। ऐसे अभक्त का नाही होगा हित आमरण ।२१। जीवित में की नाहीं भक्ति। मरणोत्तर कैसी मुक्ती। जैसी जिसकी होवे कृति। वे वैसे ही पावत ।२२। एवं न करे जो भगवद्‌भजन। वो न होगा अंतमें पावन। यद्यपि हो उत्तम मरण। तो भी भक्तीबिन अधोगति ।२३। इसलिये साधुपुरुष। जीवित है तभी करे सार्थक। परमार्थकारणही जिसका शरीर। है वो धन्य ।२४। ज्ञानी होता है जीवनमुक्त। गिरने दो वनमें उसका देह। या ले जाय उसको स्मशान। तो भी साधु वो धन्य ।२५। साधु की देह हो व्याधिग्रस्त। या श्वानदिकों का भक्ष्य। तो मानते नहीं प्रशस्त। मंदबुद्धी जन ।२६। अंत न हुवा उत्तम। इसीलिए दुःखी सामान्य जन। किन्तु बापडे अज्ञान। जानते नाहीं मर्म ।२७। है ही नाहीं जिसको जन्म। उसको कैसे आवे मरण। किया उसने जन्ममृत्यु का ग्रास। नित्यानित्य विचारसे ।२८। स्वरूपानुसंधान सामर्थ्यसे। जब माया का नाश समूल होवे। उसका मर्म न समझे। ब्रह्मादिक देव को ।२९। जीवित में भी था वो मृत। मरण को भी लाया उसने मरण। तो हुवा अनायास-अमर। जन्ममृत्यु विस्मरणसे ।३०। दिखे वैसा नाहीं संत। वर्तनसे भासे विलक्षण। वो है अत्यंत निर्मल। दृश्य पदार्थोंसे अस्पृष्ट ।३१। एवं ऐसे जो साधुजन। उनका करे जो भजन। उस भजनसे हो जाय पावन। इतर जन ।३२। इसीलिये सद्‌गुरुका अंकित। उसको चाहिए नित्य विवेक। विवेक बल से निरूपण। होता है तर्क शुद्ध ।३३। यही साधकको कथन। अद्वैत प्रांजल निरूपण। सबको होवे समाधान। साधु पुरुष को जैसे ।३४। संतकी गया जो अनन्यशरण। वो हो जाय स्वयं संत। इतर जनोंका उद्धारकारक। होगा संत समान ।३५। ऐसे है संतोंके महिमान। संतसंगसे होता है ज्ञान। सत्संग व्यतिरिक्त साधन। नाहीं अन्य कोई ।३६। गुरुभजनके आधारसे। निरूपण के विचारसे। निर्धारपूर्वक शुद्ध क्रियासे। प्राप्ति परब्रह्म की ।३७। परमार्थका जन्म-स्थान। है एक सद्‌गुरुका भजन। सद्‌गुरुभजनसे समाधान। अकस्मात आवे ।३८। देहमिथ्या ऐसे जानना। और उसका सार्थक करना। भजनभावसे संतोष देना। सद्‌गुरुके चित्तको ।३९। शरणागतों की करे चिन्ता। वो एक सद्‌गुरुदाता। जैसे बालकको रक्षे माता। नाना प्रकारसे ।४०। इसीलिये सद्‌गुरुभजन। करे जो वही धन्य। सद्‌गुरुबिन समाधान। नाहीं अन्य ।४१। हुवा शब्द व्याख्यान समाप्त। आया ग्रंथका आखीर। यहां कहा गया है स्पष्ट। सद्‌गुरुभजन ।४२। सद्‌गुरुभजन व्यतिरिक्त। नाहीं अन्य

मोक्षदायक। इसे मानेना जिसका मन। वो देखे गुरुगीता ।४३। वहां पार्वतीप्रति सदाशिव। कहते हैं यहीं मर्म। इसीलिए सद्भावपूर्वक। सेवो सद्गुरुचरण ।४४। इस ग्रंथमें है जो विवेक। जो कोई लेवे साधक। उसको मिल जाय निश्चित। आत्म ज्ञानमार्ग ।४५। जिस ग्रंथमें है अद्वैत। कहो ना उसको प्राकृत। इसमें है सत्य वेदान्त। लेवो इसका अनुभव ।४६। सकल शास्त्रोंमें वेदान्त। हो यदि प्राकृत में कथित। तो क्या न हो समाधान। अभ्यंतरमें ।४७। प्राकृत में है ज्ञानोपाय। इसका मूर्ख न समझे मर्म। जैसे नारिकेल का महत्व। समझे ना मर्कट ।४८। इसीलिए अधिकारानुरूप। लेते जावो ग्रंथका लाभ। सीप में जो मौक्तिक। हैं वो अनमोल ।४९। श्रुति बोलती नेति नेति। चले ना वहां व्युत्पत्ती। है ब्रह्म आदि-अंती। अनिर्वाच्य ।५०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहान्तनिरूपणनाम समास दसवा ॥१०॥

दशक आठवां ज्ञानदशक मायोद्भवनाम

॥ श्रीराम ॥

श्रोता होकर सावधान। सुनो गुरुशिष्यों का संवाद। विमलज्ञान बालबोध। हैं जो अति सुगम ।१। देखो तुम नाना शास्त्र। तो पर्याप्त न होगा आयुष्य। बढ़ता ही रहेगा संशय। अभ्यंतर ।२। पृथिवीमें नाना तीर्थ। सुगम दुर्गम पुण्यदायक। जाना चाहो सर्व क्षेत्र। तो नाहीं पर्याप्त आयुष्य ।३-४। नाना तप नाना दान। नाना योग नाना साधन। करते हैं बहुविध श्रम। देव के कारण ।५-६। भगवंतके दर्शनार्थ। हैं नाना पंथ नाना मत। देवदेवता भी असंख्यात। किन्तु समझेना देवाधिदेव ।७-८। जिसकी जैसी वासना। वैसी उसकी उपासना। करके सुदृढ़ मन वहां। करे वहीं उपासना ।९। बहु देव बहु भक्त। इच्छानुरूप हुवे आसक्त। बहु ऋषि बहु मत। नाना प्रकार ।१०। बहुत शास्त्र बहुत भेद। मतमतोंमें विरोध। ऐसे होते बहु विवाद। नाहीं एक निश्चय ।११-१२। सहस्त्रों में कोई एक। करे देवका विवेक। किन्तु वह अहंतावश। रहे देव से दूर ।१३-१४। करूं अब मैं निरूपण। जिससे समझे देव कौन। कैसे उसका होवे ज्ञान। नाना योग जिस कारण ।१५-१६। जिसने निर्माण किया चराचर। सृष्टयादि

अनेक व्यापार। सर्वकर्ता निरंतर। उसका नाम देव।१७। जिसने बनाये मेघ। चंद्रबिंबनें अमृत। रविको जिसने दिया तेज। उसका नाम देव।१८। बांधदी सागर को मर्यादा। शेषको भी स्थान दिया। अंतरिक्षमें रखे नक्षत्र तारा। वो है देव।१९। चारों वाणी चारो खाणी। चौराशी लक्ष जीवयोनि। निर्मित जिससे लोक तीन ही। उसका नाम देव।२०। ब्रह्मा विष्णु और हर। हैं ये जिसके अवतार। वही एक है देव। दूसरा नाहीं।२१। गृहमें पूजित है जो मूर्ति। वो ना कर सके जीव निर्मिती। क्या है उसकी शक्ति। ब्रह्माण्ड निर्माणकी।२२। स्थल स्थलमें हैं देव। वे क्या करें जग निर्माण। चंद्र सूर्य और तारा मेघ। है न कार्य उनका।२३। सर्वकर्ता है एक देव। वो है निरावयव। उसकी लीला कौशल। जानते ना ब्रह्मादिक।२४। आवे यहां एक संशय। निरावयमें कैसे चराचर। इस आशंकाका उत्तर। देऊं अगले समासमें।२५। अब सुनो प्रस्तुत विषय। था जो निर्मल आकाश। उसमें हुवा वायुका जन्म। वायुसे अग्नी, अग्नीसे जल।२६। जलसे उत्पन्न हुई पृथिवी। बिना स्तंभ हुई खडी। ऐसी जिसने बनाई सृष्टि। वही एक देव।२७-२८। उस पृथिवी पर के पाषाण। है देव कहते विवेकहीन। जानते नाहीं कर्ता देव। है सृष्टि के भी पूर्व।२९-३०। कुंभकार है घट के पूर्व। घट नाहीं कुंभकार। वैसे देव है सृष्टिपूर्व। वो होगा कैसे पाषाण।३१। किया किसीने मृण्मयसैन्य। तो भी होता है वो भिन्न। कार्य है कारण से अभिन्न। तो भी उनमें है भेद।३२। तथापि दोनो हो सकते एकरूप। जब दोनों हैं पंचभौतिक। किन्तु जहां नाहीं भूतसंबंध। वहां नाहीं कार्यकारण।३३। निर्गुण नाहीं पंचभौतिक। यदि है वो कर्ता देव। है ही वो सृष्टिपूर्व। इसमें नाहीं संशय।३४। कठपुतलीका दिखावे खेल। हिलावे जो चित्ररूपी सैन्य। नाहीं वो पुतली या सैन्य। वो दोनों से भिन्न।३५-३६। वैसे जो सृष्टिकर्तादेव। उसका नाहीं सृष्टसम धर्म। जो करे जीवजात संपूर्ण। वो नाहीं जीवरूप।३७। जो जो कार्य उसने किया। उससे है वो निराला। व्यर्थही अज्ञानी बापुड़ा। धरे संशय।३८। मनुष्य-निर्मित जैसे गोपुर। वैसे ही सृष्टि देव निर्मित। गोपुर और मनुष्य भिन्न। वैसेही सृष्टि और देव।३९। एवं जिसकी कला जग-निर्माण। वो है निराला जगदीश। किन्तु जगतही है जगदीश। ऐसा बोलते मूर्ख।४०-४१। सबमें रहते हुए भी सबसे भिन्न। भूतकर्दमसे आत्मा अलिप्त। किन्तु अविद्या गुणसे मायाभ्रम। लगे सत्य।४२। मायोपाधि जग है मिथ्या। है एक सत्य परमात्मा। वो है सबाह्य अंतरात्मा। वेदान्तका देव।४३-४५। दृश्यपदार्थ है नाशवन्त। इसका तो होता है अनुभव। किन्तु अविनाश जो भगवन्त। वो है पदार्थोंसे भिन्न।४६। देव विमल और अचल। ऐसे बोलते सब शास्त्र। उस निश्चल को चंचल। कहो ना कदापि।४७।

देव आया देव गया । देवका जन्म या मृत्यु हुवा । ऐसे बोले तो क्या । रहा पाप व्यतिरिक्त ।४८। जन्म मरण की भाषा । देवको लगे ना सर्वथा । देवकी है सर्वसत्ता । उसको नाहीं मृत्यु ।४९। जन्म लेना और मरना । आना जाना सुख दुःख भोगना । यह सब काम देवसे होता । वो है कारण, और निराला ।५०। अंतःकरण पंचप्राण । शरीर तत्वोंका पिण्ड । यह सब हैं चंचल । इसीलिए न है देव ।५१। एवं जो कल्पनारहित । उसका नाम भगवन्त । देवत्व की कल्पनाका भाव । वहां है ही नाहीं ।५२। तो शिष्यने किया आक्षेप । तो कैसे ब्रह्माण्ड निर्माण । कर्तुत्वहेतुसे अनुस्यूत । कार्यमें है कारण ।५३। द्रष्टाका गुण दृश्य दर्शन । वैसे निर्गुणमें आया कर्तुपण । इसीलिये होता है संशय । देव निर्गुण या सगुण ।५४। ब्रह्माण्ड कर्ता है कौन । क्या है उसका लक्षण । क्या इच्छामात्रसे ब्रह्म । करे सृष्टि निर्माण ।५५-५६। क्या है अन्य ब्रह्मसे कोई । माया भी कहांसे आई । इसका निरूपण करो स्वामी । कृपा करके ।५७। वक्ता बोले प्रतिवचन । अगले समासमें करूंगा निरूपण । सुनो तुम सावधान । ब्रह्मामें आई कैसे माया ।५८-६०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देवदर्शनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

किया श्रोताने प्रश्न । निरावय में कैसे चराचर । यही अब करूं निरूपण । सुनिये सावधान ।१। ऐसे इसका व्याख्यान । है जो ब्रह्म सनातन । उसमें माया मिथ्या-भान । भासे विवर्तरूप ।२। पहले एक परब्रह्म । नित्यामुक्त आलिप्तपरम । वहां आभासमात्र सूक्ष्म । हुई मूलमाया ।३। एक ब्रह्म निराकार । मुक्त अक्रिय निर्विकार । वहां कहासे मिथ्यारूप । आगई माया ।४। ब्रह्म अखंड निर्गुण । वहां इच्छा धरे कौन । दोषरहित है जब ब्रह्म । तो क्यों इच्छा वहां ।५। जब था ही नाहीं सगुण । इसीलिये ब्रह्म निर्गुण । वहां कहांसे सगुण । आ गया स्वामी ।६। निर्गुण ही हो गया सगुण । ऐसे करे अनुमान । तो क्या नाहीं यह वचन । विरोधका प्रकार ।७। हो जभी अकर्ता निरावयव । उसको ही कहते देव । उसकी लीला जाने कौन । बापुड़े जीव ।८। एक कहते वो परमात्मा । कौन जाने उसकी महिमा । पामर प्राणी जीवात्मा । कैसे वो जाने ।९। कहते हैं महिमा अकारण । लोपते हैं सकल शास्त्रार्थ । बोलते है उसको निर्गुण । करके भी अकर्ता ।१०। जब पहलेही नाहीं कर्तव्यता । तो कौन है करके अकर्ता । कर्ता अकर्ताकी वार्ता । समूल मिथ्या ।११। है जो स्वयं निर्गुण । वहां कैसे कर्तापण । और सृष्टि रचनाकी

कौन। धरे इच्छा ।१२। इच्छा हैं परमात्माकी। ऐसी है युक्ति बहुतोंकी। किन्तु निर्गुणको इच्छा कैसी। यह न आवे समझ ।१३। हुवा है क्या सब निर्माण। स्वयं ही अपने आप। विना ईश्वर कैसे कौन। करे जगत निर्माण ।१४। मानना जब ईश्वर बिन। हुवा है सब निर्माण। तब होता है अभाव। ईश्वर का इससे ।१५। कहो सृष्टि-कर्ता है देव। तो कैसे होगा वो निर्गुण। हो जब वो निर्गुण। तब सृष्टिकर्ता कौन ।१६-१७। फिर रहा पहला ही प्रश्न। कैसे हुवा चराचर निर्माण। कहो माया है स्वतंत्र। तो क्या कर्तुत्व देवका ।१८-१९। देव है निर्गुण स्वतः सिद्ध। तो मायासे क्या संबंध। माया हो जब स्वतंत्र पूर्ण। तो भक्त रक्षणार्थ नाहीं देव ।२०-२१। क्या जगनिर्माण कर्त्री माया। करे स्वयं ही जग प्रलया। या माया का भी निर्मिता। है क्या परमेश्वर ।२२-२३। तब कैसा है वो ईश्वर। माया का भी क्या रूप। यह मुझे सविस्तर। कहिए स्वामी ।२४। वक्ता बोले सावधान। श्रोताओं करो श्रवण। एकाग्र करके मन। सुनिये कथानुसंधान ।२५। है आपकी आशंका एक। लोगोंमें अनुभव अनेक। उनका करूं प्रथम अनुवाद। यथानुक्रम ।२६। कहते एक देवने किया। इसीलिये वो विस्तार पाया। न होती देवकी इच्छा। तो कैसे होती माया ।२७। एक कहे देव निर्गुण। वहां इच्छा करे कौन। माया मिथ्या ऐसे जान। है ही जो नाहीं ।२८। कहे अन्य, दिखे प्रत्यक्ष। 'है ही नाहीं' कहना अयोग्य। माया है अनादि सत्य। ईश्वर की शक्ति ।२९। एक कहे हो जब सत्य। तो कैसे ज्ञानसे नाश। वो दिखाती है सत्यसदृश्य। किन्तु है वो मिथ्या ।३०। मिथ्या हो जब मायाका स्वभाव। तो क्यों करे भक्तिसाधन। साधनसे हो माया-त्याग। ऐसे बोलता अन्य एक ।३१। लेवे जो साधन औषध। तो नाश होवे भय अज्ञान। दृश्य मिथ्या ऐसा भान। होगा ऐसे बोले एक ।३२। करते हैं लोग साधन। नाना मतसंपादन। तो भी न होवे मायात्याग। तो कैसे वो मिथ्या ।३३। मिथ्या बोले योगवचन। मिथ्या बोले वेदपुराण। मिथ्या ऐसे निरूपण। होता मायासंबंध ।३४। मिथ्या कहने से क्या होंगा। छोड़ेना जीवको माया। ऐसे बोले कोई दूजा। माया जिसको सत्य ।३५। अभ्यंतरमें नाहीं ज्ञान। नाहीं पहचाना सज्जन। उसको मायाकार भास। लगता है सत्य ।३६। जिसने जैसा किया निश्चय। वैसा उसको हुवा फलित। आरसीमें जैसे प्रतिबिंब। वैसी माया ।३७। एक कहे सर्वही ब्रह्म। माया क्या है दूजी अन्य। घृत होवे पिघला या घन। तो भी वो एकरूप ।३८। हो घन या द्रवीभूत। स्वरूपमें नाहीं भेद। इसीलिये दृष्टान्त अप्रमाण। कहे अन्य ।३९। एक कहे सर्व है ब्रह्म। ऐसे न समझे जो मर्म। उसके मनका भ्रम। गया ही नाहीं ।४०।

एक ही है जब देव। तो कहांसे आया शब्द 'सर्व'। इसीलिये 'सर्व' ब्रह्म। लगे एकको आश्चर्य ।४१। दूजा देता है उत्तर। है एक नाहीं अन्य। इसीमेंही निर्धार। है 'सर्व' शब्द ।४२। क्यों न कहो मिथ्या दृश्य। रहे बाकी वो सत्यब्रह्म। ऐसे ही बोले एक। शास्त्राधारसे ।४३। क्यों करते हो विवाद। अलंकार और सुवर्ण। दोनोंही हैं अभिन्न। बतावे ऐसे एक ।४४। हीन एकदेशी यह उपमा। कैसे वस्तुको देवे शोभा। अव्यक्त व्यक्त की साम्यता। कैसे घड़े ।४५। दृष्टि रहे सुवर्णपर। तो है तत्वतः ऐक्य। अलंकार भी है सुवर्ण। ऐसी युक्ति करे एक ।४६। सुवर्ण है जड़ और पीत। ब्रह्म चैतन्य वर्णरहित। अपूर्णका दृष्टान्त ही अयोग्य। पूर्णके लिये ।४७। एकदशी होगा ही दृष्टान्त। ज्ञानके लिए है युक्त। अभिन्न है सिंधु लहर। इसीसे आवे समझ ।४८। नाहीं सबही दृष्टान्त उपयुक्त। ऐसे बोले दूजा एक। दृष्टान्त करे अर्थ स्पष्ट। या बढ़ावे संदेह ।४९। कैसा सिंधु कैसी लहर। अचलको चंचल का दृष्टान्त। ऐसे हो तो मिथ्या और सत्य। मानना पड़े समसमान ।५०। मिथ्यारूप कल्पना। बतावे आभास नाना। तो क्या उसको मानना। ब्रह्मके समान ।५१। बढ़ता रहे ऐसा वाद-विवाद। रह गयी आशंका अनुत्तर। इसीलिए अब सावधान। सुनिये आगे ।५२। माया मिथ्या समझमें आई। परन्तु ब्रह्ममें कैसी हुई। यदि उसको निर्गुणने बनाई। तो भी वो मिथ्या ।५३। 'मिथ्या' शब्दसे कुछ भी नाहीं। ऐसे है ज्ञान तो किसने बनाई। कहो निर्गुणने माया बनाई। तो दोनों ही अर्थहीन ।५४। कर्ता मूलतः अरूप। किया उसने मिथ्यारूप। तथापि करूं निरसन। आक्षेप श्रोताओंका ।५५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मआशंकानाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

अरे जो हुवा ना उत्पन्न। उसकी वार्ता पूछे कौन। तथापि कहता हूं अब। जिससे रहे ना संशय ।१। डोरी हैतो भासे सर्प। है जल तो भासे तरंग। सूर्यके कारण भासमान। होवे मृगजल ।२। कल्पना है तो स्वप्न। शुक्तिके लिये रजत। जल है तो उपल। रहे क्षणभर ।३। मिट्टी है तो भित्त। सिंधु है तो लहर। नेत्रमें बिब। पदार्थोंका ।४। सोना है तो अलंकार। तंतु हैं तो पट। कूर्म है तो विस्तार। हस्तपादादि अवयव ।५। पिघला घृत हुवा घन। समुद्रजलसे ही हुवा नमक। बिंब ही भासे प्रतिबिंब। ऐसा है अनुभव ।६। पृथिवी है तो वृक्ष। वृक्ष है तो छाया

शीतल। धातु है तो उच्चनीच भेद। जानते लोक ।७। दिये बहुत दृष्टान्त। बोलूं अब द्वैताद्वैत संबंध। द्वैत नाहीं तो अद्वैत। बोल न सके कोई ।८। भासको भासकी उपमा। दृश्य है तो अदृश्यकी महिमा। किन्तु अदृश्यको नाहीं उपमा। इसीलिये है निरूपण ।९। कल्पनारहित नाहीं द्वैत। दृश्य व्यतिरिक्त नाहीं दृष्टान्त। किन्तु द्वैतविरहित अद्वैत। समझना कैसे ।१०। विचित्र भगवन्तको करणी। कह न सके सहस्त्रफणी। कैसे हो गई उभारणी। अनंत ब्रह्माण्डोंकी ।११। परमात्मा परमेश्वर। सर्वकर्ता जो ईश्वर। उससे हुवा है विचार। सकल पदार्थोंका ।१२। है जो अनंतनामधारक। करे जो अनंत-शक्ति निर्माण। वही है मूल पुरुष। जानो आप चतुरजन ।१३। इस मूल पुरुषको पहचान। यही स्वयं मूलमाया जान। सकल कर्तृत्व लक्षण। है मायामें ही ।१४।

कार्यकारणकर्तुत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।।

नाहीं माया ऐसा बोला जाय। तो नाश होय श्रवणादि उपाय। तथापि देखना है तत्वार्थ। क्या है सत्य ।१५। दिवसे हुवा है सकल सृष्ट। यह मानते हैं लोक। किन्तु उस देवकी पहचान। समझना चाहिए ।१६। सिद्ध पुरुषोंका निरूपण। साधकोंको मान्य होना कठिन। पक्व नाहीं अंतकरण। इसीलिये ऐसे ।१७। अविद्यायुक्त तो जीव। मायायुक्त तो शिव। मूलमायायुक्त। तो देव। ऐसा भेद शब्दानुरूप ।१८। तस्मात् मूल-माया है मूलकारण। जिससे किया अनंत शक्ति धारण। अर्थ इसका अनुभवियों के बिन। जाने ऐसा कौन ।१९। मूलमाया ही है मूलपुरुष। वही सबों का है ईश। अनंत-नामी जगदीश। कहना उसीको ही ।२०। ऐसा माया का विस्तार। तथापि वो मिथ्या निःशेष। इन वचनों का गंभीर अर्थ। जाने विरला कोई ।२१। अनिर्वाच्य होगा नाहीं वाच्य। यहां चाहिये अनुभवही एक। बिना संतसंग आवे ना समझ। प्रयत्न करे तो भी ।२२। माय ही है मूलपुरुष। ऐसे न माने साधक। तो अनंतनामी जगदीश। कहना किसको ।२३। माया के कारण जगदीश को नाम रूप। तो वचन हमारा है सत्य। क्या करना अब अनुमान। श्रोताओं आपको ।२४। रहने दो अब यह व्याख्यान। आशंकाका करना है निरसन। कि निरकारमें कैसे जन्म। हुवा है मूलमायाका ।२५। हुवा कैसे माया-ब्रह्मका खेल। जो है मिथ्या दृष्टिबंधन। वही अब कहता हूं सकल। सुनिये सावधान ।२६। आकाश था जब निश्चल। तब उसमें हुआ वायु चंचल। इसी प्रकार जानो केवल। आ गयी मूलमाया ।२७। आया वायु चंचलरूप। उससे हुवा क्या आकाश

भंग। वैसे होते हुवे भी मूलमाया। परिपूर्ण निर्गुणता ।२८-२९। माया ना वायु पुरातन। इसीलिये होते ब्रह्ममें लीन। इससे हो गयी निरसन। श्रोताओं की आशंका ।३०। वायु है किन्तु न दिखे। वैसी माया है किन्तु न दिखे। वायुसंगसे धूल उड़े। माया संगसे दिखे जग ।३१-३४। आकाशमें आवे मिथ्या अभ्र। वैसे ही मायासे भासे जग। अभ्र जाते ही आकाश निश्चल। माया जाते ही रहे ब्रह्म ।३५-३७। मायाकारणही निर्गुण ब्रह्म। भासे हुवा सगुण। किन्तु वह रहता है संपूर्ण। पहलेही जैसी ।३८। अभ्र आये और जाये। किन्तु आकाश अलिप्त रहे। वैसे गुणत्व नाहीं पावे। निर्गुण ब्रह्म ।३९। नभ शिरपर सन्निध भासे। किन्तु है नाहीं वो वैसे। तैसे जानो ब्रह्म विश्वाससे। आभासहीन निर्गुण ।४०। देखे ऊर्ध्व तो आकाश। भासे संपूर्ण नीलवर्ण। किन्तु वो है मिथ्याभास। जैसे दूरसे पर्वत ।४१–४२। चारों ओर आकाशसे। आच्छादित जैसे जग भासे। किन्तु है ही नाहीं ऐसे। वैसे जानो अलिप्त ब्रह्म ।४३। रथ धावनेसे पृथ्वी चंचल। भासे किन्तु वो निश्चल। वैसे परब्रह्म केवल। जानो है निर्गुण ।४४। चलते हैं बादल। उससे भासे चंद्र चंचल। या होंतेहो अग्नी ज्वाल। भासे अंतराल कंपित ।४५-४६। किन्तु आकाश जैसे निश्चल। वैसे ही स्वरूप निश्चल। जभी भासे उसमें गुणत्व। जानो है कल्पना ।४७। इसी प्रकार माया चंचल। बतावे दृष्टिबंधनका खेल। वस्तु शाश्वत निश्चल। जैसी तैसी ।४८। वस्तु है निरावयव। माया बतावे उवे सावयव। ऐसा है मायास्वभाव। मिथ्यारूप ।४९। है ही नाहीं माया तत्वतः। किन्तु भासे सत्यता। उद्भव और नाश होता। इसका अभ्रवत् ।५०। निर्गुण ब्रह्मसे अहंकार। उत्पन्न हुवा स्फूर्तिरूप। उसका ही माया नाम। विलय उनका स्वरूपमें ।५१-५२। मायोद्भवमें अनुस्युत। हैं पंचतत्व अतिसूक्ष्म। ओंकार वायु-गतिका लक्षण। जानते हैं ज्ञानी ।५३-५५। मूलमायाका चलन। वही है वायु का लक्षण। तब सूक्ष्म तत्वों का रूपान्तर। होता है जड़तत्वोंमें ।५६। इसी प्रकार पंचमहाभूत। जो थे पहले अव्यक्त। व्यक्त होतेही देख। सृष्टिका आरंभ ।५७। मूलमायाका ज्ञान। वही पंचभूतोंकी पहचान। सूक्ष्मदृष्टिसे ही जन। समझेंगे यह सर्व ।५८। बिना वायु और आकाश। शब्द और इच्छा करे कौन। इच्छाशक्ति ही है जान। तेजस्वरूप ।५६। मृदुपण ही जल। जड़त्व पृथिवी केवल। ऐसी मूलभाया सकल। जानो पंच-भौतिक ।६०। सूक्ष्म दृष्टिसे देखा जाय। तो समझ आवे भूतान्वय। एकैकभूतमें पंचभूत। समाये हैं, यह अद्भुत ।६१। जड़त्वभावको जाते हैं भूत। तो भी हैं सर्व मिश्रीत। इसीप्रकार मायाका विस्तार। है पंचभूतात्मक ।६२। चाहे देखो मूलमाया। या भूमंडलमें

अविद्या । है वो पंचभूतात्मिका । स्वर्ग मृत्यु पातालमें ।६३।

स्वर्गे मृत्यौ च पाताले या यत्किंचित्सचराचरे ।
सर्वं पंचभूतकं राम षष्ठं किंजिन्न दृश्यते ॥

आदि-अंतमें सत्यस्वरूप । बीचमें आते हैं पंचभूत । मूलमाया पंचभूतात्मिक । ऐसे हुवा निरूपण ।६४। इसके ऊपर भी आशंका । करके प्रश्न पूछे श्रोता । जब गुणातीत है मूलमाया । तो कैसे वहां पंचभूत ।६५। यह भी सुनते हैं हम । पंचभूतों का उद्‌भवस्थान । है एक तमोगुण । तो बतावो सत्य ।६६। ऐसा श्रोताओं का आक्षेप । करना है संशय निरास । जो करूंगा अगले समास । सुनिये सावधान ।६७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मआशंकानाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

अब करूं आशंका निरसन । जिससे होगा समाधान । वृत्ति करो एकाग्रचित्त । क्षण एक श्रोता ।१। ब्रह्मसे हुई मूलमाया । उसने गुणोंको जन्म दिया । गुणोंमें क्षोभ होतेही वो माया । हुई गुणक्षोभणी ।२। वे गुण थे कौन कौन । सत्व रज तम ऐसे तीन । तमोगुणसे निर्माण । हुवे पंचभूत ।३। वे थे पहले अतिसूक्ष्म । बादमें हुवा उनका विस्तार । स्थूलरूप होतेही पंचभूत । सृष्टिका हुवा उद्‌भव ।४। प्रथम बताऊं मैं उनका रूप । कैसे होते हैं सूक्ष्मरूप । जो है कठिन और जड़ । वो लक्षण पृथिवीका ।८-१०। है जो आर्द्रत्व और मृदुत्व । जो है जलका रूप । अग्नि है उष्ण और सतेज । वायु चंचल चेतन ।११-१२। आकाश निश्चल और शून्य । ऐसी है पंचभूतोंकी पहचान । अब एकैक भूतमें पंचभूत । कैसे हैं वो सुनना ।१३। मायासंबंध विचार । है वो अतिसूक्ष्म । इसीलिए अतितत्पर । होना चाहिये श्रोताओं ।१४-१५। आकाश है अवकाश शून्य । शून्य है जानो अज्ञान । अज्ञान है जड़त्व लक्षण । है जो पृथिवीका रूप ।१६। आकाश है मृदु केवल । मृदुत्व ही है जल । अज्ञानका भास है प्रकाश । जो है अग्निरूप ।१७-१८। आकाश और वायुमें नाहीं भेद । आकाशसम होवे वायु स्तब्ध । तथापि आकाशमें ही निरोध । है वो वायुस्वरूप ।१९। आकाशमें आकाश हो सिद्ध । यह क्या कहना निरर्थक । इसीप्रकार आकाश । है पंचभूतात्मक ।२०। पुष्पसमान कोमल वायु ।

वह है तो भी शक्तिरूप। जिससे खड़े या गिरते वृक्ष। वो काठिन्य है पृथिवी।२१-२४। वही काठिन्यका जो भास। वही सूक्ष्मरूप तेजका अंश। वायु जो चंचलरूप। तो है वहां स्वयंसिद्ध।२५-२६। आकाश है सब में मिश्रित। तो वायुमें भी है निश्चित। इसीप्रकार पंचभूतोंके अंश। वायुमें रहते हैं।२७। अब तेजमें जो काठिन्य भास। वो काठिन्य है पृथिवी का अंश। मृदुरूप है जो भास। वो जानो जलांश।२८। तेजमें है तेज सहज। वायु और आकाश। जब हैं चंचल और निश्चल। तो तेजमें भी पंचभूत।२९-३०। अब जलमें जो मृदत्व या काठिन्य। वो है पृथिवी का अंश। जलमें क्या कहना है जल। मृदुभास तो अग्नीका।३१। होता है जल स्तब्ध। वो है वायुका भाव। आकाश सर्व व्यापक। जलमें भी सूक्ष्मरूप।३२-३३। अब पृथिवी-लक्षण जो काठिन्य। वो पृथिवी में स्वयंसिद्ध। काठिन्यमें जो मृदुत्व अंश। वो है जलतत्वका।३४। काठिन्य होना भासमान। है वो अग्निका लक्षण। काठिन्यमें जो निरोधांश। वायु स्वरूप वो जानो।३५। व्यापकत्व गुणसे आकाश। है पृथिवीमें भी अनुस्युत। और इसीसे ही आकाशस्थ। हैं पंचभूत अतिसूक्ष्म।३६। हो आकाश अटूट सर्वगत। तो भी आकाशसे पृथिवीतक। प्रत्येक भूतमें पंचतत्व। है अंतर्भूत सूक्ष्मरूपसे।३७-३८। स्थूलदृष्टिसे न समझे यह। यहां चाहिए दृष्टि सूक्ष्म। तो होता है भासमान। है एक पवन।३९-४०। किन्तु पवन है पंचभूतात्मक। यही देखलिया हमने सत्य। वो पवन ही हैं मूलमाया जान। तस्मात् त्रिगुण है पंचभूत।४१। पंचभूत और त्रिगुण मिलके। अष्टधा प्रकृति बोलते। वे अष्टभाग भी प्रकृतीके। है प्रत्येक पंचभूतात्मक।४२। बिना शोध धरना संदेह। है मूर्खताका लक्षण। करना चाहिए पहचान। सूक्ष्मदृष्टीसे।४३। गुणोंके कारण भूतपंचक। सूक्ष्मरूपसे हुवे स्थूलरूप। तबसे वे 'तत्व' नामसे प्रसिद्ध। हैं जड़ महाभूत।४४। उन तत्वोंसे हुई सृष्टि रचना। वही है ब्रह्माण्ड रचना। या तो ब्रह्मगोल की उभारणा। भूतकर्दमान्वित।४५-४६। यह सूक्ष्म विचार है ब्रह्माण्डातीत। सृष्टीके भी बहुत पूर्व। किन्तु करना चाहिए आवश्यक। मूलमायासे पहचान।४७। जब न थे पंचतत्व अहंकार। जब न था महत्तत्व। जब न थे माया अविद्या ब्रह्माण्ड। सबका है विचार अतिसूक्ष्म।४८। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर। पृथिवीमेरु सप्तसागर। चंद्र सूर्य तारांगण। इनका विचार तदनंतर।४९। नाना लोक नाना स्थान। सप्तद्वीप चौदह भुवन। शेष कूर्म सप्त पाताल। इनका विचार तदनंतर।५०। एकवीस स्वर्ग अष्ट दिग्पाल। तेतीस कोटि देव सकल। बारह आदित्य एकादश रुद्र। इनका विचार तदनंतर।५१। नव नाग सप्त ऋषेश्वर। नाना देवोंके अवतार। मेघ मनु जीव-विस्तार।

इनका विचार तदनंतर ।५२-५३। सकल विस्तारका मूल । है एक मूलमाया केवल । जिसमें अंतर्भूत हैं सकल । सूक्ष्म भूतपंच ।५४। सूक्ष्मभूत ही बने स्थूलरूप । उन जड़ पंचभूतोंका विस्तार । अगले समासमें करूं मैं निरूपण । सुनिए सावधान ।५५-५६। इसका प्रयोजन है एक । कि दृश्य छोड़के वस्तु विवेक । करना चाहिए प्रांजल । जिससे हो जाय ब्रह्मप्राप्ति ।५७। महाद्वारमें से आगे जाय । तब ही होगा देवदर्शन । वैसे दृश्य पंचभूतात्मक । छोड़े जो वही श्रेष्ठ ।५८-५९। एवं पंचभूत और दृश्य । हैं दोनोही एकरूप । सृष्टिरचनाका प्रकार । तस्मात् सुनिये अब श्रोता ।६०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मपंचभूत निरूपणनामसमास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

जानते नाहीं अज्ञानी मर्म । इसीलिए करना पड़ता विवरण । पंचभूतों के लक्षण । किये मैंने विशद ।१। पंचभूतों का मिश्रण । हुवा है जब सर्वप्रथम । अब कैसे हम पृथक्करण । कर सकें मानव ।२। तथापि करूंगा प्रयत्न । जिससे होगा किंचित्बोध । पंचभूत स्वरूपमें भेद । पृथिवीयादि अनुक्रमसे ।३-४। पर्वत पाषाण बहु प्रकार । मृतिका बालू नाना रंग । पुर पट्टण देवालय मंदिर । हैं ये सब पृथिवी ।५। नाना खंड सप्तद्वीप । नाना नृपति नाना देव । नाना भाषा नाना रीतिभेद । चौराशी लक्ष जीवयोनीं ।६-७। नाना उद्वस वृक्षादि वन । नाना स्थान गिरिकंदर । मनुष्य और देव-निर्मित । सुवर्णादि रत्न नाना ।८-१०। बिना कहे अधिक । जो जो है कठिन जड़ांश । वो सकल है पृथिवीका रूप । ऐसा करो विश्वास ।११। वापी कूप सरोवर । नाना सरिताओंका नीर । मेघ और सप्तसागर । है सब जलस्वरूप ।१२-१३। क्षारसमुद्र क्षीरसमुद्र । घृत-मद्य-दध्यादि समुद्र । त्रिलोकमें जो है उदक । वो हैं एक जल ।१४-१९। नाना वल्ली तरूवरों का रस । मध पारा अमृत विष । तैलादि स्निग्ध नाना रस । है सबही जलस्वभाव ।२०-२१। आर्द्र और शीतल । रेत रक्त श्लेष्मा मूत्र । जलसम प्रवाही पदार्थ । अश्रुस्वेद आपरूप ।२२-२४। चंद्र सूर्य तारागण । दिव्य देहका तेज स्वीपण । वन्ही विद्युत वड़वानल। हैं सब तेजरूप ।२५-२६। श्री शंकर-नेत्र को वन्ही । महाकाल की क्षुधारूप वन्ही । भूगोलाचरणमें जो वन्ही । है वे तेज एक ।२७। जो जो हैं प्रकाशरूप । उष्ण शोषक पदार्थ । वे सबही हैं तेजरूप । अब सुनिये वायुरूप ।२८। चांचल्य और चैतन्य । सृष्टी रचना का कारण । बोलना डोलना हिलना चलन । हैं यह पवन रूप ।२९-३०।

चलन, वलन प्रसारण। निरोध और आकुंचन। प्राण अपान व्यान उदान। समान नाग कर्कश कूर्म ।३१-३२। देवदत्त और धनंजय। यह दशप्रकारका पवन। चंद्र सूर्यादिक करे जो धारण। हैं यह सब वायु ।३३। अवकाशरूप आकाश। है सकल-व्यापक एक। अनेकों में निर्मल निश्चल। सबसे श्रेष्ठ और सार ।३४-३५। आकाशमें ही चारों भूत। करते हैं स्व स्व व्यापार। आकाशका करे विचार। तो भासे वो स्वरूप सदृश ।३६। शिष्यने किया यहां प्रश्न। जब दोनों का समान रूप। तो क्यों न कहो आकाश। है केवल स्वरूप ही ।३७। आकाश और स्वरूपमें क्या भेद। जब दोनो ही दिखे अभिन्न। आकाश है वस्तु स्वतः सिद्ध। ऐसे क्यों न कहो ।३८। वस्तु अचल अढ़ल। वस्तु निर्मल निश्चल। वैसे ही आकाश केवल। है वस्तुसमान ।३९। तब वक्ता बोले प्रतिवचन। वस्तु निर्गुण पुरातन। आकाशमें रहते हैं सप्तगुण। ऐसे कथन शास्त्रोंमें ।४०। काम क्रोध शोक मोह। शून्यत्व भय अज्ञान। ऐसा सप्तविध स्वभाव। हैं आकाशका ।४१। इसी प्रकार शास्त्राधार। आकाश है भूतस्वभाव। स्वरूप तो निर्विकार। उपमारहित परिपूर्ण ।४२। कांचसे जड़ी भूमी और जल। भासते हैं समसमान। पर हैं दोनो भिन्न भिन्न। ऐसे जाने सूज्ञ ।४३। कपास में गिरा एक स्फटिक। दिखाता था तद्रूप केवल। किन्तु स्फटिकसे हो सके घाव। न करे कपास ऐसा ।४४। चावल या गुड़में कंकर। खाते नहीं गुड़ समान। पिखे पीतल स्वर्णसमान। किन्तु होवे वो मलिन ।४५-४८। छोड़ दो हीन दृष्टांत। आकाश है एक भूत। भूत और अनंत। होंगे कैसे एकरूप ।४९। वस्तु है वर्णहीन। आकाश भासे श्यामवर्ण। दोनों नाहीं समसमान। ऐसे जानते विचक्षण ।५०। करे श्रोता आक्षेप। हैं आकाश भी अरूप। नाहीं वर्ण व्यक्ति विकार। और दिखे अचल ।५१। अन्य चत्वार महाभूत। नाश पावते समस्त। किन्तु आकाश है शाश्वत। ऐसा श्रुति वचन ।५२-५३। वक्ता बोले प्रतिवचन। आकाश का तमोगुणसे जन्म। इसीलिये काम क्रोधादि लक्षण। अज्ञानमय आकाश ।५४-५६। नास्तिक या नकार वचन। है शून्यत्व का लक्षण। इसीलिए अज्ञानीजन। रहते हैं हृदय शून्य ।५७। स्तब्धता आकाश का लक्षण। है शून्य और अज्ञान। अज्ञान ही है कठिनत्व। आकाशका रूप ।५८। कठिन शून्य विकारवन्त। उसको कैसे कहना संत। भासे यदि स्व-रूप समान। तो भी नाही स्वरूप ।५९। आकाश है अज्ञानमय। उसका नाश करे ज्ञान। इसीलिए आकाश। है नाशवंत ।६०। ऊपर ऊपर से देखा जावे। आकाश, स्वरूपसदृष्य भासे। किन्तु है भेह दोनोमें। शून्यत्व कारण ।६१-६२। उन्मनो और निद्रा। भासती समान अवस्था। किन्तु दोनोमें भेद तत्वतः। है बहुत ।६३। असत्य भासे सत्यसम। किन्तु भिन्न मानते विचक्षण। मृगजल से भूलते हैं

मृग । न कई अन्य प्राणी ।६४। द्रष्टाको आकाश दिखे भिन्न । स्वरूप-द्रष्टा होवे स्वरूप । ऐसे है वस्तुदर्शन । ब्रह्म देखे ब्रह्म को ।६५। हुवा आशंका-निरसन । अस्तंगत हुवा संदेह । भिन्नत्वसे नाहीं अनुभव । स्वरूपस्थितीका ।६६-६७। आता है आकाशका अनुभव । स्वरूप है अनुभवातीत । इसीलिए स्वरूप-समान । होगा नाहीं आकाश ।६८। दूध और जल । जाने भिन्न भिन्न राजहंस । वैसे स्वरूप और आकाश । संत जानते भिन्न भिन्न ।६९। वैसे ही माया और स्वरूप । हैं परस्पर भिन्न । किन्तु संतसंगसे जाने जब । पावे तब मोक्षपदवी ।७०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे स्थूलपंचमहाभूत स्वरूपाकाशभेदनाम समास पचांवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

सत्संग की महिमा कैसी । कितने दिनमें मोक्षप्राप्ती । ऐसे श्रोता करे विनती । तब कहते हैं कृपामूर्ती ।१-२। तत्क्षण मुक्ति लाभ । जब करे निरूपणमें विश्वास । किन्तु होते ही दुश्चित्त । हानि होवे निश्चित ।३। सुचित होते ही दुश्चित । मन होता अकस्मात । उसको करना है निवांत । तो किस प्रकार ।४। मनोर्मी तोड़ तोड़ । श्रवण करो अत्यादर । घड़ी घड़ी रहके सावधान । सार्थक करो अपना काल ।५। ग्रंथ ग्रंथमें अर्थ प्रमेय । शोध शोध धरो अभ्यंतर । हो जाये मन दुश्चित्त । तो श्रवण करो बारबार ।६। बिना देखे अर्थान्तर । करे जो श्रवण अर्थहीन । वो न श्रोता, किन्तु पाषाण । मनुष्यरूप ।७। पाषाण कहना नाहीं अनुचित । है यह तो उल्टा गौरव । पाषाणसे निकला टुकड़ा एक । पुनः तो न जुड़े ।८-९। किन्तु मनुष्यके अवगुण । जाते हुए भी न जावे पूर्ण । वे पुनः जड़ते अपने आप । इसीलिए पाषाण श्रेष्ठ ।१०-११। जिसका जाये ना अवगुण । वो है पाषाणसे भी हीन । पाषाण तो कोटिगुण । अवगुणी से श्रेष्ठ ।१२। माणक मोती प्रवाल । पाचू वैडूर्य वज्रनील । गोमेदगणी और पारस । हैं सब पाषाण ।१३-१४। और भी पाषाण बहुत । सूर्यकान्त सोमकान्त । औषधी–मणी सप्रचित । तीर्थ क्षेत्र में जो होते ।१५। बांधते पाषाणोंसे कूप वापी । करते हरिहरादि देवमूर्ती । इसीलिए पाषाण की ख्याती । मनुष्य तो पामर ।१६-१७। ऐसा है अमोल पाषाण । वैसा नाहीं अभक्तका देह । अपवित्र है जो पाषाण । उसके समान है वो व्यर्थ ।१८। अब क्यों बोलूं बहुत । दुःचित्तपणसे होता घात । ना प्रपंच ना परमार्थ । दुःचित्तपणसे ।१९। स्मरण न रहे एक क्षण । घड़ेना साधन ना भजन ।

होगा नाहीं आत्मज्ञानी। जन्ममरण छूटे ना ।२०-२२। दुश्चित्त हो तो नाहीं निश्चय। मिले ना कार्यमें जय। स्वहितका होवे क्षय। पराजित करे शत्रु ।२३। न हो श्रवण न विवरण। नाहीं अध्यात्म निरूपण। संसारचक्र जो चंचल। उसमें रहे मानस ।२४-२५। पिशाचवत पागल। अंध गुंग या बधिर। इनके समान है संसार। दुश्चित प्राणीयोंका ।२६। जागृत है किन्तु समझेना। कान होते हुए भी सुनेना। सारासार विचार करेना। मानव-बुद्धि है तो भी ।२७। नाहीं दुश्चित किन्तु है आलस्य। उसको भी कैसा परलोक। आलस्यमें जो अहर्निश। उससे न होगा कार्य ।२८–२९। करे न आलसी विचार। नाहीं उसको आचार। न करे श्रवण पाठांतर। ना निरूपण परमार्थका ।३०-३१। आलस्यसे गई धारणा धृति। मलीन हुई मनोवृत्ती। चले नाहीं विवेककी गती। शून्याकार बुद्धि ।३२-३३। बढ़ गयी निद्रा विषय–वासना। डूबा अभ्यास सर्वथा। नाहीं निश्चय एक भी कदा। बढे जब आलस्य ।३४। दुश्चित कारण आलस्य। आलस्य कारण निद्राविलास। निद्राविलाससे केवल नाश। होता रहे आयुष्य ।३५। निद्रा आलस्य दुश्चित्तपण। हैं ये मुर्खके लक्षण। तो क्या वह निरूपण। सके समझ ।३६। ये तीनों ही हैं लक्षण। तो अवश्य होगा विवेवहीन। तथापि वे सुखके कारण। होते हैं अज्ञानीको ।३७। क्षुधित होते ही भोजन। भोजन होते ही आलस्य। आलस्य आते ही सावकाश। होता है निद्रावश ।३८। निद्रा होतेही पुनः दुश्चित्त। कदा नाहीं सावचित्त। वहां कैसे होगा आत्महित। निरूपण हो तो भी ।३९। मर्कटको दिया रत्न। पिशाच को दिया निधान दुश्चित्त को निरूपण। सर्व ही निरर्थक ।४०। अब रहने दो यह उपपत्ती। सज्जन संगसे कौन गती। कितने दिनमें होवे मुक्ती। ऐसी श्रोताकी आशंका ।४१। सुनिए इसका प्रत्युत्तर। जिससे हो जाय निरूत्तर। संतसंग का विचार। है जिस प्रकार ।४२। लोहे को हुआ पारस-स्पर्श। बिंदु सागर में समरस। सरिता मिली गंगाप्रवाह। तो होवे तत्काल एकरूप ।४३। सावध साक्षेपी और दक्ष। उसको तात्काल होवे मोक्ष। इतर जनको वो अलक्ष्य। आवे ना समझमें ।४४। यहां शिष्यप्रज्ञाका ही बल। प्रज्ञावन्तको न लगे काल। अनन्य होते ही तत्काल। लाभे मोक्ष ।४५। प्रज्ञावन्त और अनन्य। उसको न लगे एक क्षण। अनन्य भावार्थ बिन। प्रज्ञा होवे असमर्थ ।४६। प्रज्ञाबिन समझे न अर्थ। बिना विश्वास न वस्तुलाभ। प्रज्ञा और विश्वास कारण। गले देहाभिमान ।४७। देहाभिमान के अंत। होवे सहज वस्तु प्राप्त। सत्संग होते ही अविलंब। होवे सद्गति ।४८। सावध साक्षेपी विशेष। विश्वासी और प्रज्ञावन्त। उसको साधन सायास। करना न पड़े बहुत ।४८। इतर भावुक भोले जन। उनको भी

मिले मोक्षधन। साधु संगमें करें वे साधन। तो होगी विवेक दृष्टी।५०। छोड़ना नाहीं कदा साधन। ना कदा उपाय श्रवण। है सबको एक निरूपण। मोक्षका साधन।५१। अब मोक्षका क्या स्वरूप। सत्संगसे कैसे उसका लाभ। यह सब सकल प्रांजल। सुनिए आगे।५२-५३। अवगुण त्याग के कारण। कहना पड़े निष्ठुर वचन। इसीलिए कोपारोपण। करो न आप श्रोताओं।५४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे दुश्चितनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

है श्रोताओंका प्रश्न। कितने दिनमें होवे मोक्ष। सत्संगसे कैसे मोक्षलाभ। यह सब सुनिये।१-३। प्राणी संकल्पसे होवे बद्ध। संकल्प है 'मैं हूं जीव'। उसको करते साधु मुक्त। देके विवेक शक्ति।४। धरते धरते जीवभाव। गये युगानुयुग। तो भी प्राणी रहे अल्प। देहबुद्धीस्तव।५। मैं हूं जीव मुझे है बंधन। है मुझे जन्म और मरण। कृत कर्मोका मैं फल। भोगूं अपना।६। पुण्यपापोंका फलभोग। है जो सुख दुःखदायक। भोगना पड़े आवश्यक। जन्ममरण परंपरा।७-८। ऐसी जिसकी दृढ कल्पना। वो ही धरे जीव-भावना। उसने ही अपने को बांधा। कीटकवत।९। नाहीं भगवन्तका ज्ञान। समझे अटल है जन्ममरण। करना चाहे दानधर्म। आधार अगले जन्म का।१०। जन्मान्तरमें संसार। हो जाय मेरा सुखरूप। ऐसी कल्पना करके दान। देवे एक जीर्णवस्त्र।११। या देगा एक ताम्र नाणक। हो जाय मुझे कोटिगुण। ऐसे लाभका धरे विश्वास। अगले जन्मका।१२-१३। कुशावर्त कुरुक्षेत्र। महिमा सुनके करे दान। आशा धरे अभ्यंतर। कोटिगुण लाभकी।१४। रुखा टुकडा पैसा एक। अतिथिको किया दान। समझे होवे राशी कोटिगुण। जन्मान्तरमें।१५। उससे करूंगा खान पान-भोग। ऐसी कल्पना अंतर्याम। वासना बनी जन्मकर्मयुक्त। दुर्भागी प्राणियोंकी।१६। इस जन्ममें करूं मैं दान। तो मिल जाय अगले जन्म। ऐसी कल्पना करे वो अज्ञान। है वो बद्ध ऐसे जान।१७। अनेक जन्मोंके उपरान्त। मिले भाग्यसे नर देह। यहां जब न हो ज्ञान। तो गर्भवास अटल।१८। पुनरपि मिलेगा मानवदेह। ऐसे कह सकेगा कौन। हो सके भोगना अकस्मात। नाना नीच योनी।१९। नरदेह मिलना परम दुर्लभ। ऐसा है शास्त्राधार। पापपुण्य जब समसमान। है व्यास वचन।२०-२१। यदि मिले गुरु कर्णधार। तब ही यह भवसागर।

पार कर सके कोई नर । अन्यथा है आत्मघात ।२२-२३। आत्मज्ञान बिना प्राणी । भोग दुःख चौराशी योनी । असंख्य आत्महत्या इतनी । इसीलिए आत्म घातकी ।२४। न हो नरदेहमें ज्ञान । तो अटल है जन्ममरण । भोगना पडे दुःख दारुण । नाना नीच योनी ।२५। रींछ मर्कट श्वान सूकर । अश्व वृषभ भैसा खर । काक कुक्कुटे जंबुक मार्जार । गिरगिट मंडुक मक्षिका ।२६। इत्यादिक नाना जन्म । आ सके जब नाहीं ज्ञान । तो भी विश्वास धरे मुर्ख । नरदेह जन्मका ।२७-२८। मिलना चाहिये नर जन्म ऐसी दुराशा करके अज्ञान । करे संचय लौकिक पुण्य । बांधे अपनेको आप ।२९-३०। इसी प्रकार संकलपसे बंधन । शत्रुवत करे अपनेको आप । सुनो संतसंगसे यह बंधन । टूटे कैसे ।३१। पंचभूतात्मक शरीर । चराचर सृष्टिके साथ । निर्माण होतेही प्रकृति स्वभाव । करने लगे वर्तन ।३२। देह अवस्था अभिमान । स्नान भोग मात्रा गुण । शक्ति आदि लक्षण । चतुर्विध तत्वोंके ।३३। ऐसी पिण्ड ब्रह्माण्ड-रचना । बढ़ गयी ईशकलपना । मतमतान्तर भेद नाना । जिससे बढ़े विवाद ।३४। किन्तु तत्वज्ञानी साधु केवल । जानते ऐक्य संवाद । उस संवादका लक्षण । है इस प्रकार ।३५। है देह पंचभूतात्मक । किन्तु जो इसका मूलकारण । वो है रहता आत्मा जान । देहमें ही ।३६। अनेक तत्वों का समुदाय । उसका है नाम देह । देह है नाशवन्त । इसीलिए न वो आत्मा ।३७। अंतकरण प्राणादिक । विषय इन्द्रियां दशक । इनको कहते हैं शास्त्र । सूक्ष्म देह ।३८। करता है सूक्ष्मदेह शोधन । तो समझमें आवे अंतःकरण नाना उपाधिबुद्धिमन । इनसे है आत्मा भिन्न ।३९। स्थूल सूक्ष्म कारण । महाकारण विराट हिरण्य । अव्याकृत मूलप्रकृति जान । है ऐसे अष्टदेह ।४०। पिण्डमें चार ब्रह्माण्डमें चार । ऐसे मिलके अष्टदेह । प्रकृति पुरुष के साथ । हो गये दश देह ।४१। ऐसे तत्वोंका लक्षण । आत्मा साक्षी विलक्षण । कार्य कर्ता काल । उसके लिए है दृश्य ।४२। जीव शिव ब्रह्माण्ड । माया अविद्याका प्रान्त । है सब विचार प्रचण्ड । किन्तु आत्मा है निराला ।४३। जीवात्मा शिवात्मा परमात्मा । परमात्मा ही है विश्वात्मा । चौथा तो निर्मलात्मा । ऐसा आत्मा चतुर्विध ।४४-४५। इनमें दिखता है उच्च नीच भाव । किन्तु चारोंही हैं एकरूप । एतद्विषयमें सुनिए दृष्टान्त । सावधान मनसा ।४६। घटाकाश मठाकाश । महदाकाश चिदाकाश । चारों मिलके जो आकाश । वो है एक ही ।४७।

घटमें व्यापक जो आकाश । वो है घटाकाश । पिण्डमें व्यापक जो ब्रह्मांश । उसका नाम जीवात्मा ।४८-४९। मठमें व्यापक जो आकाश । वो है मठाकाश । ब्रह्माण्डमें है जो ब्रह्मांश । उसका नाम शिवात्मा ।५०। मठके बाहर जो आकाश । वो है महदाकाश ।

ब्रह्माण्डके बाहर जो ब्रह्मांश। उसका नाम परमात्मा ।५१। उपाधिरहित जो आकाश। वो है चिदाकाश। उपाधिरहित जो परेश। वो है निर्मलात्मा ।५२। उपाधियोगसे भासे भिन्न। किन्तु है आकाश अभिन्न। तैसा आत्मा स्वानंदघन। है एक केवल ।५३। दृश्य सबाह्य अभ्यंतर। सूक्ष्मात्मा है निरंतर। उसका वर्णन करे कौन। शेषभी नाहीं समर्थ ।५४। ऐसे है आत्माका लक्षण। जो जाने उसको नाहीं जीवपण। उपाधि छोड़े तो है अभिन्न। पहलेसे आत्मरूप ।५५। जीवपण है अत्यल्प। अहंकारसे सहे जन्मभोग। किन्तु विवेक करे जो जीव। उसको है नाहीं जन्म ।५६। होवे जन्ममृत्युसे वियोग। उसका नाम है मोक्ष। करते ही तत्वशोधन। वस्तुरूप जीव ।५७। 'तत्' वस्तु ही हो 'तुम'। ऐसे महावाक्य का लक्षण। साधु करते हैं निरूपण। स्वानुभवसे ।५८। जिस क्षण करते हैं अनुग्रह। उसी क्षण होता है मोक्ष। आत्माको कभी बंधन। होगा ही नाहीं ।५९। संतसंगसे होतेही मोक्ष। तत्काल गया संदेह। आशंकाका हुवा निरसन। श्रोताओंकी ।६०। स्वप्नमें जो था बद्ध। वो हुवा जागृतिसे मुक्त। वैसे ज्ञानविवेकसे प्राप्त। होता है मोक्ष ।६१। अज्ञान-निशाके अंत। संकल्पदुःख होवे नाश। तब मानवको उसी क्षण। होवे मोक्षप्राप्ती ।६२। तोड़नाहो स्वप्नबंधन। तो जागृति अनन्यसाधन। वैसे संकल्पोंका बंधन। तोड़ सके विवेक ।६३-६४। बिना आत्मनात्म विवेक। सभी उपाय श्रमके कारण। समझमें आवे आत्मा आपन। विवेक होतेही ।६५। आत्मस्वरूपमें कोई। बद्ध मुक्त दोनों नाहीं। तस्मात् आत्मरूप होतेही। ना जन्म ना मृत्यु ।६६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मोक्षलक्षणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

हो गया पीछे निरूपण। परमात्मा ही हो तुम। अब सुनो सावधान। उस परमात्माके लक्षण ।१। जन्म नाहीं मृत्यु नाहीं। आना नाहीं जाना नाहीं। बंध मोक्ष दोनों नाहीं। परमात्माको ।२। परमात्मा निर्गुण निराकार। परमात्मा अनंत अपार। परमात्मा नित्य निरंतर। जैसा तैसा ।३। परमात्मा सबमें व्यापक। परमात्मा अनेकोंमें एक। परमात्माका करना विवेक। है तर्कातीत ।४। ऐसी परमात्माकी स्थिती। कहते हैं वेद श्रुती। होवे परमात्माकी प्राप्ती। भक्तीसे ही निःसंदेह ।५। उस भक्तीका लक्षण। है नव विधा भजन। नवविधा भजन से पावन। हो गये बहुत ।६। उन भक्तिओं में सार। है श्रेष्ठ आत्मनिवेदन। उसका करो तुम विचार। स्वानुभवसे ही ।७।

स्वानुभवसे हीं अपना । अपने को निवेदन करना । इसीका नाम है जानना । आत्मनिवेदन ।८। महापूजा हुई समाप्त । तो करे कोई शीश अर्पण । है वैसे आत्मनिवेदन । अति श्रेष्ठ भक्ति ।९। करते हैं आत्मनिवेदन । ऐसे भक्त नाहीं बहुत । किन्तु करता है उनको मुक्त । परमात्माका तत्काल ।१०। अपनेको कैसे निवेदन करना । क्या है किसी स्थल को जाना । या है स्व-सिर छेदना । ईश्वर के समक्ष ।११। ऐसे सुनते ही वचन । वक्ता सर्वज्ञ दे उत्तर । सुनो श्रोता अब सावधान । एकाग्र चित्तसे ।१२। आत्मनिवेदन का लक्षण । प्रथम सोचना तुम कौन । अनंतर परमात्मा निर्गुण । कैसा तो जान लेवो ।१३। देव-भक्तका सु-शोधन । करे तो हो आत्मनिवेदन । देव है पुरातन । ऐसी आवे समझ ।१४। लेते लेते देवका ज्ञान । होता है देवसे अभिन्न । तो देव-भक्त विभिन्नत्व । है ही नाहीं ।१५। विभक्त नाहीं इसीलिए भक्त । बद्ध नाहीं इसीलिए मुक्त । आयुक्त नाहीं इसीलिए युक्त । वचन मेरा शास्त्राधार ।१७। शोधे देव भक्त का मूल । होता हैं भेद निर्मूल । है एक परमात्मा भिन्न । दृश्य पदार्थों से ।१७। उसके साथ हो जाय मिलन । तो क्या रहे दूजापण । देव भक्तों का द्वैत-ज्ञान । हो जाय निरसन ।१८। आत्मनिवेदन के अंत । घड़े जो भक्ति अभेद । उसका नाम सायुज्य मोक्ष । सत्यस्वरूप ।१९। आगया कोई संतकी शरण । हुवा उसको अद्वैत बोध । पुनः उसको करना देवसे भिन्न । तो अशक्य होगा ।२०। सरिता मिली सागर । तो क्या होगी सागरसे भिन्न । एकबार लोहा हो सुवर्ण । तो हो न सके लोह ।२१। वैसे भगवन्त में जिसका मिलन । वो कैसे होगा पुनः भिन्न । हुवा जो भक्त देवरूप । वो न होगा विभक्त ।२२। देव भक्तदोनों एक । ऐसा हुवा जिसको अनुभव । वही एक मोक्षदायक । कहते हैं साधुजन ।२३। अब न बोलूं मैं बहुत । देखो देव बनके भक्त । ईशका ऐश्वर्य समस्त । आवे भक्तके अंग ।२४। देहबुद्धी करके रहना । तो देहदुःख पड़े भोगना । देहातीत होतेही बनना । परब्रह्मरूप ।२५। देहातीत कैसे होना । परब्रह्ममें कैसे मिलना । ऐश्वर्य लक्षण भी जानना । कैसे स्वामी ।२६। ऐसा श्रोताने किया प्रश्न । इसका कैसे समाधान । वही करता हूं निरूपण । सुनिए सावधान ।२७। वस्तु है देहातीत । देखो तुम वही परब्रह्म । तुम हो जब विदेह । तो हो कैसा देहसंग ।२८। ऐसा हों जो अनुभवनिष्ठ । उसका वर्णन करते हैं वेद । आवे न वो शास्त्रोंके भी हाथ । करते जो शोध ।२९। होते हैं ऐसे ऐश्वर्य । देहबुद्धि छोड़े तब । माने जो हूं मैं देह । तो होगी अधोगती ।३०। इसीलिए साधुवचन । मानना नाहीं अप्रमाण । मिथ्या माने तो दूषण । या जाय अंगपर ।३१। है कैसा साधुवचन । क्यों करना उसपर विश्वास । एकबार स्वामी निरूपण । करिए मुझे ।३२। सोऽहं आत्मा-

स्वानंदघन। अजन्मा जो तुम ही जान। यही है साधुका वचन। धरो हृदयमें सुदृढ।३३। महावाक्यका अभ्यंतर। हो ब्रह्म तुम ही निरंतर। इस वचनका विसर। पड़ना न चाहिए।३४। देहका हो जाय अंत। तो मैं हो जाऊं अनंत। ऐसे कोई कहे तो विश्वास। मानना नाहीं।३५। एक मूर्ख कहे ऐसे। कल्पान्त में माया नाशे। ब्रह्मप्राप्ती तबही होवे। अन्यथा नाहीं।३६। माया नाशे कल्पान्त। या हो जाय देहका अंत। तब मैं मिलूं निवान्त। परब्रह्ममें।३७। कहना ऐसे अप्रमाण। इससे क्या होगा समाधान। राज्यकी प्राप्ति का क्या लाभ। मरने पर सैन्य।३८। सैन्य रहते हो राज्य करना। माया रहतेही ब्रह्म होता। देह होते ही विदेही बनना। इसमें है समाधान।३९-४०। राज्य पद हो जाय प्राप्त। तो रहने दो परिवार। परिवार देखे, तो गया राज्य। ऐसा होगा नाहीं।४१। तैसे आत्मज्ञान हो जाय प्राप्त। तो रहने दो दृश्य देहभान। दृश्य देखे, तो क्या आत्मज्ञान। होगा नाशवन्त।३२। मार्गमें रज्जु सर्पाकार। उससे भयग्रस्त हुवा मन। किन्तु जब होवे रज्जूका ज्ञान। रहे ना भय सर्पका।४३। तैसी माया भयानक। किन्तु समझे जब उसका मिथ्यत्व। तो क्या धरना उसका भय। मृगजलमें मरे कौन।४४-४५। देखे स्वप्न भयानक। स्वप्नमें लगे परम भय। जागृत होते ही निष्कारण। कौन रहेगा साशंका।४६। कहे कोई माया है दृश्य। तो भी है वो कल्पनागोचर। जब तुम हो कल्पनातीत। तो क्यों उद्वेग।४७। अंतमें मति वो गती। ऐसे सर्वत्र बोलती। जीवभर नाहीं तो ब्रह्माप्राप्ती। है पहलेसे दी।४८। चारों देहका हो जाय अंत। तथा जन्म कारणका भी अंत। हो जातेही तुम अलिप्त। आदि अंतमें आत्माही।४९। है जिसकी ऐसी मति। उसको लाभे आत्मज्ञान गती। किन्तु गती अथवा अवगती। इन दोनोंसे भी है वो निराला।५०। जहां वेदोंकी भी रुद्धमती। वहां कैसी गती या अवगती। आत्म-शास्त्र-गुरुप्रचिती। हुई एकरूपा।५१ जीवपणकी टूट गयी भ्रान्ती। वस्तु आयी आत्मप्रचिती। प्राणी ने पाई उत्तम गती। सद्गुरुबोधसे।५२। हुवा जब सद्गुरुबोध। चारों देहको आया अंत। लगा सतत निजध्यास। सत्स्वरूपका ही।५३। उस निजध्याससे प्राणी। हुवा स्वयं ध्येयरूपी। सायुज्यमुक्तीं का धनी। बन गया निरंतर।५४। हट जाय दृष्टी से दृश्य। तो रहे आतमा अखण्ड एक। देखे जब उसीको एकाग्र। तो नाहीं दृश्य जग।५५। दृश्य मिथ्या ऐसे समझना। आत्मानुभवसे यही दृढ होना। इसीका नाम समझना। मोक्ष ऐसे।५६। हृदयमें धरे सद्गुरुवचन। उसीको है मोक्षाधिकार। वो ही पुनः श्रवण मनन। करे अत्यादरसे।५७। जहां नाहीं पूर्वपक्ष सिद्धान्त। जहां नाहीं लक्ष्य या अलक्ष्य। इसका नाम जानो है

मोक्ष । निरंतर आत्मा ।५८। समाप्त जहां ध्यान धारणा । निर्विकल्पमें लीनकल्पना । जहां रहे ज्ञप्तिमात्र भावना । है वो सूक्ष्मब्रह्म ।५९। भवमृगजल हुवा शुष्क । छूट गया मिथ्या बंधन । अजन्मा हुवा मुक्त । जन्मदुःखसे ।६०। निःसंगकी संग व्याधी । विदेहकी देहबुद्धि । तोड़दी विवेकसे उपाधि । निःप्रपंचकी ।६१। अद्वैतका तोड़ा द्वैत । एकान्तका किया अंत । अनंतको भी दिया अंत । अनंतने ही ।६२। जागृतिको किया जागृत । सावधको किया सावध । निजबोधको दिया बोध । आत्मज्ञान का ।६३। अमृतको किया अमर । मोक्षको दिया मुक्तिका घर । संयोगसे निरंतर । किया योग ।६४। निर्गुणको किया निर्गुण । सार्थ हुवा अर्थसहित । बहुत कालके अनंतर । मिले अपने को आप ।६५। फट गवा द्वैतका परदा । भेद अभेदसे तोडा । भूतपंचकों की बाधा । हुई नष्ट ।६६। मिला परमार्थ साधन-फल । निश्चलको बनाया निश्चल । निर्मलका गया मल । विवेक सामर्थ्यसे ।६७। सन्निध था जो अप्राप्त । वो हुवा आज प्राप्त । आत्माको देखते ही हुवा नष्ट । जन्मदुःख ।६८। दुष्ट स्वप्नसे भयभीत । हुवा था ब्राह्मण अधोगत । मिला अब अपनेको आप । जागृति आई ।६९। इस प्रकार हुवा जिनको ज्ञान । उन पुरुषोंके लक्षण । अगले समासमें कथन । करूंगा मैं ।७०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्दमर्शन नाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

शरीरमें जाये अमृत । तो बाह्यकाया हो जाय सतेज । आत्मस्थिति हो जाय दृढ़ । तो क्या होंगे संतलक्षण ।१। हुवा है विमल आत्मज्ञान । इसका क्या है चिन्ह । इसीलिये करता हूं कथन । साधुलक्षण ।२। सुनिये सिद्धपुरुष के लक्षण । है उसको सिद्ध स्वरूपज्ञान । सिद्धपुरुष और स्वरूपज्ञान । हैं दोनों ही अभिन्न ।३। वेद शास्त्रोंमें जो प्रसिद्ध । सस्वरूप स्वतः सिद्ध । वही जानो है सिद्ध । रहता जो स्वरूपमें ।४-५। तथापि करूं कुछ विस्तार । साधक को आवे समझ । सिद्ध लक्षणों का प्रकार । है ऐसा ।६। अंतरस्थिति हो स्वरूपसिद्ध । तो बाह्य काया कैसे वर्तत । जैसे स्वप्नकी है मिथ्यारूप । स्वप्नरचना ।७। तथापि करता हूं निरूपण । किंचित् प्रमाण सिद्धलक्षण । जिससे समझमें आवे चिन्ह । परमार्थका ।८। सदा स्वरूपानुसंधान । यह है मुख्य साधुलक्षण । जनमें होतेही वो आपन । रहे जनसे निराला ।९। जाते ही दृष्टी स्वरूपऔर । पडे संसार

चिन्ताका विसर । लगता है अत्यंत ममत्व । आत्मनिवेदनमें ।१०। है यह तत्वतः साधकलक्षण । किन्तु सिद्ध पुरुषमें रहे पूर्ण । न हो यदि साधकलक्षण । तों है ही नाहीं वह सिद्ध ।११। साधक समान बाह्य वर्तन । किन्तु स्वरूपाकार अभ्यंतर । ऐसे हैं सिद्धलक्षण । जानते ज्ञानी ।१२। संदेहरहित साधन । यही सिद्धका लक्षण । अंतर्बाह्य समाधान । रहे सर्वदा अविचल ।१३। अचल हुई अंतरस्थिती । वहां कैसी चंचलगति । स्वरूपमें लगतेही मनोवृत्ति । हो गई स्वरूपाकार ।१४। तब चंचल होते हुवेभी अचंचल । चंचलतामें वो निश्चल । निश्चल होते हुए भी चंचल । होता उसका देह ।१५। स्वरूपमें हुवा है स्थित । वो पडा रहा है स्तब्ध । या धावता है सत्वर । तो भी वो अचल ।१६। यहां प्रमाण एक अंतरस्थिती । अभ्यंतरमें ही चाहिए निवृत्ती । मन लगा है भगवन्त-प्रति । वही एक साधु ।१७। रहने दो बाह्य जैसे तैसे । किन्तु स्वरूपपर दृष्टी रहे । तो दिख जाते लक्षण स्वभावसे । साधुके वर्तनमें ।१८। राजासन में बैठे तो अनायास । आवे अंगमें राजाके लक्षण । वैसे स्वरूपमें लगतेही प्रेम । आते हैं साधु लक्षण ।१९। अन्यथा अभ्यास करे तो भी । हाथमें न आवे लक्षण सिद्धी । इसीलिये रहो स्वरूप स्थिति । देखते देखते स्वरूप ।२०। अभ्यासोमें मुकुटमणी । वृत्ति रहे सदा निर्गुणी । बने स्थिति आत्मदर्शनी । संतसंगसे निरूपणसे ।२१। आवे लक्षण उत्तमोत्तम । हो जब स्वरूपाकारका अभ्यास । स्वरूप छोड़े तो भ्रमिष्ट । हो जावे गुसांईभी ।२२। रहने दो यह कथन । अब सुनिये साधुके लक्षण । जिससे होगा समाधान । साधकोंका ।२३। स्वरूपमें भरे कल्पना । तो वहां कैसे रहेगी कामना । इसीलिए कोई भी वासना । साधुको नाहीं ।२४। हाथसे जावे कल्पित विषय । तो सहज ही आवे क्रोध । किन्तु साधुजनों का अक्षयधन । जायेगा नाहीं ।२५। इसीलिए वे क्रोधरहित । जानते हैं स्वरूप संत । नाशवन्त जो पदार्थ । छोड़ देते सत्वर । ।२६। जहां नाहीं अन्य पदार्थ । तो किस पर करना है क्रोध । इसीलिए वर्ते क्रोधरहित । चराचरमें साधु ।२७। आप अपना स्वानंद । किसीको बताना है मद । इसीलिए वादविवाद । करते नाहीं साधु ।२८। साधु स्वरूप निर्विकार । उसमें कैसा तिरस्कार । आपही अपनेपर मत्सर । करना है असंभव ।२९। साधु वस्तु अनायास । इसीलिए वो मत्सरहित । मदमस्तरका विकार साधुमें नाहीं ।३०। साधु स्वरूप स्वयंभ । वहां केसा होगा दंभ । जहां द्वैतका आरंभ । हुवा ही नाहीं ।३१। जिससे दृश्य हुवा है नष्ट । उसको कैसे हो प्रपंच । इसीलिए निःप्रपंच । है एक साधु ।३२। अखिल ब्रह्माण्ड जिसका घर । क्या उसको पंचभूत विस्तार । मिथ्या है ऐसे जानकर । त्याग किया साधूने ।३३। इसीलिए नाहीं नाहीं लोभ । साधु सदा निर्लोभ । वासना उसकी

समरस। हुई शुद्धस्वरूपमें ।३४। स्वयं ही हो जाये सर्व । तो कहां रहे स्वार्थको स्थान। इसीलिए शोकरहित । रहता है साधु ।३५। छोड़के दृश्य नाशवन्त । स्वरूप सेवे वो शाश्वत। इसीलिये शोकरहित । है वो साधु ।३६। शोकसे होती है दुःखवृत्ती । किन्तु जहां है पहलेसे निवृत्ती । इसीलिए साधु आदि अंती । होते हैं शोकरहित ।३७। मोहसे होवे आवृत मल। तो मन पहले ही उन्मन। इसीलिए साधुजन। होते हैं मोहातीत ।३८। साधु वस्तु अद्वय । वहां कैसे होगा भय । परब्रह्म है निर्भय । वही है वो साधु ।३९। इसीलिए भयातीत। साधु निर्भय निधान्त। सकलका हो जाय अंत। साधु तो अनंतरूपी ।४०। सत्यस्वरूपसे हुवा अमर। उसको कैसे लगे भय। इसीलिए नाहीं भय। साधुजनको ।४१। जहां नाहीं द्वंदभेद । अपनेसे अपना अभेद । वहां कैसे उठे खेद । देहबुद्धीका ।४२। निर्गुणका हुवा निश्चय । निर्गुण है तो शाश्वत । इसीलिए नाहीं खेद । साधुजनको ।४३। स्वयं है एक ही एक । तो करना है किसका स्वार्थ । दृश्य नाहीं तो स्वार्थका संभव । है ही नाहीं ।४४। साधु स्वयं है एक । वहा कैसे दुःख शोक । द्वैत बीन अविवेक। होगा नाहीं कदापि ।४५। आशा एक परमार्थकी । टूट गयी दुराशा स्वार्थकी। इसीलिए नैराश्य साधुकी । है पहचान चिन्ह ।४६। मुदुरूप जैसे गगन । वैसेही साधु-लक्षण। इसीलिए आधुवचन। कठिन नाहीं ।४७। स्वरूपका होते ही संयोगी। स्वरूपही हुवा योगी। इसीलिए वीतरागी । है साधु निरंतर ।४८। होते ही स्वरूपस्थिती । हट गई चिन्ता देहकी । इसीलिए भावी कालकी । चिन्ता नाहीं साधुको ।४९। स्वरूपमें स्थित हो बुद्धि। तो टूट गई सर्व उपाधि । इसीलिए निरूपाधी । है वे साधुजन ।५०। साधु स्वरूपमें ही रहे । इतर संग वो न सहे । इसीलिए वो न देखे । मान या अपमान ।५१। अलक्ष को लगावे लक्ष। इसीलिए साधु परम दक्ष। लेना जाने वो पक्ष। परमार्थका ।५२। साधु स्वरूप केवल । स्वरूप न साहे मल । इसीलिए साधु निर्मल । रहता है सर्वकाल ।५३। सकल धर्मोंमें उत्तमधर्म। स्वरूपमें रहना ही स्वधर्म । यही जानो मुख्य मर्म। साधुलक्षणोंका ।५४। धरे जो साधुके संगती । तो अपने आप आवे स्वरूपस्थिती । स्वरूपस्थितिसे आवे सहजही। साधुके लक्षण ।५५-५६। निरंतर स्वरूपमें रहे। स्वरूप ही वो होवे । अवगुण सब छूट जावे। उसी काल ।५६। चाहिए सत्संग निरूपण। और एक अनुभव। जो करूंगा मैं कथन। अगले । समासमें ।५९-५९। किस स्थितिमें साधु रहते । कैसा विशेष अनुभव लेते । रामदास हैं कहते । अवधान दीजिए ।६०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिद्धलक्षणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

देखे जायें जगमें अनुभव। तो चमत्कारक एकसे एक। सुनिए श्रोताओं साश्चर्य। मैं करता हूं कथन।१। एक कहे देवने बनाया संसार। अनेक जीवोंका विस्तार। इसीलिए करके संसार। हो जाऊं पैलपार।२। एक कहे यह नाहीं सत्य। मनुष्य होता है लोभग्रस्त। कुटुम्ब-सेवा उदरभरण। करे स्वार्थ केवल।३। यह तो है स्वाभाविक। ऐसे बोले और एक। करना चाहिए दानपुण्य। सद्गतीकारण।४। एक कहे संसार मिथ्या। वैराग्यसे त्याग करो इसका। जिससे न होवे कोई धोखा। स्वर्ग लोकको जानेमें।५। कहां जाना और कहां भटकना। स्व-आश्रमानुसार रहना। करो अपना कर्म नाना। ऐसे वदे अन्य एक।६-७। वासना चाहिए उत्तम। भावबलसेही पावे देव। पूजा करो मायबाप। ऐसे बोलते अन्याय।८-१०। देव ब्राह्मण हैं मायबाप। विश्वजन कारण कहे शास्त्र। बोले दूजा शास्त्र हैं अपार। जावो साधूकी शरण।११-१३। रखो भूतदया बोले एक। दूजा कहे अंतकालमें नाम। होगा पुण्य तो आवे देवनाम। बोले ओर भी एक।१४-१६। करना है जन्म सार्थक। तो करो तीर्थाटन। हैं वहां जल पाषाण। ऐसे उत्तर देवे दूजा।१७। ।१८। पहला बोले प्रतिवचन। तू न जाने महिमा अगाध। तीर्थ और देवदर्शन। करे दहन महापातक।१९। तो कहता है और एक। इन्द्रियदमन है तीर्थ उत्तम। उससे ही श्रेष्ठ है कीर्तन। ऐसे बोले कोई अन्य।२०। क्यों न करो योग। जिससे देह होवे अमर। ऐसे सुनतेही बोलें अन्य। अरे उससे होगी कालवंचना।२१। इससे सुलभ है भक्तीमार्ग। दूजा कहे ज्ञानमार्ग। तो तीजा कहे तुम निरंतर। हो ही मुक्त।२२। क्यों रे बोलते अनर्गल। इससे बढे तेरा पाप। ऐसे कहतेही बोले अन्य। करो मत निन्दाद्वेष।२३। सबको है स्वातंत्र्य। करने दो सबको मनःपूत। छोड़ना मात्र दुष्टसंग। है यह एक विशेष।२४। ।२५। करे एक उपदेश। देवे जो अन्न उदरणार्थ। उसके लिए प्राणत्याग। करे तो पावे मोक्ष।२६। है यह सब व्यर्थ। न तजो प्राण न चाहो मोक्ष। अन्नार्जन करके रहो जीवित। ऐसा उपदेश करे अन्य।२७। हो जाय पर्जन्य सुकाल। तब क्या करना है योग। ऐसे ही कहे एक। तो दूजा बोले करो तप।२८। उससे आवे सिद्धिसर्व। साध्य होवे इन्द्रपद। होगा स्वर्गमें वास। ऐसे बोले शास्त्राधार।२९-३०। क्यों करो इतना प्रयत्न। जप करो अघोर मंत्र। वेताल होते ही प्रसन्न। मिले जाये लक्ष्मीधन।३१। धनप्रधान सर्वधर्म। तो दूजा बोले नाहीं प्रमाण। लक्ष्मीमदसे होगा कुकर्म। कैसा क्रियाकर्म और धर्म।३२। कहे एक करो सप्रयत्न। मृत्युंजयका जप। उससे होंगे सर्वकल्प। बलदायक।३३।

एक कहे बटु भैरव । देगा सर्व वैभव । एक कहे झोटिंग । देता है सर्व । ।३४। कोई कहे काली कंकाली । एक बोले भद्रकाली । एक कहे उच्छिष्ट चांडाली । होना तुम सहायक ।३५। एक कहे विघ्नहर । एक भोला शंकर । एक कहे सत्वर । पावे भगवती ।३६। एक कहे मलहारी । सभ्याग्य सत्वर करी । एक कहे बहुत भली । है भक्ति व्यंकटेशकी ।३७। एक कहे पूर्व संचित । एक कहे करो प्रयत्न । एक कहे सौंपना भार । देवपर ।३८। साशंक बोले एक । देव क्या करे है युगधर्म । होना है तो होगा ही सत्य । देखो जो कुछ होगा तो ।३९-४०। ऐसे ऐसे प्रापंचिक जन । बोलते है अन्य अन्य । अब ज्ञानीजनोंका अनुभव । बोलता हूं सुनिये आप ।४१-४२। कहे एक करो भक्ती । श्रीहरि देगा सद्‌गती । कहे एक ब्रह्मप्राप्ती । हो जाय कर्म करनेसे ।४३। कहे एक जन्म अटल । अटल ही है कर्मभोग । मनकी उर्मी भी सकल । हैं अज्ञानके कारण ।४४। कहे एक सर्वब्रह्म । वहां कैसे क्रियाकर्म । एक कहे हो जाय अधर्म । ऐसे जाने जब कोई ।४५। एक कहे सर्व नाशवन्त । बच जाय वो परब्रह्म । एक कहे अनुभवका मर्म । है तो अलग ही ।४६-४७। परब्रह्म है अनिर्वाच्य । बोलने से तो होगा द्वैत । वेद भी धरते जहां मौन । तो कौन कहे ब्रह्मवार्ता ।४८-४९। स्वानुभवसे बोले एक । द्रष्टा दृश्य जब हैं भिन्न । तब साक्षी बनके अलिप्तपण । रखना चाहिये अपनेको ।५०-५४। सर्वब्रह्म-वादीका कथन । है एक आत्मा स्वानंदघन । वहां कौन द्रष्टा कौन दृश्य । प्रपंच परब्रह्ममें अभेद ।५५-५७। घृत जो घन वो जाय पिघल । वैसे निर्गुण ही हुवे सगुण । वहां क्या होता है भिन्नत्व । बीचमें द्रष्टा लानेसे ।५८-६०। आत्मा ही हुवा है साकार । तो द्रष्टा कहां है भिन्न । ऐसा दूसरा अनुभव प्रकार । परमार्थमें भी हुवा ।६१। सुनिए तीसरा अनुभव । होते ही नाश सर्व । रहे बाकी जो नाहीं-पण । वो ही देव ऐसे बोलते ।६२। दृश्य सकल किया दूर । बचा रहे जब केवल अदृश्य । वही ब्रह्म ऐसा अनु-भव । कहता है कोई एक ।६३। किन्तु है ही नाहीं वो ब्रह्म । शून्यत्व कैसे होगा ब्रह्म । उपाय सदृश अपाय । दिखे तो भी है भीन्न ।६४। दृश्यके जाते हैं पैलपार । किन्तु शून्यको समझते हैं अदृश्य । तो इनकेलिए क्या होगा ब्रह्म । शून्यवत अदृश्य ।६५। एक और दृश्य एक और ब्रह्म । बीचमें है शून्यताका प्रान्त । तो भी शून्यको कहते हैं ब्रह्म । मंदबुद्धीजन ।६६। राजाको नाहीं पहचाना । सेवकको ही राजा माना । हो जाय यह ज्ञान मिथ्या । जब देखे राजाको ।३७। वैसे शून्यत्वको ही माना ब्रह्म । किन्तु जब देख लिया प्रत्यक्ष ब्रह्म । तब नष्ट हुवा शून्यत्व-भ्रम । उन अज्ञानियोंका ।६८। शून्यत्वरूपी यह महाविघ्न । विवेक सामर्थ्यसे करो नष्ट । दुग्ध सेवन करके राजहंस । छोड़ते जैसे नीर ।६९। छोड़

दिया दृश्य प्रथम। पश्चात् पार किया शून्यत्व। तब मूलमाया भी करके पार। देखे लिया परब्रह्म ।७०। भिन्नत्व दृष्टीसे जो देखे। वही शून्यत्व-वृत्तीमें पड़े। और संदेह ही मनमें भरे। शून्यत्वजन्य ।७१। दृश्यातीत भिन्नत्वका अनुभव। उसीका नाम शून्यत्व। ब्रह्मवस्तुको देखे तो सहज। होवे अभिन्नत्व ।७२। स्वयं वस्तुरूप होना। यही है वस्तुको देखना। भिन्नत्वसे जो देखना। शून्यत्व वह है ।७३। इसीलिए नाहीं शून्य। होगा कभी परब्रह्म। किन्तु देखना हो परब्रह्म। तो होवो ब्रह्म स्वानुभवसे ।७४। वस्तुरूप है स्वयंसिद्ध। तो करे कल्पना 'मैं मन'। साधु कहते हैं उपाय। आत्मानुभवका ।७५। संतोंने नाहीं कभी कहा। तुम हो मन जो मिथ्या। अब मुझको क्यों मानना। मन मैं ऐसे ।७६। रखो संत वचन पर विश्वास। तो वही बने स्वानुभव। मन का ऐसा ही स्वभाव। हो जा वस्तुरूप ।७७। लेना है जिसका अनुभव। वो है स्वयं निरावयव। होगा ऐसाही अनुभव। विश्वजनोंका ।७८। लोभी गया धन-शोधार्थ। तो मानो हुवा स्वयं धनरूप। हुवा तब बहुत उपयुक्त। इतर पुरुषोंके लिए ।७९। वैसे देहबुद्धी छोड़े जब। तब साधक होवे ब्रह्मरूप। है ऐसे स्वानुभवका मर्म। जानते ज्ञानी ।८०। है स्वयं अद्वैत-ब्रह्म। ऐसा है ज्ञानीयोंका सिद्धान्त। यहां हो गया संपूर्ण। यह ज्ञानदशक ।८१। आत्मज्ञानका निरूपण। यथामति किया कथन। होगा जो कुछ न्यून। इसीलिए क्षमस्व ।८२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शून्यत्वनिरसननाम समास दसवा ॥१०॥

दशक नौवां गुणरुपनाम

॥ श्रीराम ॥

निराकार का क्या अर्थ। निराधार का क्या अर्थ। निर्विकल्प का क्या अर्थ। यह मुझे कहिए ।१। निरकार को नाहीं आकार। निराधार को नाहीं आधार। निर्विकल्प कल्पनारहित। हैं वो परब्रह्म ।२। आमय नाहीं तो निरामय। भास नाहीं तो निराभास। अवयवरहित तो निरावयव। जो कि है परब्रह्म ।३-४। निःप्रपंच कलंकरहित। निरूपाधि और निरूपम। निरावलंब और निरपेक्ष। है परब्रह्म ।५-८।

निरंजन निरंतर निर्गुण । निःसंग, निर्मल निःशब्द । निर्दोष निवृत्ति निःकाम । निर्लेप निश्चल वो ब्रह्म ।९-१६। अनाम्य अजन्मा अप्रत्यक्ष । अगणित अकर्तव्य अक्षय । अरूप अलक्ष अनंत । है वो परब्रह्म ।१७-२२। अपार अढ़ल अतर्क्य । अद्वैत अदृश्य अच्युत । अच्छेद्य अदाह्य अक्लेद्य । है वो ब्रह्म ।२३-२८। परब्रह्म है सर्वश्रेष्ठ । देखते ही होवे ब्रह्मनिष्ठ । किन्तु आयेगा इसका अनुभव । सद्गुरुकी शरण जानेपर ।२९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आशंकानाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

जो कुछ दिखे साकार । है कल्पान्तमें उसका नाश । किन्तु रहता है स्वरूप । सर्वकाल संत ।१। सकल सृष्टीमें जो सार । और है जो साचार जो है नित्य निरंतर । परिपूर्ण सर्वत्र ।२। है वो भगवन्तका निजरूप । उसीको कहते हैं स्वरूप । इसके अतिरिक्त भी असंख्य । हैं उसके नाम ।३। नाम है केवल संकेत । उपयुक्त जैसे दृष्टान्त । किन्तु स्वरूप तो नामातीत । है सर्वदा स्वयंसिद्ध ।४। दृश्याभ्यंतर दृश्य-सबाह्य । है वो व्यापक किन्तु अदृश्य । नवल अद्भुत भासे असत्य । यद्यापि वो अत्यंत निकट ।५। ऐसे सुनते ही वर्णन । होवे इच्छा देखूं वो देव । किन्तु होता है दृष्टिगोचर । दृश्य ही सर्व ।६। दृष्टीका विषय जो दृश्य । वही जब होता है प्रत्यक्ष । तो अनायास मिले संतोष । देव रहे अदृष्ट ।७। 'यद् दृष्टं तन्नष्टम्' । ऐसे है श्रुतिवचन । तस्मात् चर्मचक्षुसे जो दृष्ट । वो नाहीं स्वरूप ।८। स्वरूप है निराभास । दृश्यका होता है भास । भास का होता है नाश । ऐसे कहे वेदान्त ।९। पुनरपि देखे तो भी दृश्य । वस्तु पूर्ववत । अदृश्य किन्तु अनुभव होतेही ब्रह्म । दिखे दृश्याभ्यंतर सबाह्य ।१०। है जो निराभास निर्गुण । कैसे कहूं उसका चिन्ह । किन्तु है वो स्वरूप सतत । अपनेमें अति सन्निध ।११। जैसे आकाशमें होता है भास । किन्तु आकाश सबमें व्याप्त । वैसे जानो वों जगदीश । है सबाह्य अभ्यंतर ।१२। उदकमें न होवे आर्द्र । पृथिवींमें घिस न जाय । वन्हींमें न होवे तप्त । देवका स्वरूप ।१३। कीचड़में रहे अलिप्त । वायु संगसे न उड़े किंचित् । न होवे सुवर्णसम । सुवर्णमें रहते हुए भी ।१४। इसी प्रकार है वो सर्वत्र । किन्तु होवे न कदा गोचर । वस्तुं है भेदरहित । भेद होवे अहंता से ।१५। उस अहंता का लक्षण । करता हूँ मैं निरूपण । सुनिए आप सावधान । उसी का चिन्ह ।१६। धावे जो स्वरूपकी ओर । रहती है अनुभवके साथ । शब्दोंसे करती है वर्णन । ब्रह्मानुभावका ।१७। अहंताका वही रूप । बोले मैं ही हूं स्वरूप ।

किन्तु होती है जो अलग । निराकार ब्रह्मसे ।१८। स्वयं हूं मैं ब्रह्म । ऐसा है अहंताका भ्रम । अतिसूक्ष्म करे जो विचार । उसे आवे यह समझ ।१९। मन करे कल्पना 'अहंब्रह्म' । किन्तु ब्रह्म है कल्पनातीत । समझमें न आवे अंत । अनंत परब्रह्मका ।२०। विश्व-रचना संहार विषयक । है जो अन्वय व्यतिरेक । वो है केवल शाब्दिक ज्ञान । निःशब्दब्रह्म अनुभव ।२१। ध्यानमें धरो वाच्यांश । उससे देखो लक्ष्यांश । लक्ष्यमें स्थित होते ही मन । वाच्यांश रहे केवल शब्द ।२२। सर्वब्रह्म और विमलब्रह्म । ऐसा वाच्यांश-का अनुक्रम । शोध हो जब लक्ष्यांश-मर्म । तो कहां रहेगा वाच्यांश ।२३। 'सर्व' 'विमल' दोनोपक्ष । वाच्यांश है तो प्रमाण । लक्ष्यांशमें जब लगे लक्ष । तब दोनों ही निरर्थक ।२४। लक्ष्यांशका जब हो अनुभव । तो वाच्यांशका नाहीं काम । स्वानुभवका यह मुख्य चिन्ह । वहां कैसे वाचारंभ ।२५। पर पश्यंती मध्यमा वैखरी । चारों जहां समाप्त होगी । वहां शब्द-कला-कौशल्यकी । नाहीं गती ।२६। शब्द प्रत्यक्ष नाशवन्त । इसीलिए नाशे पूर्वपक्ष । 'सर्व' ब्रह्म 'विमल' ब्रह्म । अनुभवमें दोनों नाहीं ।२७-२८। सुनों अनुभवका लक्षण होना है अनन्य आत्मसंग । आत्म निवेदन बिना नाहीं अन्य । रहे आत्मा ही स्वयं ।२९-३०। आत्माको नाहीं आत्मपण । यही निःसंगका लक्षण । किन्तु यह भी जानो है वाच्यांश । समझने के लिए ।३१। अन्यथा है जो लक्ष्यांश । तो वाच्यांशसे कह सके कौन । महा-वाक्य चिंतनसे अनायास । आ जावे समझमें ।३२। करो तत्वविवरण । शोधो ब्रह्म निर्गुण । देखो अपनेको आपन । समझमें आवे ।३३। बिना बोले ही करो चिंतन । चिंतनमें ही रहो मग्न । महापुरुष धरते हैं मौन । आत्म चिंतनकारण ।३४। शब्द होते हैं निःशब्द । नेति नेति श्रुति बोलत् । इसका अनुभव प्रत्यक्ष । आवे आत्मचिंतनसे ।३५। स्वानुभवके पश्चात अनुमान । यह तो है दुरभिमान । अब क्या बोलूं में अज्ञान । जानूं नाहीं किमपि ।३६। मैं हूं मिथ्या कथन भी मिथ्या । मम आचार मिथ्या मम विचार मिथ्या । 'मैं-मेरा' सर्व ही मिथ्या । है काल्पनिक सर्वही ।३७। 'में' ऐसा है ही नाहीं । तब क्या कहना मिथ्या नाहीं । इस सबका कारण है प्रकृति । जो स्वयं है मिथ्या ।३८। जहां प्रकृति और पुरुष । दोनोंका भी होवे निरसन । वहा अहंभावको कैसे स्थान । यह होगा ही नाहीं ।३९। जहां सबका है निःशेष नाश । वहां अहंभाव कौन विशेष । जैसे मौनभाव पावे भंग । जब कहे कोई "में मौनी" ।४०। इसलिये करो न मौन भंग । कर्ता होके भी रहो निःसंग । असत्में सद्रूप अलिप्त । रहो विवेकबलसे ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे ब्रह्मनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

श्रोता करे अनुमान। ऐसे कैसे ब्रह्मज्ञान। नाहीं जब किंचिन्मात्र। कैसे होता है ब्रह्म ।१। सकल करके भी अकर्ता। भोग लेके भी अभोक्ता। सबमें होते हुए भी अलिप्तता। होवे कैसे ।२। मानें हम कथन आपका। भोक्ता तो भी योगी अभोक्ता। तो क्या स्वर्ग या नरकमें रहना। है उसके लिए समान ।३। जन्म मृत्यु यातना। नाना पीड़ा भोगना। क्या है ही नाहीं कहना। उस योगेश्वरके लिए ।४-६। वक्ता बोले सावधान। करता हूं मैं समाधान। न यहां अनुमान शब्दज्ञान। चाहिए ज्ञानसंपदा ।७-१०। योगी पहचाने योगीयों को। ज्ञानी पहचाने ज्ञानियों को। चतुर पहचाने उनको। हैं जो चतुर ।११। जाने अनुभवी ही अनुभव। अलिप्तको अलिप्तता से संतोष। विदेह का उड़े देह भाव। देखके विदेहीको ।१२। सिद्धसम दिखे सिद्ध। बद्धसम दिखे बद्ध। माने जो दोनों को एकरूप। होगा क्या वो स्वयंसिद्ध ।१३। भूतबाधित है देहधारी। पंचाक्षरी भी देहधारी। क्या दोनों की बराबरी। हो जाय सत्य ।१४। वैसे अज्ञानी पतित। ज्ञानी जीवन्मुक्त। और दोनों को समझे जो एकरूप। तो क्या वो विचक्षण ।१५। रहने दो यह दृष्टांत। बोलूं मैं अब प्रचित। हो आप श्रोता सवचित्त। सुनो मेरा कथन ।१६। ज्ञानसे हुवा है गुप्त। समझो वो है आत्मज्ञानरत। या परब्रह्मसे है अभिन्न। उसमें नाहीं अहंभाव ।१७। उसको कैसे शोधना। शोधे तो वही रूप होना। होतेही उससे एक रूपता। कौन कहे स्वयं की वार्ता ।१८। दिखे देह किन्तु न बने देही। तत्व निरसन करे तो नाही। वाह्यरूपसे न समझे कोई हुवा है वो ब्रह्मरूप ।१९-२०। है वो ज्ञानी नित्य निरंतर। शोधो तुम उसका अभ्यंतर। जानते ही उसको आप। होंगे स्वयं निर्विकार ।२१। वो है परमात्मरूप केवल। उसमें नाहीं मायाजाल। किसी भी हेतू का मल। करे न उसको स्पर्श ।२२। ऐसा जो है योगीराज। वो तो है आत्मा सहज। पूर्णब्रह्म वेदबीज। समझ न आवे देहदृष्टिसे ।२३। देहबुद्धीसे दिखे देह। अभ्यंतर तो उसका भिन्न। उसको जाने जो यथार्थ। होवे जन्ममरण मुक्त ।२४। देह को होता है जन्ममरण। वो तो है ही नाहीं देह। है ही नाहीं तो कौन। लगावे देह ब्रह्मवेत्ताको ।२५। निर्गुणकी जन्म-कल्पना। या करे मरण कल्पना। तथापि जन्ममरण की कल्पना। लगे जीवको ही ।२६। मध्यान्ह समय सूरज पर। फेंके जल तो आवे वापस। वैसे कुकल्पना का चिंतन। फलदायी अपने को ही ।२७। समर्थ राजा का महिमान। जाने कोई भाग्यवान। किन्तु भूंकते है श्वान। रहते है वे श्वान ही ।२८। वैसे ज्ञानी सत्यस्वरूप। किन्तु अज्ञानी देखे मनुष्यरूप।

देव होता है फलद्रुप। भावानुसार ।२९। देव निराकार निर्गुण। लोग मानते हैं पाषाण। पाषाण फुटे किन्तु निर्गुण। कहो कैसे फूट जाय ।३०। परिपूर्ण देव सदोदित । लोक मातते है बहुविध। किन्तु इससे क्या बहुविध। होता है वो देव ।३१। वैसे साधु आत्मज्ञानी। बोध से पूर्ण समाधानी। विवेक ब्रह्मसे आत्मनिवेदनी। आत्मरूप ।३२। काष्ट जल जाने पर। दिखे अग्नि काष्टाकार। तो भी न हो कदाकाल। काष्टाकार अग्नि ।३३। जलते हुए भी कर्पुर दिखे। ऐसा ही ज्ञानीका देह भासे। जल जाने पर न आवे पुनः कपूर। वैसे ज्ञानी को नाहीं पुनर्जन्म ।३४। उगे ना भुंजित बीज। मिले ना जला जो वस्त्र। गया जो गंगामें प्रवाह। वो कैसे आवे वापस ।३५। दिखे मिलने पर भी प्रवाह। भिन्न जैसे संगमपूर्व। सर्वगत आत्मासे मिलने पर। साधु न दिखे उससे भिन्न ।३६। सुवर्ण न होवे पुनः लोह। साधुको नाहीं पुनर्जन्म। किन्तु समझ सके ना यह। अज्ञानी मूढ़मती ।३७। अंधा न देखे कुछ भी एक। तो क्या होते हैं लोग अंध। स्वप्नमें हुवा कोई भयभीत। तो क्या जागृत भी भयभीत ।३८-३९। एक देखे वल्ली सर्पाकार। दूजा कहे उसको सर्प। तो क्या दोनोंकी अवस्था एक। कहेगा कोई सूज्ञ ।४०। एक निर्भय हाथमें धरे। दूजा सर्पभयसे डरे। तो सर्पकल्पना ही बाधे। ऐसे समझना चाहिए ।४१। जिसको होता है सर्पदंश। वो ही मरण भयसे व्याकुल। तो क्या व्याकुल इतर जन। होते हैं उसी प्रकार ।४२। एवं टूट गया सब अनुमान। ज्ञानीही समझे ज्ञान। अज्ञानीका जन्ममरण। छूटे ना कदापि ।४३। बिना ज्ञानके कारण। होते हैं लोग खिन्न। इसीलिए कथानुसंधान। सुनिए आगे ।४४-४५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निःसंगदेह निरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवीपर लोक सकल। एक संपन्न एक दुर्बल। एक निर्मल एक अमंगल। ऐसे भिन्न ।१। कितनेही हैं नृपति। तो कितनेही दरिद्री। कितनोंकी है उत्तम स्थिति। कितनेही अधमाधम ।२। ऐसे है किन्निमित्त। इसका करिए निरूपण। तो वक्ता बोले सावधान। सुनिए श्रोता ।३। यह सब होता है गुणोंके कारण। भाग्यश्री भोगते हैं सगुण। दारिद्र आया अवगुणकारण। इसमें संदेह नाहीं ।४। व्यावसायी जो कार्यकर्ता। उसको लोक कहते हैं 'भला'। अज्ञानी जो न कार्यकर्ता। वों मांगता है भीख ।४-६। है यह

लोगोंमें प्रकट। देखते हैं सब प्रत्यक्ष। विद्या है तो भाग्यवन्त। विद्या नाहीं तो करंटा ।७। वृद्ध हो तो भी क्या होगा। विद्यासे होगी मान्यता। विद्यावन्त हो वयमें छोटा। तो भी है वह श्रेष्ठ ।८-९। विद्या नाहीं बुद्धी नाहीं। विवेक नाहीं प्रयत्न नाहीं। कौशल्य नाहीं उद्योग नाहीं। इसीलिए दुर्भागी ।१०। किन्तु हैं ये सब जिसके पास। क्या उनको कम होगा वैभव। चाहे नाहीं तो भी वैभव। आवे पीछे-पीछे ।११। होता है बाप समर्थ। किन्तु पुत्र मांगता है भीख। कारण पुत्र न करे उद्यम। करता था पिता जैसे ।१२। विद्या व्यापार हो तो वैभव। लोग बोलते प्रशंसानुरूप। नाहीं विद्या नाहीं वैभव। तो होगा ही अभागी ।१३-१४। पशु पक्षी भी हों गुणवत्त। तो समर्थ कृपा करे उनपर। गुणाभाव हो तो जीवन व्यर्थ। प्राणी मात्रका ।१५। गुण नाहीं गौरव नाहीं। सामर्थ्य नाहीं महत्व नाहीं। कुशलता नाहीं तर्क नाहीं। तो क्या हैं वो प्राणी ।१६। इसीलिए हो जो उत्तम गुण। तो यही भाग्य का लक्षण। लक्षण नाहीं तो अवलक्षण। सहज ही होवे ।१७। लोगोमें है जो जानता। उसी की होती मानमान्यता। विद्यावान हो तो तत्वतः। पावे महत्व ।१८। प्रपंच अथवा परमार्थ। जाने जो वही समर्थ। जाने नाहीं वो है व्यर्थ। निःकारण ।१९। जाने न जो बिच्छू या सर्प। संभव है उसका हो जीवघात। जाने नाहीं उसका कार्य। होता है असफल ।२०। न जाननेसे प्राणी फंसे। विपरीत करे या विसरे। शत्रूसे पराजित होवे। या पड़े संकटमें ।२१-२२। अपना हित समझेना। वो पावे बहुत यातना। अज्ञानसे पड़े भोगना। अधोपति निश्चित ।२३। माया ब्रह्म जोव शिव। सारासार और मायाका अभाव। इन सबका ज्ञान विचार। करे तो छूटे जन्ममरण ।२४। कौन है कर्ता निश्चित। कौन होता है बद्ध और मुक्त। इसका जब होवे ज्ञान। ती छूटे जन्ममरणसे ।२५। जानो हैं देव निर्गुण। जानो तुम हो कौन। जानो देव और जीव अभिन्न। तब ही मोक्ष ।२६। जानकर छोड़ा जिसने जितना। दृश्य पदार्थोंसे परे गया वो उतना। वैसे टूट गयी अहंकारकी भावना। ज्ञानी पुरुष की' ।२७। किन्तु अज्ञान से कोटि साधन। करे जभी कोई नर। तो कैसे मिले उसे अधिकार। मोक्षमार्गका ।२८। पहचानो माया और ब्रह्म। जानो अपनेको आप। तब न होगा पुनर्जन्म। ज्ञानियोंका ।२९। जान लिया समर्थ पुरुषों का मानस। करे वर्तन जो तदनुसार। पावे वो भाग्य वैभव। तत्गुणसे अपार ।३०। इसीलिये जानना है न सामान्य। होवे उससे सर्वमान्य। है जो पूर्ण अज्ञान। वो सर्वत्र अमान्य ।३१। किसी वस्तु को समझे भूत। तो भ्रमसे होवे भयभीत। जानता ही

समझे यथार्थ । है वो मिथ्या भूतभान ।३२। ज्ञानी एक जाने मर्म । अज्ञानी करे व्यर्थ कर्म । सकल जो कुछ धर्माधर्म । वो जाने ज्ञानी ।३३। जाने नाहीं राजकारण । जाने नाहीं वर्तमान । तो आवे दुःख प्रसंग । सबों के लिये ।३४-३५। अज्ञानी भोग यमयातना । ज्ञानी जन्ममरण मुक्तता । अज्ञानी होंवे करंटा । ज्ञानी भाग्यवान ।३६। इसीलिए न करो अलक्ष । जानपण ही एक उपाय । जिससे मिल जाये सुगम । परलोक मार्ग ।३७। जानपण है सबको प्रमाण । यद्यपि मूर्ख समझे अप्रमाण । अलिप्तपण का चिन्ह । समझे एक ज्ञानी ही ।३८। ज्ञानका अभाव हो तो । कौन छोडे किसको । समझेना कुछ भी नर जो । वो क्या करे कार्य ।३९। जानना ही है स्मरण । न जानना तो विस्मरण । दोनोंमें कौन प्रमाण । यह भी जाने सूज्ञ ।४०। अज्ञानसे होता है दीन । ज्ञानसे होता है सूज्ञ । आवे विज्ञान अनुभव । ज्ञानसे ही जानो आप ।४१। जहां होता है ज्ञान स्तंभित । वहां बोलना भी समाप्त । तब हेतुरहित समाधान । मिल जाय स्वयं ।४२। श्रोता कहे है यह प्रमाण । हुवा मुझे परम समाधान । किन्तु पिण्डब्रह्माण्ड ऐक्य लक्षण । कहिए स्वामी ।४३। ब्रह्माण्डमें वो पिण्डस्थ । ऐसे बोलता बहुत । किन्तु इसका प्रत्यय । होवे कैसे ।४४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे जाणपणनिरूपणनाम समास चौथा ।।४।।

॥ श्रीराम ॥

कहो पिण्ड या कहो ब्रह्माण्ड । दोनोंही हैं एकरूप । ऐसे बोलते तत्वज्ञ । और भी लोग ।१-२। किन्तु इसका न होवे अनुमान । न हमें होता है प्रत्यय । है क्या यह अतिगूढ़ । समझावो स्वामी ।३। स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण । ये हैं पिण्डके चत्वार देह । वैसे ही ब्रह्माण्डके विराट हिरण्य । अव्याकृत मूलप्रकृति ।४-५। पिण्डमें है अंतःकरण मन । ब्रह्माण्डमें विष्णु और चंद्र । पिण्डमें चित्त बुद्धि अंहकार । ब्रह्माण्डमें नारायण रुद्र ब्रह्मा ।६-८। तथापि कौन विष्णुका अंतःकरण । चंद्रमाका कौन मन । ब्रह्मका कौन बुद्धिलक्षण । कहिए मुझे ।९। नारायणका कैसा चित्त । रुद्रका कैसा अहंकार । इसका होना चाहिए । निश्चय । अनुमानरहित ।१०। प्रचितनिश्चय और अनुमान । हैं जैसे सिंह और श्वान । सत्यके सामने असत्य । कैसे होगा प्रमाण ।११। यहां एक प्रचित प्रमाण । न हो शास्त्रोंका अनुमान । हो यदि शास्त्रवचन । चाहिए प्रत्ययज्ञान ।१२-१४। प्रचिती

बिना जो बोलना। केवल भ्रम उसको जानना। जैसे कोई श्वानका भूंकना। होता रहे अर्थशून्य ।१५। क्या है वहां सुनना। क्या है वहां शोधना। आया नाहीं प्रत्यय जहां। वहां सब शून्याकार ।१६। अंधेही अंधे एकत्र। वहां क्या करे नयनयुक्त। नाहीं अनुभवके नेत्र। वहां अंधकार चारों ओर ।१७। नाहीं दुग्ध नाहीं जल। है एक अमंगल कीचड़। है उसका धनी एक। कौवा ही केवल ।१८। है पिण्डसम ब्रह्माण्ड। लगबा है इच्छा-कथन। किन्तु इसका प्रत्यय ज्ञान। कैसे होगा ।१९। क्यों नाहीं यह अनुमान। केवल कल्पना-कथन। क्या कोई जाता है सज्जन। तस्करोंके मार्गसे ।२०। क्यों न हो देव और मंत्र। दोनों हो कल्पना-निर्मित। जिस कारण होते हैं देव। मंत्राधीन केवल ।२१। यहां चाहिए न शब्दज्ञान। चाहिए अनुभव विवेक जन्य। चर्मदृष्टि न होने से मार्ग अंध। क्रमे पाद-संवितसे ।२२। जैसे जिसको मन में आया। उसी प्रकार कवित्व किया। किन्तु कवित्वका प्रत्यय आया। वो ही होगा सत्य ।२३। ब्रह्मदेवने किया सब निर्माण। किन्तु किसने किया उसको निर्माण। कहते हैं विष्णु करे पालन। किन्तु पालन विष्णुका करे कौन ।२४। रुद्र विश्वसंहारकर्ता। किन्तु कौन रुद्रसंहारकर्ता। कौन है कालका भी नियंता। इसका चाहिए प्रत्यय ।२५। जब तक आवे ना प्रचित। तब तक अज्ञान अंधकार। इसीलिए तो विचार। करना चाहिए सारासार ।२६। हुवा होगा ब्रह्माण्ड सहज। किन्तु करते हैं वो पिण्डसम। ऐसे बोलनेसे क्या प्रचित। आ जाय कदाकाल ।२७। देखने जाय ब्रह्माण्डका प्रत्यय। तो आते है अनेक संशय। इसीलिए है सब काल्पनिक। जानो श्रोता निश्चित। ब्रह्माण्ड रचना पिण्डके समान। कर सकेगा कौन अनुमान। ब्रह्माण्डमें होते हैं नाना पदार्थ। कहां हैं वे पिण्डमें ।२९। साड़े तीन कोटि भूतावली। साड़े तीन कोटि तीर्थावली। साड़े तिन कोटि मंत्रावली। कहां हैं पिण्डमें ।३०। तेतीस कोटि सुरवर। अठचांसी सहस्र ऋषीश्वर। नवकोटि कात्यायनीका विचार। पिण्डमें कैसा ।३१। चामुंडा छपन्न कोटि। और जीव कोटचानुकोटि। चौरांसीलक्ष जीवयोनी। हैं क्या पिण्डमें ।३२। ब्रह्माण्डमें हैं जो जो पदार्थ। जो कि हैं पृथगाकर। वे सब पिण्डमेंभी यथार्थ। होने चाहिए ।३३। औषधी वल्ली फल रसाल। नाना बीज धान्ब सकल। ये पिण्डमें बताये न जाय। तो क्या अर्थहीन अनुमान ।३४-३६। इतनाही है यह सत्य। कि पंचभूतात्मक है ब्रह्माण्ड। तथा पंचभूतात्मक पिण्ड। इतर सर्व अनुमान ।३७-३८। अनुमानजन्य जो जो कथन। तजो सबवो वमनसम। निश्चयात्मक जो प्रत्यय कथन। मानो वही एक सत्य ।३९-४०। इसीलिए सिवा पंचभूत। देहमें देखो ना अनुमानित। अब एक मुख्य समाधान। कैसे होगा यह

सुनिए ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अनुमाननिरसननाम समास पाचवां ।।५।।

॥ श्रीराम ॥

आकाश है जैसे निराकार । वैसे ही ब्रह्म आकाररहित । आकाशमें वायुका विस्तार । वैसी ब्रह्ममें मूलमाया ।१। दासबोधका अष्टम दशक । नाम जिसका ज्ञानदशक । वहां कथित है पंचभूत । कैसे हैं मूलमायामें ।२। कथन किया मैंने गुण । सत्वतम रजोगुण । वही जानो 'ज्ञान' अज्ञान । और ज्ञानाज्ञान मिश्रण ।३। मूलमायामें कैसा ज्ञातृत्व । ऐसे समझना चाहते आप । तो सुनो इसका विचार । है ऐसा ।४। जैसे पिण्डमें महाकारण काया । ब्रह्माण्डमें वैसे मूलमाया । महाकारणमें सर्वसाक्षिणी तुर्या । वैसे मूलमायामें जाणीव ।५। मूलमायामें त्रिगुण गुप्त । होते वे ही कालान्तरमें स्पष्ट । इसीलिए मूलमायाका अवस्थांतर । गुणक्षोभिणी नाम ।६। जैसे घाससे भरा हुवा संदूक । खोलते ही जाता घास बिखर । वैसे मूलमायासे गुणप्रसव । बोलते उसको गुणक्षोभिणी ।७। मूलमाया है वायुस्वरूप । किन्तु होतेही उसमें गुणविकार । तो उसीको ही गुणक्षोभ । हुवा ऐसे बोलते ।८। गुणक्षोभ होता है त्रिगुणात्मक । वहां ही होते हैं निर्माण शब्द । जो कि हैं मातृकात्मक । विस्तार उसीका सुनिए अब ।९। शब्द है आकाशका गुण । इसीलिए प्रथम हुवा आकाश । शब्दोंसे ही मिला आकार । वेदशास्त्रोंको ।१०। पंचभूत और त्रिगुण । ये हैं वायुके विकार । जाणपण और अजानत्व । है वायुके कारण ।११। नाहीं वायुतो नाहीं ज्ञातृत्व । नाहीं जाणपण तो नाहीं अज्ञान । जानपण और अजानपण । है वायुके आधारसे ।१२। जहां नाहीं वायुका चलन । वहां कैसे ज्ञातृत्व लक्षण । इसीलिए वायु है आधार । सबोंका ही ।१३। मूलमाया गुणमाया त्रिगुण । पंचभूत ऐसा है अनुक्रम । किन्तु त्रिगुण और पंचभूत । हैं ही वायुस्वरूप ।१४। पंचभूतोंका विस्तार वर्णन । अष्टमदशकमें है सविस्तर । प्रत्येक भूतमें पंचभूतोंका अंश । यह वहां देख लिया ।१५। वायु अग्नि जल पृथिवी । है सब पंचभूत कर्दमरूपी । किन्तु कहां है यहां जाणीव प्रचिती । ऐसो है आशंका ।१६-१८। जाणपण है चलनरूप । यही वायुका है लक्षण । और वायु के सर्वव्यापक । इसीलिए भूतोंमें है जाणीव ।१९-२०। कहीं दिखे कहीं नाहीं । सूक्ष्मबुद्धीसे जानते ज्ञानी । कि स्थूल और सूक्ष्मभूतोंमें भी । है ही वो व्यापक ।२१। पंचभूत ये सूक्ष्मरूप । पश्चात हुवे स्थूलरूप । किन्तु प्रत्येक भूतमें व्यापक ।

है वायुरूप जाणीव ।२२। दिखे न वायु जो स्तंभित। वैसे ही न दिखे जाणीव। किन्तु है जैसे वायु सर्वगत। वैसेही है जाणीव ।२३। न दिखे अग्नि काष्टवत। न भासे वायु स्तंभित। वैसे जाणीव भी अलक्षित। होता है सूक्ष्मतामें ।२४। स्थूलदृष्टीसे भूत भिन्न भिन्न। सूक्ष्मदृष्टीसे हैं वे मिश्रित। देखना है जब प्रचित। तो देखो सूक्ष्मदृष्टीसे ।२५। ब्रह्मसे हुई मूलमाया। मूलमायासे गुणमाया। गुणमायासे उत्पन्न हुवा। गुणत्रय ।२६। त्रिगुणोंसे हुवे पंचभूत। प्रथम सूक्ष्म नंतर स्थूल। इन सबोंका निरूपण। हो गया है पूर्व ।२७। श्रोता हुवा शंकित। गुणोंसे जब आकाशका जन्म। तो क्यों कहते हैं शब्द। है गुण आकाशका ।२८। वक्ता कहे मैं बोलूं त्रिगुण। और तुम समझो शब्दगुण। ऐसे बोलो असंबद्ध। तो समझावूं कैसे। २९। सिखाऊं तो सीखेना। समझाऊं तो समझेना। दृष्टान्त देऊं तो मानेना। मंदबुद्धी ।३०। भूतोंमें है तरतमभाव। ऐसा कहा मैंने विचार। किन्तु भूतोंसे श्रेष्ठ। कौन है अन्य ।३१। जहां मूलमाया भी पंचभूतात्मक। वहां और क्या करना विवेक। मूलमायासे भी श्रेष्ठ। है एक निर्गुणब्रह्म ।३२। ब्रह्ममें हुई मूलमाया। देखो उसको कैसी लीला। वो है केवल काया। पंचभूत त्रिगूणोंकी ।३३। उनमें चतुर्भूज हैं विकारवन्त। आकाश एक निर्विकार। आकाशको कहते हैं भूत। उपाधियोगसे ।३४। पिण्डमें व्यापक इसीलिए जीव। ब्रह्माण्डमें व्यापक इसीलिए शिव। उपाधीमें व्यापक सूक्ष्म आकाश। इसीलिए उसको भूतसंज्ञा ।३५-३६। भासे आकाश वत् अवकाश शून्य। परब्रह्म तो निराभास। उपाधिरहित जो आकाश। है वही ब्रह्म ।३७। ज्ञान अज्ञान ज्ञानाज्ञान। यही त्रिगुणोंका लक्षण। सत्व-तम-रजका स्वरूप। जानना चाहिए ।३८। ऐसा है प्रकृती का विस्तार। एकसे एक होत जात। जैसे एक रंगमें दूजा रंग। मिश्रण करे तो अन्य रंग ।३९-४०। इसीलिए रंगके समान। दृश्य होता है विकारवन्त। पलट जाय क्षणक्षण। नाना प्रकार ।४१-४२। जैसे एक उदकके विकार। होते हैं सतत अपार। वैसे पंचभूतोंका विस्तार। है चौरासी लक्षयोनी ।४३। नाना देहका बीज उदक। उदकसे होते हैं सकल लोक। चींटि, कृमी श्वापदादि। उदकसे होते ।४४। शुक्लीत श्रोणीत ही है नीर। उसी नीरका है यह शरीर। नाखून दंत आस्थिमात्र। उदकसे होते ।४५। वृक्षमूलतंतु अत्यंतसूक्ष्म। वे ही होते हैं जलवाहक। जिससे होता है विस्तार। और वृक्षका वर्धन ।४६। आम्रवृक्ष हुवा पुष्परुभृत। होता है आगे फलभरित। किन्तु वहां आमूलाग्र। है केवल एक उदक ।४७-४८। ऐसा है सूक्ष्म विचार। जलरूप ही पुष्पफल। एकसे होते हैं अनंत भेद। नाना आकार और वर्ण ।४९-५१। इसीप्रकार पंचभूत। और त्रिगुण उनके साथ। होते हैं अनेकविध। क्षणक्षण बहुरूप ।५२-५३। किन्तु इस प्रकृतिका

निरास । करना चाहिए सावकाश । परमात्मा जो परेश । भजो उसको अनन्यभाव ।५४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे गुणरूपनिरूपणनाम समास छठा ।।६।।

।। श्रीराम ।।

जब न हो स्थूल शरीर । या पिण्डपूर्व ब्रह्माण्ड । तो कहां रहे अंतःकरण । या मूलमाया ।१-३। सुनिए उत्तर सावधान । प्रथम घर या प्रथम जीव । इसका करो तुम विचार । मनमें प्रथम ।४। नाना कीटक नाना जीव । शक्त्यनुसार बांधते घर । पहले हो जब सूक्ष्म । तब ही होवे स्थूल ।५-७। श्रोता न रहे शांत । करे पुनरपि एक प्रश्न । जन्ममृत्युका विवेक । कहिए स्वामी ।८-९। ब्रह्मा है जन्मकारण । विष्णु करे प्रतिपालन । रुद्र सर्वसंहारक । ऐसे मानते ।१०। है यह रूढीके अनुसार । नाहीं यहां प्रत्यय-निश्चय । इससे हमारा समाधान । होगा नाहीं ।११। ब्रह्माका निर्माणकर्ता कौन । पालन करे विष्णुका कौन । रुद्रका करे संहार कौन । महा-प्रलयमें ।१२। क्या है सृष्टिविस्तार । मायाका सहज स्वभाव । कहूं 'कर्ता है निर्गुण देव' । तो है वह निर्विकारी ।१३। कहूं माया है जन्मकारण । तो मायाका यह स्वयं विस्तार । ऐसे ही बोलते जन । नाहीं माया भी शाश्वत ।१४। इसीलिए लेता जन्म कौन । कैसी उसकी पहचान । संचित कर्मका भी लक्षण । कीजिए निरूपण ।१५। पुण्य पापका क्या लक्षण । वासना है क्या जन्मकारण । क्या है यह केवल अनुमान । और मैं भी हूं कौन ।१६-१७। वासना कामना कल्पना । हेतु भावना मति नाना । ऐसी अनंत होती वृत्तियां । अंतकरण पंचकी ।१८। मानो जाणीव है स्मरण मात्र । पूर्वजन्मका हेत्वर्थ । किन्तु स्मरण और जन्मसूत्र । इनका क्या है संबंध ।१९। देह है पंचभूतात्मक । वायु है वहां चालक । जाणीव ही मानो भाव । है मनका एक ।२०। ऐसे हैं सहज अनायास । तत्वोंकी गठड़ी एकत्र । वहां किसने किसको दिया जन्म । और किस प्रकार ।२१। किन्तु इसका न आता है प्रत्यय । इसीलिए जन्म मानना ही व्यर्थ । है जौ प्राणी आज जीवित । उनको नाहीं पुनर्जन्म ।२२। जब है ही नाहीं किसीको जन्म । तो क्या करे संतसंग । ऐसा है अभिप्राय । श्रोताके प्रश्नका ।२३। पहले न था स्मरण या विस्मरण । बीचमें आया स्मरण । जो कि है जाणपण। अंतकरणकी कला ।२४। साधुके है तो स्मरण । व्याकुल होते ही विस्मरण । अंतमें घड़े मरण । तब विस्मरण अखंड ।२८। मरणानंतर ना

स्मरण ना विस्मरण । तब कौन पुनः देता है जन्म । इसीलिए जन्म या पुनर्जन्म । है केवल काल्पनिक ।२६-२८। शुष्क काष्ट न होता आर्द्र । फल गिरा तो न चढ़े वृक्ष । वैसे गिरा जो शरीर । वो न मिले कदापि ।२९। फूटा तो गया फूट घट । वैसे मनुष्यको न पुनर्जन्म । यहां है गति सभीको समान । हो ज्ञानी या अज्ञानी । ।३०। बढ़ गया ऐसा श्रोताका संशय । वक्ता वदे सावधान । करो न मत पाषांड । करो अनुमान विवेकबलसे ।३१-३२। बिना प्रयत्न हुवा कार्य । हुवा संतोष बिना भोजन । बिना ज्ञान हुवा मुक्त । है असंभव सर्व ही ।३३। कर लिया स्वयं भोजन । तो कैसे अन्य को संतोष । वही रहेगा जीवित । आता है जिसको तरना । ।३४-३५। वैसे हुवा है जिसको ज्ञान । वही तर गया संसारसागर । टूट गया जिसका बंधन । वही एक मुक्त ।३६। मुक्त कहे मुझे नाहीं बंधन । और बंदीशालामें बहुत जन । उनका कैसे समाधान । हो जाय मुक्तिवार्तासे ।३७। दुःखसे होता है एक व्याकुल । इतर लोग परदुःख शीतल । किन्तु जिसको है आत्मज्ञान वही एक समाधानी ।३८-३९। ज्ञानसे टले जन्ममरण । किन्तु 'सर्वमुक्त' कहना अप्रमाण । अन्यथा वेदशास्त्र और पुराण । हो जावें निरर्थक ।४०। वेदशास्त्रोंका वचन । महानुभाव संतजन । और भी अनेक जन । मानते नाहीं 'सर्वमुक्त ।४१। यह सबही अप्रमाण । तब क्या तूं अकेला अप्रमाण । इसीलिये मातो वही मुक्त । जो है आत्मज्ञानी ।४२। हैं सकल ही जन मुक्त । ऐसा है ज्ञानगोचर सत्य । किन्तु बिना आत्मज्ञान । आये नाहीं यह उद्‌गार ।४३। आत्मज्ञानका आया अनुभव । इसीलिए मिथ्या हुवा दृश्य । किन्तु इतर जनको बंधन । है वैसेही पूर्ववत ।४४। हुवा प्रश्नका समाधान । ज्ञानी ज्ञानसे हुवा मुक्त । अज्ञानी तो पावे बंधन । अपनी ही कल्पनासे ।४५। अनुभवसदृश अज्ञान । मुक्तिके सदृश बंधन । निश्चय सदृश अनुमान । मानना नाहीं कदापि ।४६। बंधन ऐसे है ही नाहीं । किन्तु बद्ध होते हैं सर्वही । इसका कुछ उपाय ही नाहीं । ज्ञानके बिना अन्य ।४७। है ही नाहीं किन्तु बंधन । यही एक महदाश्चर्य । समझ न आवे मिथ्या बंधन । इसीलिए होता है बद्ध ।४८। भोला भाव होवे सिद्ध । यह है उधारीका उपाय । रोकड़ा है मोक्षका अभिप्राय । जान लेवो विवेकसे ।४९। हीना चाहे प्राणी मुक्त । तो पहले चाहिए जाणीव चिन्ह । तब सर्वज्ञानी सहज । होवे कालान्तर में निराला ।५०। कुछ भी न समझे वो अज्ञानी । सकल समझे वो ज्ञानी । अभिमान रहित जो ज्ञानी । विज्ञान-मय स्वयं आत्मा ।५१। अमृत-सेवनसे हुवा अमर । पूछे जनको कैसे तुम मरणशील । वैसेही विवेकी बोले जन्म । कैसे होता है बद्धको ।५२। बोले 'जानता जनको । भूतबाधा कैसे

आपको । बाधा न विष की जिसको । पूछे वो विषकी कैसी बाधा ।५३। बनो पहले बद्ध सदृश । तब न पूछोगे ऐसे प्रश्न । दूर रखके विवेक । देखो बद्धलक्षण ।५४। स्वप्नमें करे कोई बड़बड़ । जागृत पूछे क्यों रे ऐसे करत । तो उसे भी स्वप्नवश । होना चाहिए निद्रिस्त ।५५। ज्ञानीका होता है वृत्ती-उदय । उसकी न होवे गुंथागुंथ । जैसे भूखे पुरुषका अनुभव । भोजनोत्तर होगा नाहीं ।५६। आशंकाका हुवा निरसन । ज्ञानसे हुवा मोक्ष प्राप्त । करतेही सारासार विवेक । दृढ़ हुई अंतरस्थिति ।५७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विकल्पनिरसननाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

ज्ञाता होवे ज्ञानसे मुक्त । किन्तु बद्धको क्या पुनर्जन्म । बद्धमें है जो लेता जन्म । मृत्युके पश्चात् ।१। बद्धके मरणोत्तर । रहता नाहीं कुछ भी शेष । मरण-पूर्व है उसका स्मरण । होता है विस्मरण ।२। ऐसी पुनरपि आशंका । प्रकट करे श्रोता । 'रहो सावधान', बोले वक्ता । सुनिये सुचित ।३। पंचप्राण जब छोड़ते देह । तो वासनाभी जाती छोड़ देह । किन्तु वह रहती है प्राणों के साथ । जैसे थी मरणपूर्व ।४। वायुके साथ गयी वासना । तो बन गयी स्वयं वायुरूपा । आगयी पुनरपि हेतुरूपा । अन्य जन्ममें ।५। मरणोतर भी क्वचित् प्राणी । स्वदेहमें आता है पुनरपि । स्वर्गसे गिरनेसे हस्त-पादादि । दुखते है कहते लोग ।६। सर्पदंशसे मर जाने पर भी । उठाता है शव धन्वंतरी । ऐसे हो सत्य तो वासनाभी । आती है वापस ।७। कहते हैं यमलोकसे भी वापस । लाता जीवको कोई समर्थ । या करवाता है प्राप्त पूर्वदेह । जभी हो शापसे अन्यदेह ।८-९। वासना है वायुरूप । इसीलिये योगी समर्थ । कर सकते परकाया प्रवेश । ऐसे ही पुनर्जन्म वासनाका ।१०-११। दिखती नाहीं वासना । है वो मनोवृत्तीरूपा । मूलमायाके साथ मिश्रिता । जाणीव हेतु ।१२-१३। ब्रह्माण्डमें रहती कारणरूपा । पिण्डमें रहती कार्यरूपा । होती है अतिसूक्ष्म वायुरूपा । आवे न हाथ अनुमानसे ।१४-१६। वायुमें है त्रिगुण और पंचभूत । न हो अनुमान तो भी सत्य । सुगंध दुर्गंध पृथिवीके गुण । समझ आवे वायुमें ।१७। वायु होवे उष्ण शीतल । वायुमें है तेज और जल । ऐसा सबका अनुभव । आता है प्रत्यक्ष ।१८। वायुकी गतीके कारण । चलते हैं आकाशमें मेघ नक्षत्र । और भी सकल सृष्टीका कार्य । होता है वायु कारण ।१९। वायुरूप दैवत या भूत । ब्राह्मणसमंध या पिशाच । अंगमें संचरते अकस्मात ।

करते नाना चमत्कार ।२०। विधिविधान मंत्रप्रयोग । करके बुलाते भूत दैवत । उनके सामर्थ्यसे भूमीगत द्रव्य । करते हैं हस्तगत ।२१। बाधा होती अनेकविध । लगा देते विविध प्रकार । ऐसे नाना चतमकार । होवे वायुरूप दैवतसे ।२२। इसी प्रकार इच्छानुरूप । लेते हैं जन्म वायुरूप । समझेना वायुका सामर्थ्य । या उसका विस्तार ।२३। स्तब्धरूप वायु सृष्टीका धर्ता । चंचलरूप वायु सृष्टीका कर्ता । विचार करे तो समझे तत्वता । वायुका प्रताप ।२४। आमूल अखीरपर्यन्त । कार्य करे वायु केवल । बिना वायुके आधार । है नाहीं कर्तृत्व ।२५। वायुमें मूलमाया जाणीवरूप । होती है प्रकट और गुप्त । जैसे जल भूमिगत या भूमीपर । गुप्त या प्रवाहरूप ।२६-२८। बहुत वायुके प्रकार । उनसे होते बहुत विकार । सूख जाते हैं हस्तपाद । नष्ट होता अनाज ।२९। नाना रोगोंकी उत्पत्ती । पीड़ा बहुत प्रकारकी । अंबरस्थ बिजली कडकी । वायुके कारण ।३०। वायु आधार गायनराग । वायु आधार ध्वनीका ज्ञान । गावे दीपकल्याण मेघमल्हार । होवे प्रकाश और वर्षा ।३१। वायुकारण नाना मंत्र । मंत्रकारण भूत या देव । मंत्रसामर्थ्यसे स्तंभन मोहन । तथा रोग निवारण ।३२-३४। किसीको करो बुद्धिहीन । या बुद्धिहीनको विचारवान । बढावो ऋषीयोंका अभिमान । मंत्रसामर्थ्यसे ।३५-३६। पक्षी मूषक होत नष्ट । महासर्प श्वापद स्तंभित । या होता है धनलाभ । ऐसे है मंत्रसामर्थ्य ।३७। हुवा अब प्रश्ननिरसन । हुवा श्रोताका संशय निरास । बद्धका क्यों हुआ पुनर्जन्म । इसका भी निरूपण ।३८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहान्तनिरूपणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्मका करना निवारण । या उसका अपसारण । अथवा उसका छेदन । है सर्वथा अशक्य ।१-२। ब्रह्म है अद्वय अखंड । तब कहांसे आया ब्रह्माण्ड । भूगोल पर्वत पाषाण । कैसे हुवे परब्रह्ममें ।३-४। भूगोल है परब्रह्ममें । परब्रह्म है भूगोलमें । इसी प्रकार है एक अन्यमें । प्रत्यक्षरूप ।५। ब्रह्ममें भूगोलका विस्तार । भूगोलका ब्रह्मने किया भेद । विचार करे तो प्रत्यय । आता है ऐसा ।६। ब्रह्मने किया ब्रह्माण्डका भेद । कहना ऐसे है उचित । ब्रह्माण्डने किया ब्रह्मका भेद । ऐसे कहे तो लगे विपरीत ।७। नाहीं किया ब्रह्माण्डने भेद । कहना ऐसेही अनुभव विरुद्ध । कि ब्रह्ममें है ब्रह्माण्ड स्थित । है यह दृश्य प्रकट ।८। तब क्या है वस्तुस्थिति सत्य । कहना चाहिए विचारपूर्वक । ऐसा है श्रोताका आक्षेपवचन ।

सुनिए अब प्रत्युत्तर ।९। ब्रह्माण्ड नाहीं ऐसे नाहीं । सत्य कहूं तो शाश्वत नाहीं । दृश्य होते हुए भी कैसे नाहीं । कहिए श्रोताओं ।१०-११। श्रोता बोले उत्कण्ठित । हैं हम सावचित्त । इसीलिए वक्ता ले उचित । प्रसंगानुसार ।१२। आकाशमें लगा दिया दीप । क्या उसने दहन किया आकाश । वैसे ही आप या पवन । कर न सके बाधा गगनको ।१३-१४। मेदिनी है बहुत कठिन । आकाशने किया उसका भी भेदन । जडत्वका होता है नाश । आकाश रहे जैसे तैसे ।१५-१६। आकाशका अनुभव । होवे तो द्रष्टा रहे भिन्न जब आकाश ही होवे ब्रह्म । द्रष्टा रहे अभिन्न ।१७। आकाश है अभेद अचल । होगा न भेदका अनुभव । जब होता है ब्रह्मका भास । कहो उसको आकाश ।१८। निर्गुण ब्रह्मका हुवा भास । या कल्पना से किया अनुमान । तो कल्पनाजन्य जो भास । उसको कहो आकाश ।१९। कल्पनाको होवे जो भास । वो सब जानो है आकाश । परब्रह्मतो निराभास । निर्विकल्प सदोदित ।२०। भूतोंमें किया है वास । इसीलिए नाम आकाश । अन्यथा है वो ब्रह्मांश । भूतांतर्यामी ।२१। पृथिवी आप तेज परन । इन सब दृश्य भूतोंका है नाश । इसीलिये है वे चल । आकाश अभेद्य अचल । पृथिवी नाशे रहे जीवन । जीवन नाशे रहे तेज । तेज नाशे रहे पवन । पवन नाशे रहे सत्य ।२३। आया गया मिथ्या दृश्य । किन्तु रहा है जो शाश्वत ब्रह्म । आवे कैसे उसका प्रत्यय । इसका करूं निरूपण ।२४। भ्रान्त दृष्टीसे दिखे प्रत्यक्ष । विवेक दृष्टिसे होत अदृश्य । भ्रममूल जगको सत्य । मानना कैसे ।२५। भ्रमका किया सूक्ष्मशोधन । तो भ्रम हुवा मिथ्यारूप । तब किसने किसका किया भेद । भेदहो मिथ्या ।२६-२७। असत्यने किया असत्य । तो क्या होगा असत्य सत्य । किया ऐसे कहतेही सूज्ञ । कहेंगे 'असत्य' ।२८। सागरमें जैसी खसखस । वैसे परब्रह्ममें है दृश्य । जैसी मती वैसा मतिप्रकाश । होवे अभ्यांतरमें ।२९। करे यदि मति विशाल । तो आकाशसम होवे विस्तार । तब भासे ब्रह्माण्डगोल । कवठ जैसे ।३०। वृति हो जाय अधिक विशाल । तो ब्रह्माण्डभासे बदरीफल । ब्रह्माकार वृती होवे जब । सब ब्रह्माण्ड है ही नाहीं ।३१। विवेकसे होते होते विशाल । होता है स्वयं अमर्याद । तब तो यह ब्रह्मगोल । दिखे वठबीजसम ।३२। हो जावो अधिक विस्तीर्ण । तो वटबीजभी भासे कटिगुण महान । हो जब स्वयं परिपूर्ण । तो अन्य कुछ है ही नाहीं ।३३। भ्रमकारण हो जावो वामन । केवल देहधारी जीव । तो क्या होवे आकलन । ब्रह्माण्डका तुमको ।३४। बढ़ावो बढ़ावो वृती हमारी । वेढा करे पूर्णब्रह्मको ऐसी । जैसे सुवर्णपट्टसे वेष्टन करी । तब क्या होता देखो ।३५-३६। ब्रह्मको व्याप्य करते करते । वृती ही स्वयं फट जाये । तदनंतर जो कुछ रहे । वो निर्गुण आत्मा ।३७। हुवा इससे

आशंकानिरसन। अब करना अनुमान। विवेकसे होगा समाधान। सुनिये श्रोताओं ।३८। विवेकसे टूटे अनुमान। विवेकसे आत्मनिवेदन। विवेकसे होगा मोक्षलाभ। आत्मलाभ प्रत्यक्ष ।३९-४०। कहा है मैंने प्रचित-वचन। समझमें आवे यदि हो सारासार विचार। मननध्याससे साक्षात्कार। हो जावो और पावन ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे संदेह वारणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

देवालयमें जगन्नायक। देवालय ऊपर बैठा काक। क्या कहना है उसको श्रेष्ठ। देवसे भी ।१। सभा चल रही राजांगण। मर्कट बैठे स्तंभ ऊपर। तो क्या हो गया वो श्रेष्ठ। पण्डितोंसे भी ।२। ब्राह्मण स्नान करके गये। बक नदीतीरपर खडेही रहे। तो क्या मानना वे हैं भले। ब्राह्मणोंसे भी ।३। ब्राह्मणोंमें भी कोई एक। वर्तन करे नेमस्त। और श्वान सदा ध्यानस्थ। तो क्या होवे उत्तम ।४। जाने ना लक्षमुद्रा ब्राह्मण। मार्जार उसमें प्रवीण। तो क्या ब्राह्मणसे श्रेष्ठ। हो जाय मर्जार ।५। देखे ब्राह्मण भेदाभेद। मक्षिका को सब अभेद। तो क्या हुवा है बोध। उसको ज्ञानमार्गका ।६। नीचके पास अमोल वस्त्र। उघाड़ा बैठा है समर्थ। तो कौन नीच कौन समर्थ। है परीक्षा ज्ञानीयोंको ।७। बाह्यात्कार किया अधिक। किन्तु है वो सब लौकिक। परमार्थमें चाहिए मुख्य एक। अंतरनिष्ठा ।८। संपादन किया लौकिक। अभ्यंतरमें न सावध। जाने न कौन मुख्यदेव। है वो आत्मघातक ।९। देवको भेजे तो देवलोक। पितरोंको भजे तो पितृलोक। भजे भूतोंको तो भूतलोक। पावते प्राणी ।१०। जो जो जिसको है भजत। वो पावे उसी का लोक। निर्गुणको भजे तो निर्गुण। हो जाय स्वयं ।११। करना कैसे निर्गुणका भजन। रहो निर्गुणमें अनन्य। अनन्य होतेही धन्य। हो जाय निश्चयसे ।१२। सकल कर्मका सार्थक। देखना देव है एक। 'कोंन हूं' इसका विवेक। करना चाहिए ।१३। है देव निराकार। 'अहं' ऐसा भाव मायीक। 'सोऽहं आत्मा' यह निर्धार। हो गया दृढ़ ।१४। अब क्यों करना 'अनुमान। वस्तु है वस्तुनिष्ठ। है ही नाहीं देहभाव। शोध करे तो भी ।१५। सिद्धका क्या है साधन। ऐसा विचार है अनुमान। मुक्तको कैसे बंधन। होवे कालत्रयमें ।१६। साधनसे जो होगा साध्य। वहां है जब स्वयं अनायास। तो 'साधक' ऐसे नामाभिधान। है निरर्थक ।१७। कुंभकारको मिला राज्यपद। वो क्यों करे रासभोंका पालन। करना क्यों अब खटपट। कुंभ बनानेका ।१८। वैसे वृत्तीवृत्तीके

अनेक भाव। जो कि होते है साधनोंके उपाय। वे क्या साधकको उपयुक्त। जब मिला है साध्य ।१९। क्या है अब साधनसे साधना। क्या फल नित्य नेमसे लेना। क्या अब मनका भटकना। जब हुवा है स्वयंब्रह्म ।२०। देह तो है पंचभूतात्मक। है जीव ब्रह्मका अंश। भाव होते ही अनन्य। परमात्मा ही केवल ।२१। विवेकहीन धरे अहंभाव। अहंता रहित विवेकवान। तत्वसे तत्व होते ही निरसन। रहे तो निखिल आत्मा ।२२। आत्मा रहता है आत्मस्थ। जीव रहता है जीवरूप। माया रहती है मायारूप। दिखता है जो विस्तार ।२३। ऐसे यह हैं सकल। किन्तु अपनेको भी स्वयंरूप। होना चाहिए शोध शोध। करे ऐसे, वो ज्ञानी ।२४। शोध शोधके जाने सकल। किन्तु जाने नाहीं स्वयं कौन। ऐसा ज्ञानी एकदेशीय। रहे मनोवृत्तीमय ।२५। उन वृत्तीयोंका भी सत्यस्वरूप। जाने तो होवे प्रकृतिनिरास। प्रकृतिनिराससे विकार। रहे नाहीं एक भी ।२६। इसके पश्चात् रहता है एक। निखिल निर्गुण आत्मरूप। ऐसे यह परमार्थका चिन्ह। है अचित्य अगाध ।२७। मोक्षफल एक आपन एक। ऐसा नाहीं यहांका विवेक। मौक्षफलका भी फल। स्वयं होवे मानव ।२८। रंक था वो हुवा राजा। बोले वो हूं मैं राजा। वो क्यों पुनः रंकावस्था। बतावे अपनी ।२९। वेद शास्त्र पुराण। नाना साधन निरूपण। सिद्ध साधु जिस कारण। करते नाना सायास ।३०। वो ब्रह्मरूप है आपन। सारासार विचारसे अनुभव। यहां कर्म या अकर्म। दोनों ही नाहीं ।३१। राजाज्ञासे रंक भयभीत। मिले किन्तु उसको राज्यपद। तो उड़ जावे सब ही भय। था जो रंकावस्थामें ।३२। वेदाज्ञापालन करे वेद। सच्छास्त्रका अभ्यास करे शास्त्र। तीर्थ जावे तीर्थक्षेत्र। ऐसे होना ब्रह्मरूप ।३३। अमृतका सेवन करे अमृत। अनंतको देखे अनंत। भगवन्त को लक्षण भगवन्त। ऐसे होना ब्रह्मरूप ।३४। संतका त्यागना असंत। निर्गुणका भंग करना निर्गुण। स्वरूपका स्वरूपमें होना लीन। किस प्रकार वो देखो ।३५। अजंन ही करे नेत्रांजन। धन ही करे धन संपादन। निरंजनने निरंजन-नुभव। लेवे कैसे वो देखो ।३६। साध्यका करना साधन। ध्येयका धरना ध्यान। उन्मने करना मनका शमन। प्रकार ऐसा ब्रह्मानुभवका ।३७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे स्थितिनिरूपणनाम समास दसवा ॥१०॥

दशक दसवां जगज्जोतिनाम

॥ श्रीराम ॥

सकल जीवोंका अंतःकरण । है एक या अनेक । यह मुझे निश्चयात्मक । कहिए स्वामी ।१। ऐसे पूछा श्रोताओंने । उसका उत्तर वक्ताने दिया ऐसे अनुभवसे । है एकही अंतःकरण ।२-३। श्रोता बोले पुनरपि वचन । जब है एक अंतःकरण । तो क्यों होते हैं अनुभव । भिन्न भिन्न ।४। करता है एक भोजन । तो क्यों न होते इतर संतुष्ट । मर गया यदि एक नर । तो क्यों ना मरें सबही ।५। भोगे एक सुख तो अन्य दुःख । ऐसे जब होता है सर्वत्र । तो कैसे मानना अंतःकरण । है सबका ही एक ।६। जनमें हैं भिन्न भिन्न भावना । नाहीं उनमें मिलना जुलना । तो कैसे अनुमान भी करना । अंतःकरण एक ऐसे ।७। होता एकही अंतःकरण । तो क्यों न होते अन्यान्य ज्ञान । एक ही बात न रहती गुप्त । किसीको ही कदाकाल ।८। सर्प आता है करने दंश । प्राणी होता है भयभीत । है जब एक अंतःकरण । तब क्यों ऐसा विरोध ।९-१०। ऐसी श्रोताकी आशंका । 'सावधान सुनिए' वदे वक्ता । उपाय है देहरक्षणका । अंतःकरण या जाणीव ।११-१२। समझ करके आया सर्प । समझ करके प्राणो भयभीत । दोनों और समझ या जाणीव । है एकसा ।१३। दोनों ओर है एक समझ । इसीलिए है एक अंतःकरण । जाणीवरूपसे नाहीं भिन्न । किसीकाही अंतकरण ।१४-१५। नेत्रोंसे रूप देखना । जिव्हासे स्वाद लेना । सुनना, सूंघना या स्पर्श करना । है ज्ञानशक्ति एक ।१६। सबके लिये जल शीतल । सबके लिये अग्नि दाहक । हो पशु पक्षी कीटक मानव । ज्ञानकला सबकी एक ।१७-१८। किसीकी किसीमें रुची । किसीकी किसीमें अरुची । ऐसी भिन्नता देहस्वभावकी । न कि ज्ञानकलाकी ।१९। इसीलिए सबका अंतकरण एक । ऐसे जानो निश्चयात्मक । ज्ञानकला सबोंकी एक । अंतःकरणरूप ।२०-२१। ज्ञानकलाके आधार । खाते हैं जीव अन्न । भयसे छिप जाते अन्य । और भी करते कार्य ।२२। आ-ब्रह्म कीटक पर्यन्त । समस्तोंका अंतःकरण एक । परन्तु स्वयं इसका प्रत्यय । लेना चाहिए ।२३। दावानल हो या स्फुलिंग । जैसे होता है अग्नि एक । बिन्दु या सिंधु में एक जल । वेसे देहधारकोंमें ज्ञान ।२४-२५। ज्ञानकलाही है अंतःकरण । जोकि होता है विष्णुका अंश । विष्णु करता है पालन । सबोंकाही ।२६। नाहीं ज्ञानकला तो है नाश । अज्ञान तमोगुण स्वभाव । इसीलिये रुद्र करे संहार ।

प्राणीयोंका ।२७। ज्ञान अज्ञानका मिश्रण । होता है रजोगुणकारण । इसीलिए जीव-जात । आते है जन्मो जन्म ।२८। ज्ञानकलासे होवे सुख । ज्ञानहीनतासे दुःख । सुख दुःख हैं आवश्यक । उत्पत्ती कारण ।२९। वही उत्पत्तीका कर्ता । जानो है रजोगुण ब्रह्मा । जिसकी बुद्धीमें तत्वता । है ज्ञान और अज्ञान ।३०। एवं उत्पत्ती स्थिति संहार । प्रसंगानुसार किया विचार । किन्तु इन सबका निर्धार । करना चाहिए स्वानुभवसे ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अंतःकरणएकनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

स्वामी ने बता दिया विचार । कि ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । हैं उत्पत्ती-स्थिति-संहार कारक । किन्तु संशय आता है एक ।१-२। ब्रह्मा है चतुर्मुख । विष्णु है चतुर्भुज । महेश संहारक । ऐसे हमने सुना है ।३-४। कहते हैं शास्त्रकारक । और भी परंपरागत लोग । कि तीनों ही देवोंका जन्म । हुवा है मायासे ।५। पहली मूलमाया लोकजननी । वही हुई गुणक्षोभिणी । उसके गुणोंसे हुए त्रिगुणी । तीनों ही देव ।६-७। किन्तु मूलमाया कहां से आई । है क्या आपको प्रत्यय कोई । ऐसे पूछे तो किसीको ही । नाहीं अंश भी एक ।८। अनुभव नाहीं वो वैद्य । जैसा है केवल ठग । वैसे ही प्रचित बिना गुरु-शिष्य । दोनों ही अंधारमें ।९-१०। मायाका निर्माणकर्ता देव । कहे ऐसे कोई एक । तो मायामें ही देवोंके रूप । हैं अंतर्भूत ।११-१२। कहे वो है पंचभूतात्मकी । तो वो है पंचभूतोंकी जननी । कहूं ब्रह्मसे वो निर्माण हुई । तो ब्रह्ममें नाहीं कर्तृत्व ।१३। है जब माया मिथ्यारूप । तो कर्तृत्वका नाहीं प्रयोजन । इसीलिए हो जाय प्रत्यय । ऐसी कृपा करो स्वामी ।१४-१५। बिना शब्दाक्षर वेद नाहीं । बिना देह शब्दाक्षर नाहीं । देह निर्माण होत नाहीं । देहके बिना ।१६। देहों में भी उत्तमदेह । है एक ब्राह्मणदेह । जिसको है अधिकार । वेदपठणार्थ ।१७। कहांसे आये वेद । कहांसे देह और देव । इसका करिए समाधान । तो वक्ता बोले 'सावधान' ।१८-१९। देखना हो अनुभव । तो मार्ग है कठिन । अनुमानसे करो विचार । तो काल जाता है बहुत ।२०। देखो जनरूढी या शास्त्र निर्णय । तो निश्चय होता है बहुविध । शास्त्रोंमें भी अनेक भेद । ऐसी है गुंथागुंथी ।२१-२२। शास्त्राधारसे करो प्रत्यय । पूर्वपक्ष त्यागसे करो सिद्धान्त । किन्तु चाहिए एक वचन । जिससे सबको होवे समाधान ।२३। पूर्वपक्ष होता है असत्य । शास्त्रकथन ही होवे पूर्वपक्ष । तो आवे हमको दूषण । शास्त्रविरुद्ध कहनेसे ।२४। तथापि करके शास्त्ररक्षण ।

करता हूं मैं निरूपण। करना सादर विचार। श्रोताओं आप।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहआशंकानाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

उपाधिरहित जो आकाश । वही है ब्रह्म निराभास । उस निराभासमें हुवा जन्म। मूलमायाका ।१। उस मूलमायाका लक्षण। है वायुस्वरूप जान। पंचभूत और त्रिगुण। हैं वायुमें स्थित ।२। आकाशसे वायुका जन्म । उसका नाम वायुदेव । वायुसे हुवा अग्नीका जन्म । उसका नाम अग्निदेव ।३। अग्निसे हुवा आप । वह नारायणका स्वरूप । आपसे पृथिवीका जन्म । यही बीज जन्मका ।४। पृथिवीमें हैं पाषाण। बहुत देवोंके लक्षण। जिनको मानते हैं प्रमाण। बहुतलोक ।५। नाना मृत्तिका और वृक्ष। इनकी प्रचित लेते लोक। किन्तु यह सब अंतर्भूत। एक वायुदेवमें ।६। देवयक्षिणी कात्यायनी। चामुंडा और जाखिणी। नाना स्थानोंमें नाना शक्ती। भूतादि देवता देव ।७-८। ये सबही असंख्यात। हैं एक वायुस्वरूप। इसीलिए गुप्त या प्रकट। होते हैं इच्छानुरूप ।९-१०। जाणतीकला वासना वृत्ती। वायुमें नाना जगज्जोती। वायुस्वरूपसे विचरती। नाना भेद ।११। आकाशसे वायु उत्पन्न। उसके हुवे दो प्रकार। एक जगज्जोती दूजा पवन। है जो सबको ज्ञात ।१२। जगज्जोतीमें अनंत देव। देवतामूर्ती भी अनंत। अब सुनिए तेजके प्रकार। उष्ण और शीतल ।१३-१५। उष्ण तेजसे हुवा सुर्य। प्रकाशरूप देदीप्यमान। सर्वभक्षक हुताशन और विद्युल्लता ।१६। शीतल तेजसे आप अमृत। चंद्र तारा और शीत। जलके ही दो प्रकार। जल और अमृत ।१७-१८। पृथिवीका एक प्रकार। मृत्तिका पाषाणका विस्तार। और दूजा प्रकार। रत्न सुवर्ण पारस ।१९। बहुरत्ना वसुंधरा। सारासारका विचार होना। समझ आवे सत्यासत्यता अन्यथा नाही ।२०। अब रह गयी आशंका मुख्य। कहांसे हुवा मनुष्यजन्म। इसीलिए श्रोताओं सावधान। सुनिये आगे निरूपण ।२१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहआशंका शोधननाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

लेवूं अब उत्पत्तीका प्रश्न। तो दिखता है प्रत्यक्ष। कि मनुष्यसे मनुष्यका जन्म।

पशुसे है पशुका ।१। खेचर भूचर जलचर । ऐसे नाना प्रकारके शरीर । हैं सबही शरीर-संभव । ऐसे है प्रत्यक्ष ।२-४। अब मूल शरीर कैसे आया । किसने उसको बनाया । ऐसी है आशंका । तो सुनिये प्रमाण ।५-८। ब्रह्ममें हुई मूलमाया । नाम प्रकृति अष्टधा । पंचभूता और त्रिगुणा । इससे वो अष्टविधा ।९। वो मूलमाया है वायुस्वरूप । वायुमें है जाणीव अंश । उसीका नाम इच्छारूप । किन्तु ब्रह्ममें वो नाहीं ।१०। ब्रह्मपर कल्पित आरोप । तो व्यर्थ गया 'इच्छा' शब्द । आत्मा निर्गुण शब्दातीत । परिपूर्ण और व्यापक ।११-१२। आग्रहसे करे कल्पनारोप । तो वो होगा निरर्थक । जैसे आकाश पर करे प्रहार तो वो भी अटूट ।१३। तैसे ब्रह्म निर्विकार । निर्विकारको लगावे विकार । तो विकार पावे नाश । निर्विकार जैसे तैसे ।१४। अब सुनिये प्रत्यय । जान लेके करो निश्चय । तब ही मिल जाय जय । अनुभवप्राप्तीका ।१५। माया-ब्रह्ममें जो समीर । जानो है वही ईश्वर । कहो ईश्वर या सर्वेश्वर । है एक ही ।१६। वही ईश्वर हुवा गुणरूप । गुणोंके हैं त्रिविध भेद । सत्व रज और तम । ऐसे ये तीन गुण ।१७-१८। ज्ञाणता विष्णु भगवान । जाणतानेणता चतुरानन । अजाणता महेश पंचानन । अत्यंत भोला ।१९। त्रिगुण हैं अन्योन्य मिश्रित । नाहीं रहते अत्यंत भिन्न । किन्तु उनमें जो न्यूनाधिक प्रमाण । उसका करता हूं विचार ।२०। वायुस्वरूप वे देव । बन गये देहधारी सर्व । गुप्त प्रकट होते तत्काल । इच्छानुरूप ।२१-२२। मानव होत गुप्त प्रकट । तो क्या न हो देव समर्थ । देव देवता पंचभूत । बढ़त बढ़त सामर्थ्य ।२३-२४। झोटिंग होते हैं वायुस्वरूप । उनके चलनेकी आवाज होत । खोबरा खाटक भी अकस्मात । वर्षा करते कभी कभी ।२५। कोई करते हैं अविश्वास । किन्तु जिसको आवे अनुभव । वो धरेगा ही विश्वास । ऐसी घटना पर ।२६। मानव करे परकाया प्रवेश । तो न करे क्या परमात्मा परेश । इसी प्रकार ब्रह्मा विष्णु महेश । धरते देह वायुरूप ।२७-२८। अयोनीसंभव इच्छामात्र । हुवे हैं हरिहरादिक । जीवसृष्टी का निर्माण । ब्रह्मदेवकी इच्छामात्र ।२९-३१। अंडज जारज स्वेदज उद्भिज । इच्छानुरूप चतुर्विध । किये ब्रह्मदेवने अनंत । लिंगभेदसे भिन्न प्राणी ।३२-३३। मानवोंकी गौडविद्या । राक्षसोंकी वोडंबरी विद्या । इसी प्रकार सृष्टिविधा । ब्रह्मदेवकी ।३४। मानुषी विद्यासे विशेस । है राक्षसोंकी विद्या श्रेष्ठ । राक्षस विद्यासे भी श्रेष्ठ । है सृष्टिविद्या ब्रह्माकी ।३५। ज्ञानी अज्ञानी किये निर्माण । वेदकथनसे बताया सन्मार्ग । इसी प्रकार सृष्टिनिर्माण । किया ब्रह्मदेवने ।३६। तब शरीरोंसे शरीर । नाना विकार सहित । बढ गयी सृष्टि अपार । किया पालन विष्णूनें ।३७। पालन किया सूक्ष्मरूपसे । जो मूलरूप ज्ञानकला के । किन्तु पश्चात् स्थूलरूपसे । किया निर्दलन दैत्योंका ।३९-४०।

नाना देहधारी अवतार। दुष्टोंके संहारार्थ। और धर्म स्थापनार्थ। हुवे विष्णूके बहु जन्म।४१। इसीलिए धर्मस्थापनार्थ जो नर। वे ही विष्णूके अवतार। होते हैं अभक्त दुर्जन। वे रजनीचर समान।४२। आ जाय जब रुद्रावतार। तब जीवसृष्टीका संहार। जल जाय सब ब्रह्माण्ड। प्रलयकालमें।४३-४४। उसका ही निरूपण। अगले समासमें करूंगा कथन। समझे जो पंचप्रलय। वही एक ज्ञानी।४५-४६।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बीजलणक्षनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिये प्रलय लक्षण। पिण्डमें होते हैं दो प्रकार। निद्रा एक एक मरण। देहान्तकाल।१। देहधारक तीनों मूर्ती। जब निद्रावश होती। वो है निद्राप्रलय स्थिति। ब्रह्माण्डकी।२। हो तीनों मूर्तीयोंका अंत। तो होता है ब्रह्माण्डका कल्पान्त। जानो उसको ही निश्चित। ब्रह्मप्रलय ऐसे।३। दो पिण्डमें दो ब्रह्माण्डमें। ऐसे चार प्रलय पृथिवीमें। किन्तु होता है जो विवेकमें। वो जानो प्रलय पंचम।४-६। जागृति व्यापार न रहे। निद्रा जब संचरे। या स्वप्नावस्था होवे। तो वह निद्राप्रलय।७। आतेही देहान्त समय। देहमें नाना रोग होत। छोड़ जाय पंचप्राण। रहता है तनु एक।८-९। नाम इसका मृत्युप्रलय। होता है जगमें प्रत्यक्ष। अब सुनिए तीसरा प्रलय। निद्रा प्रसंग ब्रह्माका।१०। तब मृत्युलोककी होती है गठड़ी। व्यापारशून्य होते हैं प्राणी। सूक्ष्मांशरूपसे करते वसती। वायुमें बहुतकाल।११। ब्रह्माको आतेही जागृति। पुनरपि रचना करे सृष्टि। किन्तु होतेही आयुसमाप्ती। आता है ब्रह्मप्रलय।१२। मेघ न वर्षे शतसंवत्सर। मृत्यु पावते सर्व जीव। द्वादशकलाओंसे तपे सूर्य। जल जाये पृथिवी।१३-१४। आकाशमें मार्तण्डज्वाल। पातालमें शेषका विषानल। दोनों ओर होते ही ज्वलन। कहां रहेगा भूगोल।१५। होतेही सूर्यतेज अधिकाधिक। महाभय कल्लोल होवे चारों ओंर। मेरुपर्वत भी गिरे सत्वर। पर्वत शिखरों सह।१६। अमरावती सत्यलोक। कैलासादि वैकुण्ठ। और भी समस्त लोक। भस्म होते।१७-१८। भस्म होतेही धरित्री पर। होवे शुंडाधारी पर्जन्य। जलमें मही भस्मित। निमीषमें होत।१९। हो जाय तब केवल जल। उसकाही शोषण करे अनल। जो कि समुद्रमें वडवानल। और वन्ही शिवनेत्रका।२०। पंचतत्व अहंकार महत्तत्व। इन सप्त पदार्थोंका जो आवरण। वो ही होता है एक अनल। सूर्य सहित विद्युल्लता।२१। ऐसे सब ज्वाल होते हैं एकत्र।

तब देवभी छोड़ देते देह । मिल जाते वायुमें पूर्वरूप । करते हैं अपना रक्षण ।२२। तो वायु ही होता है बलिष्ठ । वैश्वानरको मारे झड़प । बुझ जावे वन्ही सत्वर । रहे अकेला समीर ।२३। किन्तु है जो आकाश अनंत । उसमें होता है वायु विलीन । अष्टधा प्रकृति पुरुष-ईश्वर । होते हैं लीन निर्विकल्पमें ।२४-२५। वहां न वायु जगज्जोति । न वा जाणीव होती । केवल एक स्वरूपस्थिति । रहती है विशुद्ध ।२६। जो जो हो नामाभिधान । वो सर्व है प्रकृतिकारण । प्रकृति न हो तो क्या कथन । करना किस प्रकार ।२७। प्रकृति रहते ही करे विवेक । तो हो सके विवेकप्रलय । एवं पांच ही प्रलयनिरूपण । हुवा है इस प्रकार ।२८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पंचप्रलय निरूपणनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

उत्पत्ती स्थिति संहार । इनका हो गया विचार । परमात्मा निर्गुण निराकार । जैसा तैसा ।१। उद्भव स्थिति और नाश । इनका नाहीं वहां संबंध । आदि मध्य अवसान । हैं परिपूर्ण ब्रह्म ।२। है ही परब्रह्म सतत । बीचमें भासे यह भ्रम । भासे पर पावे नाश । कालान्तर ।३। उत्पत्ती स्थिति संहार । बीचमें ही होत जात । किन्तु है सबका नाश । कल्पान्तकालमें ।४। विवेकी है जो नर । वो पहलेही जाने सर्व । किन्तु भ्रमिष्ट लोगोंमें वह । क्या करेगा अकेला ।५-६। उस ज्ञानी का लक्षण । करता हूं निरूपण । जो है भ्रमिष्टों से विलक्षण । महापुरुष ।७। उसी पुरुषकी पहचान । मनमें ही करना उत्तम । इसीलिये करो श्रवण । भ्रमका ही निरूपण ।८। एक परब्रह्म परिपूर्ण । है सर्वदा निर्विकार । इससे व्यतिरिक्त जो भासमान । वो है सर्व भ्रमरूप ।९। त्रिगुण और पंचभूत । जिनको है कल्पान्त । वे सबही समस्त । हैं भ्रमरूप ।१०। मैं तूं है भ्रम । उपासना भी भ्रम । ईश्वरभाव भी है भ्रम । निश्चयात्मक ।११।

भ्रमेणाहं भ्रमेणत्वं भ्रमेणोपासका जनाः ।
भ्रमेणेश्वर भावत्वं भ्रममूलमिदं जगत् ॥१॥

इसीलिये सृष्टी भासत । किन्तु है भ्रम समस्त । किन्तु हैं जो विचारवन्त । वे ही एक धन्य ।१२। अब करूं भावनाभ्रमका विचार । देऊं कुछ दृष्टान्त । जिस समझ में आवे

पूर्ण । भ्रमका लक्षण ।१३। दूर देशमें करे भ्रमण । हो जाती है दिशाभूल । या प्रिय लोगोंका पड़े विसर । है वह भ्रम ।१४। सेवन करे उन्मत्त पदार्थ । तो दिखने लगे एकसे अनेक । भूतबाधा या व्यथा दारुण । है वह भ्रम ।१५। वेषधारी पुरुष या नारी । अथवा कोई जादूगिरी । अकारण संदेह धरो । हे वह भ्रम ।१६। किसी स्थानका नाहीं भान । चलता चलता भूले मार्ग । पट्टण में हुवा आश्चर्य-चकित । यह है भ्रम ।१७। वस्तु है अपनेपास । समझे खो गया तो दुश्चित । अपनेको विसरे आपन । इसका नाम भ्रम ।१८। सीखे जो जो वो विसरे । स्वप्नदुखसे भयभीत होवे । दुश्चिन्ह या अपशकुनसे । भंगे मन ।१९-२०। देख लिया वृक्षकाष्ट । मनमें लगे आया भूत । न हो कुछ तो भी घबराहट । इसका नाम भ्रम ।२१। कांच-भ्रमसे उदकमें गिरे । दर्पणमें की सभा सत्य माने । द्वार समझ दूर जावे । है वो भ्रम ।२२। एक है तो देखे अन्य । एक कहे तो समझे अन्य । भोजन के लिये आवें पितर । है वो भ्रम ।२३-२४। इस जन्ममें दिया दान । मिल जाय आगे अन्य जन्म । मनुष्यका नाम ही होवे प्रिय । है वो भ्रम ।२५। मृत मनुष्य स्वप्नमें आया । उसने कुछ मांग लिया । वही मनमें बैठ गया । है वो भ्रम ।२६। बोले है मिथ्या सर्व । किन्तु सामर्थ्य वांछे मन । ज्ञाता होके चाहे वैभव । है वो भ्रम ।२७। कर्मठको लगे ज्ञान हीन । या ज्ञानी करे निन्दा कर्म । मर्यादा करते उल्लंघन । हैं वो भ्रम ।२८। देहाभिमान कर्माभिमान । जात्याभिमान कुलाभिमान ज्ञानाभिमान मोक्षाभिमान । हैं ये सर्व भ्रम ।२९। समझे ना कैसा न्याय । ना समझे कैसा अन्याय । व्यर्थ ही बतावे अभिमान । है वो भ्रम ।३०। रहे न कुछ स्मरण । आवे न आगेका विचार । अखंड व्यर्थ अनुमान । है वो भ्रम ।३१। बिना प्रत्यय ओखद लेना । बिना प्रचित पथ्य करना । बिना प्रचित ज्ञान कहना । है वो भ्रम ।३२। बिना फल श्रुति करे प्रयोग । बिना ज्ञानके फल योग । अकारण भोग शरीर भोग । है वो भ्रम ।३३। लिखे ब्रह्मा भालपर । सटीदेवी पढे वो लेख । इसीप्रकार कल्पना अपार । हैं सब ही भ्रम ।३४। एवं भ्रमका बहुविस्तार । अज्ञानी जनमें रहे नित्य । बताया मैंने अल्प संकेत । समझने के कारण ।३५। भ्रमरूप है सर्व विश्व । क्या कहूं मैं अधिक । निर्गुण ब्रह्मके व्यतिरिक्त । है सर्व भ्रमरूप ।३६। ज्ञाताको नाहीं संसार । ऐसे बोलते बारंबार । गत ज्ञाताओंके चमत्कार । बताते रहते ।३७। उठता है यहां संशय । ज्ञानीयोंकी समाधी पूजन । करते बहुत लोक । तो क्या आती है प्रचित ।३८। वैसेही हो गये देवावतार । उनका ही चलता है सामर्थ्य । तो क्या वे वासना वश । हैं अब भी बिना देह ।३९। ऐसी आती है आशंका । तो आगे कथन सुनना । यहां तो समाप्त हुई कथा । भ्रम-

निरूपणकी ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे भ्रमनिरूपणनाम समास छठा ।।६।।

।। श्रीराम ।।

अवतारादिक ज्ञानी संत । सारासारविचारसे मुक्त । उनका सामर्थ्य जो चलत वो किस प्रकार ।१। ऐसी श्रोताओंकी शंका । तो सावधान होके सुनना । ऐसे बोले वक्ता । प्रतिवचन ।२। हो गये ज्ञानी मुक्त । उतके सामर्थ्यकी आती प्रचित । किन्तु आते नाहीं वे वापस । वासना वश ।३। होते हैं लोकमें चमत्कार । विश्वास भी रखते हैं लोग । किन्तु क्या होगा इसका कारण । यह देखना चाहिए ।४। होता है ज्ञानी जीवित । तो भी होते हैं चमत्कार । ऐसी भी आती है प्रचित । बहुत लोगोंको ।५। वे तो नाहीं जाते प्रत्यक्ष । किन्तु देखते उन्हे अन्य स्थल । ऐसा होता है चमत्कार । क्या है उसका कारण ।६। होता है लोगोंका भावार्थ । भावुकको देव यथार्थ । अन्यत्र कल्पना व्यर्थ । कुतर्कमय ।७। इच्छानुरूप पदार्थ । स्वप्नमें देखते हैं लोग । वो नहीं केवल स्मृतीजन्य । होते है प्रत्यक्ष ।८। कारण इसका स्व-कल्पना । स्वप्नमें आते हैं पदार्थ नाना । इसीलिये नाहीं समझना । ज्ञाताको है पुनर्जन्म ।९-१०। ज्ञानी हो गये मुक्त । उनके सामर्थ्यकी आती प्रचित । कारण इसका वे संत । चलते थे पुण्यमार्ग ।११। इसीसिये पुण्यमार्गसे जावो । देवका भजन बढ़ावो । न्याय छोड़के मत जावो । अन्याय मार्गसे ।१२। करो नाना पुरश्चरण । करो नाना तीर्थाटन । बढावो नाना प्रकार सामर्थ्य । वैराग्य बलसे ।१३। वस्तुपर निश्चयसे लगे ध्यान । तो ज्ञानमार्गसे बढे सामर्थ्य । इसीलिए एकान्तमें अभ्यास । करना अखंडित ।१४। निर्गुणका हुवा ज्ञान । इसीलिए सगुणका दुर्लक्ष । करो तो ज्ञाता अपयश । पावे दोनों ही ओर ।१५-१६। नाहीं भक्ति नाहीं ज्ञान । व्यर्थ ही आता है अभिमान । इसीलिए जप ध्यान । छोड़ना नाहीं ।१७। छोडे ज्ञाता सगुणभजन । वो कैसे होवे सिद्ध । इसीलिए सगुणभजन । छोड़ना नाहीं ।१८। निःकामबुद्धीसे जो भजन । वो त्रिलोकमें है निरूपम । बिना सामर्थ्य निःकाम भजन । करना अशक्य ।१९। सकाम भजनसे मिले फल । निःकाम भजनसे जुड़े भगवन्त । फल और भगवन्त । इनमें महदंतर ।२०। देवके पास हैं अनंतफल । फलाशासे देव दूर । इसीलिए भजो निःकाम । परमेश्वरको ।२१। निःकाम भजन है असामान्य । सामर्थ्य बढ़ेगा अमर्याद । वहां क्या होगा कामनाफल । है जो अति सामान्य ।२२। जो जो धरे मनमें भक्त । वो सर्वही स्वयं करे देव । वहां

भक्त और देव । रहते भिन्न भाव ।२३। देव-भक्तोंका सामर्थ्य । होते ही दोनों एकत्र । काल सामर्थ्य भी होवे निष्प्रभ । क्या तब अन्य कीटक ।२४। हो जब निःकाम भजन । और विशेष ब्रह्मज्ञान । तो उसके साथ त्रिभुवन । तुलना न पावे ।२५। तब बुद्धीका भी प्रकाश । होवे लखलखायमान । प्रताप कीर्ति और यश । रहे निरंतर ।२६। ब्रह्मनिरूपण विचार । और हरिभजनका गजर । वहां होते हैं तत्पर । प्राणीमात्र ।२७। जहां न घड़े भ्रष्टाचर । लुप्त न होवे वो परमार्थ । भंग न पावे समाधान । किसीका भी ।२८। सारासार विचारणा । न्याय अन्याय अखंड देखना । परमार्थबुद्धी पलटेना । ऐसी देन भगवन्तकी ।२९। भक्त हो भगवन्तसे अनन्य । देव बुद्धी देवं आपन । यदर्थसे है भगवद्वचन । सुनिए श्रोता ।३०।

"ददामि बुद्धियोगंतं येन मामुपयान्ति ते" ।

इसीलिए सगुण भजन । और विशेष ब्रह्मज्ञान । प्रत्ययजन्य समाधान । अत्यंत दुर्लभ ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सगुणभजननिरूपणनाम समास सातवां ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए प्रचितके लक्षण । प्रचित देखे वो ही सूज्ञ । और अन्य अभागे दीन । नाहीं जिनको प्रचित ।१। बिना परीक्षा नाना रत्न । लेवे तो न कोई लाभ । वैसे प्रचित न आवे तो व्यर्थ । है निरूपण ।२। हो तुरंग या शस्त्र । या बोने के लिये बीज । परीक्षा करके देवो द्रव्य । तब ही तुम सूज्ञ ।३। वैसे ही सुनते जावो निरूपण । किन्तु आनी चाहीए प्रचित । होवे जिससे आरोग्य । ऐसी लेवो मात्रा ।४। बिना प्रचित लेवे औषध । तो आरोग्यमें बिगाड़ संभव । वैसे अनुमानसे करना कार्य । है केवल मूर्खता ।५-६। बिना अनुभव सुवर्णका व्यवहार । करे तो फंस जावे सत्वर । वैसे बिनशोध अनुमानसे कार्य । ला सके प्राण संकट ।७-९। विश्वास धर लेना । भैंस या अन्नवस्त्र । ठग चोरोंका करना संग । है अनर्थकारक ।१०-१३। बोले कोई ताम्रका करूं सुवर्ण । धारण करे वेष मुद्रा अन्य । बतावे दिवालखोर वैभव । तो सबही झूठ ।१४-१५। वैसे प्रत्यय बिना ज्ञान । वहा कैसे समाधान । हुवा है बहुतों का अनहित । अनुमानसे ।१६। मंत्र तंत्रका उपदेश । देके ठग दिया लोक । जैसे वैद्यने मरवाया रुग्ण । न करके निदान

।१७। जब हो वैद्य कच्चा। तो प्राण जाय रुग्णका। इसीलिये अनवधानता। है क्या कामकी ।१८। अभ्यंतरमें सहे दुःख। पूछे वैद्य तो धरे लाज। तो क्या देना किसीको दोष। स्वयं ही आत्मघातक ।१९। ज्ञानी पर करे जो गर्व। डूबे वो अज्ञानकेकारण। यहां किसका हुवा घात। करो विचार ।२०। हुवा पापका खंडन। टल गया जन्ममरण। आवे ऐसी प्रचित। तो समाधान ।२१। देख लिया परमेश्वर। समझ में आया स्वयं कौन। हो जाय आत्मनिवेदन। तो पूर्ण समाधान ।२२। किसने बनाया ब्रह्माण्ड। बनाया उसने किमर्थ। देखलिया कर्ता मुख्य। तो पूर्ण सावधान ।२३। इनमें रह जाय संशय। तो परमार्थ किया वो अपूर्ण। डूब गया संशयमें पूर्ण। प्रचिती बिना प्राणी ।२४। है यह परमार्थका मर्म। असत्य कहे वो अधम। असत्य मानो वो अधमाधम। कहता हूं निश्चयसे ।२५। कहनेकी हो गयी सीमा। न जाने वो न समझे परमात्मा। कहूं नाहीं मैं, हे सर्वोत्तमा। तुम ही जानते ।२६। मम उपासनाका निर्धार। ज्ञान कहना साचार। मिथ्या कहूं तो वचन। प्रभूप्रत पावे ।२७। इसीलिये सत्य ही मैंने कहां। कि देखो है कौन कर्ता। मायोदभव भी कैसा होता। शोध करो मूलका ।२८। आगे भी यही निरूपण। करूंगा फिर भी प्रमाण। श्रोताओं देना अवधान। सुनिये जो कहता हूं ।२९। निरूपण है बहुसूक्ष्म। इसीलिये बोलूं वही बोल। जिससे आवे पूर्ण समझ। श्रोताओंको ।३०। प्रचित देखे तो अपने आप। उड़ जाय लोग-परिपाट। इसीलिए यह खटपट। करता हूं मैं ।३१। बोलूं लोग परंपरागत। तो डूब जाय समाधान। राखूं प्रचितसमाधान। तो उड़े परिपाट ।३२। ऐसे दोनों ओर संकट। इसीलिये बारंबार वही बोल। दोनों ही रक्षण करके अब करूंगा समाधान ।३३। परिपाट और प्रचित प्रमाण। दोनों रखके करूंगा निरूपण। श्रोताओं देवो अवधान। करो श्रवण आगे भी ।३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे प्रचितनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

आकाशमें हुवा वायु उत्पन्न। वैसे ब्रह्ममें मूलमाया जाण। उस वायुमें हुवे त्रिगुण। और पंचभूत ।१। वटबीज होता है अतिसूक्ष्म। उसमें न दिखता वटवृक्ष। किन्तु उसीसे होते हैं समूह। अनेक वटवृक्षोंके ।२। तैसी है मूलमाया बीजरूप। उसका ही हुवा है विस्तार। इसीलिए शोधना चाहिए रूप। मूलमायाका ।३। भासे वहां द्विविध रूप। विवेकसे देखना है प्रचित। निश्चलमें जो चंचल। है वो वायु ।४। वायुमें है

जाणीवकला । जगज्जोतीरूप सत्ता । वायु और जाणीवकला । मिलके होती है मूलमाया ।५। वायु ही है प्रकृति । और पुरुष जगज्जोति । पुरुष प्रकृति शिवशक्ति । इनके ही नाम ।६-८। वायुमें जो जाणीव विशेष । वो ही प्रकृतिमें है पुरुष । इस बातपर विश्वास । करना चाहिए ।९। वायु और जाणीव । हैं शक्ति और ईश्वर । या कहो अर्धनारी नटेश्वर । जैसे कहती लोकरीति ।१०। वायुमें है जो जाणीवगुण । वो है ईश्वरका लक्षण । उससे हुवे उत्पन्न । तीन गुण ।११। उन तीन गुणोंमें सत्वगुण । है केवल ज्ञानलक्षण । उसका देहधारी अवतार । वही विष्णु ।१२। उसके एकांशसे ही चाले जग । ऐसे है भगवद्गीताका वचन । एक जाणीवसे ही प्राणीमात्र । रहते हैं जीवित ।१३-१५। पक्षी श्वापद या कीटक । कोई भी हो प्राणीजात । उन सबोंमें जगज्जोती एक । संचरे निरंतर ।१६। जीवन का आधार जाणीव । इसीलिए जगज्जोती ऐसे नाम । वो जातेही प्राणीमात्र । पावते मरण ।१७-१८। मूलमायामें जो जाणीव । उसका ही यह विस्तार । जैसे उदकरूप तुषार । अणुरेणुसम अनंत ।१९। वैसे देव देवता और भूत । हैं सबही सत्य । स्वसामर्थ्यसे हैं फिरते । सृष्टीमें नित्य ।२०। संचार करते हैं वायुस्वरूप । स्वेच्छासे पलटते रूप । संकलपयुक्त जो हैं अज्ञान । उनको करते हैं बाधा ।२१। ज्ञाताको न होत संकल्प । इसीलिये न बाधा होत । तस्मात् करो अवश्य । आत्मज्ञानका अभ्यास ।२२। हो आत्माज्ञानका अभ्यास । तो होवे सर्व कर्म खंडन । इसका मिलेगा प्रत्यय । रोकड़ा प्रत्यक्ष ।२३। बिना ज्ञान कर्मका नाश । होगा नाहीं कल्पान्ततक । बिनासद्गुरु भी ज्ञान । है जोड़ना अशक्य ।२४। इसीलिये जावो सद्गुरुकी शरण । शोध शोध धरो सत्संग । तत्वविचार और विवरण करो अंतर्याम ।२५। यथानुक्रमसे तत्वमें तत्व । विलीन होतेही सर्व । रहे अपने ही अपना एक । तब सार्थकता अनायास ।२६। बिना विचार जो कर्म । वे सबही होते व्यर्थ । इसीलिए करो सर्वप्रथम । परमार्थका विचार ।२७। विचार करे तो पुरुष । न करे तो पशुतुल्य । ऐसे है ईशवचन । स्थल स्थलमें ।२८। सिद्धान्त साधनार्थ । पूर्वपक्षका खंडन । साधक पावे सिद्धान्त । साक्षात्कार होतेही ।२९। श्रवण मनन निजध्यास । प्रचितजन्य जब विश्वास । तब होवे साक्षात्कार बिनाकिये सायास ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे प्रचितनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

आकाश सदृश ब्रह्म श्रेष्ठ । अपार उसका अवकाश । निर्गुण निर्मल निश्चल ।

सदोदित ।१। 'परमात्मा' उसका नाम । और भी अनेक नामाभिधान । किन्तु है वो आदि अंत । जैसे तैसे ।२। विस्तीर्ण अनंत अपार । भासता है अवकाशरूप । किन्तु है निराभास । जैसे तैसे ।३। पाताल और अंतराल । है अनंत चारों ओर । कल्पान्त कालमें भी परिपूर्ण । रहता है अखंड ।४। ऐसे जो है अचंचल । उसीमें भासे जो चंचल । उसके भी बहुत नाम । कहते हैं त्रिविध ।५। अदृश्यको देना नाम । अदृष्टका बताना चिन्ह । होता है आवश्यक । समझाने के लिए ।६। मूलमाया मूलप्रकृति । था जो नाम शिवशक्ति । मूलपुरुष ऐसी भी ख्याति । है उस चंचलकी ।७। ऐसे हैं जो उसके नाम । इसी प्रकार जानना चाहिए प्रथम । व्यर्थ क्या बोलना उचित । जब नाहीं उसकी प्रचित ।८। न देखा जब उसका रूप । तब तक नाम का प्रयोग । करे तो भी अनुमानज्ञान । रहे संदिग्ध सर्वथा ।९। निश्चलाकाशमें पवन । आवाज करे गहन । किन्तु आकाश रहता है भिन्न । चंचलरूप वायुसे ।१०। तैसा निश्चल परब्रह्म । उसमें चंचल मायाका भास । किन्तु है वो भ्रमरूप । कैसे तो बोलूं अब ।११। गगनमें जैसे पवन । वैसे ब्रह्ममें हुवा चलन । इच्छा स्फुर्तिलक्षण । बहुरूप होने की ।१२। अहं ऐसी जाणीव या ज्ञान । वही है मूलप्रकृति जान । जिसने रचाया ब्रह्माण्ड । महाकारण शरीर ।१३। महामाया मूलप्रकृति । वही कारण-शरीर अव्याकृती । हिरण्यगर्भ और विराट नामिनी । स्थूल और सूक्ष्म ।१४। ऐसे ये पंचीकरण । ईश्वरके भी तनुचतुष्टय । पिण्डमें जो महाकारण जाणीव । वही ब्रह्माण्डमें मूलमाया ।१५। परमात्मा परमेश्वर । परेश ज्ञानघन ईश्वर । जगदीश जगदात्मा जगदीश्वर । हैं उस पुरुषके पुरुषके नाम ।१६। सत्तारूप ज्ञानस्वरूप । प्रकाशरूप ज्योतिरूप कारणरूप चिद्रूप । शुद्ध सूक्ष्म अलिप्त ।१७। आत्मा अंतरात्मा विश्वात्मा । द्रष्टा साक्षी सर्वात्मा । क्षेत्रज्ञ शिवात्मा जीवात्मा । देहमें कूटस्थ ।१८। इन्द्रात्मा ब्रह्मात्मा हरिहरात्मा यमात्मा धर्मात्मा वैवसात्मा । वरूण वायु कुबेरात्मा । ऋषिदेव-मुनिधर्ता ।१९। गण गंधर्व विद्याधर । यक्ष किन्नर नारद तुंबर । सर्व लोगोंका अभ्यंतर । है वो सर्वान्तरात्मा ।२०। चंद्रसूर्य तारामण्डल । भूमंडल मेघमंडल । ऐकवीस स्वर्ग सप्तपाताल । है चालक अंतरात्मा ।२१। ऐसी माया गुप्तवल्ली । अत्यंत विस्तीर्ण हो गई । अब सुनिए स्त्री-नामावली । उसी महामायाकी ।२२। मूलमाया जगदीश्वरी । परमविद्या परमेश्वरी । विश्वविद्या विश्वेश्वरी । त्रैलोक्यजननी ।२३। अंतहेतु अंतर्कर्ला । मौन्यगर्भाजाणीव कला । चपल जगज्योती जीवनकला । परापश्यंती मध्यमा ।२४। युक्ति बुद्धि मतिधारणा । सावधानता नाना चालना । भूतभविष्य वर्तमानका । जानती जो रहस्य ।२८। जागृति स्वप्न सुषुप्ती जाने ताटस्थता और तुर्या जाने । सुखादि सकल जाने । जाने मानापमान ।२६। वो है परम कठीन

कृपावन्ती । कोमल और स्नेहवती । भक्तलोभी परमक्रोधी । अमर्याद ।२७। शांति क्षमा विरक्ति भक्ति । अध्यात्मविद्या सायुज्यमुक्ति । विचारणा सहज स्थिति । है जिसकी ।२८। कथन की पुरुषनामावली । तदनंतर स्त्री नामावली । अब सुनिये नपुंसक नामावली । उस चंचलरूपकी ।२९। जाणपण अंतःकरण चित्त । श्रवण मनन चैतन्य । आते जाते जो जीवित । वही है वो चंचल ।३०। मैं-पण और तूं-पण । ज्ञातृभाव सर्वज्ञपण । जीवपण शिवपण ईश्वरपण । या वो है अलिप्तपण ।३१। हैं अनंत नामावली । किन्तु है वो एक जगज्जोती । विचारवन्त जानते स्थिति । सर्वान्तर आत्माकी ।३२। आत्मा जगज्जोती सर्वज्ञपण । तीनों ही एकरूप जाण । प्रमाण है अंतःकरण । ज्ञप्तीमात्र ।३३। पदार्थ हो गये असंख्य । पुरुष स्त्री नपुंसक नाम । कितने कहूं मैं अधिक । सृष्टिरचनानुसार ।३४। चालक सबका एक । अंतरआत्मा उसका नाम । आब्रह्मकीटक चालक । अनेकमें वो एक ।३५। वो कैसा अंतरात्मा । आवे समझ तो भी देखना । शरीरमें रहते ही रहेना । एक स्थल ।३६-३७। गगनमें उड़े अकस्मात । सरोवरपर होता है विस्तृत । देखे कोई पदार्थ । तो आत्मा उसके चारो ओर ।३८। जो जो पदार्थ दृष्टी देखे । उस पदार्थ सदृश वो होवे चंचलतामें वायुसे । है विशेष वो आत्मा ।३९। अनंत चक्षुरूप होवे । जिससे लोग रूप देखें । अनंत जिव्हा मन होवे । जिससे रस लेते और पहचानते ।४०। श्रोत्रमें सुनता है शब्द । घ्राणेंद्रियसे करवाता गंधज्ञान । त्वगिंद्रयसे करवाता है ज्ञान । शीतोष्णका ।४१। इसीप्रकार है वो ज्ञान का कारण । सबमें होते हुए भी विलक्षण । समझे वही लीला अगाध । जो जाने उसको ।४२। है न वो पुरुष ना नारी । बाल तरुण वा कुमारी । नपुंसकोंका सा देहधारी । किन्तु नाहीं नपुंसक ।४३। वो है सकल देहोंका चालक । सर्वकर्ता तो भी अलिप्त । वही क्षेत्रवासी क्षेत्रज्ञ । देहमें कूटस्थ ।४४।

"द्वविमौ पुरुषौलोके क्षरश्चाक्षर एवच ।
क्षरःसर्वाणिभूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥१॥

हैं सृष्टिमें द्विविध पुरुष । एक क्षर दूजा अक्षर । सर्वभूतोंका नाम है क्षर । अक्षरसे जानो कूटस्थ ।४५। उत्तम पुरुष वो और भी अन्य । है जो निःप्रपंच निःकलंक । निरंजन परमात्मा एक । निर्विकारी ।४६। चारों देहका करो निरसन । हो जावो देहातीत । देहातीत होतेही साधक बने अनन्य भक्त ।४७। नाशे जब देहमात्रा सर्व । तो 'अंतरात्मा' शब्दसे भी क्या काम । रहे तब निर्विकार एक । परब्रह्म ।४८। निश्चल परब्रह्म एक । चंचल है सब मायीक । ऐसा प्रत्यय निश्चयात्मक । लेना चाहिए विवेकसे ।४९। बोलूं न मैं

अधिक । जानो एक चंचल एक निश्चल । इनमेंसे कौन शाश्वत । ज्ञानसे जानो ।५०। असारका करके त्याग । लेवो है जो एक सार । सारासार नित्यानित्य विवेक । करते हैं ज्ञानी ।५१। जहां ज्ञानही होता है विज्ञान । मनही होता है उन्मन । वहां कैसे चंचलपण । लगे आत्मस्थितिको ।५२। कहने सुननेका नाहीं काम । चाहिए यहां स्वानुभव । बिना अनुभव जो श्रम । वही पाप ।५३। सत्यके समान नाहीं सुकृत । असत्यके समान नाहीं पाप । है ही नाहीं समाधान । प्रचितबीन ।५४। सत्यका ही अर्थ स्वरूप । मायाही है असत्य । हुवा निरूपण स्वरूपसहित । पापपुण्योंका ।५५। दृश्य पापका हुवा नाश । रहा पुण्य परब्रह्म । साधक होते ही अनन्य । होवे नामातीत वस्तु ।५६। स्वयं ही स्वतःसिद्ध । वहां नाहीं देहसंबंध । पापराशी होती दग्ध । इसी प्रकार ।५७। अन्यथा बिना ब्रह्मज्ञान । जो जो साधन । वो वो श्रम । उससे नाना दोषक्षालन । हो जाय कैसे ।५८। पापके कारण यह शरीर । पापही करे जब तदनंतर । तो क्या करना उपचार । जब अंदर ही है रोग ।५९। नाना क्षेत्रोंमें किया मुंडन । नाना तीर्थोंमें देहदंड । नाना निग्रहसे दिया कष्ट । इस शरीरको ।६०। नाना मृत्तिकासे क्षालन । तप्त मुद्रासे अंकित । यदि छीलेगा कोई चर्म । तो भी होवेना शुद्ध ।६१। न हो गौमूत्रसे पावन । या करे यदि रुद्राक्षधारण । या कोई अन्यसाधन । तो भी ना शुद्ध ।६२। बाह्यात्कारसे किया वेष । किन्तु अभ्यंतरमें भरा है दोष । तो उस दोषके दहनार्थ । चाहिए आत्मज्ञानकी ।६३। नाना व्रत नाना दान । नाना योग तीर्थाटन । इन सबसे हीं कोटिगुण । है महिमा आत्मज्ञानकी ।६४। आत्मज्ञान देखे जो सदा । उसके पुण्यकी नाहीं मर्यादा । दुष्ट पातकोंकी बाधा । होती है नष्ट ।६५। वेदशास्त्रोंमें जो सत्यस्वरूप । वही ज्ञानीयोंके हैं रूप । वो ही करता है पुण्य अमाप । सीमा नाहीं ।६६। है यह बात प्रचितकी । देखना प्रत्यक्ष आत्मदृष्टी । बिना प्रचित होना न कष्टी । कदाकाल ।६७। लेवो लेवो प्रचित । प्रचितबिन सर्व शोक । रघुनाथ कृपासे निश्चय । रहने दो अखंड ।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चलाचल निरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक ग्यारहवां भीमदशक

॥ श्रीराम ॥

आकाशमें होता है पवन । इसका तो आता है प्रत्यय । किन्तु वायुसे कैसे अनल । होता है यह सुनिए ।१। वायु बहताहै शीघ्रगती । तो उससे होता है वन्ही । किन्तु होता है मंदशीतल गती । तो उससे होता है आप ।२। जलसे हुई बीजरूप पृथिवी । जिससे हुई सर्व सृष्टी । कल्पनारूप जो थी । मूलमायामें ।३। मूलमाया से गुणमाया । सत्वरजतम त्रिगुण रूपा । वे गुण ही हो गये काया । ब्रह्मा विष्णु महेशकी ।४। निश्चलमें आया चंचल । वही कल्पनारूप केवल । अष्टधा प्रकृतिका मूल । कल्पनारूप ।५-६। पंचभूत और त्रिगुण । इनका ही नाम अष्टधा जान । पहले थे अतिसूक्ष्म । कल्पनारूप ।७-८। वही अष्टधा मूलमाया । जड़ सृष्टिरूप अविद्या । जिसमें चारों खाणी योनी नाना । हुए उत्पन्न ।९-१०। ऐसा सृष्टिका विस्तार । और उसका संहार । पिछले दशकमें विशद । हुवा है संपूर्ण ।११-१५। होतेही अविद्याका नाश । जीव शिव पिण्डब्रह्माण्ड । हुवे सबही समाप्त । रही एक स्वरूपस्थिति ।१६-१७। यह हुवा कालरूप प्रलय । किन्तु दूजा विवेक-प्रलय । जिसको किया था मैंने कथन । उसको न जाने मूर्ख ।१८। करे सकल सृष्टिका शोध । समझ आवे निश्चल चंचल । चंचलका कर्ता भी चंचल । है नाहीं वो अलिप्त ।१९-२०। या रंक ब्रह्मादिक राव । इन सब शरीरोंमें करत वास । इन्द्रियोंद्वारा सबका चालक । सर्बकर्ता ।२१। बोलते हैं उसको परमात्मा । किन्तु वो भी शब्द है मिथ्या । प्रत्यय आते ही न रहेगा । वो शब्द ।२२। श्वान सूकर गर्दभ । इनमें रहके उनकी आवाज । करे वो नाना प्रकार । पंडित लेते समदर्शन ।२३-२४।

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनिचैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शनः ॥१॥

देहके हैं नाना प्रकार । किन्तु देहाभ्यंतर है एक । ऐसे देखते हैं पंडित । प्राणीमात्र एक-रूप ।२५। होते हैं प्राणी असंख्य । किन्तु उनमें ज्ञानकला एक । जगज्जोती जाणीवरूप । है उसीका नाम ।२६। सुने कर्ण जो जो शब्द । जाने त्वचा जो शीतोष्ण । देखे चक्षु जो जो रूप । रसना चाखे जो रस ।२७। घ्राण जाने जो जो गंध । या कर्मेन्द्रियां विषय

स्वाद । सूक्ष्मरूपसे रक्षे जो स्थूल । भोगे जो सुख दुःख ।२८-२९। वो अंतरसाक्षी अंतरात्मा । चैतन्य विश्वात्मा सर्वात्मा । परमात्मा सूक्ष्मात्मा जीवात्मा । शिवात्मा तथैव ।३०। सत्तारूप साक्षी द्रष्टा । शरीरोंमें विकारकर्ता । ऐसे देखतेही प्रकार नाना । क्या कहेंगे हीनजन ।३१। कहेंगे वे उसको परब्रह्म । करेंगे सब एकाकार । समझते जो नाहीं इसे मायीक । वे केवल भीखारी ।३२। इसीलिये नित्यानित्यविवेक । करना चाहिये अखंड । जिससे समझ सके अंतर । चंचल और निश्चलमें ।३३। जाणता जीव प्राणरूप । जाने नाहीं वो अज्ञान । पावे जन्म जो जीव । है वो वासनात्मक ।३४। ऐक्यरूप जीव वो ब्रह्मांश । जहां होता है पिण्डब्रह्माण्डनिरास । किया यहां मैंने कथन । चत्वार जीव ।३५। रहने दो यह सब बात । जायेगा चंचल कालांतर । किन्तु रहेगा एक निश्चल । आदि अंतमें ।३६। आद्यमध्य अवसान । है वस्तु एक समसमान । निर्विकारी निर्गुण निरंजन । निसंग निप्रपंच ।३७। उपाधिका निरास होता । जीव-शीवकी होवे ऐक्यता । अनुभवसे देखा जाता । उपाधि नाहीं ।३८। जाननेका ही नाम ज्ञान । किन्तु ज्ञानका चाहिए अनुभव । तब उन्मन को कैसे मन । जान सके ।३९। वृत्तिको न समझे निवृत्ति । गुणोंको न होगी निर्गुण प्राप्ती । साधकको गुणातीत स्थिति । देते हैं संत ।४०। श्रवणसे श्रेष्ठ मनन । मनन से समझे सारासार । निजध्यास से साक्षात्कार । निःसंग वस्तु ।४१। निर्गुणके साथ अनन्यता । वो है मुक्ति सायुज्यता । वाच्यांश लक्ष्यांशकी वार्ता । रहने दो अब ।४२। अलक्ष्यमें हुवा लक्ष विलीन । अप्रत्यक्षमें प्रत्यक्षका दर्शन । ब्रह्मस्वरूपमें नाहीं अहंभाव । न होगा सिद्धान्तमें पूर्वपक्ष ।४३। रहे मायिक उपाधि । तो भी ब्रह्मस्वरूपमें समाधि । निश्चयसे दृढ होवे बुद्धी । श्रवणाभ्याससे ।४४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिद्धांतनिरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

एक निश्चल एक चंचल । चंचलमें मग्न हैं सकल । निश्चल तो निश्चल । है जैसे तैसे ।१। देखता है निश्चलका विवेक । ऐसा लक्षमें है कोई एक । निश्चलसम निश्चयात्मक । निश्चल ही वो ।२। निश्चल विषयमें बोलते लोक । किन्तु चंचलकी ओर धावते सकल । छोड़ जावे चंचलचक्र । ऐसा है विरला ।३। चंचलमें चंचलका जन्म । चंचलमें ही बढता है जीव । चंचलमें ही स्थिर होता है मन । जन्मभर ।४। पृथिवी स्वयं है चंचलमें । चंचलमें होता कर्मजात । चंचल छोड़के निश्चलकी ओर । जाये ऐसा है कौन

।५। चंचल न हो कदा निश्चल । निश्चल न हो कदा चंचल । करे कोई नित्यानित्य विवेक । तो समझ आवे अंशमात्र ।६। समझने लगे तो भी न समझे । संदेह अनुमान और भ्रमसे । चंचलकी ओर ही जाये । निश्चल न होवे कदा ।७-८। जितना चंचल उतनी माया । माईक जाय विलया । किन्तु निश्चल न हो ऐसे कदा । मर्म ऐसा निश्चल-का ।९। चित्रविचित्र नाना विकार । अष्टधा मायाका विस्तार । सूक्ष्मही हुवा स्थूल रूप । अमर्याद नानारूप ।१०-११। हुवे नाना शरीर निर्माण । नाना भाषा नामाभिधान । नाना रीति नाना आचार । नाना मत और पाषांड ।१२-१६। जैसी जैसी जनरूढ़ी । करते हैं वे वैसे ही । करे कौन रक्षा किसीकी । उदरभरणमें सर्व मग्न ।१७-१९। देवभी हो गये बहुत । भूत देवाताभी साथ साथ । समझे ना कौन मुख्य देव । रह गया सारासार-विचार ।२०-२२। शास्त्रोंका भरा बाजार । देवोंकी हो गयी भीड़ । लोग भी हुवे सकाम । होते है वे व्रताधीन ।२३। इसीप्रकार अस्थिर सर्व । सत्यासत्यका हुवाविसर । लोग सब निर्णायक । माने किसको कौन ।२४। मत मतोंका कोलाहल । असत्यका अभिमान । होते हैं सत्यसे पतित । शोधता एक ज्ञानी ।२५-२६। लोगोंके मत और आचरण । ज्ञाताको जैसे करतलमें आमलक । अब सुनिए आप सावधान । लोगोंकी रीत और प्रचित ।२७-२८। मृत्तिका धातु पाषाणादिक । देव-प्रतिमा हैं अनेक । बहुत लोगोंका विश्वास । है प्रतिमा-देवमें ।२९। नाना देवोंके अवतार । सुने हैं और अनेक । जप ध्यान निरंतर । करते है पूजा ।३०। और भी अन्य लोक । कहते हैं अंतरात्मा देव । विश्वमें रहता है नित्य । द्रष्टा साक्षी ज्ञानात्मा ।३१। और भी अनुभव एक । जिनका है ब्रह्मभाव अनन्य । देव निर्मल निश्चय । नाहीं कदा चंचल ।३२। एक नाना प्रतिमा । दूजा अवतार महिमा । तीसरा तो अंतरात्मा । चौथा निर्विकारी ।३३। ऐसे ये चत्वार देव । पूजते लोक भावानुसार । इनके व्यतिरिक्त और देव । कहीं भी नाहीं ।३४। चारों देव हैं एकरूप । नाम उसका साक्षी देव । ऐसे बोलते कोई एक । बिना ज्ञान प्रकृति ।३५। प्रकृतीमें है जो देव । वो है प्रकृति-सम चंचल । भावातीत जो महानुभाव । जानते उसको विवेकी ।३६। करे जो निर्मलका ध्यान । वो हो जाय निर्मल । जो जिसका करेगा भजन । वो होगा तद्रूप ।३७। क्षीर नीर करे भिन्न । जानो वो है राजहंस । सार-सारका करे विचार । वे हैं महानुभाव ।३८। अरे करे जो चंचलका ध्यान । वो सहजही होवे चंचल । जो करेगा निश्चलका भजन । होगा वो निश्चलही ।३९। प्रकृति सदृश बाह्यात्कार । अभ्यांतरमें रहने दो ब्रह्म । सत्यस्वरूप होके करो वर्तन । सामान्य लोगके

समान ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चत्वारदेवनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

असंख्य जन्मोंके अंत । मिलता है यह मानवदेह । तो नीतिन्यायसे वर्तन । करना चाहिए ।१। नियम बद्ध करो प्रपंच । तथापि करो परमार्थ विवेक । जिससे हो जाय संतुष्ट । लोग और देव ।२। शतवर्ष आयुष्यकी मर्यादा । गई अज्ञानमें बाल्यावस्था । तारुण्य भी निरर्थक गया । विषयसेवनमें ।३। वृद्धपणमें नाना रोग । भोगना पड़े कर्म विपाक । अब भतवन्तका योग । होगा किस कालमें ।४। ऐहिक दैविक उद्वेगचिन्ता । अन्न वस्त्र देहममता । अकस्मात देखत देखता । गया जन्म ।५। देखते हैं लोक प्रतिदिन । पितामहभी गये यह प्रचित । तो क्यों मानना निश्चित । है कोई शाश्वत ।६। जलने लगा है गृह । तो भी सोया है निश्चित । तो क्या नाहीं वो मानव । आत्मघातक ।७। डूब गया पुण्यमार्ग । हुवा बहुत पापसंग्रह । आगे है प्रसंग कठिन । यमयातनाका ।८। न करो ऐसे अब । धरो विवेकसे सन्मार्ग । साधो एक ही समय । इह और परलोक ।९। आलस्यका रोकड़ा फल । जूंभण और निद्रामग्न । इसीमें मानते हैं सुख । आलसी लोग ।१०। किन्तु करते हैं जो कष्ट । वे आगे भोगते सुख । खाते पीते सुख समाधान । नाना यत्न करनेसे ।११। आलस्यसे होता नाहीं यत्न । आलस्यसे बने भाग्यहीन । आलस्यसे होवे दुःखी दीन । है ऐसे प्रत्यक्ष ।१२। इसीलिए न करो आलस्य । तबही मिल जाय वैभव । जिससे होगा समाधान । अत्र और परत्र ।१३। प्रयत्न करना तो कौन । सुनिए करूं मैं निरूपण । अंतःकरण करो सावधान । किंचित्काल ।१४। उठो तुम प्रातःकाल । करो परमार्थ पर वाचन । सर्वोत्तम श्रीराम का स्मरण । करो अधिकाधिक ।१५। जावो अति दूर एकान्त । करके मलमूत्र विसर्जन । करो मुखमार्जन प्रातःस्नान । संध्यादि देवार्चन ।१६। वैश्वदेव उपासना । करना सर्व यथासांग । लेवो फलाहार जो उचित । करो सुखसे संसार ।१७। जो जो जिसका व्यापार । उसमें रहो बहुदक्ष । सुशब्दसे करो लोग संतुष्ट । न हो कभी दुश्चित ।१८-१९। आलसी या दुश्चित होवे । तो वो फंसे या विसरे । उसके स्मरणसे दुःख पावे । ऐसा है लोगानुभव ।२०। इसीलिये सावधान । एकाग्र करो मन । तबही तुमको भोजन । देवे समाधान ।२१। भोजनोत्तर नाना ग्रंथ । करते जावो अवलोकन । चर्चा या एकान्त चिंतन । करना ज्ञान हेतु ।२२-२३। व्यर्थ न जाने दो एक

क्षण। करो व्यवसाय और ज्ञानसाधन। यही है सदैवलक्षण। प्रपंच और परमार्थमें ।२४। प्रथम करो धनसंपादन। पश्चात् लोगों का समाधान। इसी प्रकार देहका सार्थक करो तुम ।२५। तथा धर्म चर्चा पुराण। हरिकथा निरूपण। व्यर्थ न करो एक क्षण। प्रपंच हो या परमार्थ ।२६। ऐसा जो सर्वसमाधान। वो कैसे होवे खिन्न। विवेकसे टूटता है संबंध। देहबुद्धीका ।२७। जो कुछ भी है सर्व। वो है सब ईश्वराधीन। ऐसा हो जब निश्चय। टूटे उद्वेगका मूल ।२८। प्रपंचमें चाहिए सुवर्ण। परमार्थमें पंचीकरण। महावाक्यों का विवरण। करे तो न रहे उद्वेग ।२९। कर्म उपासना और ज्ञान। इससे राखो समाधान। परमार्थक जो साधन। सुनते रहो ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिकवणनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म है निराकार। गगनसदृश उसका विचार। विकार नाहीं इसीलिए निर्विकार। है वह ब्रह्म ।१। ब्रह्म है निश्चल। अंतरात्मा है चंचल। इसीलिए है वह केवल। द्रष्टा साक्षी ।२। वही अंतरात्मा है देव। रहे सबके अभ्यंतर। सकल जीवोंका करे पालन। किन्तु है वो चंचल ।३। जहां न अंतरात्मा देव। वहां हैं जड़ पदार्थ। परमार्थ भी न आवे समझ। देह भी व्यर्थ ।४। कर्ममार्ग उपासना मार्ग। ज्ञानमार्ग सिद्धांतमार्ग। प्रवृत्तिमार्ग निवृत्तिमार्ग। देव ही इनका चालक ।५। समझे चंचल तो समजे निश्चल। किन्तु चंचल ना होवे कभी स्थिर। ऐसा जो इनमें भेद। विचारसे देखो ।६। चंचलनिश्चलोमें जो संधीप्राप्त। वहां होती है बुद्धि भ्रान्ता। विधियुक्त जो कर्ममार्ग। है वो इसीकारण ।७। देव इन सबका है मूल। देवको नाहीं शाखा या मूल। किन्तु परब्रह्म है निश्चल। निर्विकारी ।८। निर्विकारी और विकारी। कहे एक वो भिखारी। विकार का विचार नाश करी। देखत देखता ।९। सकल परमार्थका मूल। पंचीकरण महावाक्य केवल। वही करते जाना प्रांजल। पुनः पुनः ।१०। पहला देह स्थूलकाया। अष्टम देह मूलमाया। नाश होनेपर अष्टदेहो का किसको होगा विकार ।११। इसीलिये निर्विकारी और विकारी। सत्यस्थिति और जादूगिरी। सूज्ञ समझे एकरूप नाहीं। मूर्ख समझे दोनों एक ।१२। उत्पत्ती स्थिति संहार। इनके अतिरिक्त निर्विकार किन्तु यही समझनेके कारण। चाहीए विचार ।१३। सार असार दोनों एक। तो कहां रहा विवेक। परीक्षा जानते नाहीं रंक। पापी और करंटा ।१४। है जो एक स्थिरआत्मा। उसका ही नाम अंतरात्मा। हुवा जो विकारी

नाना । वो नाहीं निर्विकारी ।१५। ऐसे है यह प्रकट । देखना चाहिए प्रचीत । अन्यथा शाश्वत और अशाश्वत । आवे नाहीं समझमें ।१६। जो अखंड होत जात । जो सर्वदा संहारत । सबको ही प्रचीत । आती है उसकी ।१७। एक रोवे एक हंसे । एक गलकट्टन होवे । एकदूसरेके साथ लड़े । एक होवे दीन हीन ।१८। नाहीं न्याय नाहीं नीति । ऐसी है वर्तन रीति । और कहते है सार यही । विवेकहीन ।१९। पाषाण छोड़के लेवो सुवर्ण । मिट्टी छोड़के लेवो अन्न । क्या कहेंगे सर्वही है सारी । मूर्खतासे ।२०। इसीलिए करो विचार । जावो सत्यमार्गकी ओर । समझपूर्वक लेवो लाभ । परमार्थका ।२१। सारासार करेगा एक । वो है परीक्षावन्त । इसीलिए है जो चतुर । करेगा वो परीक्षा ।२२। परीक्षाका है जहां अभाव । वहां लेना देना है दुःख । सबमें रखना समसमान भाव । है केवल मूर्खता ।२३। लेना योग्य जो वही लेवो । न हो योग्य वह छोड़ो । श्रेष्ठ नीच पहचानो । नाम इसका ज्ञान ।२४। आकर संसारके बाजार । हुवे कोई एक अमर । दूजे ठगे गये भाग्यहीन । गंवाया धन आयु ।२५। न करके ऐसे सूज्ञ । लेता है केवल सार । छोड़े आसार विचारपूर्वक । वमन जैसे ।२६। वमन का करे जो सेवन । वो है श्वानके समान । उसी क्रिया का आचरण । करे ना ब्राह्मण ।२७। जिसने किया जैसा संचित । उसको होवे वैसेही प्राप्त । जिसका जो होता है अभ्यास । उसको वही उत्तम ।२८। एक करे दिव्यान्न भक्षण । एक कीचड़में रहे मग्न । एक परंपरागत आज्ञान । मानते हैं प्रमाण ।२९। एवं विवेकबिन भाषण । होगा श्रम का कारण । इसीलिए श्रवण मनन । करो बारबार ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विवेकनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

।। श्रीराम ।।

करो सुकर्म बार बार । धरो ध्यान बारंबार । करो विवरण बारंबार । परमार्थ निरूपण ।१। वैसे ही करूं मैं अब । उसीका करूं कथन किया कथन । जिससे होगा समाधान । पूर्णतया सुदृढ़ ।२। किया है जो लोकसंग्रह । वो रहना चाहिए अनन्य । इतर जनको भी आकर्षण । होना चाहिए ।४। मुख्य हरिकथा निरूपण । दूसरे राजकारण । तीसरे है सावधपण । सर्व विषयोंमें ।४। चौथा दक्षता अत्यंत । लोंगोंके आक्षेपों का निरसन । अन्याय स्वल्प या महान । करते जावो क्षमा ।५। जानो लोगोंका अभ्यंतर । निरंतर रहो उदासीन । नीति न्यायमें अंतर । न पड़ने दो कदाकाल ।६। उच्च हेतुसे लोक

संपादन । करना उनको प्रबोध । प्रपंचही करो उत्तम । यथाशक्ति ।७। प्रसंगसमयानुसार । धरो बहुतही धैर्य । किन्तु होने न दो संबंध । अतिपरिचयका ।८। उपाधीका करो विस्तार । न होवो किन्तु उपाधीसे लिप्त । करो स्वयं निम्नका अंगीकार । और मूर्खपण भी ।९। ढक दो लोगोंके दोष । बोलो न उनके अवगुण । दुर्जनोंपर भी उपकार । करते जावो ।१०। नाना उपायोंका करो विचार । वर्तन करना सुसंगत । कार्य करो कुछ अद्‌भुत । दीर्घ प्रयत्नसे ।११। समुदायका न करो नाश । कार्यका करो संरक्षण । करना नाहीं अतिवाद । किसीके साथ ।१२। दूसरोंके जानो अभीष्ट । दूसरोंके लिये करो सहन । हो न सहन तो करो गमन । उस स्थानसे ।१३। जान लो सबका दुःख । सहभागी होके करो समाधान । स्वहित हो या अनहित । सहन करो समुदायका ।१४। अपार करो पाठांतर । सन्निध ही रखो विचार परोपकारार्थ तत्पर । रहो सदासर्वदा ।१५। स्वयं हो शांतस्वभाव । पश्चात् दूसरेको भी तदनुसार । करो करवावो महत्कार्य । सबके साथ ।१६। करना हो यदि अपाय । तो बोलो न वह विषय । करवावो परस्पर । जिससे आवे प्रचीत ।१७। लोग-पीडा न करे जो सहन । वो न कर सके लोकसंग्रह । किन्तु सहन करे यदि अमर्याद । तो न रहे महत्व ।१८। बहुत करो राजकरण । किन्तु करना अति गुप्त । तथापि न दो अंतःकरण । परपीडा पर ।१९। लोगपरीक्षा राजकारणार्थ । करके छोड़ दो अभिमानी लोक । उनका भी समयानुसार संग्रह । करो दूरान्वयसे ।२०। तामस जनको रखो दूर । कायरको न बोलो वचन । हो यदि उनका संबंध । तो भी छोड़ो सत्वर ।२१। ऐसे है राजकारण । कहनेमें असाधारण । सुचित्त हो अंतःकरण । तो होता है सुदृढ़ ।२२। वृक्षारूढ जो भयभीत । उसको देवो संरक्षण । किन्तु युद्धकर्ता हो शूर । तो हटावो सामर्थ्यसे ।२३। लोग चाहेंगे देखूं ऐसा कौन । किन्तु वो न मिले किसी स्थान । क्या है उसको किर्तिका लोभ । या वैभव-अभिलाषा ।२४। अहेतुक किसीका रक्षण । अहेतुक किसीका द्वेष । हैं न ये चातुर्यके लक्षण । राजकारणी पुरुष के ।२५। माने न न्याय भाषण । माने न हितोपदेश । ऐसे नाहीं उसका वर्तन । है वो एक त्यागमूर्ती ।२६। श्रोता करता है आक्षेपवचन । इसीलिये करता हूं कथन । उसमें जो होगा कुछ न्यून । इसीलिये क्षमस्व ।२७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे राजकारणनिरूपणनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

लिखो शुद्ध और स्पष्ट । फिर भी देखो है वो शुद्ध । पढो लिखा है जो शुद्ध । बिना त्रुटी ।१। प्रत्येक अक्षर अलग अलग । सुवाच्य और सुंदर प्रकार । सुरंग और रसपूर्ण । लिखो नाना ईश-कथा ।२। स्वानुभव कहना है कठिन । इसीलिए कहो निश्चित और स्वल्प । यह न होगा बिना विचार । अथवा बिना प्रचीत ।३। हरिकथा निरूपण । निश्चयपूर्वक राजकारण । वर्तन प्रकार और लक्षण । कहना चाहिए ।४। पूछना कहना अर्थान्तर समझना । दीर्घ सूचना तर्कसे करना । सबका समाधान रखना । जाने यथा-योग्य ।५-६। इसी प्रकार जाने जो समस्त । वही है महंत बुद्धिवन्त । और इतर सब मतिमंद । जानते नाशवन्त ।७। ताल लय तानमान । प्रबंध काव्य सार्थ वचन । सभाधीटता और चातुर्यलक्षण । है जिसके पास ।८। जो एकान्तके लिए तत्पर । करे बहुत पाठान्तर । अथवा शोधे अर्थान्तर । ग्रंथ गर्भस्थ ।९। सीखे स्वयं सिखावे अन्य । वही पावे श्रेष्ठ पद । संशयग्रस्तका करे निवारण । विवेकबलसे ।१०। अक्षर सुंदर वाचन सुंदर । बोलना सुंदर चालना सुंदर । भक्ति ज्ञान वैराग्य सुंदर । करके बताये प्रत्यक्ष ।११। है जो परम यत्नशील । नाना प्रसंगोंमें अग्रेसर । कभी धीर कभी कायर । ऐसा नाहीं ।१२। संकटोंमें धरे धैर्य । उपाधियों के साथ समरस । किन्तु रहे अलिप्त । सदोदित ।१३। रहता है वास सर्वस्थान । न मिले करने पर शोध । जैसे अंतरात्मा होता है गुप्त । यद्यापि है वो सर्वत्र ।१४। उसके सिवा नाहीं अन्य । किन्तु न दिखे करनेपर शोध । तो भी करवाता है कर्म । प्राणीमात्रोंसे ।१५। वैसे महंत भी करके नाना यत्न करता है जनोंको सूज्ञ । नाना विद्या स्थूल सूक्ष्म । बताता है उनको ।१६। इसीप्रकार जो जो जन । होते हैं महंतसे सूज्ञ । वो सहज ही उसके पास । आवे परमार्थकारण ।१७। ऐसी है परमार्थ महती । जिससे रहती नीतिन्याय महती । सहसा न होत अन्यथास्थिति कठिन प्रसंगमें भी ।१८। ऐसा श्रेष्ठ धारणा-पुरुष । होता है बहुतोंका आधार । रघुनाथ-कृपासे पावे गुण । कहे रामदास ।१९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे महंतलक्षणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

मायारूप नदी चंचल । उसमें ज्ञानगंगा है गुप्त । जो करती है जग पावन । स्मरण

मात्रसे ।१। हुई अचंचल ब्रह्ममें निर्माण । किन्तु अदृश्य रहती है सदैव । यद्यपि बहती है वो अखंड । प्रवाह रूपसे अधोमुख ।२। जल धारा है प्रचण्ड । आवाज होता है खलखल । इधर उधर धावे उदक । तरंग फेन रूपसे ।३-५। ऊपरसे गिरनेसे मृदुभूमी । टूट गई मेदिनी । रहे पाषाण कठिन वैसे ही । कचरा पूरके साथ ।६-७। कित्येक बहते बहते गये । कित्येक आघातसे मरे । कित्येकके देह फूल गये । भरा जल अंदर ।८-९। कोई एक बलवान शूर । तैरता गया उगमकी और । उगमदर्शनसे हुआ पावन । तीर्थरूप ।१०। वहां है ब्रह्मादि देवोंके भुवन । ब्रह्माण्ड देवताओंके स्थान । उलट प्रवाही गंगादर्शन । होता है वहां ।११। उस जलसम नाहीं निर्मल । जलसम चंचल नाहीं अन्य । आपो-नारायण केवल । है उसका नाम ।१२। महानदीका विस्तार । स्वर्गमृत्यु पातालपर । अंतरालमें भी प्रत्यक्ष । बहती है सर्वकाल ।१३। अध ऊर्ध्व दिशाअष्ट । व्याप्त करे उसका उदक । जानते हैं ज्ञानीपुरुष । उसको जगदीश सम ।१४। भरे हैं जलसे अनंत पात्र । किन्तु सत्पात्रोंमेंसे झर जात । कुपात्रोंको तो संसारकी ओर । ले जाते हैं सत्वर ।१५। एकको लगता है मधुर जल । एकको लगता तीखा व क्षार । एकको कड़वा या तीष्ण । एक है वो जलअनुपम ।१६। जिस पदार्थको वो मिले । तत्काल उसके तद्रूप बने । विषके साथ विषही होवे । अमृतके साढ अमृत ।१७-१८। सुगंध हो गया दुर्गंध । गुण हो या अवगुण । उसीप्रकार है वो होत । जाने वही अपनी महिमा ।१९। बहता है जल अपार । है यह नदी या सरोवर । जलवास करते हैं कित्येक । उगमसे पार भी गये ।२०। वहांसे जब देखते उलट । तो जलही हो गया शुष्क । तो कौन कहेगा वहांका विचार । मायाविरहीत स्थितीका ।२१। वही है वृत्तिशून्य योगेश्वर । करना चाहिए इसका विचार । कितना कहूं मैं बारबार । बोले रामदास ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे नदीनिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

सकल सृष्टीका जो कर्ता । समस्त देवोंका जो भर्ता । उसकी करता हूं वंदना । भजन कार्यार्थ ।१। उसके बिना न चले कार्य । न हिले वृक्षपर्ण भी एक । चले त्रैलोक्य भी समस्त । सामर्थ्यसे जिसके ।२। है वो सबका अंतरात्मा । देव दानव मानवोंका । चत्वार खाणी चत्वार वाणीका । प्रवर्तक ।३। घट घटमें है वो एक । करता है कार्य भिन्न भिन्न । सकल सृष्टि-घटना कारक । कहां तक वर्णू प्रभाव ।४। ऐसा जो गुप्तेश्वर ।

कहना उसको ईश्वर। सकल भोग महदैश्वर्य। होते जिस सत्तासे ।५। जिसने देखा ऐसा देव। होता है वही विश्वंभर। सहजस्थिति समाधी तब। क्या होगी उसके सामने ।६। करे जब त्रैलोक्य का विचार। तो ही समझ आवे मर्म। वस्तु श्रेष्ठ अकस्मात। मिले नाहीं कदापि ।७। अंतरात्माका करे शोध। ऐसा है मानव कौन। अल्प स्वल्पसमाधान। मिले तो भी भाग्य ।८। अरे यह देखते ही देखते जावो। विवरण करते ही विवरो। पठन करते ही पठन करो। पुनः पुनः ।९। कितना महान अन्तरात्मा। कैसी आत्मदर्शी अवस्था। बिना देखे भी कहेगा। विवेक कोई ।१०। मानो किसीने सुना और देखा। तो भी क्या उसने पूर्णतया देखा। प्राणी देहधारी बापुडा। क्या जाने अनंतको ।११। जब न हो विवरण अखंड। तो कैसे पूर्णको जाने अपूर्ण। करे जो विवरण अहर्निश। वो न रहे देवसे भिन्न ।१२। न हो देवसे विभक्त। तब ही हो तुम देवभक्त। अन्यथा व्यर्थ है प्रयत्न। श्रमके कारण ।१३। किसी एकने देख लिया घर। किन्तु घरधनीकी नाहीं पहचान। या आया राजधानीसे अन्य। किन्तु जाने ना राजा कौन ।१४। देहसंगमें लिया विषय भोग। देहसंगसे प्राणी जीवित। किन्तु जानते नाहीं देहधर्ता कौन। यह महदाश्चर्य ।१५। ऐसे लोक अविवेकी। कहते हैं 'हम विवेकी'। हैं जैसे वैसे करती। कौन क्या करे यहां ।१६। मूर्खही न जाने ऐसे नाहीं। सूज्ञभी हो गए दैन्यरूपी। भटकते घरघर अज्ञानी। भूलके निजधाम ।१७-१८। देवका धरे ध्यान। ऐसा सृष्टीमें है कौन। एक-देशी वृत्तीसे चले ना काम। देव दर्शन लेना हो तो ।१९। ब्रह्माण्डमें हैं असंख्य प्राणी। बहुरूपी बहुवाणी। भूगर्भमें और नाना योनी। इनमें है एक ही देव ।२०-२१। उड़ जाय तत्वसे तत्व। हट जाय देहबुद्धि तब। निर्मल निश्चल निरंजन। रहे वह परब्रह्म ।२२-२३। आपन कौन इसकी प्रचीत। आ जाय जब हो विवेक। किन्तु न आवे यह समझ। मंदबुद्धि जीवको ।२४। इसीलिए धरो विवेक। तर जावो दुस्तर संसार। सब वंशका करो उद्धार। हरिभक्ती करके ।२५।

इति श्री दासबोवे गुरुशिष्यसंवादे अंतरात्माविवरणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

सबसे पहले एक मुख्य। कर्म करना यथासांग। जहां जहां होवे प्रत्यवाय। वहां करो हरिस्मरण ।१-२। अब वो हरि है कैसा। विचार करो तुम ऐसा। संध्यापूर्व स्मरण करना। चौबीस नामोंसे जगदीश ।३। चौबीस नामी सहस्त्रनामी। अनंतनामी वो अनामी।

है वो ही अंतर्यामी। पहचानो विवेकबलसे ।४। ब्राह्मणनेकी स्नानसंध्या। तब वो देवार्चन करने लगा। यथासांगकी उसने पूजा। प्रतिमा-देवकी ।५। नाना प्रतिमा देव। लोक पूजेत सप्रेम। किन्तु है जिसकी प्रतिमा। वो देव है कैसा ।६। उस देवकी करने पहचान। करना चाहिए भजन। जैसे साहेबको नमस्कार। करते है पहचानपर ।७। तैसा परमात्मा परमेश्वर। विचारबलसे करो पहचान। तबही हो जाय पार। भव सागर ।८। पूजा लेते है प्रतिमा। अंगमें आता है अंतरात्मा। अवतारीदेव निजधामा। प्रत आके गये ।९। किन्तु रहते हैं वे निजरूपसे। वो निजरूप रहे ज्योतिरूपसे। वही ज्योति सत्वगुणरूपसे। रहती है ज्ञानकला ।१०। उस ज्ञानकलामें अंतर्भूत। हैं कोटचानुकोटी देव। यह है अनुभवकी बात। देखना चाहिए प्रत्यय ।११। देहपुरमें ईश। इसीलिए है वो पुरुष जगमें वसा जगदीश। पहचानना चाहिए ।१२। जाणीवरूपसे जगदांतरमें। रहता है शरीरमें। अंतःकरणरूप विष्णू ऐसे। समझना चाहिए ।१३। वो विष्णु है जगदांतरमें। वही है अपने अभ्यंतरमें। चतुरही जाने अपने मनमें। देव है कर्ता भोक्ता ।१४। सुने देखे सूंघे चाखे। विचार करे और पहचाने। आप पर भाव अंतर समझे। है एक ही जीवनकला ।१५। किन्तु देहलोभ और अभिमान। इससे भासती है भिन्न भिन्न। इसीलिए देहधारी जीव। त्रैलोक्यमें होत जात ।१६-१७। त्रैलोक्य वर्तविता एक। इसीलिए त्रैलोक्य नायक। ऐसा प्रचितीका विवेक। क्यों न करते लोग ।१८। ऐसा है अंतरात्माका रूप। किन्तु वो भी तत्वोमें है अंतरर्भूत। इसके आगे करना चाहिए विवेक। महावक्योंका ।१९। देखो पहले देहधर्ता तो कौन। पश्चात् उसको ही देखो जगदांतर। तबही पश्चात् परब्रह्म। पावोगे तुम ।२०। परब्रह्मका विचार। होतेही समझे सारासार। चंचल नाशवन्त ऐसा निर्धार। हो जाय दृढ ।२१। उत्पत्तिस्थिति संहार। इससे अस्पृष्ट है निरंजन। यहां ज्ञानका विज्ञान। होता है अनायास ।२२। अष्टदेहका अभिमान। जब हो ज्ञानसे निरसन। तब रहे जो निरंजन। वही है विमल ब्रह्म ।२३। विचारसे होवे जो अनन्य। होवे वो द्रष्टासे अभिन्न। किन्तु प्रत्यय है वृत्तिरूप। इसीलिए देखो निवृत्तीको ।२४। रहे तब पीछे वाच्यांश। लक्ष्यांशका छोड़े जब अभिमान। उसी क्षण था जो वृत्तिलेश। वो ही गया ।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उपदेशनाम समास नौवां ॥९॥

|| श्रीराम ||

मूर्ख देखता है एक ओर। चतुर देखता है सर्वत्र । जैसे अंतरात्मा नाना सुख । बहुरूपी बनके भोगे ।१। वहीं अंतरात्मा महंत । वो क्या होगा संकुचित । प्रशस्त जाणता समस्त । विख्यात योगी ।२। कर्ता भोक्ता तत्वता । भूमंडलमें सर्व सत्ता । उसके सिवा उसका ज्ञाता । है दूजा कौन ।३। ऐसे चाहिए महंतको रहना । सर्व सार शोध लेना । सहसा नाहीं आना । लोग दृष्टीमें ।४। कीर्तिरूपसे होता है ख्यात । जानते उसको आबालवृद्ध । वेष देखे तो शाश्वत । एकही नाहीं ।५। कीर्तिरूपसे तो प्रकट । किन्तु देखते न लोक प्रत्यक्ष । इसीलिए चमत्कार । लगता है लोगों को ।६। माने वेषभूषण है दूषण । कीर्तिभूषण ही भूषण । उद्योग बिना एकक्षण । जाने न दे कदापि ।७। जिनसे है पहचान । और उसको जो जानते हैं लोग । उन सबका करके त्याग । घरे संग नूतन ।८। न देखे न बोले बहुत । न रहे सतत एक स्थान । परीक्षा करते हैं लोग । किन्तु रहे वो निस्पृह ।९। कहता नाहीं जानेका स्थान । कहे तो भी जावे स्थानांतर । करते हैं लोग अनुमान । किन्तु न जानते वे किमपि ।१०। लोग करते है नाना तर्क । किन्तु करता है वो सब निष्फल । लोग हैं जहां तत्पर । वहां उसकी अनिच्छा ।११-१२। ऐसा जो योगेश्वर । उसके विषय में न चले तर्क । समझे ना उसका अभ्यंतर । ना उसका दर्शन ।१३-१४। रहता है नित्य भजनमग्न । सर्वकाल करे कथा कीर्तन । व्यर्थ करके संकल्प विकल्प । लोग होते लज्जित ।१५। ऐसा हो जो योगेश्वर । करता है वह महत्कृत्य । इसीलिये चाहिए एकान्त । और अखंड अभ्यास ।१६। होवे स्वयं गुणालंकृत । जन को ही उपदेश देत । और उनके साथ कालसार्थक । करे गुप्त रह कर ही ।१७-१८। कार्यमें सदा व्यापृत । जनको बतावे उपासनामार्ग । लोक भी समझ के चाहत । सेवार्थ आज्ञा उसीकी ।१९। पहले कष्ट पश्चात् फल । कष्ट नाहीं तो निर्फल । न करे प्रयत्न तो केवल । वृथा पुष्ट ।२०। करके लोगोंकी परीक्षा । जानो उनकी अधिकार मर्यादा । उनकी समीप या दूर रखना । करो विचारपूर्वक ।२१। अधिकारानुरूप होवे कार्य । अधिकार न हो तो जाय व्यर्थ । इसीलिए परीक्षा नाना प्रकार । करना चाहिए ।२२। अधिकार समझके कार्य कहना । प्रयत्नशील हो तो विश्वास धरना । अपना भी कुछ हेतु रखना । अत्यंत गुप्त ।२३। हैं ये मेरे प्रचितीके बोल । स्वानुभवके पश्चात् मेरा वचन । चाहे तो करो मान्य । या अमान्य ।२४। महंतकों कहना चाहिए महंत । युक्तिबुद्धिसे परिपूर्ण । नाना

देशमें परमार्थ प्रसारार्थ। उनको भेजना चाहिए।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निस्पृहवर्तणुकनाम समास दसवा ॥१०॥

दशक बारहवां विवेकवैराग्यनाम

॥ श्रीराम ॥

करो प्रपंच नीतियुक्त। लेवो परमार्थका भी विवेक। करो न यहां आलस्य। विचारवन्त लोगों हे।१। प्रपंच छोड़के करोगे परमार्थ। तो करना पडे सहन कष्ट। प्रपंच परमार्थ साथ साथ। करोगे तो सुख।२। प्रपंच छोड़के करे परमार्थ। तो उदर-भरणार्थ मिले ना अन्न। तो उस अभागेको परमार्थ। मिलेगा कैसे।३। परमार्थ छोड़के करो प्रपंच। तो भोगो यमयातना कठिन। अन्त में तुमको अत्यंत कष्ट। होंगे ही निश्चित।४। न जाये साहेब-कार्यार्थ। घरमें बैठता है सुखमय। तो क्या न उसको साहेब। करेगा दंड।५। क्या तब रहेगा उसका महत्व। हंसने लगेंगे ये दुर्जन। इससे उसको बहुत। होगा दुःख।६। ऐसी होगी प्रपंचीकी अवस्था। इसीलिये भजन करो भगवन्तका। लेवो प्रत्यय तुम रोकड़ा। परमार्थमार्गमें।७। संसार करते होगा जो मुक्त। जानो है वो भगवन्तसे युक्त। उससे ही होगा युक्तायुक्त विचार। सर्वकाल अखंड।८। प्रपंचमें जो सावधान। वो ही करेगा परमार्थ। प्रपंचमें जो अप्रमाण। वो परमार्थमें वंचक।९। इसीलिए अवधानपूर्वक। करो प्रपंच और परमार्थ। ऐसे न करो तो दुःख। भोगना पडे।१०। आश्रय देखके पर्ण-कीटक। सृष्टिमें जीव जंतुभी अनेक। चलते आगे विचारपूर्वक। तो पुरुष होके भ्रमीष्ट कैसे।११। इसीलिये होनी चाहिए दीर्घ सूचना। अखंड कार्य करते रहना। भविष्यमें क्या है होना। इसका भी अनुमान चाहिए।१२। सावधान होवे तो पावे सुख। अवधानसे दुःख। ऐसा जो लौकिक विचार। है ही प्रसिद्ध।१३। इसीलिए जो सर्वसावधान। धन्य उसका महिमान। वो एक समधान जनमें राखे।१४। कार्य करनेमें करे आलस्य। तो हो सके अकस्मात घात। उस समय उसका संरक्षण। करने आयेगा कौन।१५। तस्मात दीर्घ सूचना जिसके पास। उसका देखो तुम विवेक। दूसरोंको देखनेसे भी लोग। होते हैं सूज्ञ।१६। किन्तु पहचानो ज्ञानी कौन। उसके लेवो उत्तम गुण। छोड़ो अपने अवगुण। तब ही तुम सूज्ञ।१७। करे सबकी परख। भंगे ना किसीका

मन । अनुमानसे भविष्यका ज्ञान । जानता है पहले ही ।१८। दिखे सबके साथ समान किन्तु रहता है विवेकपूर्ण । सबका करे हितचिंतन । हो उद्योगी या आलसी ।१९। जानता है तरतम भाव । करता गौरव योग्यतानुसार । यही अपूर्व मर्म । एक है उसका ।२०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विमळलक्षणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए संसारिक जन । स्त्री पुरुष और निस्पृह । सुचित्त होकर अर्थान्तर । लाईये ध्यानमें ।१। कैसी है वासना । क्या करती है कल्पना । किस प्रकार उठते हैं नाना । उनके तरंग ।२। खाना पीना भोजन करना । सुंदर वस्त्र धारण करना । मन चाहे ऐसे रहना । यही आता है मनमें ।३। परन्तु यह न होकर और अन्य । होता है कभी अकस्मात । है जो सर्वथा अनुचित । दुःखदायक ।४। तब कष्टी होवे वे अभ्यंतर । इष्ट कार्य होता ना सफल । कर न सकते अमोघ प्रयत्न । कहते हैं प्रारब्ध ।५-६। जो न जाने अपनेको आपन । वो क्या जाने परान्तर । न्याय छोड़ने से दैन्यरूप । होते हैं लोग ।७। समझे ना लोक-मनोगत । न हो लोगसम वर्तन । इसीलिए नाना कलह । उठते हैं लोगोंमें ।८। बढ़ते ही जाते कलह । दुःखी होते परस्पर । करते करतेही प्रयत्न । होता है श्रम ।९। होना न चाहिए ऐसे । वर्तन समझना चाहिए निश्चित । क्या है लोग-मनोगत । इसीलिए करो परीक्षा ।१०। करना चाहो मनका परीक्षण । तो करो कुछ संभाषण । तत्पर होके देवो लक्ष । तो समझ आवे कहीं कहीं ।११। जनको देना दूषण । स्वपक्षका वृथाभिमान । ऐसे है लौकिक लक्षण । सर्व सामान्य ।१२। चाहो जनमें सन्मान भूषण । तो करना पड़े बहुत सहन । न करे सहन तो उपहास । करेंगे लोग ।१३। न हो स्वमन-संमत । मन चाहे वहांसे गमन । किन्तु होवे न यह तत्काल । इसीलिये दुःख ।१४। वचन सत्य वर्तन सत्य । तो मानते उसको आबालवृद्ध । न्याय अन्यायभी आवे समझ । उसके वचन-वर्तनोंसे ।१५। जब तक लोग समझ न पावे । तब तक विवेकपूर्वक जो क्षमा न करे । तो समझो वो लोगोंसे हैं भिन्न ।१६। घिस न जाये जब चंदन । तो कौन समझे उसका सुगंध । चंदन और अन्य वृक्ष । होते हैं समसमान ।१७। वैसे उत्तम गुणोंका नाहीं ज्ञान । तो क्या समझे लोग अज्ञान । उत्तम गुण देखतेही प्रसन्न । होवे जगदांतर

।१८। जगदांतर होतेही निर्मल । सख्य घडे जनोंके साथ । तब समझो विश्वजनही सकल । हुवे आपके मित्र ।१९। जनरूपी जनार्दन । होवे जिसको सहाय्यभूत । तब क्या किंचिदपि न्यून । होगा उस पुरुषको ।२०। किन्तु सभीको राजी रखना । किसीका मर्म भेद न करना । एवं सबोंका सौख्य बढ़ाना । है कठिन काम ।२१-२२। बोवे बीज वैसे धान्य । लेना देना समसमान । उत्तर वैसे प्रत्योत्तर । है सबही अपनेपास ।२३। मिल गया खल अत्यंत दुर्जन । क्षमा करने का न रहा धीर । तब आधक को करके मौन । करना चाहिए स्थल-त्याग ।२४। लोक जानते हैं नाना परीक्षा । किन्तु जानते नाहीं अंतर परीक्षा । इसीलिए मनको ही सिखाना । क्षणक्षण ।२५। है अपना एक दिन मरण । इसीलिए रखना सबका मन । है बहुत कठिन लक्षण । विवेक-विचारका ।२६। बाल हो या वृद्ध । आप्त हो या पर । बढ़ते बढ़ते समाधान । करो सबकाही ।२७। करो उत्तम तो होवो उत्तम । है यह तो प्रत्यक्ष प्रमाण । इसीलिए प्रसंगानुसार । करो उत्तमोत्तम ।२८-२९। हरिकथा निरूपण । उत्तम गुण राजकारण । हो न यदि तो कौन । माने अन्य विद्याओंको ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे प्रत्ययनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

पुथिवीपर हैं अनेक लोक । उन्हें करना चाहिए विवेक । इहलोक और परलोक । होंगे साध्य ।१। साध्य करना है इहलोक । तो मिलना चाहिए जाणता पुरुष । परलोक करना हो साध्य । तो मिलना चाहिए सद्गुरु ।२। मिल जाय सद्गुरु जब । मुख्य देवता कौन । भक्त भी होता है कौन । ऐसे पूछो दो प्रश्न ।३-४। इन दोनोंका विवरण । महावाक्य पंचीकरण । करो इन सबोंका विचार बार-बार ।५। सकल कर्मजातका फल । शाश्वत वस्तुका लाभ । आपन कौन यह विवेक । करना चाहिए ।६। त्रिपदात्मक महावाक्य । किन्तु हैं वे पद अशाश्वत । इसीलिए प्रथम भगवन्त । जानना चाहिए ।७। तब ही समझे कौन निश्चल । कौन चंचल और कौन जड़ । हुवा जो मायासे भेद । यद्यापि है वस्तु एक ।८। हो आप परीक्षावन्त । तो परब्रह्मका करो शोध । विवेक बलसे देखो त्रैलोक्य । खंडन करके मायाका ।९। असत्य छोड़के लेवो सत्य । मायाका जानो रूप । है काया पंचभौतिक । और नाशवन्त ।१०-११। दिखेगा उतना जायेगा । जन्म जात सब मरेगा । जितनी घटना उतनी विघटना । ऐसा मायाका रूप ।१२।

चढेगा उतना गिरेगा । आयेगा उतना जायेगा । भूतको भूत खायेगा । कल्पान्तकालमें ।१३। देहधारक होते नष्ट । ऐसी रोकड़ी प्रचित । न हो देहधारक मानव । तो ना मानव-वंश ।१४। अन्न न हो तो नाहीं रेत । वनस्पति न हो कैसे अन्न । पृथिवी न हो तो नाहीं जान । वनस्पति कोई ।१५। जल न हो तो पृथिवी नाहीं । तेज न हो तो जल भी नाहीं । वायु न हो तो नाहीं वन्हीं । ऐसी है परतंत्रता ।१६। अंतरात्मा नाहीं तो वायु कैसा । विकार नाहीं तो अंतरात्मा कैसा । निर्विकारमें विकार कैसा । जानो विवेकसे ।१७। पृथिवी नाहीं आप नाही । तेज नाहीं वायु नाहीं । अंतरात्मा विकार नाहीं । निर्विकार में ।१८। निर्विकारी ऐसे जो निर्गुण । वही शाश्वत वस्तु जान । अष्टधा प्रकृति संपूर्ण । है नाशवन्त ।१९। समझपूर्वक नाशवन्तको देखा । तो वो दृश्य रहतेही नष्ट हुवा । इसी प्रकार समाधान मिला । सारासार विचारसे ।२०। विवेकबलसे होवे विचार । तो समझे सारासार । सारासार ज्ञानसे पुनः विचार । होता है सुदृढ़ ।२१। शाश्वत देव है निर्गुण । हुवा ऐसा दृढ़ निश्चय । अब हूं मैं कौन ऐसा विचार । समझना चाहिए ।२२। हुवा स्थूल देहका विवेक । अब करूं मनोवृत्तीका शोध । जहां हौता है भेद निर्माण । मैं और तुम दोनों में ।२३। सकल देहका लिया शोध । वहां न मिला मैं पन भाव । मैं-तू भिन्नभावका अस्त । हुवा पंचतत्वोंमें ।२४। दृश्य पदार्थोंका होवे नाश । तत्वमें तत्वका होता है विलय । मैं-तू का होतेही अभाव । रहे शाश्वत वस्तु एक ।२५। पंचीकरण महावाक्य विवरण । करे तो समझे वस्तु है आपन । ऐसे निःसंग आत्मनिवेदन । करना चाहिए ।२६। देवभक्तोंका मूल । शोध करके देखे सकल । तो उपाधि वर्जित केवल । है निरूपाधी आत्मा ।२७। हो गया अहंभाव नष्ट । विवेकसे हुई भिन्नता लुप्त । निवृत्तिपदको हुवा प्राप्त । उन्मनीपद ।२८। विज्ञानमें समाया ज्ञान । ध्येयमें समाया ज्ञान । सकल संबंध कार्य-कारण । छोड़ दिया जानने पर ।२९। टल गया जन्ममरण । नष्ट हुवा पाप संपूर्ण । हुवा परंपराका निर्वंश । यमयातनाओंका ।३०। तोड़ दिया अखिल निर्बंध । हुवा विचारसे मोक्ष । नरदेह जन्मका सार्थक । हो गया निश्चित ।३१। नाना संशयोंका निवारण । हुवा संकटोंका उच्चाटन । ज्ञान-विवेकसे पावन । हुवे बहुत लोग ।३२। पतीतपावनके दास । करते वे भी जगोद्धार ऐसी प्रचित प्रत्यक्ष । आई बहुत लोगोंको ।३३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे भक्तनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

।। श्रीराम ।।

हाथमें आया महद्भाग्य । किन्तु भोग लेनेका नाहीं ज्ञान । वैसे उत्पन्न हुवा वैराग्य । किन्तु नाहीं विवेक ।१। प्रपंचमें होते हैं आघात । उनसे होता है बहु दुःख । देखने सुननेसे भी वैराग्य । आता है अनायास ।२। प्रपंचमें होती नाना चिन्ता । नाना संकट परंपरा । इसीलिये संसार त्यागना । लगता है सुसाध्य ।३। समझता है हुवा मैं निर्बंध । जैसे व्याधी मुक्त होवे रुग्ण । न हूं मैं अब पराधीन । ना चिन्ता-मग्न कदा ।४। किन्तु होवे ना वो उन्मत्त । या अत्यंत क्रिया भ्रष्ट । या न हो उसका वर्तन । पशुसमान ।५। विवेकबिन वैराग्य । तो अविवेकसे होवे अनर्थ । तो दोनोंही जाय व्यर्थ । विवेक और वैराग्य ।६। ना प्रपंच ना परमार्थ । सब जीवन हो जाय व्यर्थ । ऐसा होगा अनर्थ । अविवेकसे ।७। या कोई कारागृह बंदिस्त । तो भी कहे व्यर्थ पुरुषार्थ । वैसे न हो वैराग्य । तो करे बड़बड़ शुष्क ज्ञान ।८। वैराग्यबिन जो ज्ञान । वो है केवल अभिमान । जब होगा लोभ दंभ युक्त । तो होवे अति दुःखित ।९। बंधा है श्वान तो भी भौंके । वैसे स्वार्थसे व्याकुल होवे । परोत्कर्ष देख न सके । अभिमान कारण ।१०। अब सुनिए सावधान । विवेक वैराग्यसे योग । जिससे टल जाय सर्व शोक । साधकोंका ।११। विवेकसे होगा अंतर्मुक्त । वैराग्यसे छूटे बाह्य प्रपंच । इसीप्रकार अंतर्बाह्य । होगा वो निःसंग ।१२। जैसे मुखसे बोले ज्ञान । वैसे२५ ही करे कर्म । देखतेही पुण्यवान दीक्षित । होवे चकित ।१३। त्रैलोक्यकी नाहीं आस्था । दृढ़ हुई वैराग्यावस्था । यत्न विवेकको धारण । हो गई असीम ।१४। संगीत रसाळ हरिकीर्तन । तालबद्ध तानमान । प्रेमयुक्त मधुर भजन । करे मनःपूर्वक ।१५। तत्काल आवे सन्मार्गपर । ऐसा विवेक नित्य जागृत । प्रत्ययजन्य वक्तृत्त साहित्य । सर्वकाल अभंग ।१६। सन्मार्गसे रहे जनसहित । तो उसको सहाय्य करे भगवन्त । प्रसंगानुरूप करे वर्तन । यथा योग्य ।१७। प्रखर वैराग्य उदासीन । सप्रचित ब्रह्मज्ञान । स्नान संध्या भगवद्भजन । धरे ऐसा पुण्यमार्ग ।१८। ऐसा है विवेकवैराग्य योग । केवल वैराग्य तो पागलपन । क्या है करना शब्दज्ञान । केवल जो मनोरंजन ।१९। इसीलिए विवेक और वैराग्य । जहां है वही महाद्भाग्य । रामदास कहें है योग्य । जानते साधु ।२०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विवेकवैराग्यनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

रेखा मातृका युक्त अक्षर। अक्षरोंसे होते हैं शब्द। शब्दान्वित होते हैं वाक्य। गद्य पद्य प्रबंध ।१। वेदशास्त्र-पुराण। नाना काव्य निरूपण। नाना लिपी नाना ग्रंथ। मतमतांतर ।२-३। वर्गऋचा श्रुति स्मृति। अध्याय सर्ग स्तबक जाती। प्रसंगमान समास पोथी। ऐसे भाग भेद ।४। नाना पद नाना श्लोक। नाना वीर नाना कड़क। नाना साखी दोहा अनेक। बहुत प्रकार ।५। डफगान नाचगान। दिंडी गान कथागान। आड़कथा नाना मान। नाना खेल ।६। ध्वनिघोष नादरेखा। ऐसी चत्वार भेद वाचा। यह सब कभी सुनना। वाचाओंके रूप ।७। उन्मेश परा ध्वनि पश्यन्ती। नाद मध्यमा शब्द चौथी। वैखरीवाणी प्रकट करती। नाना शब्द रत्न ।८। अकार उकार मकार। अर्धमात्रा जो अनुस्वार। इन सब मात्राओंके नंतर। आते बावन मातृका ।९। नाना भेद रागज्ञान। नृत्यभेद तानमान। अर्थभेद तत्वज्ञान। विवंचना विचार ।१०। तत्वोंमें जो मुख्यतत्व। वो जानो शुद्ध सत्व। वही है अर्धमात्रांकित। महत्तत्व मूलमाया। सब तत्वों का समूह। है अष्ट शरीररूप। अष्टधा प्रकृति भी वायुरूप। जब होती है विलीन ।१२। तब वायु-रहित जैसे गगन। रहे वैसे ब्रह्म सघन। अष्ट देहोंका निरसन। करना इसीलिए ।१३। पिण्डब्रह्माण्डका निर्माण। पिण्डब्रह्माण्डका संहार। इन दोनोंसे ही विलक्षण। है एक विमलब्रह्म ।१४। पदार्थ जड़ आत्मा चंचल। विमलब्रह्म एक निश्चल। उसकाही करे जो ध्यान। वो तत्काल होवे तद्रूप ।१५। पदार्थ मन कायावाचा। हूं मैं अखिल भगवन्तका। ऐसा जड़ आत्मनिवेदनका। है एक प्रकार ।१६। चंचलकर्ता जो जगदीश। प्राणीमात्र जिसका अंश। वो जाने अपनेको आपन। नाहीं स्थान जीवको ।१७। है यह चंचल आत्मनिवेदन। जहां कर्ता देव नाहीं जीव। किन्तु चंचल चले स्वप्नाकार। निश्चल देव तो निर्विकार ।१८-१९। चंचलकर्ताको भी नाहीं स्थान। वहां कहांसे होगा अल्प जीव। यहां होता है जो आत्मनिवेदन। वो जानो विवेक निश्चल ।२०। इन तीनों ही प्रकारमें जीवांश। नाहीं नाहीं वो ब्रह्मसे भिन्न। तो कहांसे आवेगा अहंभाव। जो है ही नाहीं निश्चलमें ।२१। देखते देखते होवे निश्चल। समझते समझते होवे वो दृढ़। तो फिर देखते ही होवे तद्रूप। अब बोलना हो गया अबोल ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मनिवेदननाम समास पाचवां ॥५॥

।। श्रीराम ।।

ब्रह्म निर्मल निश्चल । शाश्वत सार विमल । अवकाश घन अव्याप्त । गगन जैसे ।१। कर न सके कोई कुछ । या न कोई उसको सके धर । वो तो है अज अमर । जाने या न जाने कोई ।२। जिसको न कोई बना सके । जो न कहीं आवे या जावे । मायातीत निरंजन होनेसे । है अमर शाश्वत ।३। हुवा उसीमें संकल्प । इसीलिए उसको षड्गुणेश्वर । या तो अर्धनारीनटेश्वर । कहते हैं लोग ।४। सर्वेश्वर सर्वज्ञ । साक्षी द्रष्टा ज्ञानघन । परेश परमात्मा जगज्जीवन । मूल पुरुष ।५। वो ही मूलमाया षड्गुणी । अधोमुख गुण-क्षोभिणी । आगे त्रिगुण उसीसे ही । हुवे निर्माण ।६। हो गये आगे विष्णु निर्माण । जो है ज्ञानकला सत्वगुण । करते हैं जो पालन । त्रैलोक्यका ।७। उन भुवनत्रयोंका उत्पत्ति-कर्ता । रजोगुणप्रधान ब्रह्मा । ज्ञानाज्ञानरूप स्वभाव उसका । कहते हैं लोग ।८। तथा सकल संहारकारण । है रुद्र तमोगुणप्रधान । है वो ही कर्मकर्ता एक । और सर्व संहारक ।९। तथा सूक्ष्म पंचभूत । पा गये स्थूलरूप । मिलके त्रिगुण और पंचभूत । होती अष्टधा प्रकृति ।१०। निश्चल ब्रह्ममें जो चलन । वही वायुका लक्षण । जिसमें होते हैं त्रिगुण । और पंचभूत ।११। अब देखो प्रत्ययसे आकाश । है जो अंतरात्मा केवल । उस आकाशसे होता है जन्म । वायु देवका ।१२। उस वायुके हैं दो प्रकार । एक उष्ण एक शीतल । शीतलसे हुवा जन्म । तारों और चंद्रमाका ।१३। उष्ण वायुसे निर्माण । हुवे विद्युलता अग्नि सूर्य । वायु शीतल और उष्ण । मिलके होता है तेजरूप ।१४। तेजसे हो गया आप । आपसे हुवा पृथिवीका रूप । उसीसे आगे औषधी असंख्य । हुई भूमंडलमें ।१५। औषधीसे नाना रस । नाना बीज अन्नरस । चौरासी लक्ष योनियोंका वास । पृथिवी पर ।१६। ऐसी हो गई सृष्टिरचना । मनमेंही विचार लाना । प्रत्यय न हो तो भी करना । तर्कानुमान ।१७। हुवा जैसा जैसा आकार । व्यतिरेकसे करो वैसा ही संहार । इसका ही नाम सारासार विचार । कहते हैं सूज्ञ ।१८। जो जो जहांसे हुवा निर्माण । वो उसीमें होता है विलीन । इसीप्रकार होता है संहार । महाप्रलयकालमें ।१९। तस्मात् उत्पत्ति स्थिति संहारकाल । जो शाश्वत और निरंजन । उसका ही अनुसंधान । लगाते ज्ञानी ।२०। बार बार सृष्टिकी रचना । होती है किन्तु वो रहेना । इसीलिए सारासार विचारणा । करनी चाहिए ।२१। द्रष्टा साक्षी अन्तरात्मा । ऐसे सर्वत्र बोलते महिमा । किन्तु सर्वसाक्षिणी अवस्था । देखना चाहिए ।२२। आरंभसे अन्त तक । मायाका ही है विस्तार । नाना विद्या कलाकौशल । है सब उसीमें ही ।२३। जो उपाधिके जाये पार । समझेगा वो है यह भ्रम । किन्तु

उपाधिमें होवे जो बद्ध। उसको मुक्त करे कौन।२४। विवेक प्रचिती का काम। वहां कैसा अनुमान भ्रम। सारासार विचारसे ब्रह्म। मिल जाय सत्य।२५। ब्रह्माण्डका जो महाकारण। उसको मूल माया कहते हैं जान। अपूर्णकोही कहते हैं ब्रह्म। विवेकहीन।२६। सृष्टिमें हैं बहुत जन। एक भोगते नृपासन। एक करते कीचड़ दूर। ऐसे है प्रत्यक्ष।२७। अभिमानसे कहते हैं सर्व। मैं हूं सबसे श्रेष्ठ। संसार भो नाहीं नाशवन्त। किन्तु करना चाहिए विचार।२८-२९। पुस्तक ज्ञानसे निश्चय होता। तो गुरु क्यों व्यर्थ करता। इसीलिए विवरण करना। अपनेही अनुभवसे।३०। जो लोगोंपर करे विश्वास। तो डूब गया ऐसे जान। जब छोड़ोगे एक मुख्य। तो मांगोगे किसके पास।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सृष्टिक्रम निरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

बोलता हूं न्याय-निष्ठुर। यदि न हो लोगों को संतोष। सोचो क्या है उचित भोजन। जब न हो अन्नकी वांछा।१। विषयोंकी करते हैं निंदा। विषयभी भोगते सदा। क्यों कि विषयत्यागसे देहयात्रा। होगा नाहीं यथास्थित।२। बोल एक करे विपरीत। यही है विवेक-हीनत्व। ऐसे देखतेही लोग। करते हैं घृणा।३। बोलते हैं विषयत्यागबिन। कठिन है परमार्थ संपादन। किन्तु करते ना कोई विचार। क्या है लक्षण त्यागका।४। प्रापंचिक करते हैं भोजन। परमार्थी क्या करते उपोषण। दोनों ही दिखते हैं समसमान। विषय सेवनार्थ।५। जीवित तक विषय त्याग। सर्वथा कर सके ऐसा कौन। इसका स्वामी करो निरूपण। ऐसे बोले श्रोता।६। वक्ता वदे सावधान। सुनिए त्यागका लक्षण। वैराग्ययुक्त है जो त्याग। उससे बढे परमार्थ।७-९। हो गये ज्ञानी पुरुष। उन्होंने किए बहुत कष्ट। प्रपंच त्यागसे हुवे विख्यात। भूमंडलमें।१०। इतर सब पेटके किंकर। मर गये कहते अन्न अन्न। कितनेही हो गये धर्म भ्रष्ट। उदरभरणार्थ केवल।११। वैराग्य नाहीं किंचिन्मात्र। नाहीं ज्ञानकी प्रचित। नाहीं आचार शुचिष्मंत। तो कहांसे ईशभजन।१२। ऐसे होते हैं जन। कहलाते हैं सज्जन। किन्तु करते हैं अनुमान। बिना प्रचित।१३। नाहीं होता अनुताप। सह न सके परोत्कर्ष। क्षण क्षण मनमें विक्षेप। आता है पापरूप।१४। नाहीं मुझे तो न हो तुझे। स्वयं अन्न खा न सके। दूजा खावे तो सह न सके। ऐसा व्यवहार सर्वत्र।१५। भाग्यवन्त कोई महान। उसकी निंदा करे दिवालखोर। श्रीमन्तको देखते ही चोर। मनमें होवे दुःखित।१६। वैराग्यसम नाहीं भाग्य।

वैराग्य नाहीं तो अभाग्य । वैराग्य बीन परमार्थ । होगा नाहीं सर्वथा ।१७। प्रत्ययज्ञानी वीतरागी । विवेकबलसे सकलत्यागी । वही जानो है महायोगी । ईश्वरी पुरुष ।१८। अष्ट सिद्धीयोंकी उपेक्षा । करके ले ली योग दीक्षा । मांगने लगे घर घर भिक्षा । महादेव ।१९। ईश्वरके साथ बराबरी । करे सके कौन वेषधारी । इसीलिये नाहीं सबही । समसमान ।२०। उदास और विवेकी पुरुष । उसको शोध शोध मिलते लोग । किन्तु है जो विचाराचार-भ्रष्ट । वे हैं विषयलोभी ।२१-२२। करते नाहीं भजन । ना कदापि पुरश्चरण । इसीलिए श्रेष्ठके साथ मेल । न होत उनका ।२३। वैराग्य के कारण न होते भ्रष्ट । है ज्ञान किन्तु छोड़े ना भजन । है व्युत्पन्न किन्तु न करे वाद । ऐसा विरला ।२४। कष्ट करे तो होवे खेती । अमोल वस्त्रकी तत्काल बिक्री । जानकर लोगोंकी सहर्ष पंक्ती । आती उसी स्थान ।२५। इतर मंदबुद्धि जन । दुराचारसे होते हीन । ज्ञानभी उनका मलीन । भ्रष्टाकारसे ।२६। परमार्थ प्रतिबंधक विषय । इनका करना त्याग । आवश्यक और शुद्ध विषय । त्यागना नाहीं ।२७। ऐसे हैं त्यागके लक्षण । जानते हैं विवेकी जन । विश्वास उन्हीका, कर्तादेव । नाहीं स्थान मायाको ।२८। परमार्थमें बहु शूर । जानते पिण्ड-ब्रह्माण्ड विचार । वचनानुसार उनका आचार । मानते उन्हींको सर्वलोग ।२९-३०। ऐसा जो सर्वजानता । उत्तम लक्षणोंको धर्ता । उसीसे ही जन्म सार्थकता । सहज ही होवे ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विषयत्याग निरूपणनाम समास सातवां ।।७।।

।। श्रीराम ।।

मूलमाया जगदीश्वर । उसका ही अष्टधा प्रकार । जिससे सृष्टि को भी आकार । हुवा प्राप्त ।१। जब न था सकल । तब जैसे निर्मल आकाश । वैसेही ब्रह्म निराकार । काल भी उसमें था नाहीं ।२। उपाधीका होता है विस्तार । तब दिखे कालका अस्तित्व । अन्यथा कालका प्रवेश । होगा ही नाहीं ।३। एक चंचल एक निश्चल । इसके व्यतिरिक्त कहां है काल । है जब तक चंचल । कालभी तब तक ।४। आकाश है अवकाश रूप । आवे मनमें अवकाशका भान । उसी स्थितीका नाम । जानो है काल ।५। सूर्यके गमन-कारण । होता है कालका ज्ञान । पल निमिषमें युगपर्यन्त । करते हैं कालगणना ।६। घटिका प्रहर दिवस । अहोरात्र पक्ष मास । षण्मास और चारों युग । हुवे कालके अंश ।७। सत्य त्रेता द्वापार कली । संख्या करे कालही । आयुमर्यादा देवोंकी । आयी एक कालमें

ही ।८। गुणात्मक ब्रह्मा विष्णु महेश । करते हैं उत्पत्ति स्थिति संहार । यह सबही क्रिया कालरूप । होते पिण्ड ब्रह्माण्डमें ।९-१२। जो जो होता प्रसंगानुसार । वो सबही कालका प्रभाव । आता है प्रत्यक्ष अनुभव । भिन्न भिन्न कालके रूप ।१३। पर्जन्यकाल शीतकाल । उष्णकाल संतोषकाल । सुखःदुख आनंदकाल । प्रातःकाल मध्यान्ह ।१४। सायंकाल वसंतकाल । सर्वकाल कठिनकाल । जन्मकाल बालत्वकाल । तारूण्यकाल वृद्धाप्य ।१५-१६। अंतकाल विषमकाल । सुकाल तथा दुष्काल । प्रदोषकाल पुण्यकाल । सबका नाम है काल ।१७। रहे एक भासे अन्य । इसका नाम हीन-विवेक । जानते प्रवृत्ति के लोग । प्रवृत्ति ही किन्तु ।१८। प्रवृत्ति चले अधोगति । निवृत्ति बढे ऊर्ध्वगति । उर्ध्वमुख होते ही सुखवृद्धी । ऐसे ज्ञानी जानते ।१९। ब्रह्माण्ड रचनाका जिससे आरंभ । वहां लगावे जो विवेक-लोचन । करे बारबार । परमार्थ विवरण । उसको होगी ब्रह्मप्राप्ति ।२०। प्रपंचमें परमार्थ भी साधे । वही इस स्थितिको पावे । वो जनमेंही रहे । प्रारब्धानुसार ।२१। सबका है मूलस्थान एक । जानते ज्ञानी विवेकपूर्ण । इसीलिए करो साध्य । परलोक तत्काल ।२२। तब ही होगा जन्म सार्थक । उत्तमको लाभे उभय लोक । करना चाहिए विवेक सतत । मूलस्थानका ।२३। विवेकहीन जो जन । जानो हैं वे पशुसमान । सुन लो उनका भाषण । तो कैसा परलोक ।२४। क्या है हानी हमारी यह । कर्मानुसार होता है फल । जैसी करनी वैसा भोग पावते प्राणी ।२५। आगे ही यही नियम । भक्तिसे मिले भगवन्त । देव-भक्तका होतेही संगम । होवे समाधान ।२६। किर्ति करके नाहीं गये । वे सब आये वैसे गये । सूज्ञ नर भी भूल गये । क्या कहना और किसको ।२७। यहांका सब यहां ही रहे । क्या कौन साथ ले जाये । यह सब है प्रन्यक्ष दिखे । तो क्या कहूं अधिक ।२८। दृष्य पदार्थपर उदासीन । विवेकसे रहना अनुदिन । जिससे मिल जाये जगदीश । अलभ्य लाभ ।२९। जगदीशसे अन्य नाहीं लाभ । है कार्यकारण सर्व संबंध । इसीलिए करते हुए भी संसार । होगा समाधान ।३०। हो गये जनकादि अनेक । राज्य करते हुए भी जीवन्मुक्त । वैसे आज भी पुण्यश्लोक । कीतने ही होंगे ।३१। राजा को जब आवे मरण । कहे देऊं लक्ष कोटि धन । तो भी क्या छूटे नृप । मृत्यु-मुखसे ।३२। ऐसे जीवन पराधीन । उसमें भी दुःख दारुण । नाना व्याधि चिन्ता उद्वेग । नाना विघ्न ।३३। है यह संसाररूप बाजार । इसमें देवदर्शन महत्‌लाभ । तबही होगा परिहार । सबही दुःख दोषोंका ।३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कालनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

दुर्बल आलसी ऋणग्रस्त। लोभी अव्यवसायी निराश्रित। मूर्खतासे वर्ते सतत। ऐसा कोई ।१। खानेको नाहीं अन्न। पहननेको नाहीं वस्त्र। ओढनेको नाहीं कंबल। रहने को नाहीं झोपडी ।२। नाहीं स्वजन नाहीं इष्ट। नाहीं मित्र नाहीं आप्त। किसीसे ही नाहीं पहचान। आश्रयबिन परदेशी ।३। उसको क्या चाहिए करना। किस आधारसे जीवित रहना। क्या रहना अथवा मरना। कहिए इसका उत्तर ।४। ऐसे किसीने किया प्रश्न। तो स्वामीने दिया उत्तर। करिए आप श्रवण। सावधान चित्त ।५। होने दो काम लघु या महान। करने बिना न होगा पूर्ण। भाग्यहीन भी होगा भाग्यवान। जब करे वो काम ।६। नाहीं चित्तका अवधान। न करे यत्न परिपूर्ण। तो क्या होगा सुखसंतोष। कदा काल ।७। इसीलिये छोड़ो आलस्य। करो यत्न बहुविध। दुश्चित-पणका स्वभाव। त्याग करो सत्वर ।८। उठो नित्य प्रातःकाल। नित्य करो ईशस्मरण। नित्य नया पाठान्तर। करना चाहिए नेमस्त ।९-१०। देह शुद्धनर्थ जावो दूर। करो चरणक्ष-लन और स्नान। ध्यानादि परमार्थका अनुभव। होना चाहिए ।११। करो देवदर्शन देवार्चन। कुछ फलहार सेवन। हो जो अपना व्यवसाय। करो वो सावधान ।१२-१३। लिखो अक्षर सुंदर। होगा जो सुगम सुवाच्य। करते करते विवरण। जानो ग्रंथका अर्थ ।१४। पूछे कोई प्रश्न। तो करो उसको विशद। बिना प्रत्यय जो बोल। समझो वो है पाप ।१५। रहो सर्वदा सावधान। न करो नीति उल्लंघन। होवे जनको संतोष। ऐसा करो कार्य ।१६। मिलने आये कोई जन। तो करो उनका समाधान। प्रसंगानुरूप निरूपण। या करो हरिकीर्तन ।१७। ताल धाटी मुद्रा शुद्ध। अर्थ प्रमेय अन्वय प्रद्ध। गद्यपद्य दृष्टान्त शुद्ध। न हो अशुद्ध एक भी ।१८। गाना बजाना नाचना। हावभाव हाथसे बताना। सभाका मनरंजन भी करना। छंदबंध कहानीसे ।१९। लोगोंका रखो समाधान। मानले ऐसे बोलो वचन। करो न वाद विवाद। तो करेंगे वे नाम घोष ।२०-२१। भक्ति ज्ञान और वैराग्य। नाना साधन प्रयोग। सदासर्वदा करो मनन। जिससे टूटे भवरोग ।२२। बोलो जैसे वचन। वैसे ही करो आचरण। तो सहज आते है अंग। महंत लक्षण ।२३। युक्तिबिन जो योग। वो जा दुराशा-रोग। होंगे जो संगतिमें लोग। वे भी पावेंगे दुःख ।२४। न करो ऐसे सर्वथा। न दो किसीको भी व्यथा। करो चिंतन रघुनाथ का। हृदय में ।२५। हो जाय वृत्ति उदासीन। तो लोग भी रहेंगे प्रसन्न। करो ब्रह्माण्डका भेद। राम कथा

निरूपणसे ।२६। सकल गुणालंकृत महंत । करे जब गायनरंग । क्यों न आवेंगे लोग लुब्ध । और वैभव सकल ।२७। किन्तु जहां नाहीं कुछ विवेक । वहां होवे सबही निरर्थक । इसीलिए बढ़ावो विवेक सामर्थ्य । होवोगे जिससे श्रेष्ठ ।२८-३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे यत्नसिकवणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

करो स्वमं यथेष्ट भोजन । बांट दो बचा हुवा अन्न । किन्तु अकारण करना उसका नाश । वह क्या है योग्य ।१। वैसे ज्ञानसे तृप्त होवो । वही ज्ञान जनको कहो। आता है तरना तो पार करो । डूबता है उसको ।२। लेवो स्वयं उत्तम गुण । कहो वही इतर जन । बिना वर्तन बोलो जो वचन । वो केवल मिथ्या ।३। स्नान संध्या देवार्चन । एकाग्रकरो जप ध्यान । हरिकथा निरूपण । करना चाहिए ।४। परोपकारार्थ शरीर । लगा दो परकार्यार्थ । किसीका न होने दो न्यून । कदाकाल ।४। होवे कोई संकट ग्रस्त । यथाशक्ति करो सहाय । बोलते जावो मृदुवचन । सबके साथ ।६। परदुःखसे दुःखित । पर संतोषसे संतुष्ट । मृदुवचन से समस्त जन । बनाओ अपने मित्र ।७। करो अपराधीको क्षमा । अपनेसम जनको मानना । उनका भी कार्य भाग करना । जिससे होंगे मित्र ।८। जानो उनका अभ्यंतर । तदनुरूप करो वर्तन । किन्तु नाना प्रकार परीक्षण । करो जनका ।९। न करो बहु भाषण । किन्तु दो तत्काल प्रतिवचन । होवो न कदा क्रोधवश । करते जावो क्षमा ।१०। छोड़ो सकल आलस्य । करो अत्यंत प्रयत्न । बोलो न मत्सरसे शब्द । किसी को ही ।११। उत्तम पदार्थ दूसरों को देवो । विचारपूर्वक शब्द बोलो । संसार भी करते जावो । सावधान ।१२। रहना चाहिए मृत्युका स्मरण । जिससे हरिभक्ति हो सादर । कीर्तिरूप से मरणोत्तर । रहो निरंतर ।१३। नियम पूर्वक हो नित्य वर्तन । जानने लगते सकल जन । सबही होंगे आज्ञाधीन । तो क्या होगा न्यून ।१४। ऐसा जो उत्तम गुणवन्त । वही उत्तम पुरुप । उसके भजन से होगा तृप्त । जगदीश स्वयं ।१५। धिःकारसे बोलते कुजन । तो भी रहते वे शान्त । मिलते दुर्जनके भी साथ । धन्य वे साधु ।१६। उत्तम गुणालंकृत । ज्ञान वैराग्यसे शोभत । वही एक जानो है श्रेष्ठ । भूमंडलमें ।१७। कष्ट करे अपने लिए बहुत । जनके लिये भी और । नाना प्रकार घिसे शरीर । जावे किर्ति करके ।१८। किर्ति चाहो तो सुख नाहीं । सुख चाहो तो कीर्ति नाहीं । विचार बिन कहीं ही नाहीं । सुख और समाधान ।१९। परांतरको न दो दुःख । न करो इसमें कभी

भूल । करते जावो क्षमा सतत । होगी नाहीं हानि ।२०। अपना हो या अन्य किसीका । कार्यभाग सबको करना । बीचमें ही कर्तव्य को टालना । है नाहीं उचित ।२१। मृदुभाषण लगता है प्रिय । यह तो सबोंका अनुभव । इसीलिये अन्य को भी आत्मवत । मानना चाहिए ।२२। कठिन शब्दसे होता है दुःख । यही है सबोंका अनुभव । तो क्यों करो दुष्ट भाषण । किसीके साथ ।२३। अपनेको करे कोई ताड़न । तो जैसे होवे दुःख दारुण । वैसेही होंगे अन्य जन । ऐसे समझना चाहिए ।२४। जो दूसरोंको करे दुःखी । वो है अपवित्र वैखरी । अपना भी घातकारी । हो जाय प्रसंगमें ।२५। बोवे बीच वैसा धान्य । उत्तरसम प्रतिवचन । तो फिर कर्कश भाषण । करता किंनिमित्त ।२६। जब हो वैभवके शिखर । तब सुखी करो बहुत लोग । किन्तु करोगे जब उनको दुःखित । तो वह राक्षसी क्रिया ।२७। दंभदर्प अभिमान । क्रोध और दुष्ट वचन । हैं ये अज्ञान के लक्षण । भगवद्वचन ।२८। है पुरुष गुणवतंस । तो वही है उत्तम पुरुष । शोधशोध आते हैं लोक । उसके लिये असंख्य ।२९। क्रियाबिन शब्दज्ञान । है जनु श्वानका वमन । ऐसे जनोंका । मुखावलोकन । करते नाहीं उत्तम ।३०। मनःपूर्वक करे भक्ति । उत्तम गुणोंपर प्रीति । उन महापुरुषों के प्रति । आते हैं लोग ।३१। ऐसा जो महानुभाव । उसको करना चाहिए लोकसंग्रह । भक्ति योगसे देवाधिदेव । करे वो अपना ।३२। मर जावोगे अकस्मात । तो कौन करेगा भजन । इसीलिये बहुत लोग । लगावो भजनमार्ग ।३३। हमारी है ऐसी प्रतिज्ञा । शिष्योंसे न कुछ मांगना । किन्तु हमारे बाद भी करना । जगदीशका भजन ।३४। इसीकारण समुदाय । करना चाहिए महोत्साव । मिले हाथोंहाथ देवाधिदेव । ऐसा बताना मार्ग ।३५। अब होने चाहिए दोन गुण । लोकसंग्रहार्थ ही जान । करो चित्त सावधान । सुनिए श्रोता ।३६। जिससे घड़े बहुतोंकी भक्ति । है वो रोकडी प्रबोधशक्ति । समझना चाहिए लोगोंकी । मनोगत स्थिति ।३७। प्रबोध शक्तिके साथ । होना चाहिए अपना वर्तन । करे स्वयं उपदेशानुसार । तो लोगभी माने ।३८-४०। इसीलिए रहो जनके साथ । सिखावो उनको परमार्थमार्ग । शनैः शनैः चलावो उनको । देवदर्शन की ओर ।४१। है यह विवेक कार्य । कर सके विवेकी ही यह । इतर जो अविवेकी जन । करेंगे कलह ।४२। सबोंके साथ करे जो कलह । वो है राजा बिनासैन्य । इसीलिए राखो लोग । समाधानी संतुष्ट ।४३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उत्तमपुरुषनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक तेरहवां नामरूप

॥ श्रीराम ॥

आत्मनात्माका विवेक । करके करो विवरण । विवरण करते करते सुदृढ । धरो अंतःकरण में ।१। आत्मा कौन अनात्मा कौन । इसका करो विवरण । उस विषय का ही निरूपण । सुनिए सावधान । चार खाणी चार वाणी । चौरासीलक्ष जीवयोनी । कहते हैं ऋषी मुनि । पुराणोंमें ।३। नाना प्रकारके शरीर । सृष्टीमें दिखते हैं अपार । उन सब में निश्चय से कौन । है वो आत्मा ।४। नयनोंसे करे रूप ग्रहण । श्रोत्रों से करे श्रवण । रसना से रस सेवन । घ्राण से गंध ।५। सर्वांगमें स्पर्श । त्वचासे होत सर्वत्र । जिव्हासे शब्दरूप । करवाती वाचाशक्ति ।६। सावधान और चंचल । चारों ओर चले चपल । अकेला तो भी संचालक । सकल इन्द्रीयोंका ।७। चलाता है हाथपांव । करवाता है निमिष उन्मेष । संकेत हावभाव से ज्ञान । जानो है वह आत्मा ।८। करे किसी को धीट । किसी को करे कायर । खासी कफ का प्रकीप । और अन्नोदक सेवन ।९। मलमूत्र विसर्जन । शरीर गात्रों का संरक्षण । प्रवृत्ति निवृत्ति का ज्ञान । करवाता है वो आत्मा ।१०। पावे संतोष अथवा भय । आनन्द चिन्ता या उद्वेग । माया ममता काया-क्लेश । करवाता है वो आत्मा ।११। पदार्थों की करे वांछा । करवाता है बुरा भला । अपना परका भेद करना । राखे मारे वो आत्मा ।१२-१३। युद्धमें दोनों ओर । रहता नाना शरीरस्थ । लड़ पड़े परस्पर । जानो वो आत्मा ।१४। देहमें आवे देहसे जावे । हंस रोवे पछतावे । समर्थ अथवा भाग्यवान होवे । व्यवसा-यानुसार ।१५। होवे कायर या बलवन्त । होवे मूर्ख या विद्यावन्त । उद्धट या न्यायवन्त । धीर उदार या कृपण ।१६। उच्छृंखल या सहनशील । पागल या विचक्षण । विद्या कुविद्या में आनंदरूप । रहता है वो आत्मा ।१७-१८। उठे बैठे सोवे चाले । धावे डोले गान करे । पोथी पढे अर्थ कहे । है वो आत्मा ।१९-२०। न हो आत्मा देहान्तर । तब प्रेतरूपहै चरा-चर । देहसंग से हो कोई कार्य । करता है आत्मा ।२१-२२। देह अनित्य आत्मा नित्य । है यही नित्यानित्य विवेक । अत्यन्त सूक्ष्म यह विचार । जानते ज्ञानी ।२३। पिण्ड में देहधर्ता जीव । ब्राह्मण्ड में देहधर्ता शिव । तनुचतुष्टमें जो ईश्वर । है वो धर्ता ।२४। त्रिगुणातीत जो ईश्वर । अर्धनारी नटेश्वर । सकल सृष्टीका विस्तार । वहां से हुवा ।२५। करो वहां का विचार । वहां नाहीं स्त्री या पुरुष । चंचल रूप है कुछ । ऐसी आवे प्रचित ।२६। देखने जब आदि अंत । आब्रह्म पिपीलिका पर्यन्त । उसी से नित्यानित्य विवेक । करते

है वे ज्ञानी ।२७। जड़जात सर्व अनित्य । जितना सूक्ष्म उतना नित्य । किन्तु इसीसे ही सूक्ष्म । है नित्यानित्य विवेक ।२८। स्थूल सूक्ष्म से ही पर । कारण महाकारण से भी अतीत । विराट हिरण्यगर्भ भी होत । जहां खण्डित ।२९। है आगे अव्याकृत प्रकृति । वहां तक जानी चाहिए वृत्ति । किन्तु इसीलिए चाहिए जो निवृत्ति । निरूपण उसका सुनिए ।३०। कह दिया आत्मानात्मा विवेक । चंचलात्माका आया प्रत्यय । अगले समास में करूंगा निरूपण । सारासार विचार का ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मानात्माविवेकनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

सुनिए सारासार विचार । हुवा है जो जगडंबर । उसमें कौन सार कौन असार । समझना चाहिए ।१। जो जो दृश्य उसका नाश । जो जो उत्पन्न उसका अन्त । किन्तु रहता है जो शाश्वत । वही एक सार ।२। हुवा आत्मानात्माका विचार । अनात्माका किया त्याग । होने लगा आत्माको ज्ञान । मूलमाया का ।३। अब यह मूलमायामय जो वृत्ति । उसकी होना चाहिए निवृत्ति । इसीलिए सारासारकी मति । विचारमें लावो ।४। कर लिया नित्यानित्य विवेक । समझ लिया आत्मा है नित्य । तब मन हुवा निवृत्तिरूप । निराकारके ध्यान हेतु ।५। वही जो हेतु निवृत्तिरूप । उसका भी स्वभाव है चंचल । निर्गुण ब्रह्म है निश्चलसार । असार चंचल रहे नाहीं ।६। गतिके कारण है चंचल । गति नाहीं इसीलिए निश्चल । निश्चलमें उड़ जाये चंचल । है यह सत्य ।७। उपासना और ज्ञान । जानो दोनों को एक रूप । उपासना के कारण । होता है जगोद्धार ।८। द्रष्ट साक्षी और ज्ञाता । ज्ञानघन चैतन्यसत्ता । है ज्ञान देव ही तत्वता । ऐसे देखो विवेक से ।९। ज्ञान का होता है विज्ञान । शोधकर देखो संतोंका मत । चंचल सकल होता है नाश । इसी रीति ।१०। चंचल का होता है नाश । या है वो शाश्वत । ऐसे अनुमान करे जो नर । वो नाहीं ज्ञानधिकारी ।११। नित्य करे निश्चय । रहता भी है सन्देह । तो बह गया वो पुरुष । महा मृगजल से ही ।१२। क्षय नाहीं इसीलिये अक्षय । सर्वगत और व्यापक । ऐसा जो निर्विकार ब्रह्म । नाहीं वहां देह ।१३। जो अनंत घन अखंड । आदि मध्यया अंत । अचल अढल अटूट । जैसे तैसे ।१४। दिखनेमें जैसे गगन । वस्तुतः गगनसेभी धन । जन बिना जो निरंजन । सदोदित ।१५। चर्मचक्षु ज्ञानचक्षु । यह सब है पूर्व पक्षु । निर्गुण अलक्ष्य स्वतः सिद्ध । लक्षातीत ।१६। संगत्यागबिना कोई । परब्रह्मरूप होता नाहीं । संगत्यागसे

देखो तुमही । मौन्यगर्भ वस्तु ।१७। निरसन करते करते सर्व । चंचलका होता है नाश । रहे ब्रह्म एक निश्चल । वही जानो है सार ।१८। मूलमाया जो अष्टम देह । उसका भी होना चाहिए नाश । इसीलिए कहते हैं उपाय । कृपालु साधुसंत ।१९। 'सोऽहं अहंसः' इति । तुम ही ब्रह्म "तत्वमसि" । विचार करे तो स्थिति ऐसी । सहज ही होवे ।२०। साधक होते हैं ब्रह्मरूप । क्योंकि वे वृत्तिशून्य योगेश्वर । ऐसा है सारासार विचार । जानो आप ।२१। जो न तपे न हो शीत । जो न हो कृष्ण या श्वेत । जो न हो मिश्रित या अमिश्रित । है वह परब्रह्म ।२२। न दृश्य न भासमान । नाहीं जन्म नाहीं मरण । नाहीं जिसको आवागमन । वो है परब्रह्म ।२३। जो न भीगे न होवे शुष्क । जो न जले न जाय बुझ । जिसको न हिलावे कोई एक । वही एक परब्रह्म ।२४। चारों ओर जो सन्मुख । जहां उड़ जाय दृश्य भास । उसीमें रहते हैं नित्य । धन्य धन्य वे साधु ।२५। निर्विकल्प जो कल्पनातीत । वही जानो है संत । इतर सर्वही जानो असंत । भ्रमरूप केवल ।२६। असत्य छोड़के लेवे सत्य । इसीलिए है वो परीक्षावन्त । असार छोड़के लेता है सार । परब्रह्म एक ।२७। देखते देखते ज्ञान होवे लीन । वृत्ति होती है विज्ञानरूप । इसीको कहो आत्मनिवेदन । श्रेष्ठभक्ति ।२८। भक्ति मुक्ति है वाच्यांश शब्द । प्रचित लक्ष्यांश तद्रूप । विवरण करते करते निर्हेतुक । होनी चाहिए ब्रह्मरूपता ।२९। सद्रूप चिद्रूप और तद्रूप । वही सत्यस्वरूप अपना रूप । अपना रूप होवे जब अरूप । हो जाय तब तत्व-निरसन ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सारासारनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म घन और अव्याप्त । आकाशसे भी विशाल । निश्चल और निर्मल । निर्विकारी ।१। ऐसे गया बहुत काल । आरंभ हुवा भूगोलका मूल । उसीकाही निरूपण । सुनिए सावधान ।२। परब्रह्म था निश्चल । उसमें उठा संकल्प चंचल । जिसको बोलते हैं सकल । आदिनारायण ।३। मूलमाया जगदीश्वर । उसका ही नाम षड्गुणेश्वर । और अष्टधा प्रकृतिका विचार । करना वहां ।४। माया हुई गुणक्षोभिणी । इसीलिए है वो त्रिगुणी । मूल ओंकाररूप की जननी । वही जानो ।५। आकार उकार मकार । तीनों मिलके होता ओंकार । तदनन्तर हुवा विस्तार । पंचभूतोंका ।६। अन्तरात्माका नाम आकाश ।

उससे हुवा वायुका जन्म। आगे हुवा वायुसे जन्म। तेजरूप अग्निका ।७। समीर गति होते ही अनिवार । तेजरूप हुवे अग्निसूर्य । वो समीर हुवा जब शीतल । तब हुवा जल उत्पन्न ।८। शुष्क हुवा जब जल । तब उसीका जो कठिनांश । वही बना पृथिवीरूप । जिससे आगे हुवे नाना बीजांकुर ।९-१०। पत्र पुष्प फल मूल। नाना वर्ण रसमय अन्न। अन्नसे रेत, रेतसे जीव। हुवे सब प्रत्यक्ष ।११-१३। अंडज जारज स्वेदज उद्भिज। जीवयोनी चौरासीलक्ष। निर्माण हुवे तीनों लोक। और सब पिण्डब्रह्माण्ड ।१४-१५। एवं अष्टधा प्रकृति। और सबही जीव प्राणी। जलसे हुई इसकी उत्पत्ति। बिना जल पावेंगे मृत्यु ।१६। यहां न करना अनुमान। लेवो प्रत्यक्ष प्रचित। अब संहारका भी विचार। करना चाहिए ।१७-२०। आरंभसे आखिर पर्यन्त। करता है एक आत्माराम। सुनिए संहारका प्रकार। अगले समासमें ।२१-२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उभारणीनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवी हो जाय अंत । पंचभूतोंका कल्पान्त । शास्त्रोंमें है इसका वर्णन । सुनिए साद्यन्त ।१। शतवर्ष अनावृष्टि। उससे जल जाय सृष्टि। पर्वतसह अखिल पृथिवी। हो जाय भंग ।२। द्वादश कलात्मक सूर्यमंडल। करे दहन यह भूगोल। उस दाहसे पीडित शेष । करने लगेगा विषवमन ।३-४। वह भयंकर विष और पावक । जला देते हैं पाताल। तब प्रबलवात झंझावत। बहे अनिवार ।५-६। ग्यारहरुद्र द्वादश सूर्य। विद्युल्लता और प्रलयपावक। पृथिवीको करते हैं भस्म। पूछे कौन मेरूको ।७-८। पश्चात् होती है महावृष्टि। जलरूप हो गई पृथिवी। तब शेष कूर्म वराह भी। गये छोड़के पृथिवीको ।९-१३। चंद्र सूर्य तारांगण। सब ही होते एक रूप। प्रलय मेघ गरजत। असंभाल्य जल सर्व ओर ।१४-१६। सप्तसिंधु नदी जल । होते ही सब जलमय। तब हुवा क्षुब्ध प्रलयपावक । शुष्क करे जलको भी ।१७-१९। उस वन्हीको खावे पवन। जैसा कोई गया बुझ दीप। ऐसा प्रलयवात का संचार। होता रहे केवल ।२०-२१। किन्तु अनंत अपार जो आकाश। क्या उसमें वायुका प्रभाव। स्वयं ही होता है विलीन। आकाशमें ।२२। एवं पंचभूतोंका विस्तार। और मूलमायाका विस्मरण। तब कहां होंगे पदार्थ। और ये मानव ।२३। एवं दृश्यजात गया सर्व। जड़ चंचलभी उसके साथ। रहा जो एक शाश्वत।

वो केवल परब्रह्म ।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे प्रलयनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

अथ एकदा दो जन । घूमते रहे उदासीन । मार्ग क्रमते क्रमते जान । बोलने लगे कथा एक ।१। कही कहानी सुनिए आप । होते स्त्री और पुरुष । दोनोंमें था बहुत प्रेम । पुत्र हुवा उनको एक ।२-३। था भला कार्यकर्ता जान । उसको भी एक हुवा पुत्र । पितासे था अर्धचतुर । किन्तु व्याप उसका बहु ।४-५। उससे हुवे कन्या पुत्र । उनमें जो ज्येष्ठ पुत्र । वो था क्रोधी अज्ञान । संहार कारक ।६-७। मूल पुरुष था निष्क्रिय । पुत्र उसका व्यवसायी सूज्ञ । किन्तु नातुका ज्ञान था अर्ध । पणतु तो पूर्ण अज्ञानी ।८-९। पुत्र करे सबका पालन । नातु पुनः पुनः करे सृजन । पणतु केवल करे संहार । अपराध होते ही ।१०। हो गया वंश विस्तार । काल भी गया आनंदरूप । किन्तु कालान्तरसे संशय द्वेष । हुवे उत्पन्न परस्पर ।११-१२। हुवा बहुत गृहकलह । सबही हो गये उन्मत्त । तब हो गया संहार । यादवसम उनकाभी ।१३-१४। बाप पुत्र पोत्र, प्रपोत्र । हो गया सबका निःपात । कन्या पोता या पुत्र । बचा नाहीं कोई भी ।१५। ऐसी कहानी करे विवरण । उसको नाहीं जन्ममरण । श्रोता वक्ता दोनों ही धन्य । प्रचितिकारण ।१६। ऐसी कहानी अपूर्व । अनेक बार होत जात । इतना कहके निवांत । हो गये गुसांई ।१७। ऐसी कहानी अंतःकरणमें । जो कोई रखते सुनत । वे ही जगोद्धार करेंगे । कहते हैं रामदास ।१८-२०। उस जगोद्धारका लक्षण । है सारासार निरूपण । विवरण करनेसे आवे ज्ञान । निःसंदेहरूप ।२१-२२। अष्टदेहका होवे निरसन । होगी प्रचित निश्चित । अखंड रहे समाधान । निरूपणयोगसे ।२३। जहां तत्वोकी भीड । वहां क्या होगा निवांत । इसीकारण उपाधिरहित । होना चाहिए ।२४। ऐसा सूक्ष्म संवाद । करतेही रहो करत । अगले समासमें लघुबोध । सुनिए सावधान ।२५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कहाणी निरूपणनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

कहते हैं जो पंचभूत । इनका नाम और रूप । होना चाहिए स्वानुभव । जिससे

होवे ज्ञान ।१। इनमेंसे कौन है शाश्वत । और कौन अशाश्वत । इसका भी प्रत्ययसे विवरण । करना चाहिए ।२। पंचभूतोंका विचार । नामरूप सारासार । इसकाही मैं निर्धार । करता हूं अब ।३। पृथिवी आप तेज । वायु और आकाश । ऐसा है नाम संकेत । अब सुनिए उनका रूप ।४-७। पृथिवीमें रचना घटना । जलका भी शुष्क होना । तेजका प्रकट होना या बुझना । वायु भी होता है स्तंभित ।८-९। आकाश है नाममात्र । एवं पंचभूत नाहीं स्थिर । है सबही नाशवन्त । आत्मा एक शाश्वत ।१०-११। उस आत्माका ज्ञान । किसीकी न होवे आकलन । इसीलिए पूछे तो बतावे संतजन । कैसे है वो आत्मा ।१२। कहेंगे वे संतजन । आत्मा है अविनाश । अज अमर निराकार । यद्यपि भासे विकारवान ।१३-१४। जानो निराकार है नित्य । और आकार है अनित्य । यही है नित्यानित्य । विचारणा ।१५। सारमें भासे असार । असारमें भासे सार । इसीलिए क्या सार क्या असार । शोधके देखो ।१६। पंचभौतिक है अनेक । किन्तु है वे माईक । उन सबमें व्यापक । है एक आत्मा ।१७। चारों भूतोंसे श्रेष्ठ गगन । उससे भी श्रेष्ठ सघनब्रह्म । देखे लक्ष्यपूर्वक एकाग्र । तो ब्रह्मसे गगन अभिन्न ।१८। उपाधि है तो है आकाश । न हो उपाधि तो न आकाश । निराभास ब्रह्म है अविनाश । दिखे यद्यपि आकाशसम ।१९। न करो बहुत विवंचना । अविनाश को ही देखना । किन्तु अनुमानसे प्रथम जानना । विवेकपूर्वक ।२०। परमात्मा है निराकार । यही एक जानो है सार । स्वयं भी कौन इसका विचार । करना चाहिए ।२१। वायुके आधार से देह । करता है सब कुछ कार्य । छोड़ जावे देहको श्वास । तो होवे प्रेत ।२२-२३। देहके बिना पवन । कार्य करनेमें असमर्थ । ऐसा है अन्योन्यसंबंध । वायु और देहका ।२४। दिखता है मनुष्य-देह । विचार करनेसे होवे ज्ञान । कि नाहीं वहां देह और पवन । जब दानोंही है नाशवन्त ।२५। दोनों में ही है जो पर । किन्तु सब देहोंमें रहता है सतत । वही एक कर्ता ऐसे ज्ञान । है लक्षण अभेद-भक्तिका ।२६। स्वचछासे न होवे कार्य । तो क्या मानना कर्ता आपन । भोक्ता भी कैसे आपन । ऐसा करना विचार ।२७। अविचार और विचार । हैं जैसे अंधकार और प्रकाश । वैसे विकार और निर्विकार । होंगे कैसे एकरूप ।२८। जहां नाहीं विचार । वहां न होगा ज्ञान । वहां न चले अनुमान । तर्कातीत वस्तु ।२९। जहां प्रत्यय वहां न्याय । प्रत्यय नाहीं तो अन्याय । क्या कोई जन्मजात अंध । करे रत्नपरीक्षा ।३०। इसीलिए ज्ञानी धन्य धन्य । जो निर्गुणसे अनन्य । होते ही आत्म-निवेदन । मान्यता पावे ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे लघुबोधनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म निर्मल निश्चल निराभास । आकाश है उसका दृष्टान्त । जो कि विस्तारसे है अपार । ब्रह्मसदृश ।१। किन्तु आकाश केवल अवकाशरूप । जिसमें रहते हैं सर्व पदार्थ । इसका होना चाहिए प्रत्यय । नाहीं तो व्यर्थ सर्व ।२। वैसे ही ब्रह्म है निश्चल । आत्मा केवल चंचल । उस आत्माके लिये दृष्टान्त । है जानो वायुका ।३। घटाकाश ब्रह्मका दृष्टान्त । घटबिंब आत्माका दृष्टान्त । विवरण करे तो दोनोंका अर्थ । समझमें आवे ।४। जो जो होता है वो सब भूत । इसीलिए सब नाशवन्त । होता जाता है चंचल । ऐसे जानना चाहिए ।५। अविद्या जड़ आत्मा चंचल । जड़ कर्पूर आत्मा अनल । दोनों भी जले तत्काल । निःशेष होवे ।६। ब्रह्म आकाश हैं निश्चल । आत्मा वायु हैं चंचल । जानते मिथ्या या सत्य । परीक्षावन्त ।७। जड़ अनेक आत्मा एक । ऐसा आत्मानात्मा विवेक । आत्माको ही कहो जगन्नायक । जगका चालक ।८। जड़ अनात्मा चैतन्य आत्मा । सबमें है वो सर्वात्मा । किन्तु है वही चंचलात्मा । नाहीं निश्चल ।९। निश्चल एक परब्रह्म । वहां नाहीं दृश्यभ्रम । निर्भ्रम है विमल ब्रह्म । जैसे वैसे ।१०। है आत्मा विवेक श्रेष्ठ । उससे श्रेष्ठ सारासार विचार । सारासार विचारसे संहार । होता है प्रकृतिका ।११। विचारसे प्रकृतिका संहार । दृश्य रहते हो उसका निरास । अध्यात्म श्रवणसे करता है प्रवेश । निर्गुणमें अंतरात्मा ।१२। बढ़त बढ़त जाये सत्यार्थ । तो अंतरात्मा बढ़े उसके साथ । अर्थ होवे स्वार्थपर जघन्य । उतरे आत्मा संसारमें ।१३। अर्थसदृश होवे आत्मा । चाहे मन वहां जाता । अनुमान करे तो होता । संशयग्रस्त ।१४। निःसंदेह चलता है अर्थ । तो आत्मा भी होता है निःसंदेह । अनुमानमें चलेगा अर्थ । तो आत्मा अनुमानरूप ।१५। चले कथा नवरसिक । तो श्रोता होवे तद्रूप । भूल जावे परमार्थ । आत्मा होवे नवरसिक ।१६। जैसा जैसा होवे संग । वैसा आत्माका बने स्वभाव । इसीलिए उत्तम आचरण । करना चाहिए ।१७। होवे उत्तम अन्नका वर्णन । तो मन ही बने अन्नाकार । वर्णन होवे वनितालावण्य । तब मन होवे कामाकार ।१८। जो जो होवे पदार्थवर्णन । उसका श्रवण या दर्शन । वही अभ्यंतर में होवे दृढ़ । कौन देखे अनहित ।१९-२०। इसीलिए छोड़ो अब सर्व । देवका ही करो शोध । तब ही समझ आवे मर्म । परमार्थ मार्गका ।२१। नाना सुख हैं देव निर्मित । सुखके कारण भटकते लोग । करते आजन्म प्रयत्न । तो भी न होते सुखी ।२२। शोधो मुझे, छोड़ो सबकुछ । ऐसे है भगवद्वचन । किन्तु करते हैं लोग अमान्य । भगवन्तका

वचन ।२३। इसीलिए होते हैं दुःखित । यद्यपि सर्वकाल करते कष्ट । सुखही चाहता उनका मन । जो न मिले अभक्तोंको ।२४। बहु सुख होने हुए भी जन । चाहते हैं और भी सुख । किन्तु कहते कहते सुख सुख । भोगते केवल दुःख ।२५। ऐसे न करो तुम सूज्ञ । करो वही जो सुख कारण । देवका ही करो शोध । ढूंढना पडे यदि ब्रह्माण्ड ।२६। मिल जाय जब मुख्य देव । तो क्या होगा सुखमें न्यून । किन्तु मंदबुद्धि जो लोग । वे छोड़ते विवेक ।२७। विवेकका फल है सुख । अविवेकका केवल दुःख । करो जो हो आवश्यक । इन दोनोंमेंसे ।२८। पहचानो कर्ता है कौन । इसका नाम है विवेक । छोड़ जावे उसीको जब । तब होता परम दुःख ।२९। क्या कहूं मैं बहुत । करना है अपना हित । तो पहचानो कर्ता जो देव । करो न विसर कदापि ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे प्रत्ययविवरणनाम समास सातवां ॥७॥

।। श्रीराम ।।

करता है श्रोता प्रश्न । कहिए स्वामी कर्ता कौन । बनाया किसने ब्रह्माण्ड । तब वक्ता देव प्रत्युत्तर ।१। यहां है बहुत प्रकार । बहुत जन बहुत मत । उत्तम मध्यम या कनिष्ट । सुनिए सावधान ।२-३। अपनी अपनी उपासना । श्रेष्ठ मानते लोग नाना । तदनुरूप करते हैं भावना । सृष्टिकर्ता-विषयमें ।४। कोई ऐसे ही बोलती । कर्तादेव मंगलमूर्ती । कोई कहते हैं सरस्वती । सर्वकर्त्री ।५। एक कहे है भैरव । एक कहे खंडेराव । एक कहे वीरदेव । एक कहे भगवती ।६। कहे कोई नरहरी । कहे कोई वनशंकरी । कर्ता है कहे कोई । नारायण एक ।७। श्रीराम श्रीकृष्ण भगवन्त । केशव श्रीरंग पांडुरंग । झोंटिंग मुंज्या अग्नीसूर्य । लक्ष्मी मारूती धरत्री ।८-११। एक कहे तुकाई । एक कहे यमाई । एक कहे सटवाई । बोलते ऐसे ।१२। वामन भार्गव परमात्मा । विरणा बस्वंणा रेवंणा । कार्तिक स्वामी या खळचा । बोलते है अन्य कोई ।१३-१५। गुरुदत्त व्यंकटेश । ब्रह्मा विष्णु जगन्नाथ । पर्जन्य वायु महेश । या होवे देव निर्गुण ।१६-१८। कहे कोई कर्ता जीव । कहे कोई प्रारब्धयोग । कोई कहे प्रयत्न या स्वभाव । कोई क़हे है माया ।१९-२०। ऐसे कर्ताविषयक विचार । भरा है केवल बाजार । अब किसका है सत्य उत्तर । कहे कौन ।२१। जो जिसने माना है देव । उसको ही कहते कर्ता एक । ऐसा है मातोंका कोलाहल । ।२१। किन्तु यहां एक प्रत्यय । होना चाहिए प्रमाण । नाहीं स्वाभिमान कारण ।२२-२४। किन्तु यहां एक प्रत्यय । होना चाहिए प्रमाण । इसीलिए सुनिए अब ।२५। जो कुछ है कर्ता का कार्य । हो न सके अनुमानका कोई काम ।

वो कर्ताके पूर्व । ब्रह्मादिक जब पंचभौतिक । तो कैसे होंगे वे कर्ते ।२६-२७। पंचभूतोंको व्यतिरिक्त । है जो निर्गुण निराकार । उसमें क्या देखना कर्तव्य । जिसको नाहीं विकार ।२८-२९। सगुण कार्यमें अंतर्भूत । तो हो न सके वो कारण । तो अब कर्तव्यका संबंध । जोड़ना किसके साथ ।३०। मिथ्या सृष्टीका कर्ता कौन । यह प्रश्न ही है अप्रमाण । हो देव सगुण या निर्गुण । कर्तृत्व उसका होगा कैसे ।३१-३२। सगुण आता है कार्याभ्यंतर । निर्गुण होगा ही नाहीं कारण । इसीलिए कर्ता का अभाव । दिखता है दोनों ओर ।३३। बचा अब एक ही पर्याय । दृश्य का सत्य होना असंभव । जब दृश्य ही होवे असत्य । तो कर्ता होगा किस कार्यका ।३४-३५। सत्य वस्तु की हो जाय प्रचित । तो कौन करे असत्यकी बात । करना ही हो तो करो खंडन । असत्य जो पूर्वपक्ष ।३६। वस्तुतः प्रत्यय है अनिर्वाच्य । ऐसे जानते हैं सूज्ञ । ऐसा ही लेना अनुभव । अंतर्यामिमें ।३७। तब श्रोता करता है प्रश्न । देहमें सुखदुःखभोक्ता कौन । तो इसका सुनिए निरूपण । अगले समासमें ।३८।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कर्तानिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

आत्माको शरीरयोगसे । उद्वेग चिंता करनी पडे । शरीरयोगसे आत्मा रहे । है यह सत्य प्रत्यक्ष ।१। देहको न दो अन्न । तो आत्माका रहना असंभव । आत्माबीन चैतन्य । देवे कौन देहको ।२। ऐसा है परस्पर संबंध । भिन्न भिन्न करना निरर्थक । उभय होते हैं जब एकत्र । तबही होवे कार्य ।३। देह हो जाय चैतन्यहीन । तो क्या आत्मा उठावे पदार्थ । स्वप्न-भोजनसे क्या उदर । भरता है प्राणी ।४। यदि हो प्राणी स्वप्नावस्थ । तोभी आत्मा शरीरमें वर्तत । या हो प्राणी निद्रावस्थ । तो भी शरीरमें आत्मा ।५। अन्नरससे बढ़ावे शरीर । विचार शक्तिभी उसके साथ । वृद्धावस्था दोनोंकाही सावकाश । करता है नाश ।६। शरीरयोगसे जब उन्मत्त द्रव्य । करता है जब सेवन । तब मोह और विस्मरण । घडे आत्माकोही ।७। या देहमें जाता है विष । तो छोड़े देहको निश्चित । इसीलिए वृद्धि और क्षय । होते आत्माके कारण ।८। इसी प्रकार आना जाना । सुख या दुःख भोगना । इत्यादि कर्म करे आत्मा । देह संयोगसे ।९। वल्मीकसम है शरीर । उसमें नाड़ियां है असंख्य । वे ही जानो असंख्य मार्ग ।

जिनसे जावे अन्नरस ।१०-११। नाडीद्वारा धावे जीवन । उस जीवनमें खेले पवन । श्वासोच्छवास भी पवनरूप । आत्माके कारण ।१२-१३। शरीर होवे तृषासे शुष्क । तो करे आत्मा विचार । उदक की ओर चलावे शरीर । पिलावे नीर ।१४। बोले शब्द चाले मार्ग । हाथसे करे भोजन । या प्रसंगानुरुप इतर कर्म । करवाता है सब आत्मा ।१५-१८। खोले मुख डाले अन्न । दांतसे चाबे जिव्हासे ले रस । समझे रुक्ष या क्षार । पावे खेद आनंद ।१९-२५। एवं देहमें सुख दुःख भोक्ता । है एक आत्मा तत्वता । आत्माके बिन शरीर वृथा । है केवल प्रेत ।२६। अनन्त वृत्तिरूप मन । जाणीव है आत्माका गुण । त्रिभुवनके प्राणी समस्त । उनमें है आत्मा एक ।२७। जगमें है वो जगदात्मा । विश्वमें है वो विश्वात्मा । सबका संचालक आत्मा । वो है सर्वात्मा ।२८-३०। पवनके साथ आवे परिमल । वायुसंगसे उड़े धूल । किन्तु रहते है नाहीं शाश्वत । वायु सम दोनों ही ।३१। शीत उष्ण धूम्र या रोग । वायुसाथ आते हैं सर्व । करते संचार भूत-पिशाच्च । किन्तु सर्वश्रेष्ठ वायु एक ।३२-३३। वायुसम नाहीं वे शाश्वत । आत्मा-सम नाहीं वायुभी शाश्वत । है आत्माका चापल्य । वायुसे अधिक ।३४। कठिन पदार्थसे रुके पवन । उसका भी आत्मा करे भेद न । किन्तु होता है स्वयं अच्छेद्य । कठिन वस्तुसे भी ।३५। वायु करता है आवाज । आत्मा रहता है अबोल । विवरण करनेसे आवे समझ । मौन्यगर्भ अर्थ जो ।३६। देहसुखकारण जो कर्म । वो देवे आत्माको समाधान । देह व्यतिरिक्त नाना साधन । कैसे देवे और कौन ।३७-३८। देहात्मा योगका चमत्कार । होता है सब कुछ कर्म । होवे जब दोनों भिन्न भिन्न । तो कर्मका अभाव ।३९-४०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मविवरणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

सूत्रापानमाला सुमनमाला । फलमाला बीजमाला । रत्नमाला या कवडीमाला । सूत्राधारसे बनती ।१। स्फटिकमाला मोहरमाला । काष्टमाला गंधमाला । धातुमाला मणीमाला । नाना प्रकार ।२। सबमें रहता है सूत्र । अन्यथा रहे ना मालारूप । वैसेही आत्मा है सूत्र । किन्तु दृष्टांत अपूर्ण ।३। मणीमें रहता है जो सूत्र । वो होता है केवल मध्यभाग । आत्मा अंतर्बाह्य व्यापक । देखना चाहिए ।४। आत्माहै अत्यंत चपल । सूत्र क्या हिले आपन । इसीलिए दृष्टांत हीन । है आत्माको सूत्रका ।५। नाना वल्लियोंमें जो

जलांश । वो ईखमें बने मधुर रस । किन्तु रस और रसहीन ईख । है भिन्न भिन्न ।६। वैसे देही अनात्मा देह आत्मा । उससे पर वो परमात्मा । निरंजनको उपमा । है ही नाहीं ।७। राजासे रंक पर्यन्त । हैं सब मनुष्यही मनुष्य । किन्तु क्या हैं समसमान । सब ही लोग ।८। देव दानव मानव । नीच योनि हीन जीव । पापी और पुण्यवान । होंगे कैसे एकरूप ।९। भगवन्तका एक अंश । हैं जगके व्यापारके लिए पर्याप्त । किन्तु सामर्थ्यके विविधरूप । देव मुक्ति या अधोगती ।१०। शक्कर मिट्टी पृथिवीके प्रकार । किन्तु मृत्तिका खावे ऐसा कौन । विष भी है जलस्वरूप । तो क्या दोनों एकरूप ।११। इसीलिए पुण्यात्मा और पापात्मा । हैं यद्यापि दोनों अंतरात्मा । साधु भोंदुकी ऐक्यता । होगी ही नाहीं ।१२। यदि है अन्तरात्मा एक । तो भी न करना नीचसंग । पंडित और मूर्खजन । होंगे कैसे एकरूप ।१३। मनुष्य और गर्दभ । राजहंस और कुक्कुट । राजा और मर्कट । एकरूप कैसे ।१४। है भागिरथीका जल । नालेमें कर्दमयुक्त जल । किन्तु सेवन करते गंगाजल । न दुर्गंधयुक्त ।१५। इसीलिए चाहिए साधक । आचारशुद्ध विचारशुद्ध । वीतरागी और प्रबुद्ध । सर्वकाल ।१६। शूरको छोड़ लेवो कायर । तो क्या संग्राममें सके वो लड़ । या श्रीमंत को छोड़ दरिद्र । क्या है योग्य सेवार्थ ।१७। जीवन होवे अन्नरूप । अन्न का होवे वमन । तो क्या उसका सेवन । करेगा कोई ।१८-१९। वैसे निंद्यको छोड़के वंद्य । धरो हृदयमें सुदृढ़ । भरो सर्व भूमंडल । सत्कीर्तीसे ।२०। उत्तम माने मार्ग उत्तम । अधम माने मार्ग अधम । वो तो हैं भाग्यहीन । जन्मजात ।२१। इसीलिए छोड़ो अभाग्य लक्षण । करो ग्रहण उत्तम गुण । हरिकथा पुराण श्रवण । रहो नीति न्यायसे ।२२। विवेक पूर्ण वर्तन । संतुष्ट राखो सकल जन । धीरे धीरे पुण्यश्लोक । करना चाहिए उनको ।२३। बालक की चालसे चलो उसका मनोगत जानके बोलो । वैसे ही जनको समझावो । धीरे धीरे परमार्थ ।२४। मुख्य है मनोगत रक्षण । यही है चातुर्य लक्षण । ज्ञान है जिसके सर्वांग । वही एक चतुर ।२५। किन्तु है जो केवल अज्ञान । उसको भी न कहो 'अज्ञान' । तब ही हो जाय दिग्विजय । निस्पृह साधकोंका ।२६। प्रसंगानुसार स्थानांतर । करना चाहिए ज्ञानपूर्व । प्राणीमात्र का अंतरंग । बनना चाहिए ।२७। मनोगत करे रक्षण । तो परस्पर होवे समाधान । भंग होते ही जनाभ्यंतर । होगी अनावस्था ।२८। इसीलिए राखे जो मनोगत । वही है श्रेष्ठ महंत । मनोगत रक्षणसे ही समस्त । होते लोग आकर्षित ।२९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिकवण निरूपणनाम समास दसवा ॥१०॥

दशक चौदहवां अखण्डध्याननाम

॥ श्रीराम ॥

सुनिए अब निस्पृहताकी सिकवण । युक्ति बुद्धि शहाणपण । जिससे राखे समाधान । निस्पृह निरंतर ।१। सुगम मंत्र अनुभवदायक । सुसह्य औषध गुणवन्त । वैसे सप्रचित मेरे बोल । हैं अति सुगम ।२। अवगुणोंका तत्काल नाश । और उत्तमगुणोंका होवे लाभ । जब सेवन करे कोई औषध । शब्दरूप मेरे ।३। बनो न पहले ही निस्पृह । बन जाओ तो छोड़ो ना वह । छोडे तो न करो गमन । स्वजन मित्रोंके साथ ।४। न करो कांतावलोकन । मनमें न लावो उसका सुख । हो जाय च्युत यदि धारिष्ट । तो बतावो ना मुख ।५। रहो न एकस्थान । न हो कदा क्रियाहीन । देखो न कदा साभिलाष । परद्रव्य परदारा ।६। होवो ना आचारभ्रष्ट । लेवो ना दान द्रव्य । आने न दो दूषण । अपनेपर किंचिन्मात्र ।७। मांगो भिक्षा न धरो लाज । किन्तु लेवो न व्यर्थ अधिक । देवो न अपनी पहचान । पूछे जभी कोई ।८। रहने न दो वस्त्र मलिन । खावो न बहु मिष्ठान्न । करो वर्तन प्रसंगानुसार । करो ना दुराग्रह ।९। न करो मन भोगासक्त । मानो न देहदुःखसे त्रास । धरो न बहु आस । जीवित्वकी ।१०। गिरने न दो वैराग्य । न हो चंचल धारिष्ट । होने न दो ज्ञान मलिन । राखो विवेक बल ।११। छोड़ो ना करुणा-कीर्तन । खंड न हो अंतर्ध्यान । टूटना न दो प्रेम सूत्र । सगुण मूर्तीका ।१२। चिन्ता न करो सर्वकाल । कष्ट करनेसे न मानो खेद । कठिन समयमें भी धीर । छोड़ो ना कदा काल ।१३। करे कोई निन्दा या अपमान । या बोले कोई धिःकार वचन । तो भी न छोड़ो समाधान । या अपना धारिष्ट ।१४। धरो न कोई लोकलाज । करावे कोई तो भी न हो लज्जित । या न धरो कभी क्रोध । जब चाहते हो विरक्ति ।१५। छोड़ो न कदा शुद्धमार्ग । ना करो कलह दुर्जन साथ । पड़ने ना दो संबंध । चाण्डालोंसे कभी भी ।१६। संतप्त न हो कदा । न करो कलह सर्वथा । ढलने न दो अपना । शांत मन ।१७। हंसावे तोभी न हंसो । बुलावे तो भी न बोलो । चलावे तो भीं न होवो । क्षणक्षण चंचल ।१८। रहने न दो एक ही वेष । या परिचर्याका प्रकार । एक देशमें रहो न सतत । करो परिभ्रमण ।१९। किसीको न करो अति निकट । लेवो ना कदा प्रतिग्रह । न बैठो सर्वकाल । सभामें या लोगोंमें ।२०। न करो शरीर नियमाधीन । न दो किसीको भरोसा वचन । न धरो कदा अभिमान ।

नियमबद्धताका ।२१। किन्तु परमार्थकारण नित्यनेम । या तद्विषयक अभ्यास । छोड़ो न सहसा कदाकाल । ना होवो पराधीन ।२२। भंग न होने दो स्वातंत्रता । भंग न होने दो निरापेक्षता । करना न कभी परापेक्षा । क्षणक्षण ।२३। चाहो न देखना वैभव । चाहो न कदा उपाधिसुख । चाहो न खण्डना एकान्त । स्वरूपस्थितिमें ।२४। करो न वर्तन अनर्गल । धरो न किमपि लोकलाज । होवो न कभी आसक्त । किसीमेंही ।२५। न करो खण्डित गुरुपरंपरा । छोड़ो न कभी उपासना । साधन उपाधि ज्ञानमार्गका । कर्म वैराग्य और भजन ।२६-२७। करो ना कदा अतिवाद । धरो ना लालसा अनीतिकारक । आने न दो क्रोधका पूर । कहो ना माने ना उसको ।२८-२९। छूटे ना अलिप्तपण तो ही । करना हो तो करो उपाधि । न धरो महत्व अपनाही । जिससे होगी मानहानि ।३०-३१। अकृत्रिमता और लीनता । छोड़ न दो सर्वथा । अधिकार बिना ना कहना । परमार्थमार्ग ।३२-३३। छोड़ी न कठिन वैराग्य । ना छोड़ो कठिन अभ्यास । किन्तु बोलो न कठिन शब्द । ना करो कठिन आज्ञा ।३४-३५। न होना किसीमें आसक्त । कृति बिन करो न उपदेश । शिष्योंसे मांगो ना कुछ । ना बोलो शब्द उद्धट ।३६। न करो कभी इंद्रियस्मरण । या शाक्तमार्गका अनुसरण । या अनर्गल स्वेच्छाचार । करो न कदाकाल ।३७। न हो वैभवसे गर्वित । या नीच सेवासे लज्जित । वर्तन न करो अमर्याद । न्याय नीति वर्जित ।३८-३९। न बोलो बिना समझ । न करो अनुमानसे निश्चय । सावधानी या व्यापकपण । छोड़ना न चाहिए ।४०-४१। करो न विकल्प या आलस्य । करो न आज्ञा स्वार्थकारण । साधो सबका ही हित । विचारपूर्वक ।४२। करते रहो परोपकार । टाल दो पारपीड़ा-विचार । द्रव्यहेतु न करो किर्तन । छोड़ो ना महंतपद ।४३-४५। मत बोलो संशयात्मक । न करो बहुत निश्चय । न आवे समझमें ग्रंथ । तो न कहो उसका अर्थ ।४६। गर्वित होके न पूछो प्रश्न । न करो कदा वादछल । कहूंगा कभी ऐसे वचन । न दो अभिमानसे ।४७-४८। राजद्वारमें कार्यकर्ता । न हो स्वार्थ बुद्धिसे कदा । मांगते हो जब तुम भिक्षा । तो कहो न अपनी परंपरा ।४९-५०। प्रपंच-उपाधि में मध्यस्थ । या प्रपंचका बहु प्रस्थ । होने न दो न खावो अन्न । अतिथिसम कदापि ।५१-५२। हो जहां श्राद्धपक्ष भोजन । या हो व्रत-उद्यापन । या हो नामकरण विवाह समारंभ । खावो न अन्न वहां कदा ।५३-५४। द्रव्य लेके यात्रा वा कीर्तन । या उदरभरणार्थ गायन । करो ना अन्यान्य गृहमें भोजन । निस्पृहता चाहते तो ।५५-५६। द्रव्यार्थ होना पुजारी । द्रव्यार्थ होना मठस्वामी । द्रव्यार्थ करना पुण्यसामग्री । करना न चाहिए निस्पृहको ।५७-५८। लेवो न इनाम द्रव्य या भूमी । छोड़ो न तुम्हारी 'भिक्षां देही' । भक्तिमार्गकी उभारणी ।

करो रह कर आलिप्त ।५६। क्षण एक न रहो बिनाप्रयत्न । आने न दो आलस्य । न सहो उपासनाका वियोग । जब तक न हो देहपात ।६०। न करो उपाधि बहुत । करे तो भी रहो अलिप्त । सगुण भक्ति भजनमार्ग । छोड़ो ना कदा ।६१-६२। करो मत बहुकष्ट बहुभाषण । बहु निद्रा या बहुभोजन । तो भी नाहीं योग्य आलस्य । अबोल उपवास ।६३-६५। बहु जनवास बहु एकान्त । बहु नियम बहु देहपोषण । बहु कर्मपठण बहु व्यवहार-संग । छोड़ो ना किन्तु संतसंग ।६६-६७। न हो बहु लोगाधीन । न करो किसीपर बहु प्रेम । किन्तु न हो अनाचारी या निष्ठुर । या न हो आत्मघातकी ।६८। न धरो बहुत संशय । न करो आचरण मुक्तमार्ग । न करो बहुत साधन । साधन बिन रहो मत ।६९। न करो बहु विषयभोग । न करो बहु विषय त्याग । न करो बहुत देहलोभ । करो न देहको पीडा ।७०। लेवो अद्वैतका अनुभव । रहो ना ब्रह्मानुभव बिन । आत्मानुभव का करो ना कथन । ना धरो मौन भी ।७१। हो जावो तुम उन्मन । किन्तु बिना मन चले ना काम । लक्षातीत हो यदि अलक्ष्य । कैसे साध्य बिना लक्ष्य ।७२। ब्रह्म है मनबुद्धि अगोचर । किन्तु बिना बुद्धि है अंधकार । ज्ञानका होना चाहिए विसर । किन्तु नाहीं अज्ञान सत्य ।७३। धरो न ज्ञानका गर्व । ज्ञान बिन तो अज्ञान । है वस्तु तर्कातीत । तर्कानुमान भी चाहिए ।७४। दृश्य पदर्थोंका न करो स्मरण । किन्तु न योग्य सब विस्मरण । न करो वृथा चर्चा जान । परमार्थ चर्चा अवश्यक ।७५। परमार्थमें न होने दो भेद । किन्तु न करो वर्णसंकर । न उड़ावो अपना धर्म । धर्माभिमान भी मिथ्या ।७६। बोलो न आशा-बद्ध वचन । न करो कर्म विवेकबिन । हिलने न दो समाधान । कैसा भी हो प्रसंग ।७७। लिखो मत असंबद्ध । किन्तु लिखना चाहिए अवश्य । पढ़ो मत पोथी असंबद्ध । किन्तु पढना तो चाहिए ।७८। रखो वक्तृत्व गुण सतत । प्रश्न पूछे तो न मानो खेद । सुख हेतु मानो सिकवण । महन्त गुण आवे अकस्मात् ।७९-८०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निस्पृहलक्षणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

ब्राह्मणोंकी मुख्य दीक्षा । ओं भवति देओ भिक्षा । छोड़ना नाहीं किन्तु रक्षा । करनी ही चाहिए ।१। भिक्षासे करे जो भोजन । वो है निराहारी ऐसे जान । लेता नाहीं वो प्रतिग्रहदान । पावे भिक्षासे ही आनंद ।२। संत असंत सब जन । उनसे अनाज मांग करे जो भोजन । वो करे अमृतप्राशन । दिन अनुदिन सर्वकाल ।३।

भिक्षाहारी निराहारी । भिक्षा नैव प्रतिग्रहः ।
असंतो वापि संतो वा । सोमपानं दिने दिने ॥

ऐसी भिक्षाकी महिमा । सर्वोत्तमकी भी है मान्यता । ईश्वरकी अगाध महिमा । वो भी मांगे भिक्षा ।४। दत्त गोरक्षादि मुनी । सिद्ध भिक्षा मांगती । भिक्षासे प्रकट होती । निस्पृहता ।५। प्रतिवार एकेक घर । जाय भोजन के कारण । तो होवे वह पराधीन । स्वातंत्र्य नाहीं ।६। सप्ताहमें एक दिन । मांगे धान्य उदरकारण । जो होगा आलस्यपूर्ण । पराधीन भी ।७। जो करे भ्रमण नित्यनूतन । करे या सतत देशाटन । उसके लिये भिक्षा ही श्लाघ्य । जहां तहां स्वदेश ।८-९। मांगने से मानो ना कष्ट या लाज । करो भगवत्कीर्तन निरंतर । मांगते मांगते करो चमत्कार । होगा सबको आश्चर्य ।१०-११। भिक्षा है कामधुक गाय । सदा फलित न सामान्य । जाने जो भिक्षा सामान्य । वो है अभागी जोगी ।१२। भिक्षासे नित्य नई पहचान । बने स्वभाव निर्भय । प्रकट होवे महंतलक्षण । और ईशप्राप्ति स्वातंत्र्य ।१३-१४। भिक्षा मांगनेमें न प्रतिबंध । भिक्षाहारी तो स्वतंत्र । कर सके वो कालसार्थक । परमार्थ चिंतनसे ।१५। भिक्षा केवल अमरवल्ली । आपत्कालमें भी फलदायिनी । जहां चाहे वहां मिलती । साधकके लिये ।१६। पृथिवीपर देश नाना । फिरे तो उपवासी मरेना । कहीं भी जाये तो अकेला । होगा न भार लोगोंको ।१७। वाणिज्य और कृषीसे विशेष । है भिक्षा मांगना श्रेष्ठ । भिक्षासे आवे परम भाग्य । वैराग्यरूप ।१८-१९। लावे भिक्षा बहुत कोई । तो लेना एक मुष्टि । होना चाहिए अल्पसंतोषी । यदि चाहते हो निस्पृहता ।२०। मांगो भिक्षा सुखरूप । किन्तु बतावो निस्पृह-लक्षण । करो मृदु वाग्विलास । परम सौख्यकारी ।२१। ऐसी भिक्षाकी स्थिति । बोल दी मैंने यथामति । भिक्षा टाल सके विपत्ति भविष्यकालकी भी ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे भिक्षानिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

शब्दसुमनमाला कवित्व । अलौकिक परिमल अर्थ । वहां आते है संत षट्पदकुल । लेते हैं आनन्द ।१। ऐसी माला गुंफो अंतःकरण । उससे पूजा करो रामचरण । रहने दो ऐसे अखण्ड । ओंकारसूत्र नामस्मरण ।२। परोपकारके कारण । करना चाहिए कवित्व । उसका ही अब लक्षण । करूंगा मैं कथन ।३। जिससे जुड़े भगवद्भक्ति । जिससे जुड़े

विरक्ति। ऐसे कवित्व की युक्ति। बढावो सबसे पहले ।४। क्रियाबिन शब्दज्ञान । मानते नाहीं सज्जन। इसीलिए देवको प्रसन्न। करो सानुताप ।५। होवे जब देव प्रसन्न । तब बोले जो भक्त वचन। वह सब होवे श्लाघ्य। प्रासादिक काव्य ।६। धीट पाठ प्रासादिक। कवित्वके हैं तीन प्रकार । इसका ही निरूपण । सुनिए आप ।७। जैसे जैसे मन वांच्छित। वैसे ही हठसे बोलत। करे रचना उसीप्रकार। यह है कवित्व धीट ।८। किया बहुत पाठांतर। देख लिया ग्रंथांतर। उसका ही करके अनुकरण। उतारा करे एक ।९। किया शीघ्र कवित्व। सहज आया जो दृष्टिपथ। भक्तबिन उसका वर्णन। यह है धीटपाठ ।१०। कामुक रसिक श्रृंगारिक। वीर हास्य प्रास्ताविक। कौतुक विनोद अनेक। यह है धीटपाठ ।११। मन हुवा कामाकार। वैसे ही आते उद्‌गार। किन्तु धीटपाठसे भवपार। होगा नाहीं ।१२ करनी है उदरशांति । इसीलिये जो नरस्तुति । और इसीलिए जो व्युत्पत्ति । है कवित्व वो धीटपाठ ।१३। न करो कवित्व धीटपाठ। न करो कवित्व खटपट। न वा होना चाहिए उद्धट। पाषांडमत ।१४। न हो कवित्व वादांग। होना न चाहिए रसभंग। या न होना दृष्टान्तहीन। जिससे न रंगे मन ।१५। न हो कवित्व शब्दांडबर। न वा होना कुटिल। न वा छंदभंग मुद्राहीन। पुनरुक्ति दोषयुक्त ।१६-१७। व्युत्पत्तिहीन कलाहीन। शब्दहीन तर्कहीन। भक्तिज्ञान वैराग्यहीन। होना न चाहिए कवित्व ।१८-१९। भक्तिबिन जो अनुवाद। जो जानो है विनोद। प्रीतिबिन सुखसंवाद। घडना असंभव ।२०। ऐसे धीटपाठ कवित्व। अहंभावका एक प्रकार। अब सुनिए आप लक्षण। प्रासादिक काव्यका ।२१। वैभव कांता और कांचन। जिसको लगता है वमनप्राय। अभ्यंतरमें चलता है ध्यान। सर्वोत्तम का ।२२। जिसमें घड़ोपर घड़ी। भगवन्त प्रेमकी उठे लहरी। चढ़ती बढ़ती है माधुर। भगवद्‌भजनकी ।२३। जो बिना भगवद्‌भजन। जाने न दे एक क्षण। सर्वकाल जिसका अंतकरण। रंगे भक्तिरससे ।२४। जिसके मनमें भगवन्त। रहे निश्चल निवांत। वो स्वभावसे जो बोलत। वो है ब्रह्म निरूपण ।२५। हृदयमें बैठा है गोविन्द। तो होता नाहीं भक्तिभंग। भक्तिबिन अनुवाद। होगा नाहीं ।२६। प्रेमसे भरा है अभ्यंतर। तो वैखरी वदे तदनुसार। भावसे करे करुणा किर्तन। भक्त नाचे सानंद ।२७। लगा है भगवन्त पर मन। तो होवे ना देहभान। ना शंकित या लज्जायमान। हो जाय कदा ।२८। हुवा जो प्रेमरंगमें तल्लीन। हुवा जो भक्तिमदसे उन्मत्त। अहंभावका किया घात। लत्ताप्रहारसे ।२९। गाते नाचते निःशंक। तो क्या देखे लोगोंकी ओर। नयनोंमें उसके त्रैलोक्य नायक। करता है वास ।३०। बढ़े जब ऐसा प्रेमरंग। भगवन्तबिन चाहे ना अन्य।

स्वेच्छासे करे वर्णन । ध्यान कीर्ति प्रताप ।३१। नाना मूर्तियोंका ध्यान । नाना कीर्ती-प्रताप-स्तवन । इसके अपेक्षा नरस्तुतिवर्णन । लगे तृणतुल्य ।३२। ऐसा जो भगवद्भक्त । है जो संसारमें विरक्त । उसको ही कहते हैं मुक्त । साधुजन सर्वत्र ।३३। उस भक्तिका नवल । होवे सहज ही प्रकट । परमार्थ-मार्गका कवित्व । है जो प्रासादिक ।३४। कहूंगा अब उसका ही लक्षण । पुनरपी करूंगा निरूपण । जिस कवित्वसे अन्तकरण । होवे शांत ।३५। कवित्व हो सरल और निर्मल । कवित्व हो अन्वयार्थ प्रांजल । कवित्व हो अहंता रहित भक्तिपूर्ण । रम्य मधुर कीर्तिपद ।३६-३७। सुगम और छंदबद्ध । मृदु मंजुल भव्य अद्भुत । विशाल रसाल पदबंध । धाटी मुद्रा भक्ति सह ।३८-४१। नाना साहित्य दृष्टान्त । नाना तर्क नाना अनुमान । नाना मत नाना सिद्धान्त । पूर्वपक्ष निरूपण ।४२। नाना युक्ति नाना बुद्धि । नाना कला नाना सिद्धि । नाना व्युत्पत्ति मति स्फूर्ति । नाना धृति धारणा ।४३-४४। शंका आशंका प्रत्युत्तर । नाना काव्य शास्त्राधार । जिससे टूटे संशय अनेक । है वो कवित्व ।४५। नाना प्रसंग नाना विचार । नाना योग नाना विवरण । नाना तत्व चर्चा सार । नाम इसका कवित्व ।४६। पुरश्चरणादि नाना साधन । नाना तप तीर्थाटन । नाना संदेह निवारण । नाम इसका कवित्व ।४७। उपजे जिससे अनुताप । लौकिककी आवे लाज । जिससे होवे ज्ञानका उद्गम । उसका नाम कवित्व ।४८। जिससे बढ़े ज्ञान प्रबल । जिससे होगा वृत्तीयोंका लय । जिससे समझे भक्तिका मर्म । है वो कवित्व ।४९। जिससे होवे देहबुद्धिका भंग । होवे भव सिंधु जल शुष्क । प्रगट होवे जिससे भगवन्त । उसका नाम कवित्व ।५०। पाषांडका होवे नाश । सद्बुद्धि करे प्रवेश । जागे सारासार विवेक । जिससे, वो कवित्व ।५१। जिससे निरसे दृश्यभास । मिले सद्वस्तुका प्रकाश । टूटे भेदबुद्धि समूल । वो कवित्व उत्तम ।५२। जिससे छूटे संसारबंधन । जिससे होवे समाधान । जिसको मानते हैं सज्जन । उसका नाम कवित्व ।५३। ऐसे है कवित्वलक्षण । अनुपम और असाधारण । किया मैंने कुछ निरूपण । समझने हेतु ।५४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कवित्वकलानिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

कलियुगमें करो किर्तन । कोमल कुशल संगीत गान । छोड़ दो कर्कशकठिन । रखो वृत्तिशांत ।१-२। गावो मत गर्वयुक्त । गाते गाते न हो स्तंभित । गरजत न बोलो

गुह्य मर्म । गावो किन्तु ईशगुण ।३। भगवन्तके नाना नाम । नाना सगुणमूर्तीके ध्यान । कीर्तिस्तवनार्थ कीर्तन । करो अद्‌भुत प्रेमसे ।४-५। कीर्तन मिसे फंसावो मत । न करो किसीका छलन । या न करो केवल विनोद । जनमनरंजन ।६-७। जागरण करो देवके कारण । करो देव नामका जप । जनमें है जनार्दन । करो संतोष जनोंका ।८। कृतज्ञता प्रेमसे भरे उर । नेत्रोंसे आवे अश्रुका पूर । झगमग होता है ईशदर्शन । होते लोग आर्कार्षित ।९। न लगे करना पाचारण । न लगे "आईए आईए" ऐसे निवेदन । बिना करके कोई उपाय । आते हैं सुबुद्ध ।१०। पूछे कोई परमार्थमार्ग । तो टालो न उसका कार्यभाग । करो ना अन्य परिश्रम । लावे जो शीण ।११। न करो केवल बाह्यात्कार । जिससे ठगे जावें लोग । करोगे यदि दंभसे वेष । होगा नाहीं ध्यान ।१२। ध्यान करते समय । होने न दो चित्त चांचल्य । छोड़ो न किंचिन्मात्र धैर्य । अनवधानसे ।१३। छत्र चामरादि उपचार । करो देवपूजामें सादर । खडे रहो देवके सन्मुख । सेवक जैसे स्थिर ।१४। होके अति नम्र गुणवान । करो मधुर गायन । तालबद्ध तंतुवादन । वीणा तंबुरा सह ।१५। गाते गाते जब आवे रंग । उठे अंगपर रोमांच । तब आपसे ही करेंगे तुम नाच । थै थै थै ऐसे ।१६-१७। ऐसा प्रेमलभक्तोंका उल्हास । देखते ही होंगे लोग चकित । वे भी होते हैं तल्लीन । सुनते ही किर्तन ।१८। नामघोषसे जब कीर्तन । चलता है तालबद्ध गायन । तब उठते हैं निनाद जगदांतर । आते भाविक धावत ।१९। ऐसे जब होता है कीर्तन । तो नाना बुद्धिवन्त विद्यावन्त । मानते सानंद उपदेश । परमार्थ मार्गका ।२०। पाप छोड़ जावे दूर । पुण्यसंचय होगा अमाप । परान्तर होता है आर्काषित । भावभक्ति कीर्तनसे ।२१-२२। करने लगते स्तुति लोग । बुलाते 'बाबा बाबा' सप्रेम । करो करो आप कीर्तन । ऐसे कहते सादर ।२३। भला भला कीर्तनकार । भावुक लोगोंका भूषण । करे सर्वदा परोपकार । कथन करे भक्तिमार्ग ।२४। किन्तु न होना चाहिए गर्वित । या न स्वजन-ममताग्रस्त । या न आशाबद्ध लाचार । या न बुलावे लोगों को ।२५। जब हो कीर्तनमें भक्तिरंग । तो आपसे ही आते लोग । चलो चलो ऐसे परस्पर । बुलावे कीर्तन हेतु ।२६-२७। रत्नके पीछे रत्न परीक्षक । वैसे कीर्तनको आवे लोग । बैठते सन्निध करके एकाग्र । मन और लोचन ।२८। तब कीर्तिनकार भी कुशल । विनीत होके वदे सत्य । है जो सारासार विचार । परमार्थमार्गमें ।२९-३०। सत्य है जो परम अर्थ । उसका ही करे वो बोध । जो न समझे सूज्ञ भी लोग । श्रुतिशास्त्रोंका गर्भितार्थ ।३१। यह है कठिन काम । किन्तु वो करे कुशलतासे सुगम । शुकसारिकासम उसका बोल । होता है मधुर ।३२। अलक्ष्य ब्रह्ममें लगावे लक्ष । नेत्रकाभी होवे वो नेत्र । विहंगममार्गसे

अकस्मात । होता है ब्रह्मरूप अलक्ष्य ।३३-३४। क्षेत्रमें रहते ही वो क्षेत्रज्ञ । क्षोभरूप हो तो भी क्षमावान । दिखे यहि वो एकस्थान । तो भी है सर्वगामी ।३५।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे कीर्तनलक्षणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए हरिकथाका लक्षण । एक चित्त सावधान । जिससे मिल जाय उत्तम पद । रघुनाथ कृपाका ।१-२। सोना देवे सुगंध परिमल । ईखके होवे मधुर फल । जो पहलेही है रसाल । तो घटना अपूर्व ।३। होवे हरिदास विरक्त । ज्ञाता होवे प्रेमल भक्त । व्युत्पन्न और वादरहित । तो भी घटना अपूर्व ।४। है एक रागज्ञानी तालज्ञानी । वो ही होवे ब्रह्मज्ञानी । वर्ते भी जनमें निराभिमानी । तो घटना अपूर्व ।५। जो न करे किसीका मत्सर । सज्जनोंका जो अतिप्रिय । रहे सदा जो अंतर्निष्ठ । चतुरांग ज्ञाता ।८। जयंत्यादि नाना पर्व । तीर्थक्षेत्र अपूर्व । जहां बसंती करते देवाधिदेव । सामर्थ्यरूप ।७। उन तीर्थोंको जो न मानते । शब्दज्ञानसे मिथ्या कहते । उन पामरोंके लिए । है ही नाहीं श्रीपति ।८। संदेहसे गया निर्गुणज्ञान । ब्रह्मज्ञान-भ्रमसे सगुण । अभिमानसे गया दोनों ओर । सगुण और निर्गुण ।९। सगुणमूर्ती है सन्मुख । तो भी करे निर्गुण-कथन । उच्छेदी सगुणभजन । है वो पढतमूर्ख ।१०। ऐसी करे जो हरिकथा । तो नाशे उभय पथवार्ता । इसीलिए अब आप सुनना । हरिकथाके लक्षण ।११। सगुणमूर्तीके सन्मुख । करना चाहिए करुणा कीर्तन । नाना प्रताप-कीर्तिवर्णन । ध्यानके प्रकार ।१२। गायन सहित कथा रसाल । होतेही श्रोताओंका अभ्यंतर । हिल जाय प्रेमानन्दभार । सगुण कथा इसका नाम ।१३। नाहीं धन-आस्था लोग-लाज । किन्तु है सगुण मूर्तीपर प्रेम । वही देव द्वारमें लोटांगण । करे नम्रभावसे ।१४-१६। बजावे ताली गावे नाचे । नाम-घोष गरजत रहे । देवका वैभव वर्णन करे । सगुणमूर्ती अनुरूप ।१७-१८। न हो कोई मूर्ती सगुण । किन्तु श्रवणार्थ है साधुजन । तो करना चाहिए अवश्य । अद्वैत निरूपण ।१९। नाहीं मूर्ती नाहीं सज्जन । श्रवणार्थ है भावकुजन । तो करो प्रेमल कीर्तन । उपजे अनुताप वैराग्य ।२०। श्रृंगारादि नवरस । इनमेंसे छोड़ो एक । स्त्रियोंका वर्णन विशेष । होना न चाहिए ।२१। होतेही स्त्री-लावण्यका वर्णन । बाधा करेगा काम-विकार । धारिष्टसे च्युत होवे साधक । उसी काल ।२२। लावण्यवती स्त्रीका ध्यान । करे कामाकार मन । तब कैसे होवे ध्यान । परमेश्वरका ।२३-२४। स्त्री-वर्णनसे पावे जो

सुख । वो लावण्य चिंतनमें ही मग्न । तो जानो वो हो गया च्युत । ईश्वरके ध्यानसे ।२५। तथापि होने भावबल । तो रसरंग होवे दूर । निमिष एक हो ईशध्यान । तो आये रस पुनरपि ।२६। और ध्यानमें होवे लीन । तो कैसे रहेगा जन-भान । निःशंक निर्लज्ज कीर्तन । करे तो आवे रंग ।२७। रागज्ञान तालज्ञान । स्वरज्ञानमें भी व्युत्पन्न । अर्थान्वियसहित कीर्तन । करता है कोई ।२८। नाना भाषा नाना कला । कोकिलसम हो मधुर गला । तो भी भक्तिमार्ग है निराला । भक्तजन जानते ।२९। भक्तको रहे देवका ध्यान । देवके सिवा जाने ना अन्य । किन्तु कलावन्त है जो नर । मन उसका कलाकार केवल ।३०। श्रीहरिबिन जो कला । वो जानो है अवकला । देवको छोड़ वो कला । है देवसे भिन्न ।३१। सर्पसे वेष्टित चंदन वृक्ष । निधानके सन्निध पिशाच्च । वैसे देवमार्गमें प्रतिबंध । हैं वे नाना कला ।३२। छोड़ देके देव सर्वज्ञ । नादमें होना मग्न । यही एक प्रत्यक्ष विघ्न । देवपंथमें आता है ।३३। मन होवे स्वरमें लीन । तो कौन करेगा श्रीहरिका चिंतन । स्वर ही जैसे कोई चोर । लेवे सेवा मनसे ।३४। लेने जावो देवदर्शन । तो बीचमें आवे रागज्ञान । उसीने ही पकडके मन । लगाया स्वरके पीछे ।३५। जाता है कोई राजद्वार । तो उसको ले गये सेवार्थ । वैसेही किया अनर्थ । कलावन्तका कलाने ।३६। किन्तु ईश्वरमें रखके मन । हरिकथा करे जो साधक । वही इस संसारमें एक । होता है धन्य ।३७। हरिकथा पर जिसका प्रेम । बढ़त जाय दिनदिन । उसीके साथ सर्वोत्तम । जुड़ादेवे सख्यत्व ।३८। चलती है जहां हरिकथा । सर्व छोड़के जाता वहां । स्वार्थ आलस्य या निद्रा । तजे वो साधक ।३९। हरिभक्तोंके घरमें वह । करे नीच सेवाका अंगिकार । सहाय्य करे सर्वप्रकार । अतिप्रेम भावसे ।४०। इसीप्रकार जिसका जीवन । उसीको कहो हरिदास । उसीका ही होता है विश्वास । ईशनामस्मरणमें ।४१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे हरिकथालक्षण निश्चयनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

अभ्याससे न आवे रूपलावण्य । आवेना सहजगुण किसी उपाय । किन्तुकरना चाहिए संपादन । इतर गुण ।१। कृष्णवर्ण न हो गौर । जन्मसे व्यंग न हो अव्यंग । गूंगा न बोले वचन । हैं ये सहजगुण ।२। अंधेको न आये नेत्र । बधिर न सुने

शब्द । पंगुको न आवे चरण । कुरूप होवे ना सुंदर ।३-४। किन्तु अवगुण कुविद्या मूर्खपण । छोड़े तो आवे ज्ञान । समझ आवे करे जो प्रयत्न । मिले पद मान्यता ।५-७। ऐसी आती है प्रचित । तो क्यों न जोड़ो स्वहित । चले जो नर सन्मार्ग । मानते उसको सज्जन ।८। देहका किया शृंगार । किन्तु चातुर्य विना है व्यर्थ । वैसे बिना गुण किया गौरव । मूर्ख जनोंका ।९। करो मनका श्रृंगार । बढावो ज्ञान नाना प्रकार । दैवी संपदा करो अर्जन । भोगो वह यथाकाल ।१०। न सीखे न करे यत्न । न दे शरीरको कष्ट । लेवे ना उत्तमोत्तम गुण । कोप करे सर्वदा ।११। देता है दूसरोंको कष्ट । तो भोगना पड़े स्वयं दुःख । देता है जो किसीको धन । तो लेवे वापस ।१२। सूज्ञ करे न्यायसे वर्तन । अन्यायसे करे तो दीन । चातुर्यके नाना लक्षण । चतुर ही जाने ।१३। बहुत लोगोंको जो मान्य । उससे ही होवे समाधान । लोग होंगे शत्रु या मित्र । है निर्भर अपनेपर ।१४-१५। समाधानसे बढे समाधान । मैत्रीसे जुड़ जाते मित्र । किन्तु तोड़ो तो क्षणमात्र एक । रहे ना मित्रभाव ।१६। बोलो 'अहो' सुनो 'अहो' । बोलो 'अरे' सुनो 'अरे' । उत्तर प्रत्युत्तर ही जनमें । होते है ऐसे ।१७। इसीलिये चातुर्यसे शृंगारना मन । वस्त्रसे शृंगारना शरीर । दोनोंमें कौन है श्रेष्ठ । इसका करो विचार ।१८। शरीरका किया शृंगार । तो क्या हुवा लोग-लाभ । किन्तु हो जब चातुर्य । तो होवे जन रक्षण ।१९। खान पान भोजन । होना चाहिए उत्तम । ऐसे सभीका मन । करता है वासना ।२०। तनमनसे करे जो कष्ट । उसको कहते भला लोग । किन्तु करे नाहीं जो कष्ट । उसको आगे दुःख ।२१। जनकार्यमें करो सहाय्य । जन्मुखमें मानो सुख । तो जन भी होवे आकर्षित । कार्यार्थ सिद्ध सदैव ।२२-२३। यह तो है प्रकट ज्ञान । ज्ञानपूर्वक करे जो वर्तन । वो होगा ही भाग्यपुरुष । इतर जानो अभागी ।२४-२५। आलस्यसे कार्यभाग नासे । प्रयत्नसे वैभव आवे । मैत्रीभावसे कार्य होवे । देखो सत्य या मिथ्या ।२६-२८। जो न समझे अपना हित । जो न जोड़े कोई मित्र । जो रहे सदा अज्ञ । कैसे उसको समाधान ।२९-३०। आपन रहे अकेला एक । सबके साथ करे कलह । तो उसको यश । मिलेगा कैसे ।३१। इसीलिये जनोंका अभ्यंतर । जानके देवो उनको सुख । करो उत्तम गुणोंका अंगिकार । सिखावो उनको भी ।३२। लोगोंको करो सूज्ञ । पतितको करो पावन । बढावो भगवद्भजन । सबके साथ ।३३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चातुर्यलक्षणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

नाना देश नाना आश्रम । सबका मूल गृहस्थाश्रम । जहां पावते हैं विश्राम । त्रैलोक्यवासी ।१। देव ऋषि मुनि योगी । नाना तापरी वीतरागी । पितृ आदि भी होते विभागी । अतिथि और अभ्यागत ।२। हुवा गृहस्थाश्रममें जन्म । छोड़ गए वो आश्रम । किन्तु पुनरपि गृहस्थोंके घर । आवे कीर्तीरूप होके भी ।३। इसीलिए गृहस्थाश्रम । सबमें है उत्तमोत्तम । किन्तु चाहिए स्वधर्म । और भूतदया ।४। जहां चलते हैं षटकर्म । विधि-युक्त क्रिया आचरण । बोलते वाचा मधुर । प्राणिमात्रके साथ ।५। सर्वप्रकारसे नेमक । शास्त्रोक्त करना सर्वकर्म । उनमें भी जो है अलौकिक । है यह भक्तिमार्ग ।६। पुरश्चरणी काया-क्लेशी । दृढव्रती परम सायासी । जिसको श्रेष्ठ नाहीं कोई । बिना एक जगदीश ।७। काय वाचा जीव प्राण । लगावे भगवन्तके कारण । धारणकर लेता है मन । भजनमार्ग ।८। ऐसा भगवन्तका भक्त । अभ्यंतरसे विरक्त । संसारके छोड़के होवे मुक्त । देवके कारण ।९। अभ्यंतरसे वैराग्य । जानो है महद्भभाग्य । लोलुपतासे अधिक अभाग्य । नाहीं अन्य कोई ।१०। राज्य छोड़के गये राजे । भगवन्तको ढूंढते रहे । पावन हुवे भूमंडलमें । कीर्तीरूपसे ।११। ऐसा जो योगेश्वर । जो करे प्रचितपूर्व विचार । वही समझ सके अभ्यंतर । प्राणीमात्रोंका ।१२। वृत्ति उसकी उदासीन । उसके पास है ब्रह्मज्ञान । उसका दर्शन होतेही समाधान । पावते लोग ।१३। रहे न यदि प्रत्येकके पास । तो भी बहुतोंके लिये करे उपाय । क्योंकि होता है उसका हृदय । भगवद्रूप अखंड ।१४। जन समझते हैं वो दुःचित । किन्तु रहता है वो सावचित । क्योंकि अखंड उसका चित्त । रहता है परमेश्वर-लग्न ।१५। उपासनामूर्तीकाध्यान । अथवा करता है आत्मानुसंधान । अथवा श्रवण मननमें उसका मन । रहता है निरंतर ।१६। पूर्वजोंके कोटिपुण्य । यदि हो गांठमें संचित । तबही होवे भेट । ऐसे महापुरुषोंकी ।१७। प्रचिति बीन जो ज्ञान । वह तो है सब अनुमान । वहां कैसे परत्रसाधन । होगा किसको ।१८। इसीलिए चाहिए मुख्य प्रत्यय । प्रत्यय न हो तो सकल व्यर्थ । उपाय ही हो जाय अपाय । जानते हैं सूत्र ।१९। कलहकारण आया क्रोध । क्रोधसे छोड़ दिया संसार । तो व्यर्थ गया अरत्र परत्र । कष्ट करते करते ।२०-२१। छोड़ गया तो भी रहा अज्ञ । उसकी संगतिमें होते हैं जो जन । वे भी उसके समान रहते अज्ञ । गुरु और शिष्य सभी ।२२। आशावद्ध अनाचार । छोड़के गया देशांतर । तो भी करेगा वो अनाचार । जनोंके साथ ।२३। घरमें न हो उदरभरण । इसीलिए गया बाहर । तो समझके उसको है चोर ।

ताडण करेंगे इतर जन ।२४। संसार मिथ्या परमार्थसत्य । ऐसे समझकर जाये जो बाहर । वो कर सके अपना उद्धार । और इतर जनभी पावन ।२५। सत्संगसे होके पावन । कुसंगसे होवे पतित । इसीलिए धरो सत्संग । जिससे होगा उद्धार ।२६। नाहीं जहां विवेक परीक्षा । वहां कैसी परमार्थ दीक्षा । घरघर मांगे यदि भिक्षा । तो भी मिले ना ।२७। जो जाने परांतर । जाने देशकाल प्रसंग । उन पुरुषोंको क्या कम । भूमंडलमें ।२८। नीच प्राणी पावे गुरुत्व । तो डूबा सब आचार । तो धरे कौन विश्वास । वेदशास्त्र ब्राह्मणोंमें ।२९। ब्रह्मज्ञान का करना विचार । ब्राह्मणोंको ही है अधिकार । "वर्णानां गुरु ब्राह्मण" ऐसे वचन । सर्वश्रुत ।३०। वे ब्राह्मण भी हुवे बुद्धिहीन । हुवे आचार भ्रष्ट । गुरत्व छोड़के होगये शिष्य । शिष्योंकेही ।३१। कीतने ही दावलमलकी शरण । कितनेही करें पीरका भजन । स्वेच्छासे करते धर्मान्तर । हो तुरूक-यवन ।३२। ऐसा है कलियुगमें आचार । कहां रहा है विचार । आगेआगे होगा सत्वर । वर्णसंकर ।३३। आगया नीच जातीमें गुरुत्व । महंतपण बढ गया किंचिन्मात्र । डुबाते हैं शूद्र आचार । ब्राह्मणोंका ।३४। यह समझे ना ब्राह्मण । उसकी वृत्ति न धरै पालट । गलेना मिथ्या अभिमान । हुवे मूर्ख ।३५। म्लेचछोंने ले लिया राज्य । कुपात्रोंने लिया गुरुत्व । ब्राह्मण नाहीं अरत्र या परत्र । है ही नाहीं वो कुछ ।३६। ब्राह्मण कारण श्रीवस्त धारण । उसी विष्णुने दिया शाप । वे परशुराम शापित ब्राह्मण । डूबे ग्रामकलह से ।३७। हम भी हैं ब्राह्मण । किन्तु दुःखसे किया कथन । पूर्वज भी गये कलह कारण । देखते देखते ।३८। सांप्रत हैं जो ब्राह्मण । उनको न मिलता अन्न । देखो आपही आपन । है कि नाहीं सत्य ।३९। क्यों देऊं पूर्वजोंको दोष । है यह ब्राह्मणोंका अदृष्ट । प्रसंगानुसार किया कथन । इसीलिल क्षमस्व ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे युगधर्मनिरूपणनाम समास सातवां ॥७॥

।। श्रीराम ।।

आ गया ऐसा प्रसंग । इसीलिए किया कथन । होवो मत तुम खिन्न । बनो अब तो सूज्ञा ।१। विमल भावसे करो पूजन । उससे आवे समस्त भाग्य । अब भी रहोगे मूर्ख अभक्त । तो भोगो दारिद्रय ।२। देवको पहचानो प्रथम । अनन्यभावसे करो भजन । ध्यान धरो अखंड । सर्वोत्तमका ।३। सबमें जो उत्तम । उसका नाम सर्वोत्तम ।

इसीलिये आत्मानात्मा विवेकमर्म । जान लेना चाहिए ।४। आत्मा है द्रष्टा अंतरसाक्षी । जान जान देहकी रक्षी । पदार्थमात्रोंकी परीक्षा करी । ज्ञानाधारसे ।५। रहता है वो सकल देहोंमें । इन्द्रियोंको चेतना देवे । उसकी प्रचिति भी आवे । प्राणीमात्रको ।६। जब है वो जगदांतर । तो रखना चाहिए सबका अभ्यंतर । क्योंकी दाताभोक्ता परस्पर । है वही एक ।७। जगदांतरमें जो देव । वो ही अपने अभ्यंतर । त्रिलोकके प्राणीयोंमें भी एक । है वो सर्वत्र ।८। सर्वद्रष्टा वो यदि एक । तो भी देहकारण होता है भिन्न । किन्तु बोलना चालना सर्वकर्म । होता उसके आधारसे ।९-१०। स्वजन या परजन । पशु पक्षी या श्वापद । चींटी कीटकादि देहधारक । भूचर खेचर वनचर ।११। नाना प्रकार जलचर । चत्वार खाणी विस्तार । समस्त ज्ञान कलाके आधार । रहते हैं प्राणी ।१२। यदि हो जाय वो जगदात्मा । अपना एक अखंड सखा । तब कितने ही लोगों का पहचानना । होगा साथ अपनेन ।१३-१४। समस्त लोगोंको रखना संतुष्ट । इसका मर्म भी अपने पास । इसीलिए करो देहका हित । होगा आत्मा संतुष्ट ।१५। दुर्जन प्राणीमें जो देव । उसका होगा दुष्ट स्वभाव । तो भी न करना उससे क्रोध । करनी चाहिए उपेक्षा ।१६-१७। अद्वय आत्मामें दिखे जो भेद । वो है केवल देहसंबंध । जैसे एक ही जीवनसे नाना स्वादं । और औषधिभेद ।१८। गरल और अमृत । दोनों ही जीवनके भेद । अद्वय होके साक्षीभूत । देखना चाहिए आत्मा ।१९। अंतर्निष्ठ जो पुरुष । वही देख सके आत्मरूप । जगमें है जो जगदीश । है वो अंतरात्मा ।२०। नयनसे ही देख सके नयन । मनसे ही होगा मनका ध्यान । वैसेही सब घटोंमें भगवान । देख सके भगवान ही ।२१। उसके सिवा न चले कार्य । उस आधारसे घड़े कर्म । उपजे सारासार विचार । उसीके बल से ।२२। जागृतिमें होता है जो व्यापार । या स्वप्न सृष्टिका जो अनुभव । वो सबही है कर्तृत्व । उसीके संबंधसे ।२३। अखंड ध्यानका लक्षण । है अखंड देव-स्मरण । करे जो इसका विवरण । उसीको आवे समझमें ।२४। सहज छोड़के सायास । करना है एक दोष । आत्माको छोड़ करते ध्यान । अनात्मका लोग ।२५। किन्तु होता न उससे समाधान । ध्यान में आते नाना पदार्थ । एकाग्र न होनेसे मन । तडफता है केवल ।२६। सयास से करे मूर्तीध्यान । तो दिखे विपरीत अन्याय । भासना न चाहिए वो ही भास । होवे विलक्षण ।२७। क्या करना है देवका ध्यान । या देवालयादि अनात्माका ध्यान । इसीका पहले करो विचार । अभ्यंतरमें ।२८। देह देवालय आत्मादेव । करना है किसका ध्यान । ऐसा विचार करके जीव । देव पर ही लगावो ।२९। यह है अंतर्निष्ठ सज्जनोंका ध्यान । जनरूढीका प्रकार है भिन्न । वो है केवल अनुमानज्ञान । बिना कोई प्रत्यय ।३०।

अनुमानसे अनुमान बढ़े । ध्यान धरे तो सबही बिगड़े । व्यर्थही कष्ट करते बापुडे । स्थूल ध्यानसे ।३१। है देहधारी देव । ऐसा ही करते विकल्प । देहयोगसे कष्ट । भोगते प्राणी ।३२। स्वप्नसम ध्यानमें साधक । देखता है विपरीत दृश्य । उससे होता है अस्वस्थ । अभ्यंतरमें ।३३-३४। सांगोपांग पूर्ण ध्यान । जिससे न आवे विकल्पदर्शन । होता है या नहीं इसका मन । रहता है साक्षी ।३५। मन हुवा है विदीर्ण । उसने किया विच्छिन्न ध्यान । उससे क्या होता है सार्थक । आपही देखो ।३६। अखंडध्यानसे न हो हित । तो जानो वह है पतित । इसका ही करो विचार । तब आवे समझ ।३७। ध्यान धरता वो कौन । जिसका ध्यान धरते वो कौन । इन दोनोंमें जब अनन्यलक्षण । होवे तो श्रेष्ठ ।३८। अनन्य हैं ही वो दोनों । करे ना साधक शोध पूर्ण । ज्ञानी तो करके विवरण । रहे समाधानी ।३९। है यह अनुभवका काम । बिना अनुभव सर्व भ्रम । किन्तु जनरूढीको ही प्रमाण । मानते हैं लोग ।४०। क्या है प्रमाण क्या अप्रमाण । इसका न करतेही विचार । मिथ्या है जो समाचार । उसको ही मानते ।४१-४२। कोई एक बैठा ध्यानस्थ । उसको सिखावे दूजा एक । डालना है माला देवके शिरपर । तो दूर करो मुकुट ।४३। मनमें क्या होता है दुकाल । क्यों की गयी माला अपर्याप्त । गुरु शिष्य दोनों ही जान । हैं केवल मूर्ख ।४४। क्या होते हैं कष्ट प्रत्यक्ष । क्या गुंफना पडे सूत्रमें फूल । जो कि कल्पना की भी माला । करते हो अपर्याप्त ।४५। प्राणी रहते है ऐसे मूर्ख । उनके साथ कौन करे वाद । ऐसाही चलता है परमार्थ । दुरभिमानसे ।४६-४७। अनुभव बिन जो अभिमान । वो है केवल अनुमान । अनुमानसे दे कोई औषध । तो मर जाये रुग्ण ।४८। इसीलिये सर्व अभिमान । छोड़के करो विवेक । खंडन करके पूर्वपक्ष । प्राप्त करो परम अर्थ ।४९।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अखण्डध्यान निरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

पिण्डकी देखली बात । आत्मानात्माको लिया शोध । पिण्ड अनात्मा, आत्मा एक । सकलकर्ता ।१। पिण्डमें आत्मानात्मा विवेक । ब्रह्माण्डमें सारासार विचार । पिण्ड कार्य ब्रह्माण्ड कारण । करूं इसका निरूपण ।२-४। असार है नाशवन्त । सार है शाश्वत । जिसको होवे कल्पान्त । वो नाहीं सार ।५। जलसे उत्पन्न हुई पृथिवी । फिर जलमेंही विलीन हुई । जलकी हुई उत्पत्ति । तेजसे जानो ।६। वो जल हुवा तेजमें शुष्क ।

किन्तु तेज भी हुवा विलीन। जहां हुवा था वो उत्पन्न। पवनमें ।७-८। वायु था गगनसे उत्पन्न। वो गगनमें हुवा लीन। इसीप्रकार है यह कल्पान्त। वेदान्तमें वर्णित ।९। गुणमाया और मूलमाया। परब्रह्ममें होती है विलया। उस ब्रह्मको ही पहचानना। चाहिए विवेकसे ।१०। सर्व उपाधिका अंत। जहां नाही दृश्यजात। वो निर्गुण ब्रह्म घन। है सर्वव्यापि ।११। हो जाय अनेक कल्पान्त। तो भी न हो नाशवन्त। मायात्यागसे ही ब्रह्म। होवे ज्ञानगम्य ।१२। अंतरात्मा देव है सगुण। सगुणसे प्राप्त होवे निर्गुण। निर्गुणज्ञानका रूपान्तर। होता है विज्ञानमें ।१३। कल्पनातीत जो निर्मल। जहां नाहीं मायामल। उसका होतेही ज्ञान। होता है सकल मिथ्या ।१४। जो होता है और जाता है। वो सबही इन्द्रिय गोचर है। न होता है या जाता है। वो जानो विवेकबलसे ।१५। जहां ज्ञान और अज्ञान। है जो भी है विपरीत ज्ञान। यह तीनों ही होते हैं क्षीण। वह जानो है विज्ञान ।१६। वेदान्त सिद्धान्त और प्रत्यय। इनका होना चाहिए अनुभव। तबही बोलो निर्विकार। हैं जहां वहां ।१७। ज्ञानदृष्टिसे यह देखो। देखते देखते वहां ही रहो। इसका ही नाम जानो। है आत्मनिवेदन ।१८। दृष्टिको दिखता है दृश्य। मनको भासता है भास। दृश्य भासातीत अविनाश। है वो परब्रह्म ।१९। दिखता है दूरसे भी अति दूर। किन्तु ब्रह्म है सबाह्य अभ्यंतर। अंत नाहीं इसीलिए अनंत। है ब्रह्म अनुपम ।२०। चंचल कदा न होवे स्थिर। निश्चल कदा न हो चंचल। आते हैं जाते हैं अभ्र। किन्तु गगन रहे निश्चल ।२१। विकारवश जो बने बिगड़े। वहां शाश्वतता कैसे होवे। कल्पांत समयमें तो पावे। सकल ही नाश ।२२। पहले ही अभ्यंतर भ्रमरूप। फिर मायासे हुवे संभ्रमित। वे क्या जानते यह ब्रह्माण्डचक्र। होगा कैसे ज्ञान उनको ।२३। संकोचसे न होगा व्यवहार। संकोचसे न समझे सिद्धान्त। या न होवे परमेश्वरका ज्ञान। अभ्यंतरमें कदा ।२४। वैद्यसे न होवे कोई लाभ। और संकोचसे वैद्यका करे ना त्याग। तो समझो बचेगा न रुग्ण। उस वैद्यके औषधसे ।२५। पहचान लिया जिसने राजा। वो अन्यको न कहे ऐसा। जिसने देवको पहचान लिया। वो है देवरूप ।२६। मायिक वस्तु पर जिसका प्रेम। वो क्या कहेगा सत्यकी बात। माया और संकोचसे पर। है परब्रह्म ।२७-२८। असत्यका संकोच रखना। भ्रमसे विपरीत करना। इनको नहीं समझना। विवेक लक्षण ।२९। छोड़ो सकल असत्य। जानो अनुभवसे सत्य। काया त्यागसे देखो प्रत्यक्ष। परब्रह्म ।३०। उसी मायाका लक्षण। करूंगा आगे निरूपण। सावधान चित्तसे श्रवण। करो श्रोता ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शाश्वतनिरूपणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

माया दिखे किन्तु नाशे । वस्तु न दिखे ना नाशे । असत्य होते हुए भी सत्य भासे । ऐसी माया निरंतर ।१। लेटे लेटे भाग्यहीन । करता है कल्पना अनेक । न घडे वैसे किंचिन्मात्र । वैसी माया ।२। द्रव्यदाराका स्वप्नभाव । नाना विलास हावभाव । भासे सत्य किन्तु असत्य । वैसी माया ।३। गगनमें जैसे गंधर्वनगर । दिखते हैं नाना प्रकार । या बहुरूपी नटका वैभव । वैसी मिथ्या माया ।४-५। प्रेतका करो महोत्सव । या सतीका बढ़ावो वैभव । या श्मशानमें करो रुदन । वैसी माया निरर्थक ।६-७। वृक्षपल्लवको कहना सुवर्ण । कोई स्त्रीका लक्ष्मीनाम । विधवाका सावित्री नाम । वैसी माया अर्थहीन ।८-९। पुत्रका नाम कुबेर । नटका कृष्ण या राम । या नदीका नाम अमृत । वैसी माया अर्थहीन ।१०-११। मूर्तीका नाम अन्नपूर्णा । खानेको अन्न मिलेना । नाम सरस्वति किन्तु सिखेना । ऐसी माया ।१२। कुत्तेका नाम व्याघ्र । पुत्रका नाम इंद्र । कुरूप का नाम सुंदर । मूर्खका कला प्रवीण ।१३। रासभी का नाम कोकिला । मातंगीका नाम तुलसा । चमारनका नाम गंगा । इसी प्रकार है माया ।१४-१५। अंधकारमें जैसी छाया । भासे किन्तु है मिथ्या । है वैसी वो माया । भासमात्र ।१६। करतल या अंगुल । सूर्यतेजसे दिखते ताम्रवर्ण । या काषायांबर अग्निसम । वैसी माया ।१७-१८। जलमें चरण या कर । दिखते जैसे न यथार्थ । नेत्र दोषसे पीतवर्ण । दिखते जैसे पदार्थ ।१९-२०। सन्निपातमें जैसे विपरीत । होता है भासमात्र । इसी प्रकार मायावश । भासे एक होता है अन्य ।२१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे मायानिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक पन्द्रहवां आत्मदशकनाम

॥ श्रीराम ॥

अस्थिमांसमय शरीर । उसमें रहता है जीवेश्वर । मायावश होनेके कारण । होता विकारवान ।१। क्या है घन क्या है अघन । करे विचार तो जाने सर्व । क्या चाहता क्या न मन । ज्ञात उसको ।२। एक लेता है मांग मांग । दूजेको मिलता है बिना मांग ।

ऐसा है लक्षण भेद । वो जानना चाहिए ।३। प्रवेश करके परांतर । जानना चाहिए जीवको जीव । इसीप्रकार आत्माको आत्माके साथ । रहना चाहिए ।४। यज्ञोपवीतमें गुंथागुंथ । होते जब करते हैं सरल । वैसे छोड़के ढ़ीलापण । लगाना मन मनोंके साथ ।५-६। अनुमानसे बढ़े अनुमान । संकोचसे होवे नाश । इसीलिए होना चाहिए अवश्य । स्वानुभव ही प्रथम ।७। जानते नाहीं परांतर । करते वशीकरण प्रयोग । ऐसे बुद्धिहीन जन । फंसते कालान्तरमें ।८-९। जगदीश है जगदांतर । तो किसपर अभियोगःचेटुक । विवेकसे वो श्रेष्ठ । इतर भोगते कर्मानुसार ।१०-११। राजे जाते राजपंथ । चोर जाते चोरपंथ । अल्पस्वार्थसे ठगे गये मूर्ख । यदि समझे अपनेको सूज्ञ ।१२-१३। चातुर्य लक्षणी नर । जाने जो परांतर । होवे वो जगदांतर । उसको क्या कम ।१४। भगवन्तही बुद्धि दाता । बुद्धिबिन प्राणी कच्चा । छोड़के राज्य मांगे भिक्षा । तो है मूर्ख ।१५। जो जहां होवे मनुष्य । माने वहां का वो सर्व । अभिमानसे बोले वचन । मैं हूं चतुर ।१६-१७। असत्यका धरके अभिमान । चलते हैं करके अनुमान । क्या माने तब किसको कौन । ऐसे है मूर्खलक्षण ।१८-२०। किन्तु विवेकी जो पुरुष । उसको सत्यका अभिमान । वो अभिमान ही है निरभिमान । न्याय अन्याय समान कैसे ।२१। न्याय वो है शाश्वत । अन्याय तो आशाश्वत । उच्छृंखल और विवेकी पुरुष । होंगे कैसे एकरूप ।२२। एक भोगे भाग्य प्रत्यक्ष । चोर जाये भाग्यसे दूर । एक होता है प्रकट महंत । दूजेकी मानहानी ।२३। बिना आचार विचार । जो जो करे वो श्रम । इसीलिए हैं जो सूज्ञ । करो उनका शोध ।२४। सामान्य जन एकत्रित । सूज्ञसे होते आकर्षित । उसके सामने न चले कुछ । सामान्य लोगोंका ।२५। इसीसिए जो मुख्य मुख्य । उनके साथ करना सख्य । मिलेंगे तब असंख्य । अनुयायी जन ।२६। सूज्ञको होती सूज्ञसे प्रीति । मनको होती है मनकी प्राप्ति । होना चाहिए यह गुप्तरोति । अन्यथा कार्यनाश ।२७-२८। समर्थ पृरुषोंका मन संतुष्ट । हो तब जन और सज्जन । सबही करेंगे आर्जव । कार्यभागमें सहाय्य ।२९। पहचानसे बढावो पहचान । बुद्धीसे जोड़ो बुद्धिका ज्ञान । रुद्ध करो पाखंडमार्ग । नीतिन्याय सामर्थ्यसे ।३०। दिखे वेषसे बावला । अभ्यंतरमें नाना कला । जनसाथ है जो प्रेम नाता । रहने दो अखण्डित ।३१। निस्पृहको सर्वत्र नमन । प्रत्ययपूर्वक ब्रह्मज्ञान । ऐसा सज्जन ज्ञानी दुर्लभ । जब होता है प्रकट ।३२। तब न रहे वो एकस्थान । करे सर्वत्र गमन । देवे शांति समाधान । ज्ञानबोधवचनोंसे ।३३। रहे बैठा एक स्थान । तब डूब जाय सर्वव्याप । इसीलिए सावधानपूर्व । देना सबको

भेट ।३४। जो अपना मर्म गुप्त । रखे तो जानो हैं चतुर । मनुष्यमात्रको समाधान । देता उत्तमगुणयुक्त ।३५।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चातुर्यलक्षणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवी पर असंख्य मानव । हैं नाना प्रकृति स्वभाव । नाना मनोविकार कारण । पलटते हैं क्षणक्षण ।१-२। हो गए कितने ही म्लेंच्छ । मर गए लडते लडते बहुत । हुवे कितनेही परभाषाप्रवीण । छोड दी स्वभाषा ।३। महाराष्ट्र देश रह गया अल्प । राजकारणमें हुवे मग्न । भोजनार्थ भी न मिले अवकाश । बढ गया व्याप ।४। कितनेही युद्धमें ग्रस्त । उससे हो गए उन्मत्त । करने लगे रात्रंदिन । युद्धचर्चा ।५। हैं कितनेही व्यापारमग्न । उनको न अवकाश एकक्षण । धंदा एक उदरभरण । करते हैं निरंतर ।६। षड्दर्शन नाना मत । बढ गया बहुत पाषाण्ड । जहां देखो वहां उपदेश । करते हैं कितने ।७। स्मार्त हो या वैष्णव । और भी अनेक पंथ । इन सबकी गुंथागुंथ । हो गई अमर्याद ।८। कितनेही सकाम भक्त । स्थानस्थानमें हुवे आसक्त । है युक्त या अयुक्त । देखे कौन ।९। हुवा ऐसा जो कोलाहल । उसको देख न सके वैदिक । किन्तु उनका ही वेदोक्त मार्ग । माने ना हरिदास ।१०। उन्होंने शुरु किया हरिकीर्तन । वहां भी आते हैं बहुत जन । किन्तु अनुभवात्मक ब्रह्मज्ञान । जानता है कौन ।११। इसीलिए ज्ञान दुर्लभ । पूर्वपुण्य हो तो घड़े लाभ । किन्तु हैं कोई विचारवन्त । उसके लिए सुलभ ।१२। होवे यदि किसीको ज्ञान । तो दूसरोंको कहना कठिन । आते हैं बहुत विघ्न । उपाय भी होते अपाय ।१३। हो कोई बुद्धीका तीक्ष्ण । धूर्त तार्किक विचक्षण । जाने न देता व्यर्थ क्षण । उसको मानते सकल ।१४। करे वो बहुत पाठांतर । बोले अस्खलित प्रवचन । करे परमार्थ-पथ विस्तीर्ण । अपने सामर्थ्यसे ।१५। जाने सबका अभ्यंतर । प्रबोध शक्तीके अनंत द्वार । तदनुसार करे निरूपण । जिससे लोग आकर्षित ।१६। सकल मतमतांतर । स्वानुभवसे बतावे निरर्थक । रूढाचार छोडके लोक । मानते उसको ।१७। देखे प्रसंगमान अखंड । बोले स्पष्ट भेदवचन । उदास वृत्तिसे करे गमन । अकस्मात ।१८। किन्तु उसीके पीछे लोग । जाते होके आकर्षित । छोडते नाना मार्ग साधन । जाते उसीकी शरण ।१९। ढूंढते हैं स्थल स्थल । वो न मिले एक ही स्थान । मिले तो भी दिखे हीन दीन । भीखारी ऐसा ।२०। होगा उसका ऐसा वेष । तो भी करे कार्य गुप्त । उसका यश कीर्तिप्रताप । पसरे

अमर्याद ।२१। जहां जावे वहां भजनमार्ग । बतावे सबको सन्मार्ग । किसीका न करे मत्सर । जाता दूसरे स्थान ।२२। गिरिकंदरामें रहे । जहां न कोई जाए । सबकी ही चिंता करे । सर्वकाल ।२३। दुर्गम स्थलमें करे वास । तो भी वहां जाते हैं लोग । उन सबको मिलाके एकत्र । लगावे राजकारणमें ।२४-२५। आते हैं लोक असंख्य । किन्तु वहां न चले अनुमान । उस सत्तासे चलता है कार्य । गुप्तरूपसे सर्व ।२६। स्थल स्थलमें लोकसंग्रह । बढावे परमार्थ बुद्धि सतत । चारों और उपासनाका गजर । करवाता है लोगोंसे ।२७-२८। ऐसे करे परमार्थ प्रचण्ड । लोगोंको करवाता है अनुभव । छुडाता है संसार बंधन । जहां जहां वो जावे ।२९। ऐसी कीर्ति करके जाना । तब ही संसारमें सार्थक आना । स्वभावानुसार यह मेरा कहना । वदे ऐसे रामदास ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निस्पृहव्यापलक्षणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

मूलमायाके कारण । होता है पंचीकरण विस्तार । उनमें जो साक्षीरूप सूत्र । वो हो है तत्वरूप ।१। दोनों ओर खडी है सेना । बीचमें उच्चस्थानमें राजा । उसका दृष्टांतरूपसे समझना । अर्थअपनेही मनमें ।२। सैनिकोंका अस्थिमांसमय देह । वैसे ही राजाका शरीर । सृष्टिका भी स्वरूप । है तत्वमय पहलेसे ।३। साक्षी रूप राजा की सत्ता । चलाती है तत्वरूप सेना । किन्तु हो सेना या राजा । हैं सबही पंचभूतात्मक ।४। इतनाही दोनोंमें फरक । कि राजामें होता ज्ञान अधिक । ज्ञानाधिक्यसे ही मनु और अवतार । हो गये बहुत ।५। है जिनमें अधिक जाणीव । वे ही होते सुदैव । अल्प जाणीवसे जीव । होते है अभागी ।६। करते जो व्याप व्यावसाय । करते जो अपमान सहन । वही होते हैं सुदैव । है यह प्रत्यक्ष ।७। लघुता या महत्ता । कारण है बुद्धिकी तारतम्यता । लोगोंमें होवे बड़ा छोटा । आयुप्रमाणसे ।८-९। होता है नृपति बाल । वृद्धक उसको करते नमस्कार । है विवेकगति अनुपम । समझ लेना चाहिए ।१०। सामान्य लोगोंका ज्ञान । है सब अनुमान । परंपरागत रूढी-ज्ञान । वो है इसी प्रकार ।११। किसको किसको कहना । 'तुम हो अज्ञानी' ऐसा । सामान्य बतावे तुच्छता । जब तरुण होवे सभाग्य ।१२-१३। इसीलिए हो भी पहचान । तो रख दो दूर ऐसे लोग । जो बताते बड़प्पन । बिना समझे राजकारण ।१४। जब रहता है अज्ञान । तो क्या करना है वृद्धपण । प्रथम हुवा जिसका जन्म । उसको देते मान मूर्ख ।१५। बाल और वृद्ध । ऐसा मानके भेद । गुणरहित प्रौढगण ।

मानते है मूर्ख ।१६-१७। सबसे है अंतरात्मा श्रेष्ठ । जहां चेते वहां महत्व । ऐसे है प्रत्यक्ष सत्य । इसमें क्या है दोष ।१८-१९। इसीलिए है योग्य । सीखना सूज्ञसा और विवेक । ऐसे न करे तो जाय व्यर्थ । नरजन्मका महत्व ।२०-२३। बुलाते हैं सूज्ञको सर्व । मूर्खका करते है त्याग । इसीलिए सुखसंपत्तिकारण । बनना चाहिए सूज्ञ ।२४। सूज्ञता न आती अकस्मात । करना पडे बहुत कष्ट । तथापि सीखना सूज्ञतालक्षण । है यह उत्तमोत्तम ।२५। हुवा बहुत लोगोंको मान्य । वही जानो है सूज्ञ । उसको न होगा किंचित् । संसारमें न्यून ।२६। किन्तु जानेना अपना हित । कष्ट करके भी करे जनक्षोभ । वो जानो पापी परम । आत्मघातकी मूर्ख ।२७-२८। स्वभावानुरूप किया कथन । साधकोंके सुखकारण । लेना हो तो करो स्वीकार । या छोडो सुदूर ।२९। श्रोताओं आप हो परमदक्ष । अलक्ष्यको लगाते लक्ष । मैंने कथन किया सामान्य । है जानते आप ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रेष्ठअन्तरात्मानिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवीमें से होते है वृक्ष । वृक्षसे होता है काष्ट । काष्टका होता है भस्म । पृथिवीरूप पुनरपि ।१। नाना वल्ली बीज धान्य । आखिर होते है विष्टा वमन भस्म । तृण कीटक पशु मानव । मरणोत्तर मृत्तिका ।२-८। नाना धातु सुवर्णादिक । पत्र पुष्प या फल । जिसका है उत्पत्ति स्थिति संहार । वे सर्व पृथिवीरूप ।९-१६। जो जो है साकार । उसको पृथिवीका आधार । किन्तु रचनासंहारका विचार । करना चाहिए ।१७-१८। जलमेंसे पृथिवीका जन्म । वन्हींसे होते ही भस्म । पुनरपि होवे जलमें विलीन । ऐसे ही हैं दूसरे तत्व ।१९। तेजसे उत्पन्न हुवा जल । तेजमें ही हो गया शुष्क । तेजभी वायुमें विलीन । है उसका वायुसे जन्म ।२०। वायुभी गगनमें हुवा निर्माण । गगनमें ही होता हैं विलीन । इसी प्रकार अन्वय व्यतिरेक । करके देखो विचार ।२१। जो जो जहां निर्माण होत । वो उसीमें होत विलीन । इसी प्रकार भूतपंचक । नाश होते हैं समस्त ।२२। 'भूत' का अर्थही 'निर्माण हुवा' । इसीलिए वो विलीन हुवा । पश्चात् जो कुछ रह गया । है वो परब्रह्म शाश्वत ।२३। जब नाहों परब्रह्मका ज्ञान । तब न टले जन्ममरण । चत्वार खाणीके नाना जीव । उनके लिए जन्ममृत्यु ।२४। जड़का मूल है चंचल । चंचलका मूल है निश्चल । निश्चलको

नाहीं कोई मूल । ऐसे चाहिऐ सत्य ज्ञान ।२५। उत्पन्न हुवा है इसीलिए सत्य । नाश होता है इसीलिए असत्य । यह दोनों पूर्वपक्ष सिद्धान्त । परब्रह्म पक्षातीत ।२६। इसकी आती चाहिए प्रचित । सारासार विचार चाहिए दृढ । इसके सिवा करे जो परिश्रम । वो है केवल मूर्ख ।२७। रखे किसीका जो संकोच । तो कैसे जाने वो परब्रह्म । करे वो केवल वाक्जाल । मायावश होनेसे ।२८। निःशेष मायाका निरसन । हो जाय तब आत्मनिवेदन । जिसमें नाहीं च्यांश । उसका चाहिए प्रत्यय ।२९-३०। लोगोंका कहना सुनकर । जो करेगा अनुमान । वो जानो डूब गया पूर्ण । लेवो अनुभव इसीलिए ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शाश्वतब्रह्मनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

प्रकृति पुरुष दोनोंका आधार । सत्वादि गुणात्मक तीन देव । करते हैं उत्पत्ति स्थिति संहार । अष्टधा प्रकृति चंचल ।१। वनस्पति पृथिवी जल तेज । एकसे एक है श्रेष्ठ । ऊपर भी होता है पवन चंचल । दिखे ना आत्मराजा ।२। देह-देवालयमें अंतरात्मा देव । देह-पूजासे पावे संतोष । सृष्टिमें ऐसे ही सर्वत्र । छिपा है देव ।३। प्रकृति पुरुष इन नामोंसे । लगता है हैं स्त्री पुरुष ऐसे । किन्तु वे हैं सब निर्मित कल्पनासे । लोगोंकी केवल ।४। दिखे विवेकसे कोई । तो ना पुरुष ना स्त्री । दोनोंही एकरूप होती । समझमें आवे ।५। कहते हैं नदी स्त्रीलिंगी । जलकल्लोल पुल्लिंगी । किन्तु ना जल पुरुष ना स्त्री । है दोनोंमें एकरूप ।६। अपनी अपनेको न पहचान । इसीलिए समझे ना संबंध । कैसे हो गया एक अनेक । या अनेकोंमें एक कैसे ।७। अपनी ही उपाधि आपन । कर न सके किंचिदपि सहन । हो चैतन्य अद्वय एक । माया बतावे अनेक ।८-९। वल्लीयोंमें संचरे जल । वही है वृद्धीका कारण । किन्तु न दिखे किंचिन्मात्र । करो यदि प्रयास ।१०। वनमें वृक्ष बढ़े एक स्थान । मानवदेहका-वृक्ष अनेक स्थान । उड़ जाते है अंतराल । पक्षिरूप वृक्ष ।११। है कैसी कला विचित्र । भूमीसे होते हैं अलग । तो भी होते ना वृक्ष शुष्क । बढते हैं स्वतंत्रतासे ।१२। इन वृक्षोंमें अंतरात्मा देव । इसीलिए रहते हैं जीवित । न हो अंतरात्मा तो वृक्ष । हैं केवल काष्टरूप ।१३। वृक्षोंसे होते अन्य वृक्ष । तो उनके मूल जाते भूमिप्रत । वे तो उड़ जाते अंतरिक्ष । पक्षी है इसीकारण ।१४। वृक्ष ही वृक्षों को देते जल । अन्न देके करते पालन । शब्द मंथनसे परस्पर । करते हैं विचार ।१५। जगत् हुवा सबसे पहले । कहते हैं किन्तु कल्पनासे । कि हुवा उत्पत्ति क्रम ऐसे ऐसे । जैसे उनका

मन चाहे ।१६। क्या करना है अनुमान । देखना चाहिए श्रेष्ठ कौन । तबही अपनेको आपन । मिल जाय जगदांतर ।१७-१८। क्या कामका बाह्य मुद्राका ढोंग । यहां चाहिए दृष्टि अंतर्निष्ठ । राखे जगदांतर तबही गौरव । अन्यथा ना अल्प भी लाभ ।१९-२०। होना हो अनुभव प्रत्यक्ष । तो लगादो अलक्ष्य में लक्ष । हो जाय जगदांतरसे समरस । तब ही पावे समाधान ।२१। ऐसे मिलते ही मर्म । होता है परब्रह्म दर्शन । चंचल चक्र उसी क्षण । भेद करके पार जाते ।२२। होते ही एक बार दर्शन । दिखे वो सर्वत्र सन्निध । यहां नाहों चर्म चक्षूका काम । है ब्रह्मदर्शन अतीन्द्रिय ।२३। परमात्मा संचरे नाना शरीर । किन्तु वहां है उसका चंचलरूप । परब्रह्म तो सर्वगत । और निश्चलरूप ।२४। एक देशी है चंचल । वो न होगा सर्वत्र व्यापक । है यहां नाहीं अन्यस्थल । जाने चंचल चंचलको कैसे ।२५-२६। आकाशमें छोड़ दिया बाण । तो क्या जाये आकाशसे पार । किंचित् अंतर जाते ही गिर जाय । भूमीपर वापस ।२७। वैसे एक देशी मनोधर्म । कर न सके अपारका अनुमान । तो भी अभागी बोले सर्वब्रह्म । बोले न वार्ता निश्चलकी ।२८। नाहीं सारासार विचार । वहां सकल अंधकार । सत्य छोडके असत्य । लेते अज्ञानी जन ।२९। पंचीकरण का विचार । होता है मूलमायासे आरंभ । किन्तु महावाक्योंका विवरण । होता है अन्य प्रकार ।३०। महत्तत्वोंमें जो महद्भूत । वो ही जानो है भगवन्त । जहां उपासना का प्रान्त । होता है समाप्त ।३१। कर्म उपासना और ज्ञान । त्रिकाण्ड वेद हैं प्रमाण । किन्तु ज्ञानका होता है विज्ञान । परब्रह्मरूपमें ।३२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चंचललक्षणनिरूपणनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

स्वर्णरूप पीत ब्रह्म । उससे हुई कृष्णरूप माया शबल । जिसके बिना आवे ना समझ । किंचिन्मात्र ।१। उत्तम मध्यम कनिष्ठ गुण । इन तीनों की वो खाण । पुरुष-प्रकृतिके कारण । चले सृष्टि-व्यवहार ।२-३। श्वेत ब्रह्मविज्ञान अश्वेत अज्ञान । बीचमें होवे उपासनारूप ज्ञान । तबही हो जाय सार्थक । ऐहिक और पारलौकिक ।४। इसीका करे जो विचार । तो मूर्ख भी होवे चतुर । सद्यप्रचित साक्षात्कार । परब्रह्मका ।५। जो सभी लोगोंको मान्य । उसको कहते है सामान्य । क्या हो सके सामान्य ज्ञान । असामान्य ब्रह्मका ।६। उत्तम मध्यम कनिष्ठ भाग्य । और भी ललाट-लिखित गुप्त । इन सबका अनुभव भिन्न भिन्न । होता है जगतमें ।७।

कहे कोई पूर्वजोंकी कीर्ति । कहे कोई अदृष्टकी अटलगति । तो क्या है इनसे लाभ या हानी । कहने सुननेसे ।८। ललाटरेखा है अटल । क्यों मानना अनुमान । जब प्रत्यक्ष होती है टल । तो क्यों न मानना अनुभव ।९। सामान्य जनके वचन । है केवल वो अनुमान । उसपर रखे जो विश्वास । वो जानो फंसगया ।१०। सबकी सुन लेवो बात । किन्तु करो प्रत्ययसे निश्चय । सत्यासत्यका निर्णय । करो अभ्यंतरमें अपने ।११। 'नाहीं तुम्हारा कहना यथार्थ' । ऐसे न बोलो किसीको व्यर्थ । होगा उचित या अनुचित । उसका लेवो प्रत्यय ।१२। हो कोई हठवादी या अज्ञ । तो भी हां हां करके बतावो मान । इसीप्रकार परांतर । राखो बहुत यत्नसे ।१३। अपने भी मनका हठवाद । बढ़ावो ना अमर्याद । ऐसे न करो तो कैसे सूज्ञ । कैसे देंगे समाधान ।१४। अज्ञानीको देवे जो ज्ञान । उसका जीवन है धन्य । बढ़ाना केवल वादांग । है यह मूर्खता ।१५। अज्ञानीके साथ होवो समरस । अपजय लेते लेते करो पराजय । किन्तु विवेकसे करो यह कार्य । जो न समझे लोग ।१६। चलते हैं जन वैसे चलो । बोलते हैं वैसे बोलो । इसीप्रकार तुम मिलावो । मनके साथ मन ।१७। चाहता है जो जनकल्याण । करे कैसे वो अकल्याण । मानने लगे जैसे लोग । करे प्रवेश परांतर ।१८। हाथमें लेना परांतर प्रथम । धीरे धीरे सिखावो नंतर । करो नाना प्रयत्न उपाय । परमार्थकारण ।१९। हठको मिले हठ । होगा ही वहां कलह । तो कहां हो हो सके अवकाश । चातुर्यका वहां ।२०। न करो व्यर्थ बड़बड़ । कार्य करना है कठिन । परमार्थ मार्गपर लाना जन । नाहीं सरलतासे साध्य ।२१। अपमान ठोकर खाते रहो । दुष्ट वचन सहन करो । तब ही आवेंगे लोक समझो । अनुतापसे पिछे पिछे ।२२। प्रसंगानुसार बोलना । जानपणका गर्व न करना । अतिनम्रतासे वर्तन करना । जहां तहां ।२३। कुग्राम हो या नगर । भेट दो प्रत्येक घर । करो परीक्षा भिक्षा मिस । आबालवृद्धोंकी ।२४। मिल जाय कोई गुणी लोग । उनके साथ जुड़ावो मैत्रिभाव । आलस्यसे बैठो एक स्थान । तो क्या घड़े कार्य-भाग ।२५। जाना है योग्य जिस स्थान । वहांका पहले ही समझलो वर्तमान । पश्चात् विवेकपूर्व गमन । करो सावधानीसे ।२६। परमार्थमार्गका ज्ञान । हो जाय ऐसे संतवचन । लिख देनेसे निःसंदेह । होगा उनका समाधान ।२७। चाहते हैं जो जो जन । वो देवो उनको ज्ञान । असामान्य है यह कार्य । करे तो होगा श्रेष्ठ ।२८-२९। ऐसे हैं चातुर्य-लक्षण । जिससे मिले दिग्विजय । लोकसंग्रह भी अमर्याद । हो जाय तो क्या कमी ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चातुर्यविवरणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

नाना विकारोंका मूल । है मूलमाया ही केवल । अचंचल ब्रह्ममें सूक्ष्म । हुई चंचलरूप ।१। है वो जाणीवरूप ।. जो कि ब्रह्मका मूल संकल्प । वो ही है इसी कारण । षड्गुणेश्वर ।२। कहते हैं शिवशक्ति प्रकृतिपुरुष । अर्धनारी नटेश्वर । किन्तु इसका जगज्जोति मूल । वो है मूलमाया ।३। संकल्परूप चांचल्य । वही हैं वायुलक्षण । उसमें ही है अंतर्भूत । त्रिगुण और पंचभूत ।४। देखो किसी वल्लीका मूल । जो है भूमीमें सूक्ष्मरूप । किन्तु उससे ही आते सकल । पत्र पुष्प और फल ।५। इसके सिवा नाना रंग । आकार विकार तरंग । कला स्वाद रूप सकल । है मूलमेंही ।६। मूल फोडके देखा जाय । तो न दिखे इसमेंसे कोई एक । किन्तु कालान्तर से होते है दृश्य । जब बढती है वेल ।७। वैसे ब्रह्म पर्वतसे हुवा जो उद्‌गम । वो मायावेल उतरी अधोमुख । और बढ़ते बढ़ते पृथिवीपर । हुवा उसका विस्तार ।८। उसी मूलमायामें जान । हैं पंचभूत और त्रिगुण । जिसके कारण वो मायावेल । चलती है विकारवान ।९-१०। बढ़ते बढ़ते मायावेल । होती है विशालवृक्ष । तो मूलशाखा और अग्र । होते असंख्य सृष्टिरूप ।११। कितने ही गिरते हैं फल । होता है फिर फलभार । ऐसे होते जाते है सर्वकाल । उत्पत्ति स्थिति संहार ।१२। कितने ही वेल हुवे शुष्क । पुनः कितने ही हुवे उत्पन्न । पुष्प फल और नाना जीव । इसी रीति आते जाते ।१३-१५। किन्तु जो संकल्परूप मूलबीज । उसको प्रत्ययज्ञानसे करे निर्मूल । तो संसारवृक्षका बढ़ना स्तंभित । होता है उसी क्षण ।१६। आदि बीज अंतमें बीज । मध्यमावस्थामें जीवनरूप । ऐसा है यह स्वभाव । सकल सृष्टिका ।१७। जो जो हुवा जहां निर्माण । वो वो होता है वहां ही विलीन । वहां से फिर होता निर्माण । ऐसे है आवागमन ।१८। है जो आत्मज्ञानी पुरुष । वो ईशांश होने के कारण । ईशमें ही होता है लीन । आवागमन नाहीं उसको ।१९। तथापि उसको भी आत्मज्ञानार्थ । करना पडता हैं प्रयत्न । यदि हो अंतरात्मा हृदयस्थ । होवे न प्रत्यक्ष बिना यत्न ।२०। उसकी उपस्थिति बिना । विषय भोगभी घडे ना । स्थूलको छोड़े बिना । समझ न आवे सूक्ष्म ।२१-२२। अपना है जो अभ्यंतर । वही है जगदांतर । यद्यपि है शरीर भेद । भिन्न भिन्न विकारवान ।२३। परन्तु जानना है यह कठिन । क्या जानता है एक अंग । शरीरका दूसरा अंग । होता है जो दुःखित ।२४। एकांगुलीकी संवेदना । दूजी अंगुलीभी समझेना । किन्तु होने से जाणीवरूप आत्मा । भेद नाहीं उसीमें ।२५-२७। देखना सुनना ऐसे इन्द्रियज्ञान । समझते हैं सामान्यजन । किन्तु जिनको हैं आत्मज्ञान । वे जानते जगदान्तर ।२८-२९। इसीलिए ज्ञानी पुरुष । जान लेते परांतर प्रथम । तबही धरते हैं विश्वास । अन्य लोगों

पर ।३०-३१। किन्तु सामान्य जनका स्वभाव । है स्मरण विस्मरण दोनों रूप । इसीलिए आता है चांचल्य । कल्पनाओंके आधार ।३२-३४। स्मरण ही है देव । विस्मरण है दानव । स्मरण-विस्मरणसे मानव । होते हैं प्रत्यक्ष ।३५। इसीलिए दैवी और दानवी । है द्विविध संपत्ति । विवेकसे इसकी प्रचिति । लेना चाहिए ।३६। नेत्रसे देखो दर्पणमें नेत्र । ऐसे ही देखो आत्मरूप । अभ्यंतरसे जानो अभ्यंतर । होवो स्थित परांतरमें ।३७-३९। स्मरणमें होना विस्मरख । यही है भेदक लक्षण । इसीलिए होवे नाहीं ज्ञान । परिपूर्ण कदापि ।४०। आगे सीखे पीछे विसरे । प्रकाशके पीछे अंधार होवे । वैसे स्मरे और विस्मरे । तो क्या होगा पूर्ण ।४१। स्मरणसे तुर्यारूपी ज्ञान । सुषुप्ति होती है विस्मरण । हैं यह दोनों शरीरमें । जान । होते हैं साथसाथ ।४२।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अधोर्धनिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

बालूके कणसे भी अतिसूक्ष्म । जो न होते हैं इन्द्रिय गोचर । ऐसे जो सृष्टिमें अनंत-जीव । उनमें भी है विषय ज्ञान ।१-२। युक्ति बुद्धि आयुका प्रमाण । होता है उनमें अत्यल्प । अंतःकरण पंचक और इन्द्रियज्ञान । रहता है उनमें भी ।३। उनके शरीर अपेक्षा चींटी । कुंजरसम बडी भासती । और भी मत्स्यसर्पादि प्राणी । भासते पर्वतसम महान ।४-७। इसी प्रकार देखा जाय । तो कोई एक पक्षी समान । हैं न कहीं सूक्ष्म या महान । है ऐसा जीव ।८-९। नाना सुरंग नाना विरंग । सुकुमार या कठोर । सुवर्णसदृश भी अनेक शरीर । दैदिप्यमान ।१०-११। शरीरभेद आहारभेद । वाचाभेद गुणभेद । किन्तु अभ्यंतरमें है अभेद । एकरूप ।१२। एक त्रासक एक मारक । एक होता है अमोलिक । देखे ऐसे विवेक-पूर्ण । है ऐसा कौन ।१३-१४। नवखंड वसुंधरा । उसको सप्तसागरका वेढा । किन्तु ब्रह्माण्डबाहर जो जलका पसारा । उसको देखे कौन ।१५। पृथिवीगर्भमें जो नीर । उसमें होते हैं जीव । या जो है अंतरिक्ष । उनको देखे कौन ।१६-१९। नाना खेचर भूचर । नाना वनचर जलचर । चौराशी योनिप्रकार । जानता है कौन ।२०। एक इच्छामात्रसे निर्माण । एक क्रोध या तपसे उत्पन्न । एक शापमुक्त पूर्वदेह । पावते है जीव ।२१-२४। ऐसा भगवन्तका कर्म । देवताओंके भी शरीर । होते है मायाके कारण । समझे कौन ।२५-२६। सीखली उदरभरणार्थ विद्या । अल्प स्वल्प समझने लगा । किन्तु अहंभावसे "मैं हूं ज्ञाता" । ऐसे कहता है जीव ।२७। ज्ञानी एक अंतरात्मा । सबमें है वो सर्वात्मा ।

उसकी जाननेकी महिमा । किसके पास है बुद्धि ।२८। अपने देहमेंसे न समझे । तो सब ही कैसे समझे । लोग होते हैं उतावले । अल्पज्ञानसे ।२९-३०। सूक्ष्म जंतु सापेक्ष । भासते है पुरुष विराट । किन्तु वे क्या जानते जीवनक्रम । इन सूक्ष्म जंतुओंका ।३१-३२। धन्य परमेश्वरका कर्म । कर सके कौन अनुमान । व्यर्थही धरते अभिमान । अभ्यंतरमें मानव ।३३। अहंता छोड़के करे विवरण । तो किंचित समझेगा ईशकर्म । है तो मानव आयु अल्प । क्या करना गर्व ।३४-३५। कुश्चील और क्षण भंगुर । अखंड व्यथा चिन्तातुर । तो भी बताता है महत्व । मूर्ख अपनी अहंतासे ।३६-३७। काया धनादि संपत्ति । हैं दो दिनके लिये प्राप्ति । न टले जन्ममरण विपत्ति । तो क्यों व्यर्थ अहंता ।३८-३९। इसीलिये छोड़ो अहंकार । छोड़ों अनुमान वादांग । विवेकसामर्थ्यसे देवदर्शन । लेना ही उत्तमोत्तम ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मजीवब्रह्मनिरूपणनाम समास आठवा ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

चौखाणीके प्राणीयोंके शरीर । हैं तत्वोंके समुदाय । उनका होता है जन्मस्थान । उदकरूप रेत-रक्त ।१-३। देहरस अन्नरस । इन दोनोंसे बढता है शरीर । कुबुद्धि और सद्विचार । बढते हैं साथ साथ ।४-९। शरीररूप यह वृक्ष । हैं केवल बीजांकुर उदक । मूल शाखा पत्ति फल । है सब बीजकारण ।१०-१३। फलका मूल है सुमन । सुमनका पान, पानका काष्ट । सब वृक्षका मूल उदक । पृथिवीका आपोनारायण ।१४-१६। आपसे श्रेष्ठ अग्निदेव । अग्निसे श्रेष्ठ वायुदेव । वायुदेवसे भी श्रेष्ठ । है एक अंतरात्मा ।१७। ऐसा जो सर्वश्रेष्ठ अंतरात्मा । उसको न जाने वो दुरात्मा । दूर हो गया है आत्मा । इसीलिये वो दुरात्मा ।१८। आत्मा है अत्यंत सन्निध । किन्तु देखा न जब उसको प्रत्यक्ष । तो आत्मा होते हुवे भी जीव । आते जाते हैं व्यर्थ ।१९। इसीलिए सर्व श्रेष्ठ जो देव । उसके साथ होवो अनन्य । तब प्रकृतिका स्वभाव । पलट जाय धीरे धीरे ।२०। करो अपना व्यासंग । न होने दो कदा ध्यान भंग । बोलना चालना सर्वकर्म । करो अव्यंग रीतीसे ।२१। उस आत्माने किया है जो कृत्य । वो देखना चाहिए समस्त । चैतन्य आत्मा प्रकाशे पूर्ण । वही होगा भाग्यपुरुष ।२२-२३। अल्पप्रकासे अल्पभाग्य । इसीलिए करो अखंड ध्यान । मनमें हो नारायण निरंतर । तो क्या जाये लक्ष्मी दूर ।२४। भरा है विश्वमें नारायण । उसीका ही करो पूजन । इसीलिए देहधारी संत । करना चाहिए संतुष्ट ।२५। शोध लिया उपासनाका मर्म । देवसे होता है विश्वपालन । किन्तु देवकीलीला

देवके सिवाय । जान सके कौन ।२६-२७। उपासना है सर्वव्यापक । कहां नाहीं आत्माराम । सर्वसत्ता है रामकारण । सर्वत्र है राम ही राम ।२८। यह है उपासना मेरी । होवे ज्ञात अनुमानसे कैसी । कि जो साधकको ले जा सकती । निरंजनातीत ।२९। देवके कारण कर्म नाना । देवके कारण उपासना । देवके कारण ज्ञानीयोंका रहना । होता है भूमंडलमें ।३०। नाना शास्त्र नाना मत । देव ही बोले समस्त । समविषम या नेम नियम । होगा जो कर्मानुसार ।३१। जगमें सर्वकर्ता देव । उनमेंसे लेवो जो वंद्य । अधिकार सदृश करो वर्तन । जिससे उत्तम गति ।३२। विश्वोद्गम विश्वसंहार । जानना ही है पूजा-विधन । यहां होता है द्वैतानुसंधान । इसीलिए है पूर्वपक्ष ।३३। वेदान्तज्ञान और गुरु-सिद्धान्त । इनसे श्रेष्ठ है आत्मप्रचित । पंचीकरण छोड़के महावाक्यार्थ । जनना चाहिए स्वानुभवसे ।३४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पिण्डोत्पत्तिनिरूपणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

गगनमें सब होत जात । किन्तु वो वैसेही रहत । वैसे निश्चलमें चंचल । होत जात सकलही ।१। अंधकारसे कृष्णवर्ण । रविप्रकाशसे पीतवर्ण । हिमसे शीतल सूर्य से तप्त । होता है गगन ।२-३। ऐसा जो होता है भास । वो सबही जब नाशे समूल । तो आकाश रहता है अलिप्त । जैसे था पहले ।४। भास मिथ्या, निराभास शाश्वत । ऐसे आकाश-विषय ज्ञान । है वो हि अतिउत्तम । वैसेही आत्मका ज्ञान ।५-६। तत्वपसारा सब चंचल । किन्तु आत्मा एक अचंचल । विवरण करे वो अखंड । होगा निवृत्तिपदस्थ ।७-८। ज्ञात होवे अद्वैत विज्ञान । मन होता है उन्मन । होतेही तत्व निरसन । होता है ब्रह्मरूप ।९। शोध लिया परब्रह्म । चंचलही हुवा निश्चल । वहां देव और भक्त भिन्न । होंगे नाहीं कदापि ।१०। नाहीं जब जगत् पदार्थ । तो 'जहां वहां' ऐसा स्थलनिर्देश । है सबही निरर्थक । उपयुक्त समझ-हेतु ।११। अज्ञानशक्ति ज्ञानशक्ति । दोनो ही जहां निरुद्ध होती । तब वृत्ति शून्यत्वकी स्थिति । आति है अनायास ।१२। ऐसा है मुख्य शक्तिपात । निवांत ब्रह्ममें आत्मनिवांत । तब चंचलत्वका विकार । रहते नाहीं निर्विकारमें ।१३-१४। महावाक्योंका विचार । जो सन्यासीयोंका अधिकार । करता है देवीकृपायुक्त नर । अन्यथा नाहीं ।१५। संन्यासी होता षड-न्यासी । विचारवन्त सर्व सन्यासी । जगदीश जिसका सहाय्यकारी । वो क्यों करेगा अनुमान ।१६-१७। देहाभिमानी रखते अभिमान । विचारवन्त होते है निःसंग । अलक्ष्यमें लगाते है लक्ष । उड

गया पूर्वपक्ष साक्षित्व ।१८-१९। दृश्यजात होवे जब अदृश्य । तो आकाश पाताल ऐसे नाम । हो जावे अर्थहीन केवल । रहेगा अंतराल एक ।२०। मन आदि जब तक उपाधि । तब तक दृश्य और शब्दोंकी अवधी । निरसन होते ही उपाधि । है एक अखंड ब्रह्म ।२१। शब्दसे पर कल्पनासे पर । मनबुद्धि अगोचर । इसका करते करते विचार । समझमें आवे ।२२। उस ज्ञान का भी हो निरसन । तो लक्ष्यांशमें वाच्यांशका विलीन । तो कौन क्या करेगा वर्णन । ब्रह्मस्थितिका अनुभव ।२३-२४। शाश्वतका किया ज्ञानीने शोध । तो हुवा वो ही शाश्वत निर्विकार । जागृतिमें जैसे स्वप्न । होता है मिथ्या ।२५-२६। वासना बीज हुवा दग्ध । फूटे क्या उसको अंकुर । प्रारब्धानुसार रहे देह । तो भी ज्ञानी निश्चल ।२७-२८। चंचलध्यानसे होवे चंचल । निश्चल ध्यानसे होवे निश्चल । पंचभूतोंका करे ध्यान । वो पावे पुनर्जन्म ।२९-३०। जो आखिर तक पहुंच गया । उस अंतर्निष्ठको करे क्या माया । विचारारूढ जो हो गया । उसकी भयनिवृत्ति ।३१-३२। यह सब है उपासनाका फल । इसीलिए बढावो उपासनाका बल । जागृत होतेही आत्मज्ञान । रहो उसीमें सुस्थिर ।३३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सिद्धांतनिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक सोलहवां तत्वान्वयनाम

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य वो वाल्मीक । ऋषियोंमें जो पुण्यश्लोक । जिससे हो सके पावन । तीनों लोक ।१। भविष्यवचन प्रमाण । होतेही मानते आश्चर्य । वाल्मीकने तो किया भविष्य । शतकोटि रामायण ।२-३। रघुनाथजीके अवतारपूर्व । बिना शास्त्रके आधार । रामकथाका विस्तार । किया था उसने ।४। जिसका वाग्विलास कवित्व । देखतेही संतुष्ट शंकर । राम-उपासकको भी समाधान । हुवा रामायणसे ।५-६। थे बहुत ही ऋषि महंत । उन्होंने किया था कवित्व विचार । किन्तु वाल्मीकसदृश कविश्वर । न भूतो न भविष्यति ।७। किये थे पहले दुष्टकर्म । किन्तु रामनामसे हुवा पावन । दृढ नामजपसे पुण्य । हुवा अमर्याद ।८। परावाणी से हुआ नाम जप । तो फूट गये पापों के पर्वत । फहराने लगे पुण्यध्वज । ब्रह्माण्ड के बाहर ।९। वाल्मीकने किया जहां तप । वो वन भी हुवा पावन । शुष्क काष्ट भी हुवे अंकुरीत । तपोबलसे जिसके ।१०। पहले था वाल्हा नामक पारधी । पृथिवीपर जीवघातकी । हो गया वंदनीय वही । देव ऋषियोंसे भी ।११। होवे उपरति और अनुताप । तब कहां रहेगा पाप । देहान्त तक करनेसे पुण्य । हुवा दूसरा जन्म ।१२।

अनुतापसे दृढ़ आसनस्थ । देह हुवा वल्मिक सदृश । इसीलिए हुआ प्रख्यात वाल्मीक नाम ।१३-१४। तापसों में जो श्रेष्ठ । कवीश्वरों में जो वरिष्ठ । जिसको वचनोंसे सन्तुष्ट । तापसों का हृदय ।१५। निष्ठावन्तों का जो मंडण । रघुनाथ-भक्तों का भूषण । जिसकी धरणा असाधारण । करे साधक को सुदृढ़ ।१६। धन्य वाल्मीक ऋषीश्वर । है जो समर्थ कवीश्वर । मैं करता हूं नमस्कार । भावपूर्ण साष्टांग ।१७। न होते वाल्मीक ऋषीके वचन । कैसे होता रामकथाका ज्ञान । इसीलिये कौन कर सके वर्णन । समर्थ वाल्मीकका ।१८। की रघुनाथकीर्ति प्रगट । उससे बढ गया महत्व । सुखी हुए भक्तजन । श्रवणमात्रसे ।१९। किया अपना जन्मसार्थक । हुवा रघुनाथकीर्तिमें समरस । उद्धार किया असंख्यजन । भूमंडलमें ।२०। ऐसे महान रघुनाथ भक्त । हो गए बहुत अगाध । उन समस्तोंका मैं किंकर । कहे रामदास ।२१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे वाल्मीकस्तवन निरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य है सूर्यवंश । समस्त वंशोंमें वरिष्ठ । जिस मार्तण्डका होते ही प्रकाश । कलाहीन चंद्रमा ।१-२। होतेही सूर्यका उदय । चसता है सृष्टिका व्यापार । नाना धर्म नाना कर्म । सुगम दुर्गम ।३-४। वेदशास्त्र और पुराण । मंत्र यंत्र नाना साधन । संध्या-स्नान पूजाविधान । होंगे ना बिना सूर्य ।५। नाना योग नाना मत । प्रापंचिक या परमार्थिक । नानाविध होते हैं जो कर्म । अशक्य बिना सूर्य ।६-७। नयनोंमें है सूरजका अधिष्ठान । सूरज बिन सर्व जग अन्ध । कवियोंका भी मतिप्रकाश । होगा नाहीं बिना सूर्य ।८-९। हरिहरकी अवतारमूर्ती । शिवशक्तिके अनंत व्यक्ती । इनके भी पहले था गभस्ती । अब भी उसका प्रकाश ।१०-१२। संसारमें आए जितने जीव । और जितने गये छोड़के देह । उन सबका जीवनक्रम । हुवा सूर्यके समक्ष ।१३। चंद्रका जन्म है आधुनिक । है वो चतुर्दश रत्नोंमें एक । हुवा जो क्षीरसागरसे उत्पन्न । समुद्रमन्थनसे ।१४। विश्वचक्षु यह भास्कर । करता है प्रतिदिन नभक्रमण । है ऐसी परोपकारकारण । आज्ञा समर्थ प्रभूकी ।१५-१६। दिवस न हो अंधकार । उलूक और तस्करोंका भय । इसीलिये अनुपम यह तेजोनिधान । है सूर्य एक ।१७-१८। ऐसा है रघुनाथजीका पूर्वज । सविता सब सृष्टिका अगाध । महिमा उसकी अपार । करे कौन वर्णन ।१९। रघुनाथ का भक्त समुदाय । उसीमें मेरा अंतर्भाव । इसीलिए करता हूं वर्णन । यद्यपि हूं मैं वाग्दुर्बल ।२०-२१। सकल दोषोंका परिहार । स्फूर्ति बढेगी निरंतर । लेवे जो कोई दर्शन । करे नमस्कार सूर्यको ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूर्यस्तवननिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य यह वसुमति । कैसे कहूं महिमा इसकी । प्राणीमात्रोंकी स्थितिगति । है इसीके आधार ।१। अंतरिक्षमें रहते हैं जीव । वो ही पृथिवीका स्वभाव । पृथिवीसम जड उनका देह । इसीलिए वे जीवित ।२। ज्वलन खोदन वमन । या हो मलमूत्र विसर्जन । हो दुर्गंध जर्जर या प्रेत । पृथिवीपर गिरे सर्व ।३-४। शुभ अशुभ हो कर्म । पृथिवी पर ही घड़े सर्व । नाना धातु और द्रव्य । पृथिवीके ही उदरमें ।५। गढ़ कोट पुर पट्टण । देव दानव या मानव । नाना रत्न हीरा पारस । होते हैं पृथिवीपर ।६-८। मेरुमंदार हिमाचल । अष्ट दिग्पाल कुलाचल । नाना पक्षि मत्स्यव्याल । भूमंडलपर ।९। नाना समुद्र आवर्णोदक । नाना पर्वतके शिखर । नाना गुप्त विवर वनांधकार । और जलचर असंभाव्य ।१०-१२। उस जीवनको आधार पवन । पवनको आधार अहंकार जो कठिन तमोगुण । जिससे उत्पन्न पंचभूत ।१३-१४। उन पांचोमें बहु द्वीपा । मैनाक द्रोणाद्रि पर्वत सहिता । विस्तृत जहां तहां अपारा । है पृथिवी ।१५-२०। नाना वल्ली नाना धान्य । नाना खाणी नाना देश । स्वर्ग मृत्यु पाताल । अपूर्व सृष्टि ।२१-२४। अभिनव कर्ताका कृत्य । गढ़ कोट नाना नगर । पुरपट्टण मनोहर । सबमें है उसका वास ।२५। नाना वीर पुरुष बलवन्त । नाना समर्थ अवतार । आये गये किन्तु भूमंडल । है जैसे वैसेही ।२६-२९। ऐसी पृथिवीकी महिमा । है अनुपम अपारा । है सबको समान आश्रयभूता । हो देवता या मानव ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पृथ्वीस्तवननिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

अब कहूं सबका जन्म स्थान । सब जीवोंका जीवन । जिसको आपोनारायण । बोलते हैं ।१। पृथिवी आधार आवर्णोदक । सप्त सिंधु और मेघोदक । कूपवापी सरोवर । निर्झर और भूगर्भनीर ।२-१०। नाना तीर्थ-पुण्योदक । नाना स्थलोंमें उष्णोदक । वृक्ष वल्ली पत्रपुष्पोंमें जीवन । है सर्वत्र पृथिवीपर ।११-१३। सिंधोदक क्षारोदक । विषोदक पीयूषोदक । नाना इक्षुफलोंका रस । गुणविकार नानाविध ।१४। गोरस मद्य पारद । रेत रक्त श्लेष्मा स्वेद । उदकरूपी देह केवल । भूमंडल भी उदकरूप ।१५-१८। क्षारसिंधु क्षीरसिंधु । सुरासिंधु आज्यसिंधु । दधिसिंधु इक्षुरससिंधु । शुद्ध सिंधु उदकरूप ।१९-२०।

इसीप्रकार आमूलाग्र । उदक है सबका जीवन । बीजमें होता है मिश्रित । करे वही बीजवृद्धि ।२१। उदकरूप यह शरीर । उदक ही चाहिए जीवनार्थ । उदक ही तारक मारक । ऐसे है उदक अलौकिक ।२२-२३। धबधबा कालवा पाट । गंगादी नदीयोंका नीर । गर्जत धावे पृथिवीपर । है और भूगर्भमें भी ।२४-२८। स्वर्ग मृत्य पातालमें । है एक ही नदी तीन तालमें । मघोदक भी अंतरालमें । है जीवन सर्वत्र ।२९। पृथिवीका मूल जीवन । जीवनका मूल दहन । दहनका मूल पवन । ऐसे एकसे एक श्रेष्ठ ।३०। पवनसे भी श्रेष्ठ परमेश्वर । ऐसा पंचभूतोंका विचार । उससे भी परात्पर । है एक परब्रह्म ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आपनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

।। श्रीराम ।।

धन्य धन्य वैश्वानर । है जो रघुनाथका श्वशुर । विश्वव्यापक विश्वंभर । पिता जानकीका ।१। जिसके मुख से भगवन्त भोक्ता । जो है ऋषियोंका फलदाता । तम-हिम-रोग-हर्ता । भर्ता विश्वजनोंका ।२। नाना वर्ण नाना भेद । किन्तु सबको अग्नि है अभेद । परम शुद्ध और सम । आब्रह्म लोगोंको ।३। अग्निकारण चलती है सृष्टि । अग्निकारण सबकी संतोषवृत्ति । अग्निकारण जीवन धृति । होती है सब प्राणीयोंकी ।४। अग्निसे हुवा जल शुष्क । तबही हुवा धरातल । रहनेको मिला स्थान । जीव जंतु मानवको ।५। उदरमें है वैश्वानर । क्षुधा लगे उसी कारण । उसी कारण रूचीसे भोजन । पाचन भी उसीसे ही ।६। अग्नि है सर्वांगमें व्यापक । इसीलिये रहते जीवित । न हो अग्नि सर्वांग । तो मरेंगे सब लोग ।७। प्रथम होता है अग्निमंद । तब होते हैं व्याधिग्रस्त । ऐसा होता अनुभव । सकल लोगोंको ।८। अग्निबलसे शत्रुपक्ष । होता है पराजित । अग्निसहाय्यसे रसायन । देता है आरोग्य ।९-१०। सूर्य है सबसे श्रेष्ठ । रात्रमें अग्निका सहाय्य । लेते हैं सर्वही लोग । कार्योंमें सर्व ।११। अंत्यज गृहमें पावक । होता है वो निर्दोष । है वो सदा सर्वत्र पवित्र । हवनार्थ यागमें ।१२-१३। देव दानव मानव । अग्नि कारण करते हैं सर्व । विवाहादि मंगलकार्य । आरोग्य दायक औषध ।१४-१६। विशेषतः है जो ब्राह्मण । उसको वंद्य हुताशन । जैसा है सूर्य भगवान । सर्वकार्यार्थ ।१७। उदरस्थ है वैश्वानर । सागरोमें वडवानल । भूगोलके बाहर आवर्णानल । शिवनेत्रमें विद्युल्लता ।१८। काष्टमथनसे उठे अग्नि । सर्पमुखमें विष है अग्नि । उपाय अपाय दोनोंको अग्नि ।

करता है सहाय्य ।१९-२१। भूमंडलमें आबालवृद्ध । लेते हैं वन्हीका आधार । अग्निमुखसे परमेश्वर । संतुष्ट होय ।२२। ऐसा अग्निमहिमा अगाध । कौन कर सके उसका वर्णंन । जीवोंको देते है सुख । और करे भस्म भी ।२३-२४। सर्व सृष्टिका संहार । करता है वैश्वानर । होमादि वैश्वदेव भी सकल । होते हैं अग्निकारण ।२५। दीपाराधन निरांजन । देवकी आरति करते जन । सत्यासत्यका निर्णय । करते अग्निदिव्यसे ।२६-२७। चत्वार श्रृंग तीन पाद । दो शीर्ष सप्त हस्त । ऐसा जो शास्त्रार्थ । वो क्या बिना प्रचित ।२८-२९। अष्ठधा प्रकृति लोक तीन । है सबमें अग्नि व्याप्त । उसीका किया मैंने वर्णन । न्यून हो तो क्षमस्व ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अग्निनिरूपणनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

धन्य धन्य यह वायुदेव । है उसका विचित्र स्वभाव । वायुकारण सकल जीव । रहते हैं जीवित ।१। वायुकारण श्वासोश्वास । नाना विद्या अभ्यास । चलनवलन वायुकारण । होता है शरीरमें ।२। चलन वलन प्रसारण । निरोधन और आकुंचन । प्राण अपान व्यान उदान । पंचम वायु समान ।३। नाग कूर्म और कृकल । देवदत्त और धनंजय । ऐसे ही वायुके प्रकार । हैं पंचविध ।४। ब्रह्माण्डमें हुवा प्रथम । हुवा देवताओंको सहाय्य । वहांसे हुवा प्रकटरूप । जीवोंमें वायु ।५। स्वर्गलोकमें होते हैं देव । वहांही पुरुषार्थी दानव । मृत्युलोकमें मानव । विख्यात राजे ।६। नाना नरदेहमें भेद । नाना श्वापदोंमें भेद । नाना वनचर और जलचर । क्रीडा करते सानंद ।७। उन समस्तोंमें खेले । खेचरप्राणी चलने लगे । वन्ही-ज्वालाभी प्रबले । वायुके कारण ।८। करे एकत्रित मेघ । करे उनको छिन्न-भिन्न । वायु ऐसा कार्यकारक । दूसरा नाहीं ।९। सब शरीरमें सत्ता । है केवल आत्माकी तत्वतः । तथापि वायुकी व्यापकता । है उपमारहित ।१०। पर्वतप्राय मेघ वर्तत । गर्जगर्ज बिजली चमकत । लोककल्याणार्थ वर्षत । वायु के सामर्थ्यसे ।११। चंद्रसूर्य नक्षत्र माला । ग्रहमंडल मेघमाला । और जो नाना कला । घड़े सर्व वायुकारण ।१२। वायुकारणसे पंचभूत । हुवे हैं अन्यान्यमें मिश्रित । उनको कैसे करना भिन्न । यह न आवे समझ ।१३। चले वायुमहावेग । तब पर्जन्यके साथ गिरे उपल । और भी गिरते हैं जलसाथ । नाना जीव ।१४। वायुरूप जो कमल । उसके आधारसे रहे जल । जलके आधारसे भूगोल । धारण किया शेषने । शेष करे पवनका आहार । उससे फूले उसका शरीर । तबही ले सकता है

भार। भूमंडनका ।१६। महाकूर्मका शरीर प्रचण्ड। देखते ही लगे हुवा ओंधा ब्रह्माण्ड। वो भी शरीर होताहै सशक्त। वायुके ही सामर्थ्यसे ।१७। वराह अवतारने दंतपर। की थी पृथिवीको धारण। उस प्रचंड शक्तिका भी कारण। है केवल वायु ।१८। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर। चौथा स्वयं जगदीश्वर। विचार है वायु-स्वरूप। उसको जानते विवेक ।१९। तेतीस कोटी सुरवर। अठ्यांसी सहस्त्र ऋषिश्वर। सिद्धयोगी भारंभार। होते हैं वायुकारण ।२०। नवकोटी कात्यायनी। छप्पन कोटि चामुंडिनी। साडेतीन कोटि भूतखाणी। रहते हैं वायुकारण ।२१। भूत दैवत नाना शक्ति। वायुरूप हैं वे व्यक्ति। पिण्डब्रह्माण्डमें धारणशक्ति। है एक वायुकीही ।२२-२३। ऐसा है समर्थ पवन। हनुमंत उसका नंदन। जिसके तन मन धन। तल्लीन रघुनाथ स्मरणमें ।२४। वायु और हनुमंत। है पिता पुत्रमें अभेद। हनुमंतको प्राणनाथ। कहते हैं सामर्थ्य कारण ।२५-२६। करनेको सूर्यबिंबका ग्रास। जब हनुमंतने किया प्रयास। तब हुवा था वो मूर्छित। जिससे हुवे प्राणान्त ।२७। तब देवोंने किया वायूका स्तवन। वायु हुवा प्रसन्न। हनुमंत भी उसी क्षण। हो गया सावचित्त ।२८। इसीलिए प्रतापपूर्ण। हनुमन्त ईश्वरी अवतार। जिसका पुरुषार्थ सुरवर। देखते थे तटस्थ ।२९। कारागृहमें थे सर्व देव। हनुमन्तने देखा अकस्मात। तो लंकामें किया संहार। सबही राक्षसोंका ।३०-३१। किया उसने देवोंको मुक्त। रावणको दिया मुक्का मार। ऐसा किया पुरुषार्थ। हनुमन्तने ।३२-३३। हुवे देव सुखसंपन्न। करने लगे रघुनाथ स्मरण। त्रैलोक्यवासी भी जन। हो गए सुखी ।३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे वायोस्तवननिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवीका मूल जीवन। जीवनका मूल अनल। अनलका मूल पवन। इनका हुवा निरूपण ।१। अब सुनिए पवनका मूल। वो है अन्तरात्मा केवल। है वो अत्यन्त चंचल। रहता हैं सबमें ।२। न दिखे उसका आवागमन। होता न स्थिर एक स्थान। कर न सके उसका अनुमान। वेदश्रुतिभी ।३। परब्रह्ममें जो मूल स्फुरण। वही अन्तरात्माका लक्षण। उस जगदीश्वरसे त्रिगुण। उत्पन्न हुए तदनन्तर ।४। त्रिगुणोंसे हुवे पंचभूत। वे हीं हुवे आगे स्थूलरूप। उन सब भूतोंके स्वरूप। जानना चाहिए ।५। इसमें है मुख्य आकाश। चारों भूतोंमें वरिष्ठ। है वचन 'एको विष्णुर्महद्भूत'। किन्तु चाहिए प्रचित ।६-७। सबमें है वो व्यापक। और सबसे वो चंचल। उसके सामने वायुका चांचल्य। है बहुत ही अल्प ।८-९। किन्तु इसका रोकड़ा प्रत्यय। लेना चाहिए स्वानुभव। यद्यपि है आत्मा

गुप्त । काम न चले उसके बिना ।१०। पिण्डब्रह्माण्डमें भरा है पूर्ण । नाना शरीरोंमें उसका विलास विवेकी जनको होता है भास । जगदांतरमें ।११। बिना आत्मा चले देह । ऐसी कल्पना भी होना अशक्य । अष्टधा प्रकृति भी अव्याकृत । व्यक्त आत्माके कारण ।१२। आरम्भसे आखिर तक । करता है आत्मा एक । आत्मासे परे केवल ब्रह्म । है एक निर्विकारी ।१३। रहता है आत्मा शरीरमें । इन्द्रियग्राममें चेष्टा करे । नाना सुखदुःख भी भोग । देहयोगसे ।१४। सप्ततत्वचावरण पिण्ड । तथा सप्तावरण ब्रह्माण्ड । उस पिण्डमें आत्मा उत्तम । जानो विवेकबलसे ।१५। श्रवणसे समझे शब्दार्थ । समझके देता है प्रत्युत्तत । जानता है कठिन मृदु शीतोष्ण । त्वंगिन्द्रियसे ।१६। नेत्रोंसे पदार्थ देखना । उनकी परीक्षा करना । उच्चनीच भाव समझना । है उसका मनोव्यापार ।१७। क्रूरदृष्टि सौम्यदृष्टि । कपटदृष्टी कृपादृष्टि । और नाना प्रकारकी दृष्टि । उन सबका जाने भेद ।१८। जिव्हासे वचन जौर स्वाद । घ्राणसे नाना परिमल । पाणोंद्रियसे आदान प्रदान । पदद्वयोंसे आना जाना ।१९-२१। शिस्नइन्द्रियसे सुरतभोग । गुदेन्द्रियसे मलोत्सर्ग । मनसे अनेक कल्पना तरंग । ऐसे करे व्यापार ।२२। त्रिभुवनमें अकेला एक । उसके सिवा नाहीं अन्य । उस आत्माकी महिमा कौन । कर सके वर्णन ।२३-२४। चौदह विद्या चौसष्ठ कला । धूर्तोंकी नाना कल्पना । वेदशास्त्र पुराणोंकी महिमा । उसके बिना कैसी ।२५। इहलोकका आचार । परलोकका सारासार विचार । नाना मतभेद संवाद । करता है वही एक ।२६-२७। सब पदार्थमात्रोंका रूप । है एक आत्माका विस्तार । लिखना पढ़ना पाठांतर । आत्माके कारण ।२८। पूछना कहना अर्थकरना । गाना बजाना नाचना । सुखदुःखोंका अनुभव लेना । देह धरना या छोड़ना ।२९-३१। अकेला तो भी नाना देह । बहुरूपी जैसा नट । स्त्री-पुरुषोंमें परस्पर । करवाता है संतोष ।३२-३४। उन स्थूल व्यक्तियोंमें भेद । वो है लिंग भेद कारण । जगमें व्यवहार प्रत्यक्ष । चलता है ज्ञानके आधार ।३५। स्त्री-पुरुषोंका जीव । रहे परस्परके अभ्यंतर । इसका होगा क्या कारण । यह जानना चाहिए ।३६। शरीरकारण भासता है भेद । सूक्ष्म आत्मदृष्टिसे अभेद । स्त्री-पुरुष प्रेमसंबंध । आत्मत्वमें नाहीं ।३७-३९। पुरुषमें है प्रकृतीका रूप । और प्रकृतिमें है पुरुष । इसीकारण प्रकृति-पुरुष । हैं दोनों अन्तरात्मा ।४०। पिण्डज्ञानसे ब्रह्मका ज्ञान । लेना चाहिए सावकाश । परब्रह्ममें ही प्रथम । इच्छा हुई द्वैतरूप ।४१। वही इच्छा हुई फलद्रूप । सृष्टिरूप उसका विस्तार । इसीलिए संसारमें भी द्वैत । भासता है काल्पनिक ।४२-४३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे महद्भूतनिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

।। श्रीराम ।।

नमूं गणपति मंगलमूर्ती । जिससे होता है मतिस्फूर्ति । भजन स्तवनादि भक्ति । करते हैं आत्मदेवकी ।१। नमूं वैखरी वागेश्वरी । अभ्यंतरमें प्रकाश करी । नाना विद्या रामनामावली । वदे उत्तमोत्तम ।२। जिस नामसे विश्राम । पा गए प्रत्यक्ष शंकर । उस नामकी महिमा अपार । उत्तरोत्तर बढ़े रूप ।३। ऐसा परात्पर परमेश्वर । जहां तहां आत्माराम । उसके बिना गिरेगा देह । आ जाय मृत्यु ।४-५। जीवात्मा शिवात्मा परमात्मा । जगदात्मा विश्वात्मा गुप्तात्मा । आत्मा अन्तरात्मा सूक्षात्मा । देव दानव मानवोंमें ।६। चालना बोलना सकल व्यवहार । ईशके नाना अवतार । ब्रह्मादि सकल देव । होते जाते आत्माके आधार ।७। नादरूप ज्योतिरूप । साक्षरूप सत्तारूप । चैतन्यरूप सस्वरूप । है द्रष्टा आत्मा एक ।८। नरोत्तम वीरोत्तम । पुरुषोत्तम रघुत्तम । सर्वोत्तम उत्तमोत्तम । त्रय-लोकवासी ।९। नाना खटपट प्रयत्न । आत्मा न हो तो अशक्य । बिना आत्मा तो शरीर । है प्रेत ।१०–१२। हो परम चतुर और सुंदर । जानता हो सारासार । किन्तु आत्मा न हो तो अंधकार । ऐहिक ना पारलौकिक ।१३। है अव्यंग और सावधान । जानता है नानाभेद । होवे खेद या आनंद । सब आत्माके कारण ।१४। रंक हो या ब्रह्मादिक । आत्माही चलाता अनेक । इसका लेना चाहिए अनुभव । नित्यानित्य विवेकसे ।१५। है कोई पद्मिनी नारी । आत्मा है तो भासे सुंदरी । आत्मा बाहर जानेपर कैसी । हो जाय देखो तेज हीन ।१६। शरीर हो या ब्रह्माण्ड । है आत्मा उनमें परिपूर्ण । किन्तु न दिखे न भासे मान । होवो ना अनुमान ।१७-१८। अनंत वृत्ति अनंत कल्पना । नाना वासना भावना । कुबुद्धि सुबुद्धि राजकारण नाना । होता हैं आत्मासे ही ।१९-२०। प्राणिमात्र परस्पर । करते है संरक्षण संहार । ऐसे शत्रु-मित्रत्वका कारण । है वो एक आत्मा ।२१। आत्मा है अभेदरूप । किन्तु करता है अनेकभेद । इसीसिये विषयसुखके कारण । है भेद स्त्रीपुरुषोंमें ।२२-२५। आहार-भेद देह-भेद । आनंद-भेद भक्त-भेद । जलचर स्थलचर भेद । करता है वो आत्मा ।२६-२८। क्या है देह क्या है आत्मा । ऐसे भिन्न भिन्न अनुमान चलेना । देहात्मयोग होनेसे होगा । किंचिन्मात्र ज्ञान ।२९-३०। देहात्मयोगकी गुंथागुथ । समझने लिये है निरूपण । वो ही आत्माके कारण । करते हैं संतसाधु ।३१।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मारामनिरूपणनाम समास आठवा ॥८॥

।। श्रीराम ।।

पृथिवीमें लोग नाना । करते हैं उपासना । भावार्थसे करते हैं प्रार्थना । स्थल

स्थलमें भिन्न भिन्न ।१। स्वेच्छानुरूप भिन्न भिन्न देव । मानके करते है स्तुति स्तवन । कहते हैं उपासना निर्गुण । जो तो अपनी अपनी ।२। किन्तु है यह स्तुतिका ही प्रकार । क्योंकि निर्गुण है बहुगुण । बहुगुणी है अंतरात्मा एक । उसके ही अंश अनेक देव ।३-४। जो जो जैसा करे भजन । वो सब अंतरात्माका ही जान । किन्तु सबको अधिकारानुसार । करना चाहिए भजन ।५। तब श्रोता होवे शंकित । कहे मुझे है यह प्रत्यक्ष । कि मूलको देवे जब जीवन । तो पावे अग्रके ओर ।६। वक्ता बोले ऐसे नाहीं । तुलसीपर डालो पात्रभर पानी । तो तत्काल आवे या नहीं । भूमीके ओर नीचे ।७। श्रोता पूछे महान वृक्षपर । कैसे ले जाना नीर । करो मेरा संशय निवारण । कृपा करके स्वामी ।८। मानता हूं पर्जन्यका जल । आता है भूमिकी ओर । किन्तु है जो उच्च वृक्षाग्र । वहां कैसे लेना जल ।९। वक्ता देता है प्रतिवचन । सब न कर सके मूलशोधन । क्योंकि न होता है पूर्वपूण्य । इसीलिए जाना साधुमार्गसे ।१०। तथापि वृक्ष दृष्टान्त-कारण । होता है इतना ज्ञान । कि कहींभी वृक्षपर डालो जीवन । तो आवेगा मूलकी ओर ।११। हो गया इससे आशंका निरसन । अब गुणोंको ही निर्गुण । कहना या नाहीं विचार । इतना रहा है बाकी ।१२। श्रोता कहे चंचल विस्तार । उसका ही नाम है सगुण । गुणातीत है जो कुछ । उसका नाम निर्गुण ।१३। वक्ता बोले इसकाही विचार । शोध करके सारासार । होतेही सत्य वस्तुका निर्धार । कहां निर्गुणका भी नाम ।१४। विवेक है मुख्य राजा । मानो सेवकका भी नाम राजा । तो विचार करके ही समझना । कौन सत्य कौन असत्य ।१५। कल्पांत प्रलयमें भी नाहीं नाश । वही है एक निर्गुण ब्रह्म । उसके सिवा सब ही जान । आता है मायाभ्रममें ।१६। सेना शहर बाजार । नाना यात्रा प्रकार । उठते हैं शब्द अपार । कैसे समझना किसका शब्द ।१७-१८। नाना देश भाषा मत । नाना ऋषियोंका मतांतर । नाना वृक्षवल्लीयों के अंकुर । कैसे समझना कौन सत्य ।१९-२१। कैसे हुवा दृश्य साकार । कैसे हुवा इसका विस्तार । नाना गंधर्वनगर या शरीर । कैसे जानना चाहिए ।२२-२३। दिवस और रात्र । चंद्रप्रकाश और अंधकार । विचार और अविचार । विसर और स्मरण ।१४। नेमस्त और अव्यवस्थित । प्रचित और अनुमान । न्याय और अन्याय । समझना विवेकसे ।२५-२६। कार्यकर्ता और निकामी । शूर और कुकर्मी । धर्मी और अधर्मी । समझना चाहिए भिन्न ।२७। धनाढच और दिवालखोर । प्रामाणिक और चोर । सत्य और असत्य । समझना चाहिए भेद ।२८। वरिष्ठ और कनिष्ठ । भ्रष्ट और अंतरनिष्ठ । सारासार विचार स्पष्ट । समझना चाहिए ।२९।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे नानाउपासनानिरूपणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

पंचभूतोंसे चलता है जग। पंचभूतोंका होता है लय। किन्तु कहां जाते है त्रिगुण। ऐसा प्रश्न करे श्रोता ।१-२। अंतरात्मा पांचवे भूत। त्रिगुण उसके अंगभूत। जब भूतका होता है अंत। तो त्रिगुणोंका भी उसके साथ ।३। ऐसे आशंकाका निरसन। वक्ताने कर दिया आमूलाग्र। अब भूतोंका कैसा परस्पर। है संबंध वो सुनिए ।४-५। आत्मासे हुवा पवन। पवनसे हुवा अनल। अनलसे हुवा जीवन। हुवा शुष्क रवितेजसे ।६-७। जलसे आगयी पृथिवी। वायु-रविकी भी थी शक्ति। क्योंकि कैसे होती जगती। वायु-सूर्यके अभावमें ।८। भूत भूतोंके मर्म। परस्पर होता सहायकारक। इसीलिए होता है विस्तार। सृष्टि रचनाका ।९। केवल हो एक उष्णत्व। तब सबही हो जाते दग्ध। अथवा होता शीतलत्व। तो मर जाते सकल प्राणी ।१०। इसीलिए निदाघ और वर्षाकाल। किया है देवने निर्माण। जिसमें मिलते दोनों धर्म। उष्णत्व शीतलत्व ।११-१४। इसीलिए प्राणीमात्र। है सबही जीवित। नाना रोग निवारणार्थ। निर्माण कर दी औषधी ।१५-१६। सबका मूल है जीवन। रक्त-रेत से बने देह। हीरा माणिक रत्ने दिव्य। इनमेंही जलरूप तेज ।१७-२२। इसीप्रकार भगवन्तके गुण। शेष भी न कर सके वर्णन। वेद शास्त्रोंका भी उद्गम। नाहों बिना भगवन्त ।२३। आत्माराम करे पालन। सकल सृष्टि तीनों भुवन। उसके बिना सर्वत्र। हो जाय सबका नाश ।२४-२५। आत्मा न हो तो मरण। विवेकसे समझावो मन। किन्तु विवेक करना यही जान। है अशक्य बिना आत्मा ।२६। इसीलिए करो उपासना। जिससे होगी विवेक धारणा। जगदीश भजनसे विचारणा। करो पुनरपि देवकी ।२७-२८। उपासनाका महान् आश्रय। बिना उपासना निराश्रय। करे जो भी कर्मातिशय। तो भी मिले ना जय ।२९। समर्थ न हो जब रक्षक। तो कोई भी होता है मारक। इसीलिए अतिसत्वर। करो ईशका भजन ।३०। भजन साधन अभ्यास। इसीसे मिलजाय परलोक। दास कहे यह विश्वास। धरना चाहिए ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे गुणभूत निरूपणनाम समास दसवा ॥१०॥

दशक सत्रहवां प्रकृतिपुरुषोंका

॥ श्रीराम ॥

निश्चल ब्रह्ममें चंचल आत्मा। सबसे पर जो परमात्मा। चैतन्य साक्षी

ज्ञानात्मा । षड्गुणेश्वर ।१। सकल जगतका ईश्वर । इसीलिए नाम जगदीश्वर । उससे हुवा है सब विस्तार । सृष्टिरचनाका ।२। शिव शक्ति जगदीश्वरी । प्रकृतिपुरुष परमेश्वरी । मूलमाया गुणेश्वरी । गुणक्षोभिणी ।३। क्षेत्रज्ञ द्रष्टा कूटस्थ साक्षी । अंतरात्मा सर्वलक्षी । शुद्धतत्व महत्तत्व परीक्षी । जानता साधु ।४। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । नाना पिण्डोंमें जीवेश्वर । जानता है जो प्राणिमात्र । आबालवृद्ध ।५। देह देवालयमें है देव । अभजकको देता देहदण्ड । इसीलिए उसके भयके कारण । करते भजन लोग ।६। भजनमें जब होता है खण्ड । तब मिलता है दुःखदण्ड । इसीलिए प्रेमभावसे भजन । करते हैं लोग ।७। मांगते हैं जो जो भक्त । तो देता है देव तत्काल । इसीलिए करते हैं भजन । त्रिलोकके सर्वजन ।८। पंचविषयोंका नैवेद्य । सर्वकाल करो सिद्ध । ऐसे न हो तो उसी काल । रोग आवे शरीरमें ।९। जब न हो नैवेद्य । तो रहे ना वहां देव । नाना पदार्थ नाना वैभव । छोड़ जाता है सकल ।१०। वो जाता है कैसा कब । न पड़े किसीको समझ । देवके बिना अनुमान । न सके कर दूजा अन्य ।११। लेना हो देवदर्शन । तो जावो संत-देह-देवालय । किसी ऐसे देवालयमें । होता है देव प्रकट ।१२। शरीर ही है देवालय । वहां रहता है जीवेश्वर । चालते बोलते ये देवालय । रहे वहां ईश ।१३-१४। मत्स्य कूर्म वराह । कराल विक्राल निर्मल । कितने ही देवालयमें सौख्य । रहे किन्तु न सर्वकाल ।१५-१६। आशाश्वतका मस्तकमणी । जीसकी इतनी है करनी । न दिखे तो भी धनी । है एक अंतरात्मा ।१७। ब्रह्माभिमुख हो तो है अभेद । ब्रह्मसे विमुख हो तो खेद । ऐसा है अधोर्ध्व संवाद । ऐहिक और पारमार्थिक ।१८। सबका मूल है जो भव्य । उसका न भास न दर्शन । किन्तु है वो सर्वत्र । रहे ना स्थिर एक स्थल ।१९। ऐसा अगाध परमात्मा । कौन जाने उसकी महिमा । लिला तुम्हारी सर्वोत्तमा । तुम ही जानते ।२०। संसारमें आना सार्थक । जब होवे नित्यानित्य विवेक । इहलोक और परलोक । साध्य किया उसने ।२१। मननशील लोगोंके पास । अखंडदेव अहर्निश । अनुपम उनका संचित । होता है पूर्वपूण्यका ।२२। अखंड योग इसीलिए योगी । योग नाहीं तो वियोगी । वियोगी भी हो सके योगी । करे देवसाथ योग तो ।२३। ऐसे है संतमाहात्म्य । जो बताते हैं सन्मार्ग । तरना जानता है जो नर । करेगा पार दूसरोंको ।२४। स्थूल सूक्ष्म तत्वनिरसन । पिण्डब्रह्माण्डका शोधन । देखे स्वानुभवसे पूर्ण । ऐसा है विरला कोई ।२५। वेदान्तका पंचीकरण । अखण्ड उसका विवरण । महावाक्योंका रहस्य पूर्ण । समझे वो स्वानुभवसे ।२६। है पृथिवीपर विवेकी । धन्य धन्य उनकी संगति । श्रवणमात्रसे पावते गति । प्राणीमात्र ।२७। सत्संग और सत्शास्त्रश्रवण । अखंड उसका विवरण । परो-

कारादि उत्तम गुण । उनका वे प्रतिष्ठान ।२८। सत्कीर्तीके जो पुरुष । वे हैं परमेश्वरके अंश । धर्मस्थापनाका ध्यास । उनमें ही रहता है ।२९। विशेष है सारासार-विचार । जिससे होता है जगोद्धार । संगत्यागसे निरंतर । हो गये जीवन्मुक्त ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देववलात्कारनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

ब्रह्म निश्चल निर्मल । जैसे गगन अंतराल । है निराकार केवल । निर्विकारी ।१। अंत नाहीं इसीलिए अनंत । शाश्वत और सदोदित । नाहीं असंत किन्तु है संत । सर्वकाल ।२। परब्रह्म है अविनाश । जैसा आकाश अवकाश । न तूटे न तूटे, है शाश्वत । जैसे तैसे ।३। वह न ज्ञान न अज्ञान । स्मरण ना विस्मरण । है जो अखंड निर्गुण । निरावलंबी ।४। वहां न चंद्र सूर्य ना पावक । न अंधार न प्रकाश । उपाधिरहित है एक । अद्वितीय ब्रह्म ।५। निश्चलमें हुवा स्मरण । उसका ही नाम चैतन्य । जब हुवे त्रिगुण समसमान । तब नाम गुणसाम्य ।६। गगनमें आयी अभ्रछाया । वैसीही जानो मूलमाया । उद्भव और विलय उसका । होता है क्षणक्षण ।७। निर्गुणमें जो गुणविकार । उसका नाम षड्गुणेश्वर । अर्धनारीनटेश्वर । कहते हैं उसीको ही ।८। आदिशक्ति शिवशक्ति । मूलरूपा सर्वशक्ति । वहांसे आगे नाना व्यक्ति । हो गये उत्पन्न ।९। उसके पश्चात शुद्धसत्व । जहां रजतम होते हैं गूढ़ । उसको ही कहते हैं महत्तत्व । गुणक्षोभिणी माया ।१०। जब मूलमें न होती है व्यक्ति । तो कैसी वहां होगी शिवशक्ति । ऐसे आप कहेंगे तो मति । करिए सावधान ।११। ब्रह्माण्डज्ञानसे पिण्डका ज्ञान । या पिण्डज्ञानसे ब्रह्माण्डका ज्ञान । अधोर्ध्व देखनेसे निर्णय । आता है समझमें ।१२। बिज फोड़के देखे कोई । वहां न दिखे फल कोई । किन्तु आगे वृक्षसे फलप्राप्ति । होती है बहुत ।१३। फल फोड़ो तो है अंदर बीज । बीज फोड़ो तो नाहीं वहां फल । ऐसा ही है तात्विक विचार । पिण्ड ब्रह्माण्ड संबंधमें ।१४। नर-नारी दोनोंमें भेद । पिण्डमें है प्रसिद्ध मूलमायामें न हो भेद । तो होता विस्तार कैसे ।१५। पहलेही बीजरूप कल्पना । उसमें किसीका अभाव होना । सूक्ष्म बीजमें कुछ भी भासे ना सहज रीतीसे स्पष्ट ।१६। स्थूलका है वासना मूल । न दिखे है वो सूक्ष्म । उसका होता अनुमान । स्थलरूप देखनेसे ।१७। कल्पनासे होती है सृष्टि । ऐसे वेदशास्त्र बोलती । दिखे नाहीं तो क्या होती । मिथ्या हो वो केवल ।१८। परदा ही है यह जन्म । जिससे जीव-शिवमें पड़े अंतर । ऐसे जब होते है अनंत जन्म । प्राणी जावे अधिकाअधिक दूर ।१९। इसीलिए समझ ना गूढ़ तत्व । जो है सबमें अंतर्यामी मूल । देह संबंधसे भासे भिन्नत्व । स्त्रीपुरुषादि

प्रकार ।२०-२२। टूट जाय देहसंबंध । तो टूट जाय भिन्नत्व भेद । शिवशक्ति का जो द्विविध भास । वो भी होवे एकरूप ।२३-२४। नाना प्रीति नाना वासना । एक दूसरों की समझेना । अनुमानसे किंचित् प्रत्यय आना । है संभवनीय ।२५। बालपर माता करे प्रेम । बिना त्रास या आलस्य । पुरुषको देवे स्त्री संतोष । वासनायुक्त यह प्रीति ।२६-२९। ऐसे अगाध लोभसूत्र । है केवल ईशनिर्मित । जिससे बांधे गये समस्त । परस्पर निरंतर ।३०। ऐसा स्त्री पुरुष संबंध । पहलेसे ही मूलमायामें अंतर्भूत । उसको देखना चाहिए प्रत्यक्ष । विवेकबलसे ।३१। हुवा पहले सूक्ष्म निर्माण । आगे हुवा स्थूल स्पष्ट । इसी प्रकार चलता है कार्य । शिवशक्तीके कारण ।३२। पहले था शिवशक्तीरूप । आगे हुवे वधुवर । जिससे हुवा विस्तार । चौरासी लक्ष योनी ।३३। किया मैंने यहां विशद । शिवशक्तीका स्थूल-सूक्ष्मरूप । बिना विवेकपूर्ण निवारण । होगा व्यर्थ सर्व ही ।३४।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे शिवशक्तीनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

धीर धरके सुनो सुनो । बीचमें ही ग्रंथ मत छोड़ो । कहता हूं वो सुनो । सावधान चित्तसे ।१। श्रवणोंमें सार श्रवण । वो है अध्यात्म निरूपण । सुचित्त करके अंतःकरण । प्रवेश करो ग्रंथान्तरमें ।२। श्रवण मनन विचार । निजध्याससे साक्षात्कार । है मोक्ष रोकडा प्रत्यक्ष । नाहीं कोई उधार ।३। करते हो जब रत्नपरीक्षण । अथवा पदार्थका वजन । मूसमें जब हो सुवर्ण । तो रहना सावधान ।४। धान्य-दानेकी लक्ष संख्या । देवको अर्पण है करना । तो टूटा फूटा दाना लेना । होगा देवको अमान्य ।५-६। एकान्तमें गुप्त काम । करना हो तो रहो तत्पर । उनसे कोटिगुण विचार । है इस अध्यात्मका ।७। कहानी कथा वा गोष्ट । नाना अवतारचरित्र । इन समस्तोंमें है महत्तम । अध्यात्मविद्या ।८। गत गोष्टीका श्रवण । उससे क्या होता लाभ । कहेंगे प्राप्त होगा पुण्य । तो वो है अदृश्य ।९। ऐसे नाहीं अध्यात्मसार । यहां है प्रचिती प्रत्यक्ष । जिससे होता है संहार । अनुमानित ज्ञानका ।१०। बड़े बड़े हो गये महन्त । था उनका आत्माके लिए जीवित । उस आत्माका महिमा-वर्णन । बोल सके ऐसा कौन ।११। युगानुयुग अकेला एक । चलाता है तीनों लोक । ऐसे आत्माका विवेक । करते ही रहो बारबार ।१२। प्राणी आया और गया । उसने जैसे जैसे वर्तन किया । उसका स्वेच्छासे वर्णन किया । तो क्या आया हाथमें ।१३। जहां न हो आत्मा अखंड । वहां अखीर सर्व ही व्यर्थ । आत्माबीन है देह काष्ट । वो क्या जाने मर्म ।१४। ऐसे वरिष्ठ आत्मज्ञान ।

है जो केवल असामान्य। उसको जानते हैं संतजन । ना और दूजा कोई ।१५। पृथिवी आप और तेज । हैं यह पृथिवीरूप ही तीन। किन्तु पंचतत्वोंका जो बीज । वो अंतरात्मा निराला ।१६। वायूसे लेकर वायूके अतीत। जो कोई विवेकधारासे जाय । उसको ही होवे अति समीप । आत्माकी प्राप्ति ।१७। वायु आकाश गुणमाया । प्रकृतिपुरुष मूलमाया । इन सबकी प्रचित आना। है कठिन बहु ।१८। मायादेवीका सृष्टिव्यापार । उस सूक्ष्मकी ओर कौन देवे लक्ष। किन्तु हुवा है जिसको ज्ञान । उसकी टूटी संदेहवृत्ति ।१९। ब्रह्माण्डका चतुर्थ देह। है जो मूलमाया नाम । उससे हो जाय जो अतीत । है वो साधु धन्य धन्य ।२०। विचारसे चढ़ते हैं जो उर्ध्व। उनको ही ऊर्ध्वगति प्राप्त । इतर सबका होता अधःपात । पदार्थज्ञानसे ।२१। दिखनेमें होते पदार्थ सुंदर । किन्तु हैं वे नाशवन्त। इसीलिये होते हैं लोग। अतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट ।२२। इसीलिये पदार्थज्ञान । है जो केवल अनुमान । उसको छोड़के निरंजन । ढूंढते जावो बारबार ।२३। अष्टांग योग पिण्डज्ञान । उससे श्रेष्ठ तत्वज्ञान । उससे श्रेष्ठ आत्मज्ञान । देखना प्रत्यक्ष ।२४। मूलमायाका आखीरका प्रान्त। जहां होवे मूल हरिसंकल्प। मिलना चाहिए उसके साथ। उपासना योगसे ।२५। उससे भी जावो अतीत । है जहां निर्गुण ब्रह्म । गगन सदृश उसका चिन्ह । निर्मल और निश्चल ।२६। अत्र तत्र सर्वत्र । प्राणीमात्रोंसे संलग्न । पदार्थोंसे भी स्वंस्पृष्ट। है ब्रह्म व्यापक ।२७। उससे नाहों कोई वरिष्ठ । किन्तु जो करे सूक्ष्मतम विचार। पिण्ड ब्रह्माण्डका संहार । उसको आवे समझ ।२८। अथवा रहते हुए पिण्डब्रह्माण्ड। जो कोई कर सके विवेकप्रलय। उसको ही आवे समझ। है कौन शाश्वत ।२९। करो सब तत्वोंका विचार। उनमें कौन सार कौन असार। तबही छोड़ो यह ग्रंथ। सुखेनैव ।३०।

॥ श्रीराम ॥

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रवणनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

कहता हूं परमार्थमार्गमें सूचना। मानो ना त्रास आशंका पूछना। किन्तु संभाषणमें विषयान्वय छोड़ना। यह नाहीं योग्य ।१। पूछे यदि श्रोता आशंका । वो तत्काल समाधान करना। स्वभाषणसे स्वभाषण बिगाडना। होना न चाहिए ।२। स्वयं डूबता है पानीमें । वो क्या दूजोंको पार करे । नाहीं मेल बोल बेलमें । तो क्या करे समाधान ।३-४। कहे होगा सृष्टि संहार। तो भी क़हे है ब्रह्मसार । तो क्या कर सकता है पार। दुस्तर मायाको ।५। जो जो सूक्ष्मका नाम । उसका रूप बतावे

निश्चित । कहा है वो विचारवन्त । और वक्ता ।६। ब्रह्म कैसे मूलमाया कैसी । अष्टधा प्रकृति शिवशक्ति कैसी । षड्गुणेश्वरकी स्थिति कैसी । और कैसी गुणमाया ।७। अर्धनारी नटेश्वर । प्रकृति पुरुषोंका विचार । गुणक्षोभिणी तदनंतर । और त्रिगुण भी कैसी ।८। कहांसे कहांतक पूर्वपक्ष । कैसा है वाच्यांश लक्ष्यांश । सूक्ष्मका नाना विचार । करे तो धन्य ।९। अवास्तव बोल बोले ना । बारबार एक ही बात कहेना । मौन्यगर्भ ज्ञान ब्रह्मका । अनुमानसे करावे ।१०। घडी एक बोले विमल ब्रह्म । घडी एक बोले सर्वब्रह्म । द्रष्टा आक्षी सत्ताब्रह्म । कहे क्षण एक ।११। निश्चल हो गया चंचल । चंचल ही ब्रह्म केवल । चंचल हो या निश्चल । सबही है चैतन्य ।१२-१३। ऐसे गुंथागुथीके बोल । करे प्रसंगानुसार । वो क्या निश्चित सत्य । बता सके ।१४। भ्रमको कहेगा परब्रह्म । परब्रह्मको कहेगा भ्रम । ऐसा ज्ञातापणका संभ्रम । बोले अवास्तव ।१५। प्रचिति बिन निरूपण । बतावे शास्त्रोंका आधार । किन्तु पूछे कोई प्रश्न । तो माने त्रास ।१६। ज्ञाता पर विषयोंसे सप्रेम । वो क्या कहेगा पामर । सारासार विचार । जाने वो कैसे ।१७। वैद्य करे मात्राकी प्रशंशा । गुण न दो कुछ भी मात्र । वैसे ही प्रचिति-बिन अवस्था । हो गयी ज्ञानकी ।१८। नाहीं जहां सारासार विचार । वहां होता सब अंधार । नाना परोक्षाका विचार । होगा नाहीं ।१९। पापपुण्य स्वर्ग नर्क । विवेक और अविवेक । यह सबही है परब्रह्म । ऐसे बोले वो अविचारी ।२०। पावन और पतित । दोनोंको माने समान । निश्चय और अनुमान । बोले है ब्रह्मरूप ।२१। सबही हो जब ब्रह्मरूप । मिट्टी होवे शक्कर । सार असार कहना एक । है अविचार ।२२-२३। वंद्य निंद्य हुवा एक । तब क्या आवे हाथ । उन्मत्त द्रव्यसे हुवा जो भ्रमित । वो बोंले असंबद्ध ।२४। वैसे अज्ञान-भ्रमसे जो भ्रमिष्ट । वो व्यर्थही बोले 'सर्वब्रह्म' । महापापी और पुण्यवन्त । माने समसमान ।२५। करे एक संग-परित्याग । दूजा योग्यायोग्य विषयभोग । दोनोंको माने जो एकरूप । कहना क्या उसको ।२६-२७। ईश्वरने किया है भेद । बोलनेसे होगा क्या अभेद । मुखसे खाना है जो अन्न । उसे डालेगा कौन अन्यत्र ।२८। ऐसी भ्रांतीकी भुलावणी । बिना प्रचित मिथ्या कहानी । हो गयी है जो पगली । वो बोले विपरीत ।२९। किन्तु प्रत्ययज्ञाता सावधान । उसीका सुनिये निरूपण । तब आत्म-साक्षात्कारके चिन्ह । समझमें आवे ।३०। इसीलिए अज्ञान और असत्य । भ्रम और अंधत्वलक्षण । प्रचिति बिना बोलना वचन । छोड़ना वमन जैसे ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अनुमाननिरसननाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

एकबीस सहस्त्र छः सौ श्वास। उनके साथ करना नामजप। जिसको कहते हैं अजपा जप। है जो सहज ।१। मुख-नासिकामें जोप्राण। करे वो अखंड आवागमन। उसकी ओर देवो ध्यान। सूक्ष्म दृष्टिसे ।२। उस श्वासरूप प्राणके तीन प्रकार। तार मंद्र और घोर। उस घोर स्वरसे भी सूक्ष्म। है विचार अजपाका ।३। सा रे ग म प ध नि सा। इन मातृका को सायास। तारस्वरसे उच्चार। करके देखो ।४। परा पश्यंती वाचा-द्वय। इन दोनोंके मध्यस्थान। है स्वरोंका जन्मस्थान। जहांसे उठता है स्वर ।५। एकान्तमें बैठो स्वस्थचित्त। समझपूर्व वहां लेवो अनुभव। लेवो छोड़ो प्रभंजल। अखंड रीतीसे ।६। एकान्तमें मौन धरके बैठना। अवधानपूर्वक लक्ष देना। आवेंगे शब्द वे सुनना। सोऽहं सोऽहं ऐसे ।७। उच्चार बिना जो शब्द। वे जानो हैं सहज शब्द। आवेंगे सुननेमें प्रत्यक्ष। किन्तु होंगे वे नाद-हीन ।८। वे शब्द छोडके अनुसंधान। लावे, वो है मौनी श्रेष्ठ। यही कहनेका है उद्देश। योगाभ्यासका ।९। एकान्तमें धरे मौन। तो उठता है शब्दकौन। 'सोऽहं' ऐसा भासमान। होता है अभ्यंतरमें ।१०। श्वासमें भासे 'सो' ऐसा। उच्छासमें भासे 'अहं ऐसा। इसीप्रकार चलता है अजपा। 'सोहं सोहं' अखण्ड ।११। जितने देहधारक प्राणी। स्वेदज उद्भिजादि चारो खाणी। बिना श्वास के ये प्राणी। रहेंगे ना जीवित ।१२। तो होता है सहज अजपा जप। समझे कोई ज्ञाता एक। सहज छोड़के सायास। करना क्यों ।१३। सदा सर्वदा देव सहज। नाशवन्त देवपर क्यों विश्वास। सहज घडे अखंड ध्यान। तो जगदांतरका दर्शन ।१४-१५। तब होगा जो जो अशन। उससे होगा आत्माका समाधान। हानि या होगा लाभ। वे होंगे सहज अर्पण ।१६। जव हो अग्निपुरुष उदरस्थ। तब ग्रासोग्रास होता है अवदान। सहज ही होता आज्ञापालन। आत्मारामका ।१७। सहज हो सके जपध्यान। सहज होवे स्तुति स्तवन। सहज घड़े वो मान्य। होता है भगवन्तको ।१८। किन्तु है जो इतना सहज मार्ग। वो न आवे समझमें अकस्मात। लोग हठयोगादि साधन। करते हैं अकारण ।१९। किन्तु क्या होगा उससे हित। समझते नाहीं हैं ये व्यर्थ। उदकमें हो निज धन मात्र। रहते हैं दरिद्री ।२०। तलघरमें है द्रव्य। भित्तीमें भी होगा द्रव्य। और घरमें रहता भाग्यहीन। मिले क्या उसको द्रव्य ।२१। लक्ष्मीके साथ रहे अभागी। होवो वो अधिक ही दरिद्री। अगाध है परमेश्वर की करनी। कि आनंदमें भी जन दुःखी ।२२। विवेक-हीन होते हैं दुःखी। विवेकवान की उत्तम गति। ऐसी है एक रीति। प्रवृत्ति निवृत्तिकी ।२३। अभ्यंतरमें हो नारायण। तो क्या न रहे

लक्ष्मी साथ। इसीलिये लक्ष्मीपति जो नारायण। ध्यान करो उसीका ।२४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे अजपानिरूपणनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

आत्मा करता है देहमें वास। भोगे सुखदुःख नानाविध। अखिर छोड़के जाता है शरीर। अकस्मात ।१। तारुण्यमें रहे शरीर शक्ति। नाना सुख भोगे प्राणी। भोगे वृद्धपण आते ही। नाना दुःख ।२। है जब देह-आत्माकी संगति। तब तक होते है किंचित् सुखी। किन्तु देहान्तकाल आते ही। तडपते प्राणी ।३-४। ऐसा आत्मा दुःखदायक। प्राणान्त करते लोग परस्पर। तब सर्वही निरर्थक। होत जात ।५। ऐसा है दो दिनका भ्रम। उसको कहते हैं परब्रह्म। दुःखोंमें भी संभ्रमित। होते हैं पामर ।६। भोगते भोगते दुःख। मर गये समस्त लोग। कुछ भोगते हैं अल्प सुख। तो पीछे है ही दुःख ।७। जन्मा-रंभसे करे स्मरण। तो आ जाय समझमें सर्व। गिनती करे नाना दुःख। ऐसा कौन ।८। ऐसा है आत्माका संग। आजन्म जुडा है संबंध। आनंद और दुःख मिश्रित। चलता रहे जीवन ।९-१०। निद्राकालमें मत्कुण। भोजनकालमें मक्षिका मूषक। तथा सर्प व्याघ्र या मगर। करते हैं पीडा ।११-१५। ऐसी अंतरात्माकी करनी। परस्पर संहार करते प्राणी। ऐसी है जीवनकी कहानी। उसको कहते हैं ब्रह्म ।१६-१७। परब्रह्म है शाश्वत। वो न देगा किसीको दुःख। स्तुति निंदा दोनोंसे अलिप्त। वो है परब्रह्म ।१८। बोलो अपशब्द बहुत। वे करते है आत्माको ही स्पर्श। किन्तु परब्रह्म तो अलिप्त। है कल्पनातीत ।१९-२१। सृष्टिमें हैं असंख्य जीव। सबको कैसे मिले वैभव। भाग्यपुरुष लेते हैं उत्तम। इतर लेवे बिना सोचे ।२२-२३। इसी प्रकार अन्न वसन। इसी प्रकार देवतार्चन। ब्रह्मज्ञान भी इसी प्रकार। भाग्यानुसार होवे प्राप्त ।२४। मानते हैं संसारमें सुख। किन्तु मिले क्या राज्यवैभव। तथापि अंतमें सबको मरण। असह्य दुःख ।२५-२८। रूप लावण्य देहसामर्थ्य। सब ही जात अकस्मात। अंतकालमें दैन्य दुःख। है सबको समसमान ।२९। ऐसे चंचल अवलक्षण। किन्तु कहते है प्रचितिबिन। 'है भोगमें अभोगपण'। कौन माने इनका बोल ।३०-३२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहात्मनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

प्रथम था निर्मल जल। हुवा उसका वल्लीयोंमें प्रवेश। उस संगदोषसे बना तब।

कटु आम्ल तीक्ष्ण ।१। वैसे आत्मा है स्वरूपस्थित। देहसंगसे होता है विकारवश। साभिमानसे करता है कर्म। योग्य या विपरीत ।२। इक्षुसंगसे जल है मधुर। विषवल्लीमें प्राणघातक। संतसंग मिले तो मुक्त। करवाता जनको भी वो ।३-५। उदकका दृष्टान्त नाहीं। योग्य क्योंकि उदक है नाशवन्त। किन्तु है आत्मा उपाधिरहित। ऐसा आवे अनुभव ।६। करना है जिसको स्वहित। उसको करना चाहिए स्वरक्षण। है प्राणी अपनेका आपन। मित्र या शत्रु ।७-१०। सत्संगतिसे पुण्यवन्त। असत्संगतिसे पापिष्ट। गति अवगतिका योग। होता है संगतिकारण ।११। धरो संगति उत्तम। करो अपनी चिंता आपन। करो सुदृढ़ अभ्यंतर। ज्ञानवानकी बुद्धि ।१२। इहलोक और परलोक। ज्ञानीयोंके लिए सुखदायक। अज्ञानी जनको तो अविवेक। होता है दुःखकारक ।१३। जाणता है देवका अंश। नेणता तो राक्षण। इनमें से चाहो तो विशेष। लेवो जानबूझ ।१४। जाणता होता है सर्वमान्य। नेणता तो अमान्य। इसीलिए होगा जिससे धन्य। वही लेना चाहिए ।१५। प्रयत्नशील ज्ञानीयोंकी संगति। करती है प्रयत्नशीलको ज्ञानी। आलसी मूर्खोंकी संगति। करेगी आलसी मूर्ख ।१६। उत्तम संगतिका फल है सुख। अधम संगतिका दुःख। आनंद छोड़के शोक। व्यर्थ क्यों लेना ।१७। ऐसे है प्रकट प्रत्यक्ष। योग से होगा योग सिद्ध। वियोगसे होगा वियोग। इसीलिए विवेक योग ।१८-१९। संसार-संकट में अकस्मात। आया है पामर जीव। किन्तु यहांसे निकलना सत्वर। जिससे होवे समाधान ।२०। नाना दुर्जनोंका संग। क्षणक्षण करे मानभंग। इसीलिए अपना महत्व। रखना चाहिए ।२१। जो जो मनुष्य करे यत्न। तो तो होगा संतोष सुख। समझके करे जो वर्तन। होगा वो जगमें धन्य ।२२-२३। बहुरत्ना वसुंधरा यह। इसीलिए दुर्बल और संपन्न। अज्ञानी और व्युत्पन्न। अखण्ड ऐसे सृष्टिक्रम ।२४-२५। एक होता है भाग्यपुरुष। एक होता है भाग्यहीन। पूर्ण और अपूर्ण। कालान्तरमें ।२६-२७। ऐसा है यहां जीवनक्रम। छाय सम संपत्ति चंचल। आयुभी इसी प्रकार। होवे नाश पल पल ।२८। गया बालपण तारुण्य। आगया वृद्धाप्यकाल। ऐसे जानकर सार्थक। करना चाहिए ।२९। स्वेच्छानुसार होवे देह स्वभाव। प्रयत्नसे होगा कार्य सिद्ध। तो क्यों करना ऐसे कृत्य। है जो दुःखमूल ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे जगज्जीवननिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

नाभीसे जो उन्मेषवृत्ति। वही जानो परावाणी। ध्वनिरूप पश्यन्ती। हृदयमें

वाचा दूसरी ।१। कंठसे होता है नाद । वही है मध्यमा वाक । होतेही अक्षरका उच्चार । तो नाम उसका वैखरी ।२। परावाचाका नाभीस्थान । वहांही है अंतःकरण । अंतःकरण ही है जाणीवपणा । स्फुरणरूप स्मरण ।३-४। तदनंतर जो संकस्प विकल्प । करूं न करूं ऐसे स्फुरण । वही है मनका स्वरूप । तर्कानुमान ।५। इसके पश्चात होवे जो निश्चय । वही बुद्धिका रूप । जिसका होता है निश्चय । उसकाही होता चिंतन ।६-७। चिंतन है चित्तका स्वभाव । तदनुसार बोलता है बोल । उसीके अनुरूप तदनंतर । धरे कार्यका अभिमान ।८। वो अभिमान ही अहंकार । एवं पंचविध अंतःकरण । पंचवृत्ति पंचकार्योंका समुदाय । हैं वे भिन्नभिन्न ।९-१०। वैसे ही है पाणप्रपंचक । पांचही है वायुके प्रकार । तो भी कार्यभाग भिन्न भिन्न । है पांचोंही प्राणका ।११। सर्वांगमें व्यान नाभीमें समान । कंठमें उदान गुदामें अपान । मुख और नासिकामें प्राण । है ऐसे पंचविध वायु ।१२। वैसे ही जानो ज्ञानेन्द्रियपंचक । श्रोत्र जिव्हा चक्षु त्वचा नासिक । वाचा पाणीपाद गुदा शिस्न । यह है कर्मेन्द्रियपंचक ।१३। विषयपंचक भी इसीप्रकार । है पंचविध जाण । शब्द स्पर्शरूप रसगंध । एवं हुवे पंच पंचक ।१४-१५। एवं यह पंचवीस गुण । मिलनेसे होता है सूक्ष्म देह । इनका किस प्रकार मिश्रण । होता है यह सुनिए ।१६। अंतःकरण व्यान श्रवण वाचा । और शब्द गुण आकाशका । मन समान पाणी त्वचा । और स्पर्श गुण पवनका ।१७-१८। बुद्धि उदान नयन चरण । और रूप विषयका दर्शन । चित्त अपान जिव्हा शिस्न । रस विषयका आप जानो ।१९-२०। अहंकार प्राण घ्राण । गुदा गंध विषय ज्ञान । ऐसे करते है निरूपण । शास्त्र मतानुसार ।२१। है ऐसा यह सूक्ष्म देह । समझे कोई तो होगा निःसंदेह । अब कहता हूं स्थूलरूप । यथानुक्रम ।२२-२३। काम क्रोध शोक मोह भय । यह पचविध आकाशके गुण । चलन वलन प्रसारण । निरोध और आकुंचन ।२४। हैं ऐसे पंचविध गुण । स्थूलरूप वायुके जान । शुक्लित शोणित श्लेष्म मूत्र स्वेद । पांच भेद जलके ।२५-२७। अस्थी मांस त्वचा नाड़ी रोम । हैं ये पृथिवीके पांच धर्म । एवं पंचभूतोंके पांचपांच गुण । मिलके होता है स्थूल देह ।२८-२९। तीसरा देह अज्ञानमय कारण । चौथा तो महाकारण ज्ञान । किन्तु यह चारोंही देहका निरसन । हो जाय तो विज्ञानरूप परब्रह्म ।३०। विचारसे होवे चारों देहोंसे अतीत । तत्वोंके साथ जाएगा अहंभाव । तबही होगा आत्मनिवेदन । परब्रह्ममें ।३१। टूटा विवेकसे जन्ममरण । साध्य हुवा महत्कृत्य । भक्तियोगसे जन्मसार्थक । होता है उसीका ही ।३२। इतिश्री पंचीकरण । करतेही करो विवरण । लोहेका हो जाय सुवर्ण । पारसकी संगतिसे ।३३। यह नाहीं योग्य दृष्टान्त । पारससे न होगा दूसरा पारस । किन्तु साधुजनकी जाते

ही शरण । साधु ही होवे ।३४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे तत्वनिरूपणनाम समास आठवां ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण । ऐसे ये चत्वार देह । जागृति स्वप्न सुषुप्ति और । अवस्था चौथी तुर्या नाम ।१। विश्व तैजस और प्राज्ञ । प्रत्यगात्मा चार अभिमान । नेत्र कण्ठ हृदयस्थान । मूर्ध है चतुर्थ ।२। स्थूल भोग प्रविभक्तभोग । आनंद और आनंदावभास भोग । ऐसे यह चत्वार भोग । है चार देहोंके ।३। अकार उकार मकार । अर्धमात्रा जो ईश्वर । ऐसी मात्राऐं भी चत्वार । चतुर्देहोंकी ।४। तमोगुण रजोगुण । सत्वगुण शुद्धसत्वगुण । ऐसे है चत्वार गुण । चार देहोंके ।५। क्रियाशक्ति द्रव्यशक्ति । इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति । ऐसी या चत्वारशक्ति । हैं चार देहोंकी ।६। एवं यह बत्तीस तत्व । और स्थूल सूक्ष्म देहोंके पच्चास । मिलके होंगे बयांसी तत्व । सिवा कारण और महाकारण ।७। जान लेवा यह सब तत्व । तो भी छोड़ो उनको हैं मायिक । रहो तुम साक्षी अकेला एक । तत्व निरसनके पश्चात् ।८। साक्षी है केवल ज्ञान । ज्ञानसे पहचानो अज्ञान । ज्ञानाज्ञाग का भी निरसन । होता है देहोंके साथ ।९। ब्रह्माण्डमें हैं जो कल्पित देह । विराट और हिरण्यगर्भ नाम । उनका भी होता है निरसन । आत्मज्ञानसे ।१०। करे जो आत्मनात्मा-विवेक । और सारासार विचार । तो पंचभूत वार्ता है मायिक । ऐसी आवे प्रचिति ।११। अस्थि मांस त्वचा नाड़ी रोम । हैं पृथिवीके पांच गुणधर्म । वे सब हैं शरीरमें प्रत्यक्ष । देखना चाहिए ।१२। शुक्लीत शोणित श्लेष्म मूत्र स्वेद । हैं यह आपके पंचविध भेद । उनकामी विशदरूपसे ज्ञान । करना चाहिए ।१३। क्षुधा तृषा आलस्य निद्रा मैथुन । हैं जो पांच तेजके गुण । उन तत्वोंके भी निरूपण । करना चाहिए ।१४। चलन वलन प्रसारण । निरोध और आकुंचन । ये जो वायुके पांच गुण । वे भी जान लेवो ।१५। काम क्रोध शोक मोह भय । ये जो पंचविध आकाशका भेद । वो भी समझना चाहिए पूर्ण । करते करते विवरण ।१६। एवं हुवा स्थूल शरीरका विचार । पंचवीस तत्वोंका विस्तार । अब करू सूक्ष्म देहका विचार । विवेकपूर्वक ।१७। अंतःकरण मन बुद्धि चित्त अहंकार । पंचविध आकाशका विचार । व्यान समान उदान प्राण अपमान । हैं गुण वायुतत्वके ।१८-१९। श्रोत्र त्वचा जिव्हा चक्षु घ्राण । यह हैं तेजके गुण । वाचा पाणी पाप शिस्न गुद । यह भी हैं गुण जलके ।२०-२१। शब्द स्पर्श रूप रस गंध ।

यह हैं पृथिवीके गुणधर्म । एवं यह पंचबीस तत्वभेद । हैं सूक्ष्मदेहके ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे तनचतुष्टनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

आवर्णोदकमें हाटकेश्वर । करूं उसको नमस्कार । क्योंकि है वो पातालर्लिग । महिमा उसकी अत्यंत ।१। किन्तु वहां कैसे जाना । कैसे सशरीर प्रवेश करना । इसीलिए विवेकसे जानना । उस ईश्वरको ।२। जहां पर्वतोंके टूटे हैं कड़े । सप्त समुद्रोंने दिये हैं वेढ़े। भूमीपूर भी सूदूर जाना पड़े। ऐसा वो कठिन स्थल ।३। पार करना सप्त समुद्र । यह दिखता है अशक्य । इसीलिये उसको साधुजन । जानते हैं विवेकसे ।४। अपनेको आवे न समझ । तो ज्ञानीको पूछना अवश्य । जब तनमनसे जानना अशक्य । तब विवेकसे देखो उसको ।५। देख न सके जो चर्मसृष्टि । तो चाहिए ज्ञानदृष्टि । विवरण करके तत्वसृष्टि । राखो समाधान ।६। इस भूमंडलके कारण । होते हैं आकाश और पाताल । वो न होते तो अंतराल । होवे चारों ओर ।७। कहना उसको परब्रह्म । निरूपाधिक जिसका स्वभाव । जहां होता हैं शून्याकार । दृश्यमाया सकल ।८। देखे दृष्टि हैं जो दृश्य । जनको होता केवल भास । किन्तु है जो मनातीत निराभास। उसको जानो विवेकसे ।९। जहां होवे दृश्य-भासका नाश । वहां होगा विवेकसे प्रवेश । किन्तु ऐसे ज्ञानीजन । भूमंडलपर है अल्प ।१०। वाचासे बोलो वाच्यांश । न बोलते ही जानो लक्ष्यांश । निर्गुणका लेवो अनुभव । गुणोंके सहाय्यसे ।११। अखिल गुण होते हैं नाश । केवल निर्गुण एक अविनाश । स्थूलको छोड़के सूक्ष्म । देखो सर्वसार ।१२। जिसको न सके दृष्टि देख । उसका श्रवणसे लेवो ज्ञान । श्रवण मनन से आवे समझ । है जो शाश्वत ।१३। अष्टधा प्रकृतीके पदार्थ नाना । देखनेसे समझमें आवे ना । इसीलिए सर्व ब्रह्मरूप मानना । है अनुचित ।१४। जब सबही हो जाय एकरूप । वहां क्या जाने परीक्षा कौन । जैसे रुचिनष्टसे नाना अन्न । मिश्रित किया मूर्खतासे ।१५। बुद्धिहीन नाहीं गुणग्राहक । मूर्ख न समझे विवेक । विवेक और अविवेक । कहे एकरूप ।१६। जब न हो तरतमभाव । तो न समझे उच्च-नीचमें भेद । डूब गया परीक्षा-अभ्यास । वहां कैसी मुक्तता ।१७। है कोई विवेकहीन । भासे उसको सब समान । जिसका होता है सतत नाश । उसको ही कहे अविनाश ।१८-१९। किया ईश्वरने नाना भेद । उससे चलता है सृष्टिक्रम । किन्तु जहां हैं अंधे परीक्षक । वहां कैसी परीक्षा ।२०। जहां परीक्षाका अभाव। वहां बुद्धिहीनोंका समुदाय । गुण न होंगे तो गौरव । कहांसे होगा ।२१। सत्य असत्य जब एकरूप । तो विवेकका

क्या काम । किन्तु असार छोड़के सार । लेते हैं साधुजन ।२२। उत्तम वस्तुकी परीक्षा । कर सके कैसे कर्मफूटा । दीक्षाहीनसे दीक्षा । मिल जाय कैसी ।२३। है जो अस्वच्छ अमंगल । उसको क्या वेदशास्त्र पुराण । आचार-विचारसे पैलपार । जा सके साधक ।२४-२५। नेमस्तके लिए भी समझना कठिन । उसको कैसे समझे मुर्ख । परमार्थ विषयमें जो अंध । अनभिज्ञ सर्वथा ।२६। पापपुण्य स्वर्ग नर्क । कुकर्म और सत्कर्म । विष और अमृत । होंगे कैसे एकरूप ।२७-२८। विषसेवनसे जाये प्राण । अमृतसेवनसे संजीवन । कुकर्मसे अपमान । सत्कर्मसे कीर्ति ।२९। इसीलिए धरना संतसंग । करना सच्छास्त्र श्रवण । उत्तम गुणोंका अभ्यास । करो प्रयत्नपूर्वक ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे टोपणसिद्धलक्षणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक अठारहवां बहुजिनसी

॥ श्रीराम ॥

नमूं तुझ गजवदन । महिमा तव आवे ना समझ । विद्याबुद्धि देते हो तुम । आबालवृद्ध सबजनको ।१। तुझ नमूं सरस्वती । चारों वाचा हैं तव स्फूर्ति । तव निजरूप जाणती । ऐसे लोग अल्प ।२। धन्य धन्य चतुरानना । तुमने की सृष्टिरचना । वेदशास्त्रोंमें भेद नाना । किये तुमने ही प्रकट ।३। धन्य विष्णु करे जो पालन । एकांशसे ही सकल जीव । सबा वर्धन पोषण । करे जो ज्ञानपूर्वक ।४। धन्य धन्य भोला शंकर । जो है अत्यंत दानशूर । जपता है जो निरंतर । रामनाम ।५। धन्य धन्य इन्द्रदेव । देवोंमें जो श्रेष्ठ देव । इन्द्रलोकका वैभव । कौन करे वर्णन ।६। धन्य धन्य यमधर्म । जानता है जो धर्माधर्म । प्राणीमात्रों का मर्म । जाने वो सकल ।७। व्यंकटेश महिमा बहु श्रेष्ठ । खड़े खड़े लेते है नैवेद्य । नाना परिमल पकान्न । जो सुस्वाद ।८। धन्य तू बनशंकरी । हो जो तुम शाकाहारी । धन्य भीमदेव तुमही । देते हैं तुमको दहीबडे ।९-१०। धन्य तू खंडेराया । भंडारसे पीत हुई काया । प्याजके साथ रोटी लाया । तो तत्पर होते हो तुम ।११। धन्य तुलजाभवानी । होवे प्रसन्न भक्ताभिमानी । गुण वैभवका वर्णन करी । ऐसा कौन ।१२। धन्य धन्य पांडुरंग । होती है कथा अखंड । तानमन सहित रागरंग । होवे नाना प्रकार ।१३। धन्य हो तुम क्षेत्रपाल । सबको देते हो प्रेम । भावसे भक्ति करे तो तत्काल । देते हो

उसको फल ।१४। रामकृष्णादि अवतार। उनकी महिमा है अपार। बताते हैं उपासना मार्ग। तत्पर बहुत जन ।१५। सकल देवोंका मूल। तो यह अंतरात्मा केवल। भूमंडलमें भोग सकल। घड़े उसीको ही ।१६। वही बने नाना देव। बने नाना शक्तिरूप। भोगे सकल ही वैभव। वही एक अंतरात्मा ।१७। करे इसका विचार। तो बहुतही होगा विस्तार। होते जाते देव नर। कितनेही क्या गिनती ।१८। किर्ति और अपकीर्ति। अपार निंदा अपार स्तुति। इन सबोंकी भोगप्राप्ति। घड़े अंतरात्माको ही ।१९। किस देहमें क्या करे कर्म। किस देहमें क्या लेवे भोग। भोग त्याग वीतराग। करे आत्मा ।२०। भूल गये प्राणी अभिमानवश। मानने लगे देहको केवल। विसर गये अंतरात्मा मुख्य। होते हुवे भी अभ्यंतरमें ।२१। अरे इस आत्माका चलन वलन। देखे ऐसा भूमंडलमें कौन। होवे अगाध पुण्यसंचय। तो रहे कुछ अनुसंधान ।२२। होते ही आत्मानुसंधान। जल जाये पाप सकल। अंतर्निष्ठ जो ज्ञानीजन। जानते हैं वे यह ।२३। तर गये अंतर्निष्ठ। डूब गये अंतर्भ्रष्ट। जो थे लोक-रूढ़ी-मग्न। भ्रमिष्ट बाह्यरंगमें ।२४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बहुदेवस्थाननिरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

अजानपनसे हुवा तो हुवा। गतकालमें वो खो गया। अब तो वर्तन करना। जानपनसे ।१। जानते है जो पुरुष। उसीकी करो सेवा संग। उसीका लेवो बुद्धिज्ञान। धीरे धीरे ।२। लिखना पढना पूछना। उपकार या सेवा करना। विचार भजनसे समाधान रखना। यह सब ज्ञानीके साथ ।३-४। गाना बजाना औषध लेना। ध्यानादि अभ्यास करना। नाना परीक्ष व्यायाम करना। करो ज्ञानीके साथ ।५-९। ज्ञानीयोंकी कथा युक्ति गोष्टी। नाना प्रसंग तर्कस्फूर्ति। साक्षेप धूर्तपण राजकारण-मति। गद्य-पद्यादि कवित्व ।१०-१५। माधुर्य किन्तु वचन भेद। तीक्ष्णबुद्धि सहिष्णुत्व संवाद। उदारत्व और कल्पना चातुर्य। सीखो ज्ञानियोंके पास ।१६-१८। नाना गुण अध्यात्म विवेक। भक्ति वैराग्य ज्ञान ध्यान। परमार्थमार्गका सूक्ष्म चिन्ह। समझलेवो ज्ञानीयोंसे ।१९-२१। ज्ञानीयोंका अलिप्तपण। ज्ञानीयोंका विदेहलक्षण। ज्ञानीयोंका ब्रह्मविवरण। समझलेवो उन्हीके पास ।२२। ज्ञानो एक अंतरात्मा। कहे कौन उसकी महिमा वद्याकला-गुणोंकी सीमा। है ही नाहीं ।२३। परमेश्वके गुणानुवाद। करो अखंड संवाद। जिससे हो जाय आनंद। परम और अद्भुत ।२४। परमेश्वरने किया जो निर्माण। समझो प्रथम उसका स्वरूप। तदनंतर करो उसको अलग। और देखो परमेश्वरको ।२५-२६।

करता है वो निर्माण जग। किन्तु स्वयं न दिखे वो देव। तब विवेकबलसे अनुमान। करना अवश्य ।२७। उसका जब लगे अखण्ड ध्यान। तब कृपावान् वो देता अशन। इसीलिये सर्वकाल संभाषण। तदंश बनके करो ।२८। ध्यान धरे तो भक्त। ध्यान न धरे तो अभक्त। संसारसागरसे मुक्त। करता है भक्तको देव ।२९। उपासना होतेही परिपक्व। देव-भक्तकी अखण्ड भेट। जानता है यह प्रत्यक्ष। अनुभवसे ज्ञानी ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सर्वज्ञसंगनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

दुर्लभ शरीर दुर्लभ आयुष्य। करो ना इसका नाश। कहता है रामदास। करो रे विवेक विचार ।१। न करो जब उत्तम विवेक। तब सबही हो अविवेक। देखत देखत अविवेकी रंक। डूबे कुसंगसे ।२-३। मूर्खपणाका किया अभ्यास। अविवेकसे हो गया घात। उठे चंडाल काम। आते ही तारुण्य ।४। मूर्ख आलसी और तरुण। सब ओर दिखता है दीन। ना अन्नवस्त्र ना उत्तम गुण। शरीर मन हैं दुर्बल ।५-७। न जाने लिखना न जाने पढना। न जाने कहना न जाने पूछना। सिखावे कोई तो सीखेना। करे निंदा सज्जनोंकी ।८-९। अभ्यंतरमें एक बाहर अन्य। ऐसा जिसका विवेक। परलोक का सार्थक। कैसे होगा ।१०। नाश हुवा अपना संसार। मनमें हुवा पश्चाताप। तो करना चाहिए अभ्यास। विवेकसे परमार्थका ।११। एकाग्र करके मन। निश्चयसे करो साधन। प्रयत्न करते समय। होने न दो आलस्य ।१२। छोड़ो सर्वही जवगुण। करो उत्तम गुणोंका अभ्यास। संतवचन पाठान्तर। करते जावो अर्थान्वित ।१३। पद प्रबंध श्लोकप्रबंध। नाना घाटी मुद्राछंद। प्रसंगानुरूप आनंद। होवे ज्ञानबोधसे ।१४। किस प्रसंगमें क्या क़हना। है क्या उचित, यह समझना। व्यर्थही क्यों बोलना। है जो अप्रा-संगिक ।१५। जान लो दूसरोंका अभ्यंतर। सादर बोलो योग्य उत्तर। जो मनमें आवे वो वचन। बोलना केवल मूर्खता ।१६। जिसकी है जो उपासना। तदनुसार गायन करना। इसीलिए अभ्यास करना। राग और तालका ।१७। प्रसंगानुरूप साहित्य सगीत। अथवा हरिकथा रसभरित। श्रवण मननसे अर्थान्तर। शोधते जावो ।१८। पाठान्तर करो बारबार। स्मृतीको उजाला मिलजाय। करते रहो स्मरण। हित जो तुम्हारा ।१९। अखण्ड करो एकान्तवास। ग्रंथमात्रका करो अभ्यास। स्वानुभवसे समझे जो अर्थ। धरो वो मनमें दृढ़ ।२०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निस्पृहसिकवणनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

देह है तो गणेशपूजन। देह है तो शारदावंदन। देह है तो गुरुसज्जन। संत और श्रोताजन।१। देह है तो कवित्व अध्ययन। इसीलिए भी ग्रंथलेखन। नाना विद्या पदार्थ शोधन। देहके कारण।२-३। सिद्ध साधु ऋषिमुनि। और बहुत महाज्ञानी। तीर्थाटन करते प्राणी। देहके कारण।४। देह है तो श्रवण मनन। मुख्य परमात्माका दर्शन। कर्म उपासना ज्ञानमार्ग। देहके कारण।५-६। योगी वीतरागी तापसी। देहके कारण होते हैं सायासी। प्रकट होता है परमात्मा भी। देहके कारण।७। इहलोक और परलोक। पुरश्चरण अनुष्ठान। गोरांजन धूम्रपान। पंचाग्निसाधन।८-९। पापी और पुण्यशील। अनर्गल और शुचिष्मंत। बंड पाखांड और अवतार। हैं देहके कारण।१०-११। विषयभोग त्याग रोग। नवविधा भक्ति चतुर्विध मोक्ष। नाना युक्ति मत दान धर्म। पूर्वकर्म देहकारण।१२-१४। नाना स्वार्थ नाना परार्थ। भक्तिमार्ग सन्मार्गसाधन। बंधमोक्ष और निवेदन। देह है इसीलिये।१५-१७। सब घटमें पुरुषोत्तमकी वस्ती। होत जात अवतार-पंक्ती। संभ्रम कीर्ति या अपकीर्ति। देहके कारण।१८-२०। उत्तमोत्तम पदोंका भोग। आत्माका प्रकटन या तिरोभाव। गायनादि गुणोंका आगर। देहके कारण।२१-२३। ब्रह्माण्डका दुर्लभ फल। है यह देह केवल। जिस आधार होते हैं पावन। हरिभजन करनेसे।२४-२६। उष्टधा प्रकृतिका मूल। है जो हरि संकल्प केवल। वही अनेक संकल्पोंके साथ। आया फलरूप देहोंमें।२७-२८। उदकरूप वेलीका मूल बीज। पुनरपि फलोंमें वही बीज। एवं परम्परावलंबित। चले भूमंडल व्यापार।२९-३०। जो जो कुछ घड़े कार्य। वो न घड़े बिना देह। किन्तु देहका करना सार्थक। तबही देहका महत्व।३१। आत्माके कारण आया देह। देहके कारण आत्माका वास। ऐसा परस्परयोगसे कार्यभाग। चलता है सर्वकाल।३२। चोरीसे करे कोई कार्य। तो आत्माभी आवे समझ। सब कर्तृत्वका स्वभाव। है एक आत्माकाही।३३। देहमें रहता है आत्मा। देह पूजासे संतुष्ट होता। या देहपीडासे क्षुब्धता। होती है आत्माको ही।३४। बिना देह हो न सके पूजा। या न कोई पावे देह बिना। इसीलिए जनमें जनार्दनका। पूजन करना चाहिए।३५। जहां है उत्तम विचार। धर्मस्थापनाका निर्धार। उस पुरुषका ही पुण्य शरीर। है योग्य पूजनीय।३६। सबका ही करना पूजन। यही एक मूर्खलक्षण। क्या समझ सके गर्दभ। करे यदि उसकी पूजा।३७। पूज्यकोही पूजा लेने का अधिकार। यदि हो जगदांतरमें देव। न करो पीड़ा असंतोष। इतर जनको।३८-३९। परमेश्वरके है अनंत-

गुण। क्या जानता है मानव। करे जो अध्यात्म ग्रंथ श्रवण। आवे उसको ज्ञान ।४०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहदुर्लभनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

धान्यको तोलो उदंड। माप न खावे धान्य। वैसे विवरण बिना नाहीं लाभ। प्राणीमात्रको ।१। करता है बहुत पाठान्तर। पूछे तो समझे ना किंचित। जब नाहीं अर्थानुभव। तब है अनुमान केवल ।२। शब्दोंकी परीक्षा पूर्ण। करके लेना प्रत्यय। और सब छोड़ो दूर। है जो अन्य असत्य ।३। नाशवन्त जो नामरूप। उसको छोड़के लेवो अनुभव। सार असार करना एकरूप। है मूर्खपण ।४। वक्ता हो या लेखक। उसको समझना चाहिए अर्थबोध। लिखे या बोले बिना समझ। तो केवल श्रम ।५-६। मिला कर नाना शब्द। कुछ ना कुछ बोलो उत्तर। तो हो जाय सबही व्यर्थ। जब आवे प्रसंग ।७। चक्कीमें डाले धान्य बहुत। तो क्या मिले आटा मनपसंद। भोजन करे बिना चर्वण। तो कैसे होगा पचन ।८-९। करना है लोक-संग्रह। तो व्यर्थ न जाने दो एक क्षण। समस्त लोगोंका अंतःकरण। संभालना चाहिए ।१०। सूक्ष्म वाचासे करे नामचिंतन। तदनुसार लेवो रूपानुभव। वो ही समझावे नाना लोक। करे उनको आनंदित ।११। तब ही करेंगे लोक वंदन। किन्तु न समझे न समझावे जो महन्त। वो होवे सहज ही निंदित। असंतुष्ट लोगोंसे ।१२-१३। शुद्ध होवे तप्त सुवर्ण। तबही लगे निकष पूर्ण। वैसे ही लेना हो प्रत्यय। तो करो श्रवण मनन ।१४। वैद्यकी प्रचित आवेगा। और रोगही दूर होवेना। तो क्यो व्यर्थ क्रोध करना। लोगोंके ऊपर ।१५। मान्य न हो कहीभी असत्य। इसीलिए सप्रमाण करो अनुमान। बिना हिसाब जो व्यापार। तो न माने सुरनीस ।१६-१९। संग्राममें गया दुर्बल। तो सर्वस्व हुवा पराजित। इसमें किसका दोष। सोचो आप लोग ।२०। आ जाय सत्यका प्रत्यय। तो वहीं धरो अत्यादर। बिना अनुभव जो उत्तर। वो अर्थहीन ।२१। सिखावे कोई तो आवे क्रोध। किन्तु आवे जब आगे दुःख। तब उड़ जाये तत्काल। असत्यका निश्चय ।२२। सत्य छोड़के लेवे असत्य। तो बोलेगा ही असंबद्ध। वो क्या जाने नीतिन्याय। है जो देवनिर्मित ।२३। छोड़े जो कोई न्याय। उसको त्रस्त करेंगे सब जग। तब क्या करे अकेला एक। किसके साथ कलह करे ।२४। सबके साथ करे अन्याय। और चाहता है यश। तो है केवल अशक्य। रहने दो उसको भ्रमिष्ट ।२५। असत्य ही है पाप। सत्य है जानो स्वरूप। तो दोनोंमें से कौनसा पक्ष। लेना चाहिए वो देखो ।२६। मायामय है बोलना चालना। न हो माया तो कैसे बोलना।

इसीलिए मूल शोधना। निःशब्द अवस्थाका।२७। वाच्यांश समझके छोड़ना। विवरण करके लक्ष्यांश लेना। तबही ना संभ्रम होगा। निःशब्द परब्रह्मका।२८। अष्टधा प्रकृति-रूप पूर्वपक्ष। छोड़के लगावो अलक्ष्यमें लक्ष। मननशील है जो परम दक्ष। वो ही यह जाने।२९। नाना भूस और धान्य। एक ही कहना मूर्खपण। रस छोड़के ईक्षकी खाल। लेवे कौन।३०। पिण्डमें क्या नित्य क्या अनित्य। ब्रह्माण्डमें क्या सार क्या असार। सबका करके शोध। लेवो है जो सार।३१। अन्वय व्यतिरेकसे शोध। करो सब माया-तत्वोका निरास। आत्मनिवेदनसे प्रवेश। करो परब्रह्ममें।३२-३३।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे करंटपरीक्षाणनिरूपनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

नाना वस्त्र नाना भूषण। इससे होगा शरीरका श्रृंगार। विवेक विचार और राजकरण। श्रृंगार अभ्यंतरका।१। शरीर सुंदर सतेज। वस्त्राभूषणसे किया सज्ज। अभ्यंतरमें न हो चातुर्यबीज। तब नाहीं उसकी शोभा।२। हो जो कठोर वचनी। या अखंड अभिमानी। न्याय नीति कदापि नाहीं। अंतःकरणमें।३। शीघ्रकोपी मर्यादा वर्जित। असत्यवचनी अप्रामाणिक। जानते नाहीं राजकारण। हैं वे पापी राक्षस।४-५। वर्ज्यकरो अतिशय सर्वत्र। राजकारण है तो नाहीं ध्यान। ध्यान करे तो नाहीं राज-कारण। दोनो ही रहेंगे अपूर्ण।६। काल समय रहते हैं भिन्न। इसीलिए करना न हठनिग्रह। प्रसंगानुसार वर्तन। करना चाहिए।७। तो भी करे कोई हठ। तो आ जाय कठिन प्रसंग। इसीलिए करना चाहिए अंत। संकटोंका प्रथम।८। ईश्वर है साभिमानी। विशेष तुलजाभवानी। परन्तु जो कुछ है करनी। वो करो विचार।९। हो आप पहलेही सावधान। क्या अब कहना सूचनार्थ। किन्तु करना चाहिए अनुमान। विवेकपूर्वक।१०। समर्थकेपास बहुत जन। रखना चाहिए साभिमान। तब वे लोग भी रहेंगे निश्चल। करके मनको सुदृढ़।११। म्लेंच्छ दुर्जन असंख्य। बहुत कालका है बंड। इसीलिए अखंड। रहो आप सावधान।१२। सकलकर्ता जो ईश्वर। जिसने किया जिसका अंगिकार। उस पुरुषका विचार। विरला ही जाने।१३। न्याय नीति विवेक विचार। नाना प्रसंग प्रकार। करे परीक्षण परांतर। है ईश्वरकी देन।१४। सावधानीसे करे महायत्न। प्रसंगमें धरे धैर्य। करे बहु अद्भुत कार्य। है ईश्वरकी देन।१५। यश कीर्ति प्रताप महिमा। उत्तम गुणोंकी नाहीं सीमा। नाहीं जिसको दूजी उपमा। है ईश्वरकी देन।१६। देव

ब्राह्मण आचार विचार । असंख्य जनको आधार । करे सदा परोपकार । है ईश्वरकी देन ।१७। इहलोक परलोक साधना । अखंड सावधान रहना । बहुतजनो का भार सहना । है ईश्वरकी देन ।१८। देव-भक्तोंका पक्ष लेना । ब्राह्मणों की चिन्ता करना । बहुतजनों को पालना । है ईश्वरकी देन ।१९। धर्मस्थापनाके नर । हैं जो ईशके अवतार । हो गये और भी हो जाय । है ईश्वर की देन ।२०। उत्तम गुणोंका संग्राहक । तीक्ष्ण जिसका तर्क विवेक । धर्मवासना पुण्यश्लोक । ईश्वर की देन ।२१। सकल गुणोंमें है सार । व्यवस्था विवेक विचार । जिससे पावे पैलपार । अरत्र और परत्र ।२२।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उत्तमपुरुषनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

जनोंका लालची स्वभाव । आरंभमें ही कहते, हे देव । देवो मुझे कुछ अपना प्रसाद । ऐसी उसकी वासना ।१। करते न किंचिदपि भक्ति । देवकी प्रसन्नता इच्छिती । जैसे सेवा न करते ही । मांगते रहते स्वामीसे ।२। बिना कष्ट नाहीं फल । बिना कष्ट नाहीं राज्य । बिना कष्ट नाहीं प्राप्त । कुछ भी जगमें ।३। आलस्यसे कार्यका नाश होता है, यह तो प्रत्यक्ष । तो भी न करते हैं कष्ट । हीन जन ।४। पहले कष्टसे होता है दुःख । पश्चात् मिले सुखरूप फल । लेते हैं जो आलस्य में सुख । उनको होवे दुःख आगे ।५। इहलोक हो या परलोक । उभयविध समान विवेक । दीर्घ सूचनानुसार करे वर्तन । उसको मिलता है सुख ।६। जितना मिले उतना किया भक्षण । तो कठिन कालमें मिले ना अन्न । इसीलिए दीर्घ सूचनानुसार । करते सूज्ञ वर्तन ।७। इहलोकमें संचितार्थ । परलोककारण परमार्थ । उसका भी न हो जब संचय । तो है वो जीवन्मृत ।८। क्या है एकबार मरण । लगातार हैं जन्ममरण । कर न सके जो स्व-संरक्षण । वो है आत्मघात की ।९। प्रति जन्म आत्मघात । कौन करे उसका गणित । क्योंकि छूटे ना जन्ममरण । विवेकहीनोंका ।१०। सकलकर्ता है देव एक । ऐसे बोलते प्राणीमात्र । क्या होगा उनको अकस्मात । देवदर्शन का लाभ ।११। विवेककारण ऐसा लाभ । होगा उसको निश्चित । जो पाता है परमार्थ । विवेकीजनोंसे ।१२। निःसंछय है एकही देव । जो करता है अनेक । किन्तु उन अनेकको ही देव । मानना न चाहिए ।१३। देव और देव का कर्तृत्व । समझना चाहिए अभिप्राय । किन्तु बिना समझ कित्येक जीव । बोलते हैं व्यर्थ ।१४। समझते हैं वे मूर्ख । कि बोलनेसे ही होता है ज्ञान । क्या है भोजन-तृप्तिका उपाय । भोजन बिना अन्य कोई ।१५। जो करे परम कष्ट । वो ही एक भोगे भाग्य । इतर सब करंटे जन ।

रहते हैं बोलत ।१६। करंटका हीन लक्षण । समझते हैं विचक्षण । किन्तु ज्ञानीयों के उत्तम लक्षण । जाने नाहीं करंटा ।१७। उसकी नो बढती है कुबुद्धि । वहां कैसी होगी शुद्धि । कुबुद्धि ही है सुबुद्धि । ऐसी होती उसकी मति ।१८। छोड़े कोई शुद्ध बुद्धि जब । तो क्या मानना उसका वचन सत्य । जहां न हो किंचिदपि विचार । वहां होगा ही असत्य ।१९। विचारसे होवे सार्थक । हो इहलोक या परलोक । नित्यानित्य का विवेक । करना चाहिए विचारसे ।२०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे जनस्वभावनिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

।। श्रीराम ।।

ब्रह्म निराकार निश्चल । आत्मा है विकारी चंचल । किन्तु बोलते हैं सकल जन । आत्माको देव ।१। है कैसा देवका स्वरूप । यह न समझे यत्किंचित । बहुत देव होनेके कारण । अनुमान भी नाहीं ।२। इसीलिए होना चाहिए विचार । विचारसे शोधो देव । बहुत देवोंकी गुंथागुंथ । होंने न देवो ।३। देखा क्षेत्रस्थ देव कोई एक । बनाया धातुका अन्य तत्सदृश । इसीप्रकार परंपरागत विश्वास । चलता है पृथिवीपर ।४। नाना प्रतिमा-देवोंका मूल । है यह क्षेत्र-देव केवल । किन्तु है पाषाणका क्षेत्र-देव । ऐसे जब आवे समझ ।५। तब उसका ही मूलका विचार । करते करते आवे ज्ञान । कि अवतार-देव होते कारण । क्षेत्र-देवोंका ।६। अवतार भी हो गये समाप्त । जो कि थे वे देहधारक । तो अनुमानसे उनसे भी श्रेष्ठ । होते ब्रह्मा विष्णु महेश ।७। उन तीनों देवपर भी जिसकी सत्ता । वो है एक अंतरात्मा । कर्ता भोक्ता तत्वता । है वो एक प्रत्यक्ष ।८। युगानुयुग तीनों लोक । अकेला ही चलावे अनेक । ऐसे करते हैं निश्चय । वेद और शास्त्रकार ।९। चलता है जो शरीर । वही देव ज्ञानरूप । वो ही आत्मा उत्तरोत्तर श्रेष्ठ । है देव एक ही ।१०। उस अतंतर्देवको बिना जाने । तीर्थक्षेत्रको धावत जाते । प्राणी व्यर्थ ही कष्ट करते । देखत देखत पामर ।११। आखिर आता है विचार । कि जहां देखूं वहा पाषाण जल । तो क्यों अब भ्रमत रहूं । कष्ट करते करते व्यर्थ ।१२। इतना जिसको आता है विचार । वो धरेगा सत्संग सत्वर । सत्संगसे ही मिला है देव । बहुत लोगोंको ।१३। है किन्तु यह विवेकका काम । विवेकी ही जाने निःसंशय । भूलते हैं अविवेकी व्यर्थ । समझे बिना ।१४। अंतर्वेधी जाने अंतर । बहिर्मुख न जाने कुछ । 'मूर्खस्य प्रतिमा देव' । ऐसे है वचन ।१५-१६। समझत देखत चाले मार्ग । वही विवेकबलसे जाये आखिर । तत्वोंका छोड़के होवे समरस । निरंजनके साथ ।१७। जो जो होता है साकार । वो सकल

ही है नाशवन्त । रहे जो सृष्टि व्यापार के अंत । वो है जानो परब्रह्म ।१८। चंचल देव निश्चल ब्रह्म । परब्रह्म नाहीं भ्रम । प्रत्यज्ञानसे निर्भ्रम । होता है तत्काल ।१९। बिना प्रचित जो जो कर्म । वो सबही होगा व्यर्थ । फंस गये कर्मकर्दममें जीव । कष्ट करते करते गये ।२०। कर्मसे छुटकारा न होय । तो किमर्थ करना देव भजन । सगुण देवका ही भजन । करवाता निर्गुणका ज्ञान ।२१-२२। सगुणको देखत देखत । हो जावे सहज ही निर्गुण । नाशवन्तका होते ही नाश । हो जावे वस्तुरूप ।२३। परमेश्वरकी ओर अनुसंधान । लावो तो हो जाय पावन । यही मुख्य ज्ञानका अनुभव । हो जाता है विज्ञान ।२४। ऐसे हैं विवेक-विवरण । जानो यह सुचित अंतःकरण । नित्यानित्य विवेक श्रवण । है यह एक आधार ।२५।

इति श्रीदासबोवे गुरुशिष्यसंवादे अंतर्देवनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

आदिपुरुष को वंदन । करके बोलता हूं निद्रा विलास । निद्रा आवे तो न जाय । करो कितना ही प्रयत्न ।१। निद्रा व्याप्त करे जब शरीर । तब जृंभा मौ आलस्य । जिससे बोलना भी न होवे शक्य । ऐसी निद्रा अमर्याद ।२। आसरा लेके बैठा एक । वहां ही घोरने लगा निःशंक । औंधा होके पसरे एक । काटे दांत कटकट ।३-८। दिखते है जेंसे प्रेत । या कोई भयानक भूत । निद्रामें ही कोई बाहर । जाता अनवधानसे ।९-१२। हंसते रोते कोई कोई । एक जोरजोरसे आवाज देती । स्वप्नसे होती सुख दुःखी । मांगते जल कोई एक ।१३-१९। इतनेमें जब होता है उषःकाल । तब किसीने शुरु किया प्रातः स्मरण । कीसीने जप या पाठांतर । किसीने ध्यान ।२०-२१। सीखे कोई नाना विद्या । नाना तानमान गायनकला । व्यवसायोंमें आप अपना । लगे सर्व लोक ।२२-२३। ज्ञाता तो तत्वोंके अतीत । गया तुर्याके भी पार । हुवा वो ब्रह्मरूप आत्मनिवेदन से ।२४।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे निद्रानिरूपणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

अंगीकृत किया जो कार्य । उसमें आ जाय विक्षेप । तो भी काल है जब तक सहाय । तब तक मिलेगा ही ।१। कार्यभाग यशदायक । होतेही प्राणी संतोषित । सुविचार ही दिनदिन । आते हैं अभ्यंतर में ।२। जन्मादारभ्य देखा जाय । तो कभी काल होता

सहाय्य । दुःखानंतर देता है सुख । कृपालु देव ।३। हो जब सर्वकाल अनुकूल । तो क्यों न होते राजे सकल । साजे कुछ न साजे कुछ । ऐसा है जीवनक्रम ।४। संसार हो या परमार्थ । होवे जब कार्य विवेकपूर्वक । तो हो कार्यसिद्धि अद्‌भुत । ईश्वरकी देन ।५। बिना श्रवण समझमें आना । होवे ज्ञानी सीखनेके बिना । ऐसे किसीने देखा ना सुना । इहलोकमें उदाहरण ।६। श्रवण करे तो समझे सर्व । होती जावे वृत्ति निर्मल । आता है सारासार विचार । अभ्यंतरमें सावकाश ।७। त्रयलोकका व्यवहार । चलता है उसका कारण । हैं श्रवण और मनन । अनायास उपाय ।८। श्रवणमें होवे विघ्न अनेक । सावधानीसे जानो प्रत्यक्ष । करूंगा कुछ निरूपण । उनका ही अब ।९। बैठे हैं श्रवणार्थ जन । हुवे हैं वे एकाग्र । किन्तु आते हैं जो तदनंतर । वे कैसे होंगे एकाग्र ।१०। अथवा सुना है किसीसे कुछ । और संतसभामें आता है अकस्मात । तो लोग होते हैं विचलित । बोलते नाना प्रकार ।११। श्रवणार्थ बैठा कोई एक । होने लगा निद्रावश । या गत गोष्टीका ही मनन । करने लगा तन्मयतासे ।१२-१४। तत्पर किया पुनः शरीर । किन्तु फिर भी करे कल्पना-विचार । करते करते कल्पनाका विस्तार । होता है अमर्याद ।१५। जो जो आता है श्रवणपथ । उसका ही करे जो विवरण । तो भी किंचित सार्थक । निरूपण करनेसे ।१६। मन नाहीं दृश्य पदार्थ । विवेकसे होता है संयम । करवावो उसका मनन । अर्थान्तरका ।१७। आया है निरूपण-श्रवणार्थ । किन्तु खाया है उसने बहुत अन्न । तुरन्त ही होवे तृषाक्रान्त । क्या है निरूपण उसके लिए ।१८। लाया उसके लिए उदक । तो प्राशन किया उदक भी बहुत । हुवा अधिक ही वो अस्वस्थ । उठा वमन करनेके लिए ।१९। अजीर्णसे देता है डकार । तो लोगोंमें होता है अवमानित । मलमूत्र विसर्जनार्थ । जाता है बारबार ।२०-२१। आया कोई दृष्टान्त अपूर्व । तो रह गया वहां ही अंतःकरण । कहां तक आया वाचन । समझेना कुछ ।२२। सुनने आया निरूपण । तो वृश्चिकने किया दंश । तड़पने लगे अंग । तो कहां रहा निरूपण ।२३। दुखने लगा पेट या पीठ । मच्छर मत्कुणने काटा अंग । या हुवा कोलाहल अकस्मात । तो धावे वहां ही ।२४-२५। विषयी लोग आते श्रवणार्थ । किन्तु देखते स्त्रियों की ओर । ले जाते हैं चोर । पादरक्षण ।२६। अथवा होता है संवाद । संवादमें से वादविववाद । अपशब्द भी परस्पर । ऐसे करते प्रमाद ।२७। निरूपण सुनने के लिए आते । किन्तु गोष्टी ही करते रहते । हरिदास तो पेटके लिए । करते हैं कथा नीरस ।२८। ज्ञानी-ज्ञानीयों के साथ । बोलता है भिन्न भिन्न । निश्चित ज्ञान लोकहितार्थ । जाने ऐसा कौन ।२९। में हूं जानता केवल । ऐसे मानता है जो सतत । वो चलेगा

अन्यायकी ओर। न्याय नीति छोड़के ।३०। एक ओर धरे अभिमान। दूजी ओर बोले वितंड। ऐसे श्रोता को जाने कौन। खरे हैं या खोटे ।३१-३२। इसीलिए जाणता जो विचक्षण। पहले ही कहे 'मैं हूं अजाण। यदि वो जाने देव श्रेष्ठ। और सकल जगदांतर ।३३-३४। सभा में हो विवादकलह। तो ज्ञानीको ही आवे दोष। न सीखा रखना परांतर। तो क्या है वो योगी ।३५। वैर करे तो बढेगा वैर । भोगना पडेगा दुःख। इसीलिए ज्ञानीयों का विचार। समझना चाहिए ।३६। संभाल करते अपनोंका आपन। आने न देते हीनपण। क्षमा शांति इत्यादि गुण। रखते हैं अगत्य ।३७। गुणी बैठतो हैं अवगुणीपास । समझ लेते है उसके अवगुण । नाना उपाय दीर्घ यत्न । करते हैं परिहारार्थ ।३८-३९। दुर्जनने जीत लिया । मूर्खके साथ समरस हुवा । विवेक ही छूट गया। तो क्या है वो विवेकी ।४०। किन्तु मिल जाय फिर सत्संग । तो सज्जन ही करेगा उद्धार। सज्जनसे ही समाधन। मिलेगा प्राणियों को ।४१-४३। वो ही जान सके मनोगत। करे वर्तन प्रसंगानुसार। संतप्त लोगों को नाना प्रकार। करेगा वो ही शान्त ।४४। ऐसा हो कोई ज्ञानी समर्थ। वो ही है जानो विवेकवन्त। किन्तु हैं जो सामान्यजन। समझे ना उसकी करनी ।४५। चलता है बहुत कार्य। और नाना जनमंडल। उसीको कहे है समर्थ। और विवेकी ।४६। एकान्तमें करो विवेक। जगदीशका करो ध्यान। स्वजन और परजन। करो न ऐसा भेद ।४७। एकान्त में होसके विवेक। एकान्तमें मिलेगा मार्ग। एकान्त में बढ़ेगा योग्य तर्क। तब कहीं भी जावो ब्रह्माण्डमें ।४८। एकान्तमें करो नामस्मरण। जिससे मिल जाय निज धन। अंतरात्माका होते ही दर्शन। रहो उसके साथ बारबार ।४९। एकान्तप्रिय हो जब नर। तो सबसे पहले आवेगा ज्ञान। तब उससे कोई श्रेष्ठ। होगा नाहीं सर्वथा ।५०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे श्रोताअवलक्षणनिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक उन्नीसवां सिकवणनाम

।। श्रीराम ।।

ब्राह्मणको सुबोध अक्षर। प्रयत्नसे करने चाहिए सुंदर। जिसको देखते हो समाधान। होवे लोगोंको ।१। गोलाकार सरल और स्पष्ट। कृष्णवर्ण स्याहीसे आकर्षक। मुक्तमालासम शोभित। लेखन-रेखा ।२। अक्षर एवं दूसरेसे अलग। स्पष्ट

सुवाच्य और सम। काना मात्राके सहित। सर्वही हो सुंदर ।३। ग्रंथारंभसे अंत तक। लिखा है जैसे पहला अक्षर। वैसे ही लिखना प्रमाणबद्ध। समसमान ।४। न करे रेखा परस्परस्पर्श। शब्दाक्षर न दूर ना समीप। न हो बहुत लघु या लंब। ऐसे चाहिए लेखन ।५-६। न हो त्रुटि न हो शोध। न हो ऐसा प्रसंग। कि बुलाना पड़े लेखक। पढ़नेके लिए ।७-८। जिसका है वय नूतन। उसका लिखना चाहिए सावधान। होना चाहिये मन-मोहित। पढेगा उसका ।९। लिखे न बहुत सूक्ष्म या स्थूल। लिखो सदा मध्यम अक्षर। जो पढ़सके आबालवृद्ध। और सर्वकाल ।१०। लावो घट्टजाड़ कागज। जो न फटे बहुत काल। उसके मध्यभागमें सावधान। लिखो सुस्पष्ट ।११। लिखो उसपर ऐसा ग्रंथ। जो देखतेही उपजे भाव। कि "चलो तो देखूं वो पुरुष। है वो कौन ऐसा" ।१२। शरीरसे कष्ट करो बहुत। विस्तृत होने दो कीर्ति उत्कट। जिससे उपजे प्रेमभाव। मनमें लोगोंके ।१३। ग्रंथ रक्षणके कारण। नाना वसन सिंदुरवर्ण। मांदुस और ताले सहित। चाहिए संग्रहमें ।१४-२०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे लेखनक्रियानिरूपणनाम समास पहला ॥१॥

॥ श्रीराम ॥

अब कहूंगा मैं अर्थभेद। नाना प्रकारके संवाद। शब्दभेद मुद्राभेद। प्रबंधभेद नाना ।१-२। नाना आशंका प्रत्युत्तर। नाना प्रचित साक्षात्कार। जिससे लगता है चमत्कार। अन्य जनको ।३। नाना पूर्वपक्ष सिद्धान्त। प्रत्ययसे देखना निश्चित। अवास्तव अनुमान। बोलना नाहीं ।४। प्रवृत्ति हो या निवृत्ति। बिना प्रचित सकल भ्रान्ति। अनुमान ज्ञानसे जगज्जोति। कैसे होगी प्रकाशित ।५। दूसरोंका जानना अभ्यंतर। हेतु समझके देना उत्तर। ऐसे हैं लक्षण। चातुर्यके ।६। बिना चातुर्य जो खटपट। है वो विद्या समूल व्यर्थ। सभामें उससे समाधान। होगा नाहीं ।७। लोग बोलते हैं बहुत। वहां मौन ही उत्तम। अल्पचिन्हसे जगदांतर। समझना चाहिए ।८। मत बैठो मूर्खोंके साथ। उद्धतों से न करो वाद। करो ना समाधानका भंग। दूसरोंका कदा ।९। छोड़ो ना नेमस्तपण। होने न दो ज्ञानगर्व। मृदु शब्दोंसे लोगोंके हृदय। करो वशमें ।१०। जानो प्रसंग कैसा कौन। न करो सबके साथ विवाद। हो यदि आपका सत्य पक्ष। तो भी हो सके हानि ।११। शोधनेमें न करो आलस्य। भ्रष्ट जनका न हो सहवास। हो जाय तो न बोलो दोष। धरो मौन ।१२। आर्तजनका शोधो अंतर। प्रसंगानुसार अल्प वाचन। आकर्षित करो सज्जन। बचनमात्रसे ।१३। हो जहां मनरंज-

नार्थ समुदाय। या हो मुक्तद्वार भोजन। वहां न करो कदा गमन। जिससे होवे लाचार मन ।१४। करो उत्तमगुण प्रकट। उसके आधारसे बोलो शब्द। शोध शोधके जोड़ो मित्र। सज्जन सत्पात्र ।१५। बोलो उपासनाके अनुरूप। सबको करो संतोषित। कोई भी हो उसके साथ। वर्तन करो सद्भावसे ।१६। स्थल स्थलमें करो शोध। तब करो ग्राममें प्रवेश। प्राणिमात्रके साथ। बोलो जैसे हो आप्त ।१७। कहो न किसीको उच्च या नीच। सबका करो हृदय शान्त। जगमित्र होनेका उपाय। है एक जिव्हा ।१८-१९। जहां होती है हरिकथा। वहांकी लेना हो सर्वार्थता। तो जाके बैठो श्रवणार्थ तत्वता। समझो सब अभ्यंतरमें ।२०। मिल सके वहां साधुसंत। और भी व्यापक महंत। धीरे धीरे करो प्रवेश। संत सभामें ।२१। साधनोंमें श्रेष्ठ श्रवण। श्रवणसे श्रेष्ठ मनन। मननसे होता है समाधान। बहुत जनका ।२२। इसीप्रकार जानना सकल। धूर्तपणसे जानो जगदांतर। बिना समझ करे जो श्रम। वो सब व्यर्थ ।२३।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विवरणनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

सुचित करके अंतःकरण। सुनिए करंटलक्षण। जिनको करते ही त्याग। आवे सुलक्षण ।१। पापसे आता है द्रारिद्र। द्रारिद्रसे होता है पाप। है ऐसे ही होत जात। क्षणक्षण ।२। करंटको है आलस्य प्रिय। कदा न चाहता करना यत्न। वासना भी उसकी सतत। रहती है अधर्ममें ।३-४। सदा भ्रमिष्ट निद्राग्रस्त। अवास्तव बोले व्यर्थ। किसी का भी मनोगत। मानता ही नाहीं ।५। जाने ना लिखना पढ़ना। जाने ना व्यापार करना। आय-व्यय भी जाने ना। या न धारणा ध्यान ।१६। तोड़े फोड़े विसरे सतत। कुकर्म-हेतु खटनट मित्र। करे सबके साथ कलह। परघातकके बल ।७-९। नाहीं कदापि सत्संग। नाहीं नीति नाहीं न्याय। पराभिलाशा निरंतर। आलस्यसे ।१०-११। नाहीं वस्त्र नाहीं अन्न। नाहीं सुशब्द नाहीं संयम। करना जाने संहार। वहां कैसा परोपकार ।१२-१६। नाहीं किसीके साथ सख्य। नाहीं किसीपर विश्वास। विद्याहीन सदा उन्मत्त। मान वैभव कैसे वहां ।१७। रखना न चाहे जगदांतर। तो कैसे मिले भाग्य। कल्पना और अनुमान कारण। पडे महासंदेह में ।१८-२०। धरे न कभी पुण्यमार्ग। तो होगा कैसे पाप-नाश। कष्ट न करे किसी प्रकार। तो क्या मान्यता कीर्ति ।२१-२४। जहां न सत्संग उत्तमगुण। ना स्व-परहितार्थ कर्म। वही जानो

है करंटलक्षण। दुःख प्रवाह केवल ।२५-२८। इसीलिए छोडो अवगुण । समझपूर्व लेवो उत्तम गुण । तब ही होवे समाधान । और कार्य सिद्धि ।२९-३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे करंटलक्षणनिरूपणनाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

अब सुनिए सदैवलक्षण । हैं जो परम सौख्यदायक । जहां परोपकार और उत्तमगुण । वहां प्रेम और मान्यता ।१-२। लिखे सुन्दर अक्षर । वाचन भी करे शुद्ध । कहे यथार्थ ग्रंथका अर्थ । होता वो सबको प्रिय ।३-५। उत्तम गुणी और सत्पात्र । सत्संगी और जगमित्र । स्वतंत्र और नेमस्त । होगी उसकी कीर्ति ।६-७। नम्रतापूर्ण मृदुवचन। वचनानुसार वर्तन । जिसको मानते बहुतजन। कौन दोष देगा उसको ।८। वन्हीसम पुण्यकी रास। ऐसाजो कोई महापुरुष। वो करता ही रहे परोपकार। होता सबको प्रिय ।९। लोक देखते उसकी बाट। वो भी आते तत्काल। साहे ना किसीका कम। क्या होगी कम उसको ।१०-११। चौदह विद्या चौसष्ट कला। जाने संगीत गायन कला। प्रेमी आत्मविद्याका। रहता है असीम ।१२। नम्रता से बोले वचन। मनोगत जानकर करे वर्तन। किसीको ही न पडे न्यून। ऐसे करे ।१३। न्याय नीति भजन मर्यादा। काल सार्थक करे सदा। दरिद्रपणकी आपदा। वहां कैसी ।१४। उत्तम गुणोंसे जो अलंकृत। जनोंमें जो सुशोभित। प्रताप जिसका है प्रकट। जैसे उदित मार्तण्ड ।१५। जहां है जाणता पुरुष। वहां कैसे होगा कलह। प्रपंचमें जाने राजकारण। परमार्थ में विवरण ।१६-१७। प्रथम एकनंतर अन्य। ऐसे नाहीं जिसका वर्तन। सर्व लोगों को समसमान। ऐसी उसकी अपूर्वता ।१८। होवे अनुताप या लांछन। ऐसे कदापि न वर्तन। जहां जाये वहां विवेक पूर्ण। करे कर्म सकल हो ।१९। कर्मविधि उपासना विधि। ज्ञानविधि वैराग्यविधि। विशाल ज्ञातृत्व की बुद्धि। होगा कैसे चंचल ।२०। देखे जन उत्तमगुण। कैसे देंगे वे दूषण। रहता है वो अंतरात्मासम। घट-घटमें सर्वत्र ।२१। आबालवृद्ध सर्व जन। स्वकार्यार्थ जैसे तत्पर। वैसे वो ही परोपकारार्थ। अभ्यंतरसे तत्पर ।२२। पर दुःखसे पावे दुःख। परसंतोषसे सुख। होवे सर्वही सुखरूप। ऐसी वांछा ।२३। नाना स्वभावके अपत्योंपर। पिता जैसे करे प्रेम। सबकी चिंता उसीप्रकार। करे वो महापुरुष ।२४। चाहे ना किसीका कुछ। वासना जिसकी निःकांचन। धिःकारसे भी मानेना अपमान। वो है महापुरुष ।२५। कोई करे निंदा उसकी। तो भी न माने वो किमपि। है ही नाहीं देहबुद्धि। ऐसा वो ज्ञानी ।२६। ज्ञाता है देहसे विलक्षण। यह न

जानते सामान्य। किन्तु देखते ही ज्ञाताके गुण। होते वे आकर्षित।२७-२८। जब आती लोगोंको प्रचित। तब करते उसका रक्षण। इसीलिए महापुरुष। धीर गंभीर उदार।२९। जो जो कोई उत्तम गुण। वो है समर्थपुरुषोंका लक्षण। इसके विरुद्ध जो अवगुण। वो है करंटलक्षण।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सदैवलक्षणनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

करते हैं मृत्तिका-पाषाणका देव। या रोप्यसुवर्णका देव। अथवा ताम्र आदि धातूका देव। या केवल चित्ररूप।१। नाना काष्टसे निर्मित। शालिग्राम या सूर्यकान्त। सोमकान्त या चक्रांकित। रत्न मौक्तिकरूप भी देव।२-३। ऐसे उपासना-भेद अनेक। होते हैं भावानुसार। किन्तु उन समस्तों का कारण। है एक स्मरण।४-५। मूल में द्रष्टा देव एक। उससे हुवे अनेक। देखे कोई विवेकपूर्व। तो, आजाय समझमें।६। बिना देह न हो भजन। बिना देह ना देवपूजन। मंत्रपुष्प धूप दीप। घडे सर्व देहात्मयोग से।७-१२। देव देवता और भूत। इनमें है मूल पुरुष का सामर्थ्य। इसीलिए किसीका भी भजन। करे तो भी होता उसका ही।१३-१४। माया वल्लीका होते ही विस्तार। हुवा देहरूप फलभार। इसीलिए मूलमें जो जाणीव। आगयी फलोंमें भी।१५। तस्मात् करो ना आलस्य। देहमें ही देखो आत्माराम। प्रचित आते ही समाधान। भोगते रहो नित्य।१६। छोड देते प्राणी संसार। व्यर्थ ही घूमते देवकारण। किन्तु करते हैं अनुमान। सदा सर्वकाल।१७। लोकरीति देखी जाये। तो वे देवार्चन करते। या क्षेत्रदेवपूजन करते। जहां जहां।१८। अथवा नाना अवतार। उनको ही देव ऐसे निर्धार। कहते हैं किन्तु वे अवतार। हो गये पहले।१९। सुनते कोई इनसे विशेष। हैब्रह्माविष्णुमहेश। किन्तु है जो गुणातीत जगदीश। उसको देखना चाहिए।२०। नाहीं देवका विशिष्ठ स्थान। कहां करना उसका भजन। ऐसे सोचने से अनुमान। बढता ही जाये।२१। न हो देवका दर्शन। तो न हो सके पावन। इसीलिये धन्य साधुजन। जानते हैं सकल।२२। भूमण्डलमें नाना देव। क्या करना विश्वास। उससे क्या आवे समझ। मुख्य देव कौन कैसा।२३। देवका कर्तृत्व देवसे अलग। करके देखो देवको सन्मुख। तबही समझोगे गोप्यगुह्य। किंचिन्मात्र।२४। जो न दिखे न भासे। कल्पान्त में भी जो न नाशे। माने न मन विश्वाससे। बिना सुकृत।२५। मनमें आती हैं नाना कल्पना।

नाना प्रकार की वासना। संस्कार रूप तरंग नाना। आते हैं मनमें ।२६। इसीलिए कल्पनारहित। वही वस्तु है शाश्वत। अंत नाहीं अतएव अनंत। कहते हैं उसीको ।२७। ज्ञानदृष्टी से यह देखो। देखते देखते वहां ही रहो। रहते रहते तद्रूप होवो। जिससे टले संसार-संग ।२८। है नाना लीला नाना लाघव। उसको क्या जाने जीव। किन्तु संत-संगमें आवे जब। तब ही होगा स्वानुभव ।२९। ऐसी सूक्ष्म स्थिति गति। अनुभवसे टले अधोगति। सद्गुरुकारण सद्गति। हो जाय तत्काल ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहमान्यनिरूपणनाम समास पाचवां ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

परमार्थी और विवेकी नर। वचन उसका मानते जन। क्योंकि वो न करे चूक। बारबार सोचनेसे ।१। जिस प्रकार बढ़े संदेह। उस प्रकार न करे वर्तन। पहलेही करता है अनुमान। घटनाका भविष्यमें ।२। नाहीं स्वयं जो निस्पृह। कौन माने उसका वचन। राजी रखना है कठिन। जनरूप जनार्दनको ।३। आग्रहसे करे उपदेश। होवे परमार्थमें मध्यस्थ। वे सबही फीके पड़त। कालान्तरमें ।४। कहो जिसको विवेक। वो होगा जब प्रतिकूल। तब सर्वही कार्यभाग। पावे नाश ।५। बंधु बंधुको करे उपदेश। होता है आगे अपमान। इसीलिये है जहां पहचान। वहां न बतावो महंतपण ।६। होती है पहले दिखावट। विवेकी जानते वो नाशवन्त। अविवेकी रहते हैं सर्वकाल। जैसे तैसे ।७। स्त्री गुरु भरतार शिष्य। हैं यह भ्रष्ट प्रकार। नाहीं अनुमान या विवेक। निश्चयात्मक ।८-९। लहर आती है वैसे वचन। बोलते हैं कोई गुह्य। जानते नाहीं कार्यकारण। वे कैसे साधु ।१०। मांगता नाहीं किसीसे कुछ। किन्तु रखता है परांतर। करवाता है भगवद्भजन। विवेकी पुरुष ।११-१२। वो न करे परमार्थ भ्रष्ट। राखे गुरुपरंपरा शुद्ध। शोध शोध करे लोकसंग्रह। संत-भक्तोंके समुदाय ।१३-१४। करे उत्कट गुणोंका अंगिकार। अशुद्ध वस्तुका तिरस्कार। होवे भूमंडलमें विख्यात। निस्पृहताके कारण ।१५। उत्तम अक्षर उत्तम वाचन। अर्थान्तर जाने परिपूर्ण। गाना नाचना पाठान्तर। सकल ही उत्तम ।१६। उत्तम दीक्षा मैत्रीभाव। तीक्ष्ण-बुद्धिसे राजकारण। तो भी सर्वथा अलिप्त। रहे सर्वकाल ।१७। अखंड हरिकथा छंद। करे जनको नाम-बोध। सूर्यसम जिसका ज्ञान। रहे प्रकट सर्वदा ।१८। दुर्जनोंका राखे मन। सज्जनको देवे संतोष। सकल जनोंका अभ्यंतर। जाने भिन्न भिन्न ।१९। होते ही जिसका संग। पलटने लगे जनस्वभाव। उत्तम गुणोंका अभ्यास। करने लगते जन सर्व ।२०। जहां जाये वहां

नूतन । जनको लगता है स्वजन । किन्तु वो तो रहे अलिप्त । और निस्पृह ।२१। उत्कट भक्ति उत्कट ज्ञान । उत्कट चातुर्य उत्कट भजन । उत्कट योग अनुष्ठान । जहां जाये वहां प्रकट ।२२। न हो कोई उत्कट गुण । तो न हो कदा कीर्ति जान । व्यर्थ ही करे स्थानान्तर । तो क्या लाभ ।२३-२४। कौन समय गिर जाय देह। कैसा आ जाय प्रसंग । कब हो जाय आयु समाप्ती । कौन जाने यह सर्व ।२५। इसीलिए रहो समाधान । सर्वकाल करना प्रयत्न । भरो भूमंडल परिपूर्ण । भगवत्कीर्तिसे ।२६। करो एकान्तमें विवेक । समझमें आवे सकल । जो हो अपनेको अनुकूल । वो लो तत्काल ।२७-२८। चले जहां अखंड विचार । क्या होगा वहां न्यून । जहां ना हो एकान्त । वहां कैसी सुबुद्धि ।२९। एकान्तमें करो विवेक । पहचानो आत्मारामका रूप । तब कुछ न रहे गुंथागुंथ । किसीप्रक़ार कहीं भी ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे बुद्धिवादनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

।। श्रीराम ।।

हरिकथाका करो गजर । और निरूपणका विवरण । होना न चाहिए न्यूनाधिक्य । सगुण हो या निर्गुण ।१। हो जाय कोई निरूत्तर । तो ज्ञानी जानते हैं मर्म । किन्तु इतर अज्ञानी जन । होते हैं तटस्थ मूढ ।२। उत्तर न आये तत्काल । तो उड जाये महत्व उसीकाल । स्वल्प वचनसे भी समाधान । करे तो श्रेष्ठ ।३। प्रश्न पूछने से होगा त्रास । होवे तामसवृत्तिका उदय । तो उड जाये गर्व भाव । श्रोताओंका ।४-५। बोल प्रसंगानुसार कठोर । तो भी रखना जनांतर । कौन संतुष्ट कौन असंतुष्ट । देखना चाहिए ।६। शिष्य विकल्पसे छोड जाये । गुरु धावे पीछे पीछे । समझो दोनोंही भ्रमिष्ट हुवे । आशाबद्ध क्रियाहीन ।७। वहां नाहीं चातुर्यलक्षण । वहां न कोई निर्बंध । क्या है वहां महंतपण । या सुखसमाधान ।८-९। इसीलिए परदेशमें यदि वास । तो बढाना चाहिए जन संतोष । उनके मनमें उपजे सद्भाव । ऐसी करना कीर्ति ।१०-११। जिसकी ओर जावे जन । उसी ओर शोधो जनार्दन । रात्रंदिन विवेकपूर्वक । जनका करो रक्षण ।१२। दिखे जो जो जन । यदि कहोगे दुर्जन । तब क्या एक ही सज्जन । है भूमंडलमें ।१३। निर्जन देशमें क्या है देखना । जनविरहित कैसे रहना । इसीलिए अवमानित भी होना । कार्यसिद्धिके कारण ।१४। जो न जाने जनमें रहना । वो क्या महंत होगा । उसको तो श्रवणादि साधना करना चाहिए स्वतंत्र ।१५। जलमें न तर सके आपन । तो क्या डूबा देना जन । स्वयं न जाने परमार्थ । तो व्यर्थ विकल्प ।१६। जब तक न हो अभ्यास पक्व । तब तक है उचित रहना गुप्त ।

हो करके प्रकट । भ्रष्ट होना अयोग्य ।१७। धीरे धीरे चलता है मंद । वो क्या धावे चपलके साथ । अरब अश्वपर पर जो सवार । होगा वो चपलतम ।१८। यहां है धका-धकीका काम । कैसे कर सके अशक्त । तीक्ष्ण बुद्धीको मर्म । भोले को केवल भ्रम ।१९। रखवाळी बिन खेती व्यर्थ । घूमे बिना व्यापार व्यर्थ । न करे जनमनरंजन । तो कैसे लोक-संग्रह ।२०। हो जब चढता चढता प्रेम । तबही बढ सके परमार्थ । बिना प्रेम जो खटाटोप । उससे लोग असंतुष्ट ।२१। अपने को न माने लोग । लोगों को न माने आपन । तो सहज ही नाना विकल्प । और अशांति आवे ।२२। नश्वर दीक्षा ठगबाज लोक । वहां कैसा होगा विवेक । बहुत कालका भी श्रम । जाय व्यर्थ सर्वथा ।२३-२४। न हो सर्व व्यवस्थित । तो हो जाय संताप । क्योंकि क्षणक्षण विक्षेप । होते रहते ।२५। मूर्ख मूर्खता से वर्तन करते । ज्ञाते ज्ञातापणसे कलह करते । एवं दोनों ओर फ़जिती होवे । समस्त लोगोमें ।२६। छोड़ो उपाधि नाशवन्त । करो आयुष्यका सार्थक । स्वस्थचित्तसे परिभ्रमण । करो जहां चाहते हो । ।२७-२८। करे न परिभ्रमण । या कुछ न करे सहन । तो समझो यातना अनेक । भोगना पडे ।२९। है सबही अपने पास । मनमें करना विचार । करना चाहिए वर्तन । प्रसंगानुसार ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे यत्ननिरूपणनाम समास सातवा ॥७॥

।। श्रीराम ।।

भूमंडलमें बहुत लोक । करते हैं नाना विवेक । करे जो कोई परिभ्रमण । उसको आवे समझमें ।१। कितने ही प्रापंचिक जन । वृत्ति अखण्ड उदासीन । अभंग उनका समाधान । सुख हो या दुःख ।२। स्वभावसे बोलते नेमक । सहजही नेमस्त वर्तन । सुनतेहीं उनके वचन । मानते सर्व लोग ।३। तालज्ञान रागज्ञान । सहज आवे उनको ज्ञान । न्यायनीतिका लक्षण । जानते वे सहज ।४। कोई ऐसा विरला एक । मिलतेही अकस्मात । होते है लोग संतुष्ट । करते हैं प्यार ।५। आया है कोई महंत । ऐसे समझते जन । क्योंकि उसके गुण और ज्ञान । होते है असामान्य ।६-७। सकल अवगुणोंमें अवगुण । अपना अवगुण लगता गुण । है यही करंटलक्षण । या तो महा-पाप ।८। संकल्पसे होगा क्या कार्य । चाहिए स्व-तेजका प्रभाव । छा छूं या ठग बाजीका काम । है नाहीं सर्वथा ।९। अभ्यास करे तो न समझे । न करे अभ्यास तो समझे । महिमा भगवन्तकी कैसी होवे । यह समझना कठिन ।१०। राजकारणी महापुरुष । प्रमादसे होते पराजित । इसीलिए नाना उपाय । करना चाहिए ।११-१२। समझेना अपना ही प्रमाद । समझेना

लोगोंका अभिप्राय। तो बढ़ता है दोनों ओर। अहंकार केवल ।१३। इससे होता है जन मनका भंग। लोकसंग्रहमें भी खंड। न्यायनीतिका होवे अंत। दूरदृष्टि के अभावसे ।१४-१५। ऐसा निकामी मनुष्य। करे कुछ तो भी व्यर्थ। करता है विकल्प-जंजाल। जो न समझे कोई भी ।१६-१७। करना हैं गुप्त कल्पना। या चाहो उपाधि बढ़ाना। तो प्रथम बुद्धि को करना। अपनी सुदृढ ।१८। न हो सहन उपाधिका भार। तो न करो बढानेमें कष्ट। जिससे न होगा जनको त्रास। स्वयंको भी समाधान ।२०-२१। जानना चाहिए उपाधि-लक्षण। कभी अनुकूल कभी प्रतिकूल। तदनुसार ही भावार्थ। रखना लोगोंका ।२२-२३। किन्तु सब उपाधिका व्यापार। अंतरात्माका ही खेल। है जो केवल चंचल। कार्यकर्ता ।२४। यहां न है निर्गुणका संबंध। जो है एक निर्मल निश्चल। शुद्ध विश्रांतिका स्थल। विकार होवे निर्विकार जहां ।२५। टूट जाते उद्वेग सकल। आवे मनको बिश्राम। ऐसी परब्रह्म स्थिति दुर्लभ। संभाल करो विवेकसे ।२६। है ही नाहीं अपनेको उपाधि। ऋणानुबंधसे मिले हैं सबही। लाभ हानीकी चिंता नाहीं। ऐसे होना चाहिए ।२७। उपाधियोगसे हुवा जो श्रमित। उसको बैठना चाहिए निवांत। हो न सके जो व्यापार। तो करना किमर्थ ।२८। कार्यके नंतर निश्चल। तदनंतर पुनरपि कार्य। इसीप्रकार बितावे काल। तो पावे विश्राम ।२९। चलती है उपाधि सतत। किन्तु समाधानसम नाहीं श्रेष्ठ। नरदेह न होता है प्राप्त। बारबार ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे उपाधिलक्षणनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

ज्ञानी और उदास। किन्तु चाहता है समुदाय। उसको अखंड एकान्त। सेवन करना चाहिए ।१। वहां होती अखण्ड चालना। युक्ति बुद्धितर्क नाना। प्राणिमात्रोंकी स्थगितति समझना। होती अनुमानसे ।२। किन्तु जो न करे कुछ भी यत्न। समझे नाहीं कुछ भी एक। किसी प्रकार न करे कर्म। है वो दिवालीयां ।२। एक होता मिरासदार। एक होता दिवालखोर। किन्तु है जो व्यापक चतुर। जाने वो सकल ही ।४। जो जो जनमनमें होवे। वो सब पहलेही जान लेवे। तो सहज ही कृत्रिम न चले। उसके पास ।५। रहो यदि एक स्थान। अति परिचयसे होवे मानभंग। तो क्या मिल सके विश्राम। उस स्थानमें ।६। आलस्यसे बढ़े आलस्य। तो डूबे सर्व कार्यभाग। लोगोंका होगा जो मनोगत। वो समझेगा कैसे ।७। उपासनाका बहुविध अंग। करवाता है नित्य नेम। उसमें कैसे मिले अवकाश। कृत्रिम काम के लिए ।८। चोर के हाथमें देवो भांडार। किन्तु कुकर्मसे करो उसका प्रतिबंध। उसकी कुवासना का भी नाश। करते

जावो धीरे धीरे ।९। यह बात नाहीं नवीन । इसीलिए सबको ही विना-कष्ट । राज कारणमें करवो प्रवेश । चारों ओर ।१०। नष्टके विरुद्ध नष्ट । वाचालके विरुद्ध वाचाल । लगादे के परस्पर । रहो स्वयं अलिप्त ।११। कांटेसे कांटा निकाल देना । किन्तु किसीकी समझमें न लाना । अजानपण स्वीकार करना । स्वयं ही आप ।१२। जाने ना लोक वो प्रकार । गुप्तरूपसे हो जाय कर्म । तब वो तत्काल होय सफल । अन्यथा नाहीं ।१३। कार्यसिद्धि होते ही लोक । अधिकही प्रेमसे आयेंगे निकट । देखते ही होंगे सेवक । निश्चयसे ।१४। कोई भी कार्य करनेसे होते । नकरनेस पिछे रहते । इसीलिए होने न दें । ढिलाई किसीमें ।१५। भरोसा रखे जोदूसरों-का । उसका कार्य मानो डूब गया । जोस्वयं ही कष्ट करते रहा । वो ही एक भला ।१६। सबको ही सर्व बाते ज्ञात । हो जाय तो क्या रहे महत्व । इसीलिए मुख्य सूत्र । लेना चाहिए अपने हाथ ।१७। और जो कुछ शेष कार्य । वो करवावो लोकहाथ । कितनेही कारस्थान कुशल । राजकारणमें लेवो ।१८। होंगे वाचाल कुरूप पहलवान । उनको भी लेना अवश्य । अन्यथा अड़ जाय राजकारण । ऐसे न करना ।१९। होगा कोई विरुद्ध समुदाय । उसको रगड़ना पुरेपुर । किन्तु न करो उसका भी नाश । मिला दो स्वपक्षमें ।२०। खल दुर्जनोंसे हो भयभीत । और रक्षण न करो राजकारण । तो होगा ही सब प्रकट । भला बुरा कार्यभाग ।२१। जब चाहते समुदाय हो बड़ा । तो ताणडोर मजबूत करना । केवल मठ करके ताठा । रखे तो अविवेकी ।२२। है दुर्जन कौन कौन । समझो किन्तु न करो प्रकट । महत्व देके करो गौरव । सज्जनोंसे भी अधिक ।२३। जब दुर्जन होंगे प्रकट । तब अखंड होगा संकट । इसीलिए वो एक कटकटा । दूर करो पहले ही ।२४। होगा जभी राजद्रोहीका सैन्य । तो रणशूरोंको करना चाहिए नाश । ऐसा होना चाहिए नरेश । परमार्थका पक्षपती ।२५। उसको देखते ही दुर्जन डरे । ऐसी जब प्रचित आवे । तो बंड पाखांड सब नाशे । सहज अनायास ।२६। है यह सब धूर्तताका काम । न चले कोई ढिलाईपण । तबही होगा राजकारण । समाधानसे परिपूर्ण ।२७। दिखे न कहीं भी वो पुरुष । यद्यपि बाते करते सकल लोग । आकर्षित करता है वो जन । अपने वाग्विलाससे ।२८। लौंदके सन्मुख दूसरा लौंद । उद्धट के सन्मुख उद्धट । नटखट को नटखट । लाके वो रखे ।२९-३०। जब एकके समान दूसरा । मिल जाय तब ही अच्छा । किन्तु यह सब करनी-कर्ता । रहता है अदृश्य ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे राजकारणनिरूपणनाम समास नौवां ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

चले जहां अखण्ड चालना। जहां होवे नाना धारणा। अखण्ड राजकारण जहां। चलता है अभ्यंतरमें ।१। जितने जितने उत्तम गुण। उन्हींका चलता है निरूपण। चर्चा आशंका प्रत्युत्तर। कौन सत्य या असत्य ।२-३। शास्त्राधार वक्तृत्व। भक्ति और उपासनामार्ग। ज्ञान वैराग्यका विचार। होता है जहां विशद ।४। निरूपाधिक उदासवृत्ति। प्रबंध पाठांतरकी शक्ति। नेमस्त वचन संतोषधारी। आर्कषित होते जन ।५-६। होते हैं जब प्रेमवशजन। तो क्या कर सके उसका कौन। करे जभी कोई अनुमान। तो होता है निष्फल ।७। उपासनाका लेके आधार। जो जाता है चारों ओर। तो जानने लगते हैं लोक। उस महापुरुषको ।८। आते देशदेशान्तरसे जन। वे न जानते उसका मर्म। किन्तु वो सबका अंतःकरण। वशमें लेता ।९-१०। नाना लोग नाना समुदाय। उन सबकों कहता है मार्ग। है जो श्रवण-मननात्मक। परमार्थका ।११-१२। गद्यपद्यादि सर्व ज्ञान। जो जो जाने स्वयं पूर्ण। वही जो विवेकपूर्वक। दूसरोंको देता है ।१३-१४। वो ही रक्षण करे परांतर। करे वो ही दूसरोंको सूज्ञ। स्वयं करके करवाता है कार्य। सर्वजनोंसे ही ।१५-१७। करे, करवाता है भजन। नूतन देशोंमें करे गमन। न करे कभी आलस्य। प्रयत्न करनेमें ।१८। टूट गया देहका अभ्यास। तो समझो डूब गया महंत। इसीलिए करो जनको सूज्ञ। जब करते हो साधन ।१९। उपाधिबिन रहो मत। उपाधिमें न जावो फंस। अन्यथा होगा कार्यनाश। देखते देखते ।२०-२१। है यह धकाधकीका काम। क्या करे आलसी अशक्त। इसीलिए शक्त है जो नर। उसको सिखाओ नानाबुद्धि ।२२। करो जब तक व्याप। न हो तो जावो छोड़ो। घूमो कहींभी आनंदरूप। निरूपाधि बनकर ।२३। उपाधिसे छूट गया सर्वथा। वो निस्पृहतासे बलिष्ठ हुवा जहां अनुकूल वहां चलता रहा। सावकाश आनंदसे ।२४। कीर्ति चाहो तो सुख नाहीं। सुख चाहो तो किर्ति नाहीं। बिना कर्म कुछ भी नाहों। कार्यमें सिद्धि ।२५। अन्यथा क्या न होत जात। होना है तो अवश्य होत। प्राणिमात्र किन्तु अशक्त। कष्ट न करे कोई ।२६। पहले होता निराश। बीचमें छोड़ता है धैर्य। तो कैसे होगा संसार। अंत तक सुखरूप ।२७। संसार है ही नाशवान। किन्तु करना चाहिए विवेकसे उत्तम। तो भी होता है सकल। अंत में व्यर्थ ।२८। ऐसे है संसारका लक्षण। तथापि छोड़ना नाहीं धीर। नाना बुद्धि मतांतर। समझ लेना चाहिए ।२९-३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विवेकलक्षणनिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

दशक बीसवां पूर्णदशक

।। श्रीराम ।।

जीव व्यापक मन व्यापक। पृथिवी आप तेज व्यापक। वायु आकाश त्रिगुण व्यापक। अंतरात्मा मूलमाया ।१। निर्गुण ब्रह्म भी व्यापक। ऐसे ये सब हैं व्यापक। तो क्या वे सबही हैं एक। या भिन्न भिन्न ।२। क्या आत्मा है निरंजन। क्या वो सगुण या निर्गुण। ऐसा होता है संशय। श्रोताओंके मनमें ।३-४। सुनिए प्रत्युत्तर सावधान। देखो विवेकपूर्वक प्रत्यय। शरीर और सामर्थ्यानुसार। है जीव व्यापक ।५। तथापि नाहीं वो चपल। है जैसा मनका स्वभाव। मनभी नाही पूर्ण व्यापक। यद्यपि वह अत्यंत चपल ।६-७। पृथिवी आप और तेज। इनकी व्यापकता है सीमित। वैसे ही मन समान वायु चपल। किन्तु नाहीं पूर्ण व्यापक ।८। है एक गगन निरंजन। पूर्ण व्यापक और सघन। वहां कोई अनुमान। है ही नाहीं ।९। त्रिगुण गुणक्षोभिणी माया। माईक जाय विलया। इसीलिए उसकी भी व्यापकता। है एकदेशी अपूर्ण ।१०। आत्मा और निरंजन। जीव और शिवके दो नाम। किन्तु संदर्भानुसार शब्द अर्थ। समझना चाहिए ।११। आत्मा और मन। हैं अत्यंत चपल। किन्तु विचारसे देखा जाय। तो दोनों ही नाहीं व्यापक ।१२। अंतरालमें है तो पातालमें नाहीं। पातालमें है तो अन्तरालमें नाहीं। पूर्णपणे वसत नाहीं। एक समय चारों ओर ।१३। आगे देखो तो पीछे नाहीं। पीछे देखो तो आगे नाहीं। वाम सव्य दश दिशाओंमें नाहीं। एक समय व्यापक ।१४। चारो ओर और एकसमय। है जो वस्तु निर्माण व्यापक। उसको सूर्यका भी दृष्टान्त। शोभा न पावे ।१५। सूर्यका होता है प्रतिबिम्ब। सूर्यका होता है अस्त। ब्रह्मका नाहीं प्रतिबिम्ब अस्त। किन्तु है वो व्यापक ।१६। घटाकाश मठाकाश। यह है दृष्टान्त विशेष। आकाश और निर्गुण। इनमें है साम्यता कुछ ।१७। ब्रह्मका अंश आकाश। और आत्माका अंश जीव। इन दोनोंका अनुभव प्रत्यक्ष। यहां ही लेना चाहिए ।१८। गगन और यह मन। कैसे होंगे समसमान। मननशील महाजन। जानते हैं सबही ।१९। विषयांतर होते ही मन। खंडित होता है उसका व्यापकपण। इसीलिए पूर्ण व्यापक जो गगन। उसके समान नाहीं मन ।२०। परब्रह्म है अचल। और पर्वतको भी कहते हैं अचल। तो क्या दोनों एकरूप। होंगे कदाकाल ।२१। ज्ञान अज्ञान विपरीत ज्ञान। कैसे होंगे समसमान। इनका मननपूर्वक प्रत्यय। देखना चाहिए ।२२। ज्ञानका

अर्थ है जानना । अज्ञानका है न जानना । विपरीत ज्ञान तो ऐसा । एक भासे दूसरा ।२३। छोड़ दो ज्ञान और अज्ञान । तो रहा बाकी पंचभौतिक । इसका ही नाम विपरीत ज्ञान । ऐसे समझना चाहिए ।२४। द्रष्टा साक्षी अंतरात्मा । यही है जीवात्मा और शिवात्मा । क्योंकि लेता है जन्म नाना । बारबार ।२५। 'संभवामि युगे युगे' ऐसे वचन । इससे होता है प्रानुमान । कि जीवात्माको जन्ममरण । है ही अटल ।२६। जीव एकदेशी नर । विचारसे होवे विश्वंभर । किन्तु विश्वंभर जो ईश्वर । उसका ही है ब्रह्माण्ड-संसार ।२७। ज्ञान और अज्ञान । हैं दोनों वृत्तिरूप समान । किन्तु ज्ञानका विज्ञान । करो निवृत्तिरूप ।२८। ज्ञानने किया यह ब्रह्माण्ड । ज्ञानने बढ़ा दिया विस्तार । किन्तु नाना विकारमय । है यह ज्ञान ।२९। पिण्डके चार और ब्रह्माण्डके चार । ऐसे अष्टदेह होता है ज्ञान । किन्तु विज्ञान है विदेहरूप । वो पद लेना चाहिए ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे पूर्णापूर्णनिरूपणनाम समास पहला ॥१॥

।। श्रीराम ।।

मूलमाया का न हो अस्तित्व । तो हैं एक ब्रह्म निश्चल । जैसे गगन अंतराल । चारों ओर ।१। दृश्य आया और गया । किन्तु ब्रह्म परिपूर्ण रहा । जैसे चारो ओर सर्वथा । है गगन ही गगन ।२। जहां देखा वहां अपार । है ही नाहीं उसकापार । सर्वत्र एकरस स्वतंत्र । अद्वितीय ब्रह्म ।३। हो जावो ब्रह्माण्डके अतीत । देखो शून्य आकाशकी ओर । जहां है पूर्ण अभाव । चांचल्य और व्यापकताका ।४। विवेकसे किया दृश्यका नाश । तो है ही परिपूर्ण ब्रह्म । जिसका न हो सके अनुमान । किसीसेही कदाकाल ।५। अध ऊर्ध्व चारों ओर । जहां तहां है निर्गुण ब्रह्म । कैसे एकदेशी चंचल मन । देख सके उसका पार ।६। दृश्य चंचल ब्रह्म अचल । आवे समझ दृश्य, न आवे ब्रह्म । दृश्यका हो सके अनुमान । ब्रह्म कल्पनातीत ।७। कल्पना है शून्यत्वका नाम । ब्रह्म है सर्वत्र घन । महावाक्योंका करो विवरण । आवे तब समझमें ।८। परब्रह्मसम ना कोई श्रेष्ठ । श्रवणसम न अन्य साधन । विना ज्ञान नाहीं समाधान । और कोई दूसरा ।९। जावो पिपीलिकामार्गसे सावकाश । या विहंगममार्गसे अकस्मात । दोनोंका ही फल है एक । करे साधक मनन जब ।१०। परब्रह्मसम और अन्य । है ही नाहीं एकरस । स्तुति निंदा जहां न होत । वहां रहते महानुभाव ।११-१२। चंचलसे होती है दुःख प्राप्ति । निश्चलसम नाहीं विश्रांति । देखते हैं प्रचिति । महानुभाव ।१३।

आमूल अंत तक । करते ही करे जो विचार । उसको ही प्रत्ययका निश्चय । होता है अभ्यंतरमें ।१४। कल्पनासे हुई है सृष्टि । त्रिविधप्रकार भासती । है जिसकी तीक्ष्ण बुद्धि । समझेगा वह मनमें ।१५। मूलमायासे त्रिगुण पर्यन्त । है एक सूक्ष्म विभाग । गुणक्षोभिणी से पंचभूतोंतक । है द्वितीय स्थूल भेद ।१६। पृथिवीसे चार खाणी चार वाणी । है यह तृतीय विभागणी । इसी प्रकार त्रिविध सृष्टि । हुई है स्पष्ट ।१७। यही त्रिविध भेदोंका लक्षण । विशद करूंगा निरूपण । श्रोताओं सुचित अंतःकरण । करो आपका ।१८। परब्रह्ममें सूक्ष्म स्फुरण । 'एकोऽहं बहु स्याम्' ऐसे ज्ञान । वही मूलमाया जाणीव । परा वाचा-रूप जो ।१९। अष्टधा प्रकृतिका मूल । तो यह मूलमाया केवल । सूक्ष्मरूप सकलोंका बीज । है वही एक ।२०। जड़ पदार्थ होते हैं चेतन । इसीलिए कहते हैं चैतन्य । संकेतसे सूक्ष्म रूप । समझना चाहिए ।२१। यही है प्रकृति-पुरुष विचार । या अर्धनारि-नटेश्वर । या पुनः अष्टधा प्रकृतिका विचार । सर्वही एकरूप ।२२। जहां हैं त्रिगुण गूढ़रूप । उसको कहते हैं महतत्त्व । शुद्धतत्त्व गुप्तरूपसे । वहां ही है ।२३। वहांसे होते हैं गुण प्रकट । इसीलिए गुणक्षोभिणी ऐसा नाम । त्रिगुणोंके समझते है रूप । धन्य वे साधु ।२४। गुप्त गुण होते है सौम्य । इसीलिए बोलतते गुणसाम्य । किन्तु है यह सूक्ष्म संकेत । सामान्य जन को अगम्य ।२५। मूल मायासे होते त्रिगुण । हैं वे चंचल एकदेशीय । प्रत्यय ज्ञानीयोंके समझ । आती है यह ।२६। पश्चात् बढ गये पंचभूत । स्थूलरुप और विशाल । सप्त द्वीप और नवखंड । वसुंधरा-सहित ।२७। एवं तीन गुणोंसे पृथिवी पर्यन्त । हुवा है दूसरा प्रकार । अब सुनिए तीसरा प्रकार । सावधान मनसे ।२८। पृथिवी नाना पदार्थोंका बीज । अंडज जारज स्वदेज उद्भिज । चार खाणी चार वाणी सहज । हो गयी निर्माण ।२९। खाणी वाणी होती जाती । परन्तु तैसीच रहती जगति । होते जाते कित्येक प्राणी । ऐसी है यह सृष्टि ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सृष्टित्रिविधलक्षणनिरूपणनाम समास दूसरा ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

आमूल अंत पर्यन्त । कथन किया विस्तार-अन्वय । अब करिए वृत्ति लीन । व्यतिरेक मार्गसे मूलमें ।१। चार खाणी चार वाणी । चौरासी लक्ष जीवयोनि । नाना प्रकारके प्राणी । लेते हैं जन्म ।२। होते हैं पृथिवी सकल । पुन्हां पृथिवीमें ही होते हैं विलय । ऐसे होत जात सर्वकाल । परन्तु पृथिवी रहती जैसी तैसी ।३। यह है सृष्टिका अग्रभाग तृतीय । द्वितीय तो पंचभूतोंका समुदाय । त्रिगुणोंसे मूलमायापर्यन्त ।

है वो प्रथम भाग ।४। छोड़ देवो सर्वथा स्थूल । पहचानो सूक्ष्मरूप । गुणोंसे ऊपर सूक्ष्मतर-तम । देखते ही जावो बारबार ।५। गुणरूप हैं मिश्रित । ज्ञान अज्ञान उभयविध । यहांसे ही होता है प्रान्त । शुरू सूक्ष्म दृष्टिका ।६। तमोगुण निखिल अज्ञान । सत्वगुण है शूद्धज्ञान । ज्ञान अज्ञानसे मिश्रित । होता है रजोगुण ।७। इसीप्रकार गुणोंके रूप । समझमें आये अनायास । गुणोंका जो अरूप-कर्दम । है वो गुणक्षोभिणी माया ।८। रज तम और सत्व । तीनोंही जहां है अव्यक्तरूप । उस अवस्थाका नाम । है महत्तत्व ।९। प्रकृति-पुरुष शिवशक्ति । उसको ही अर्धनारि-नटेश्वर बोलति । किन्तु इसकी स्वरूप स्थिति । है कर्दमरूप ।१०। इससे सूक्ष्म जो गुणावस्था । उसका नाम गुण-साम्यावस्था । वहां चैतन्य भी तत्वता । होता सूक्ष्मतम अगम्य ।११। बहु जिनसी जो मूलमाया । जो कि ब्रह्माण्डकी महाकारण काया । उसको देखकर भी देखना । अति सूक्ष्म दृष्टिसे ।१२। चार खाणी और पंचभूत । मूलमायाके चौदह संकेत । देखना चाहे जो समस्त । वो सर्व यहां ही देखो ।१३-१५। विवर-विवरण करके जो देखे । वही एक समझ सके । समझ बिना जो संदेह-युक्तबोले । वो सर्व निरर्थक ।१६। सकल सृष्टिका बीज । है मूलमायामें सहज । ऐसे समझमें आते ही दृढ़ । होवे परमार्थ ।१७। ज्ञानी पुरुष रहे अचल । निश्चयी न करे अनुमान । या न करे परमार्थ । शुद्धाशुद्ध-मिश्रित ।१८। शब्दातीत वस्तुका कथन । वो है केवल वाच्यांश । रखना चाहिए शुद्ध लक्ष्यांश । विवेक दृष्टिसे ।१९। है माया पूर्वपक्ष । सिद्धांतसे होवे विलय । मायाका होने पर अभाव । कौन कहेगा क्या रहा ।२०। अन्वय और व्यतिरेक । यह दोनोंही पूर्वपक्षके भाग । सिद्धांत है शुद्ध एक । अद्वितीय ।२१। अधोमुखहोनेसे बढ़े भेद । उर्ध्वमुख होनेसे होवे अभेद । निःसंग होतेही होवे निर्गुण । महायोगी ।२२। समझे माया का है मिथ्या ज्ञान । तो क्या धरना है लिहाज । लिहाज धरनेसे हो जायऱ्हास । स्वरूप स्थितिका ।२३। माया मिथ्या ऐसे समझनेपर । कैसे छोड़ना परब्रह्म सत्य । हो गया एकबार निश्चय । हिंडना क्यों इधर उधर ।२४। पृथिवीपर हैं असंख्य जन । उनमें ही हैं सज्जन । किन्तु साधुको पहचाने कौन । साधु बिन अन्य ।२५। इसीलिये छोड़ो पहले संसार । पश्चात् करो साधुका शोध । करो बहुत स्थलान्तर । साधुके कारण ।२६। देखते जावो संत अनेक । उनमें होगा कोई महंत । जिसको है स्वानुभव । परम अर्थका ।२७। प्रपंच हो या परमार्थ । प्रचितिबीन सकल व्यर्थ । वो ही है सबमें समर्थ । जिसको है प्रत्ययज्ञान ।२८। रात्रदिन देखो परम अर्थ । जो देखे वो ही समर्थ । परलोकका निजस्वार्थ । मिल

जाये तब ।२९। इसीलिए देखलिया वही देखो। शोधलिया वही शोधो। पूर्णज्ञान होतेही समझो। टूटजाय संदेह ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मनामाभिधानाम समास तीसरा ॥३॥

॥ श्रीराम ॥

करता हूं सब जनोंको प्रार्थना। व्यर्थ उदास न होना। मनमें ही निरूपण करना। प्रत्ययपूर्वक ।१। प्रत्यय रह गया एक ओर। और अनुमान चले एक ओर। तो कैसे सारासार विचार। परमार्थमार्गमें ।२। सहज देखो सृष्टिकी ओर। तो भासे चलता है व्यापार। किन्तु जिसकी सत्तासे चलता है सर्व। उस राजाको देखना कोई ।३। पृथिवीपर जितने शरीर। वे सब भगवन्तके हो घर। उसके कारण सर्व सुख। होता है प्राप्त ।४। कौन जाने उसकी महिमा। मातारूपसे कृपालु हुवा। जगपालन करे जो अकेला। वो जगदीश प्रत्यक्ष ।५। भगवन्त सत्ताका अंशमात्र। हुवा है पृथग्रूप अनंत। जिससे चल रहा है व्यापार। सकल ही सृष्टिका ।६। मूल ज्ञानरूप जगदीश। उसीकी सत्ता शरीरोंमें सर्वत्र। उससे ही हुवे हैं निर्माण। सर्वकला चातुर्य ।७। सकल देहपुरों का ईश। इसीलिये कहते है जगदीश। अनंत शरीरोंमें वहीं एक। करता है व्यापार ।८। देखता नाहीं उच्च नीच। सोचता नाहीं पाप पुण्य। सर्व उत्पत्ति-स्थिति-संहार कार्य। करता है अकेला ।९-१०। किया उसने अज्ञानसे निर्माण। या था उसका 'यथापूर्व' अभ्यास। यह कल्पनासे कह सके कौन। वही एक जाने यथार्थ ।११। काम हमारा करना अनुसंधान। जगदांतरस्थ जगदीशका ध्यान। क्योंकि ध्यान और ज्ञान। है दोनों एकरूप ।१२। प्राणीसंसार में आया। थोड़ा बहुत हुवा शहाणा। कुछ कार्य भी करने लगा। सुख भोगार्थ ।१३। किन्तु भाग्य हो तो आवे समझ। कि प्रकट है श्रीराम का निशाण। क्योकि है आत्माराम ज्ञानघन। विद्यमान विश्वंभर ।१४। शोध शोध ली उत्तम उपासना। उसीकी दृढ़ धर ली वासना। तो बढ़ती ही उपास्य-महिमा। ऐसा आता है अनुभव ।१५। द्रष्टा है वो अनंत। साक्षी भी है वो अनंत। अनंतरूपोंमें ही है वो अनंत। ऐसे चाहिए ज्ञान प्रत्यक्ष ।१६। होवे जब साधु संग। तब परमार्थ समझे निरूपण। तब ही मिल सके विश्राम। मनको अंशमात्र ।१७। साधुसंग और प्रत्यक्ष ज्ञान। जला देते हैं अनुमान। प्रचिति बिन समाधान। मिलेगा नाहीं ।१८। मूलसंकल्प तो हरिसंकल्प। वही है मूलमाया या ईश्वर। जगदांतरमें भी वो रूप। देखना चाहिए ।१९। उपासना है ज्ञानस्वरूप। ज्ञान है पिण्डका चतुर्थ देह। वही

महाकारण ब्रह्माण्डका हरिसंकल्प। इसीलिए होवे संकल्पशून्य ।२०। मूलमायाके अतीत। है गगन सदृश परब्रह्म। विशाल घन या कोमल। करूं कैसे वर्णन ।२१। एवं उपासना ही है ज्ञान। ज्ञानयोगसे मिले निरंजन। जिससे होता है समाधान। योगियोंका ।२२। उपासना करते करते। उपासक उपास्यको देखते रहे। जब उपासक देह छोड़े। तो रहता है केवल उपास्य ।२३। अखण्ड ऐसी उपासना। पूर्वापार द्वैत कल्पना। चलती आई है जानना। आज तक भी ।२४। उसीका हो सामर्थ्य सर्वत्र। सत्तारूपसे है चलत। वनचर जलचर या भूपाल। सबमें वो अंतर्भूत ।२५। इसीलिए है कर्ममें सामर्थ्य। जो जो हो जाय कार्य। किन्तु होना चाहिऐ अधिष्ठान। भगवन्तका ।२६। एवं सर्वकर्ता जगदीश एक। किन्तु जहांतक सत्ताका है विभाग। वहां होना न चाहिए विकार। अहंतारूप बाधक ।२७। 'हरिर्दाता हरिर्भोक्ता'। इस वचनकी सत्यता। देखनी चाहिए तत्वता। समाधान चाहे तो ।२८। जब सकलकर्ता है परमेश्वर। तो सहज हुवा मानव माईक। तब एक ही होना चाहिए विचार। ईशइच्छानुसार होने दो कार्य ।२९। देवसदृश नाहीं चंचल। ब्रह्मसदृश नाहीं निश्चल। परमार्थ सीढ़ीपर जावो चढत। मूल पर्यन्त ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मनिरूपणनाम समास चौथा ॥४॥

॥ श्रीराम ॥

मूलसे अंत पर्यन्त। हैं केवल चार जिनस। एक, चौदा, पांच, चार। ऐसे है ये चार ।१। परब्रह्महै सबसे विभिन्न है वो सबसेविलक्षण। नाना कल्पनाओंसे अलिप्त। ऐसा है वो परब्रह्म ।२। परब्रह्मका विचार। है कल्पनासे पर। निर्मल निश्चल निर्विकार। अखंड जो ।३। परब्रह्म है अनुपम। यह हुवा एक जिन्नस। मूलमाया दूसरा जिन्नस। नाना कल्पनारूप ।४। है जो अत्यंत सूक्ष्मरूप। नाना तत्व गुणोंका कर्दम। हरिसंकल्प ऐसा आरोप। है वह मूलमाया ।५। है जो हरि संकल्प। सबका वही आत्माराम। उसके ही और नामाभिमान। हैं इसीप्रकार ।६। निश्चलमें चंचल-चेतन। इसीलिए कहते हैं चैतन्य। गुणसमानत्व जो लक्षण। उसके कारण गुणसाम्य ।७। अर्धनारी नटेश्वर। वो ही षड्गणेश्वर। प्रकृति-पुरुष विचार। शिवशक्ति नाम ।८। शुद्धसत्व और गुणक्षोभिणी। या कहो सत्व रज तमोगुणी। मन माया अंतरात्मा ऐसी। चतुर्दश नाम ।९-१०। ऐसा चतुर्दश नाम आत्मा। है जो विद्यमान ज्ञानात्मा। वही जिन्नस है दूसरा। सुनिए तीसरी पंचभूत ।११। इन पांचोमें ज्ञान है अत्यल्प। किन्तु चोथे जिन्नसमें है ज्ञाना

धिक्य। जो है चार खाणी चार योनीका समुदाय। हैं जहां अनंतप्राणी ।१२-१३। जैसे एक बीजके अनेक फल। वैसे ही हुवा आत्माका रूप। खाणीवाणी हुवे जब प्रकट। सत्तामात्रसे हुवे अनंत प्राणी ।१४-१५। मनुष्यवेषसे भोग सुख। श्वापदवेषसे करे हनन। उपर उपर देखे तो कौन। जान सके आत्माकी सत्ता ।१६। नाना भोग शब्द स्पर्श। नाना रूप रसगंध। यह सबही जानता है विशेष। नर देहमें ही जीव ।१७। नाना अमूल्य रत्न वस्त्र। नाना यान नाना शस्त्र। नाना विद्या नाना शास्त्र। हैं नरदेहमें ही ।१८। सत्तासे है पृथिवी व्याप्त। सत्तासे है सब दृष्य व्याप्त। करना नरदेहमें ही विचार। सार क्या असार क्या ।१९। इहलोक परलोक विवेक या अविवेक। पिण्ड-ब्रह्माण्डका मूल। कल्पनाके प्रकार ।२०-२२। अष्टभोग नवरस। नाना प्रकारके विलास। वाच्यांश लक्ष्यांश सारांश। जान सके मनुष्य ।२३। मनुष्यको होता है सबका ज्ञान। मनुष्योंका पालन करे देव। यह समझ सके मनुष्य। नरदेहयोगसे ।२४। इसीलिए नरदेह दुर्लभ। यहां ही मिल सके लाभ। एवं दुर्लभसे ही परमलाभ। हो सके सुलभ बहु ।२५। इतर देहमें बहुकष्ट। नरदेह हो सके सुखप्रद। किन्तु करना चाहिए विवेक। श्रेष्ठ वस्तुका ।२६। यहां करेगा जो आलस्य। वो डूब जाय निःशेष। जिसने पहचाना नाहीं देव। विवेकबलसे ।२७। करे जो प्रत्ययपूर्वक श्रवण। मननशील जिसका अंतःकरण। सर्वकाल करे जो चिंतन। होवे वो नर नारायण ।२८। स्वयं ही जानो तरना। स्वयं ही शोध करना। विचारसे संदेह नष्ट करना। तो स्वयं ही जानोगे अपनेको ।२९-३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे चत्वारजिनसनाम समास पाचवा ॥५॥

॥ श्रीराम ॥

पृथिवीपर कित्येक स्थल। हैं बहुत जलाशय। कित्येक वैसेही जलहीन। हैं प्रदेश पृथिवीपर ।१। वैसे दृश्यजातका विस्तार। उसका अत्यल्प भाग एक। है शोभिवन्त ज्ञानवान। किन्तु बाकी सर्व विवेकहीन ।२। चारी खाणी चारी वाणी। चौराशी लक्ष जीवयोनी। उसीमें चार लक्ष मनुष्य योनी। पशुओंकी वीस लक्ष ।३-४। कृमियां लक्ष ग्यारह। दशलक्ष वे खे-चर। जलचर हैं नवलक्ष। तो स्थावर लक्षतीस ।५। इसीप्रकार शास्त्रानुसार। चौरांसी लक्ष योनीका किस्तार। अनंत देहोंका अधिष्ठान। है एक जगति ।६-७। एवं ही सूक्ष्म पंचभूत। हुवे कालान्तरमें स्थूलरूप। उनमें हैं कोई दृश्य। कोई हैं अदृश्य ।८। उस सबमें जो चांचल्य। वही अंतरात्माकी पहचान। जाणीवरूप जो अधिष्ठान। उसका ही सुनो विवरण ।९। सुखदुःख जाणता जीव

वैसाही जानो है सदाशिव । अंतकरण पंचक है एक । आत्मका अंश ।१०। शरीरमें आकाशके गुण । हैं वे आत्माके अंश । सत्व रज तमो गुण । आत्माके ही ।११। नाना चालना नाना धृति । नवविधा भक्ति चतुर्विधा मुक्ति । अलिप्तपण सहजस्थिति । आत्माके गुण ।१२। द्रष्टा साक्षी ज्ञानघन । सत्ता और चैतन्य । श्रवण मनन विवरण । हैं गुण आत्माके ।१३। दृश्य द्रष्टा दर्शन । ध्येय ध्याता ध्यान । ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान । हैं आत्माके गुण ।१४। वेदशास्त्रपुराण अर्थ । गुप्तरूपसे चलता है परमार्थ । सर्वज्ञता कारण जो समर्थ । हैं आत्माके गुण ।१५। बद्ध मुमुक्षु साधक सिद्ध । विचार करना शुद्ध रूप । बोध और प्रबोध । हैं गुण आत्माके ही ।१६। जागृति स्वप्न सुषुप्ति तुर्या । प्रकृति पुरुष गुणमाया । पिण्ड ब्रह्माण्ड और अष्टकाया । हैं गुण आत्माके ही ।१७। परमात्मा और परमेश्वरी । जगदात्मा और जगदेश्वरी । महेश और माहेश्वरी । हैं गुण आत्माके ही ।१८। जो जो सूक्ष्म नामरूप । वो वो आत्माका स्वरूप । संकेत नामाभिधान असंख्य । मर्यादारहित ।१९। आदिशक्ति शिवशक्ति । मुख्य मूलमाया सर्वशक्ति । नाना पदार्थ उत्पत्ति स्थिति । हैं आत्मा के गुण ।२०। पूर्वपक्ष और सिद्धान्त । गाना बजाना और संगीत । नाना विद्या अद्भुत । आत्माके गुण ।२१। ज्ञान अज्ञान विपरीतज्ञान । असद्वृत्ति सद्वृत्ति जान । ज्ञाप्तिमात्र अलिप्तपण । आत्माके ही गुण ।२२। पिण्ड-ब्रह्माण्ड तत्वविचार । नाना तत्वोंका निर्णय । सत्य और स्पष्ट विचार । हैं आत्माके गुण ।२३। नाना ध्यानादि अनुसंधान । नाना स्थिति नाना ज्ञान । अनन्य आत्मनिवेदन हैं गुण आत्माके ।२४। तेतीस कोटि सुरवर । अठचांसी सहस्त्र ऋषीश्वर । भूत खेचर अपार । है गुण आत्माके ।२५। भूतावली साड़ेतीन कोटि । चामुंडा छप्पन कोटि । कात्यायणी नव कोटि । हैं गुण आत्माके ही ।२६। चंद्र सूर्य तारामंडल । नाना नक्षत्र ग्रहमंडल । शेष कूर्म मेघमंडल । हैं आत्माके ही गुण ।२७। देव दानव मानव । नाना प्रकारके जीव । हैं जो कुछ भावाभाव । वे सब आत्माके गुण ।२८। आत्माके हैं नाना गुण । ब्रह्म निर्विकार निर्गुण । जानना पूर्ण या अपूर्ण । हैं वे आत्माके गुण ।२९। आत्मारामकी उपासना होय । तो मिल जाय निरंजनके साथ । जिससे संदेह और अनुमान नाश पावे निःशेष ।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मगुणनिरूपणनाम समास छठा ॥६॥

॥ श्रीराम ॥

अनिर्वाच्य समाधान । करता हूं उसका कथन । कथन करनेसे समाधान ।

बिगड़ता नाहीं ।१। नाहीं लगे कुछ छोड़ना । नाहीं लगे कुछ मांडना । एक विचार करके शोधना । समझ आवे सर्वही ।२। मुख्य काशीविश्वेश्वर । सेतुबंध रामेश्वर । मल्लिकार्जुन भीमाशंकर । हैं आत्माके गुण ।३। एवं द्वादश मुख्य ज्योतिर्लिंग । और भी अनंत लिंग । है ये लीजिए जान । आत्माके गुण ।४। भूमंडल पर शक्ति अनंत । नाना साक्षात्कार चमत्कार । नाना देवमूर्ति सामर्थ्यवन्त । आत्माके गुण ।५। नाना सिद्ध पुरुषोंका सामर्थ्य । नाना मंत्र सामर्थ्य । नाना मनोहर आदि मणिसामर्थ्य । आत्माके गुण ।७। जो जो कुछ उत्तम गुण । वे सब आत्माके लक्षण । भला बुरा है जो कुछ । वह सब आत्माके कारण ।८। संत-आत्मा उत्तमगुणी । दुर्जनमें है अवलक्षणी । भली बुरी सब ही करनी । है आत्माकी ही जानो ।९। नाना प्रकारका अभिमान । नाना प्रतिसृष्टि निर्माण । नाना शाप उःशाप-लक्षण । हैं आत्माके गुण ।१०। पिण्डका करो शोधन । तत्वोंका करो शोधन । तत्वशोधनसे ज्ञान होगा । पिण्ड स्वरूपका ।११। पंचभूतात्मक जड़ देह । आत्मा चंचल गुणरूप । किन्तु निश्चल ब्रह्म व्यतिरिक्त । है ही नाहीं स्थल ।१२। निश्चल चंचल और जड़ । इनका पिण्डमें करो निर्णय । प्रत्यय बिन जो वचन । वो न किसी कामका ।१३। पिण्ड छोड़के आत्मा जाय । तब सहजही होवे निर्णय । गिरता है देह जो जड़ । देखत देखत ।१४। गिरे समस्त जो जो जड़ । उड़ जाय हैं जो चंचल । एवं जड चंचलका रूप । समझ आवे प्रत्यक्ष ।१५। बचा हुवा जो निश्चल ब्रह्म । वो है सर्व-स्थल व्यापक । वहां नाहीं गुण या विकार । एवं पिण्ड-ब्रह्माण्ड एकरूप ।१६-१७। महाभूतोंकी मूर्ति जड़ । उसमें प्रवेश करे आत्मा चंचल । एवं चलता है व्यापार । सृष्टिक्रमका ।१८। आत्मा और माया करे विकार । ब्रह्मपर करते हैं आरोप । ऐसा होगा जिसको प्रत्यय । वो ही एक ज्ञानी ।१९। ब्रह्म व्यापक अखण्ड । अन्य व्यापक होते खण्डित । करे जो इसका शोध । उसको होगा सुलभ अर्थ ।२०। गगन सदृश ब्रह्मका नाश । होगा नाहीं यदि महाप्रलय । होने दो सृष्टिसंहार । तो भी वो अखंड ।२१। एकान्तमें करो विचार । तब ही होगा इसका अनुभव । अन्यथा हैं अतिदुर्बोध । परब्रह्मका विचार ।२२-२३। जहां मिलते हैं अनुभवी संत । है वो एकान्तोंसे एकान्त । इसीलिये उन संतोके साथ । करो परमार्थचर्चा ।२४। देखे नाहीं तो कैसी पहचान । पहचान होगी तो कैसा संदेह । इसीलिए देखो विचारपूर्वक । तो होगा समाधान ।२५। गगनमें आता है बादल । कालान्तरसे वो उड़ जाय सकल । वैसे आत्माके अधिष्ठानपर । भासते है दृश्य नाशवन्त ।२६। इसीलिए आमूलाग्र पर्यन्त । करे जो विवेकपूर्वक विवरण । वो पावे शाश्वत ब्रह्म । है जो केवल निश्चल ।२७। अनुमानसे होवे जो निश्चय । वो है केवल शाब्दिक । किन्तु है जो अनुभवी पुरुष । वो मानेना

अनुमान ।२८। यहां न कोई अनुमानका काम । यहां न चले व्यवहार-विचार । प्रकट अनुमान और गुप्त विवेक । होंगे नाहीं एकरूप ।२९-३०। इसीलिए छोड़ो सब कृत्रिम । लेवो हैं जो केवल शुद्ध । शोध शोधके करो निर्णय । क्या है सार क्या असार ।३१।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे आत्मनिरूपणनाम समास सातवां ॥७॥

॥ श्रीराम ॥

विधाता-निर्मित प्रपंचवृक्ष । बढते बढते हुवा विस्तृत । होते ही वो फलभारयुक्त । पा गये विश्राम प्राणी ।१। नाना विषयरूप रसाल फल । रसभोग लेने के उपयुक्त । निर्माण किये अनंत शरीर । उपाय ऐसा विधीने ।२-३। और भी शरीरके साथ । निर्माण किये ज्ञानेंद्रिय पंचक । भिन्न भिन्न गुणोंसे युक्त । विषय सेवनार्थ ।४। श्रोत्रसे शब्द त्वचासे शीतोष्ण । चक्षुसे रूप जिव्हासे रस । घ्राणसे परिमल-ज्ञान । ऐसे इन्द्रियोंमें गुणविशेष ।५-७। इसीप्रकार वायुपंचक । उसके आधार अंतःकरण पंचक । विषयभोग भी लेता है जीव । कर्मेन्द्रिय पंचक से ।८-१०। अस्थिमांसमय शरीर । है एक अनुपम यंत्र । किन्तु विषयभोगसे होता है पुष्ट । ऐसी अगाध ईशकी करनी ।११-१३। वही अस्थिमांसमय शरीर । ज्ञानयोगसे होता है प्रवीण । सकल कला कार्यकारण । जाननेके योग्य ।१४। तथापि ज्ञान नाहीं समसमान । बुद्धि होती तीक्षण या मंद । इसीलिये ईश्वरने भेद । किया है निर्माण ।१५। सृष्टि निर्माणमें होता है भेद । सृष्टि संहारसे होय अभेद । इसीलिये होतेही ऊर्ध्वमुख । टूट जाय भेद ।१६। भेद अभेदका वाद । होता है मायाके कारण । क्योंकि उस मायामें ही वास । करता है अंतरात्मा ।१७। उस अंतरात्माकी महिमा । कौन जाने उसके बिना । हो यदि चतुर्मुख ब्रह्मा । होवे वो संदेह युक्त ।१८। इसीलिए उसका विवरण । करते करते थकता है मन । तीक्ष्ण बुद्धिका भी तर्कानुमान । हो जाता निष्प्रभ ।१९। यह सब होता आत्माके कारण । निरंजन ब्रह्ममें तो निष्प्रयोजन । एकान्तमें करे जो विवरण । उसको आवे समझमें ।२०। देहसामर्थ्यानुसार । सकल कुछ करे जगदीश्वर । अवतारादि देव समस्त । हैं आत्माके सामर्थ्यसे ।२१। शेष कूर्म वराहके देह । हैं जो अत्यंत विशाल । सर्व सृष्टिरचनाका चातुर्य । हैं सर्व आत्माकाही ।२२। करनी ईश्वरकी अगाध । धावे सूर्य भी सत्वर । पर्वतसम अंतरालमें मेघ । धरते हैं अपार जल ।२३। करते है सूर्यको वे आच्छादित । किन्तु उनको ही चलता है पवन । जिससे होता प्रकाशमान । पुनरपि सूर्य ।२४-२५। बिजली चमके अकस्मात । जिससे प्राणी होते

भयभीत। लगता है गगन ही हुवा तप्त। करे आवाज कडकडत।२६। इहलोकमें जो पंचभूत। एक करे दूसरेका मर्म-भेद। होवे भूतका भूतमें विलय। ऐसा सृष्टि-संहार।२७। सृष्टिरचना सृष्टिसंहार। अन्वय और व्यतिरेक। रहते है समसमान। विचार करे तो फाटे मन।२८। ऐसी है उपासना मम। उपासकको करना चाहिए चिंतन। जिसकी महिमा है अगाध। चतुरानन जाने नाहीं।२९। सृष्टिरचना है आवाहन। सृष्टिसंहार विसर्जन। ये दोनों ही उपासना-लक्षण। जानते हैं ज्ञानी।३०।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे देहक्षेत्रनिरूपणनाम समास आठवां ॥८॥

॥ श्रीराम ॥

मृण्मय मूर्तीका पूजन। तदनंतर करना विसर्जन। यह न होताहै मान्य। अंतःकरणको।१। देवको करना निर्माण। पूजानंतर करना विसर्जन। यह लगता है अप्रशस्त। इसीलिए करो विचार।२-३। देव करे शरीर-धारण। छोड़े सबको कालान्तर। इसीलिए देवका स्वरूप-निश्चय। करना चाहिए।४। देवशोधनके कारण। करते साधन निरूपण। समझना चाहिए सकल। अंतःकरणमें।५। बिना समझ ब्रह्मज्ञान। दे न सके कोई समाधान। है जो नाहीं पदार्थसम। ले जावो ऐसे बोले।६। चाहते हैं सबहीलोक। होना चाहिए देवसे भेट। किन्तु जानते नाहीं वे मार्ग। है जो असामान्य।७। होता नाहीं जहां विचार। वहां कैसे होवे देव। परन्तु समझते नाहीं लोग। तो क्या कहना।८। महापुरुष छोड़ते देह। तत्सदृश करते मूर्ति लोक। वैसी है यहां भी रीत। उपासनाकी।९। कर न सके कोई महत्कार्य। तो किया स्याहोका व्यापार। तो क्या उससे मिल जाय। राज्यसंपदा।१०। इसीलिए जितना ही भोलाभाव। है वो अज्ञानका भाव। अज्ञानसे क्या देवाधिदेव। मिल सके कभी।११। अज्ञानीको न माने ज्ञान। ज्ञानीको न माने अनुमान। इसीलिए सिद्ध पुरुषोंका मार्ग। धरना चाहिए।१२। माया छोड़के मूलपर्यन्त। जायें तो मिले समाधान। अन्यथा जावो भटकत। यहां वहां कहीं भी।१३। करना हो माया उल्लंघन। तो करो परमार्थ साधन। अध्यात्म श्रवणसे ही ज्ञान। होगा स्वरूपका।१४। ऐसे न हो यहां ही। तब सबही होवे ठगाठगी। कैसे समझमें आवे स्थिति। सत्य या असत्य।१५। जावो ना असत्य-मार्ग। धरो ना कदा असत्संग। करो ना असत्यका संग्रह। कदाकाल।१६। असत्य है सत्यका अभाव। सत्य के साथ कैसी संगत। है मन मायाको ओर अधोमुख। करो उसको ऊर्ध्वमुख।१७। नित्य करो अध्यात्म श्रवण। तो हो जाय ब्रह्म प्राप्त। नाना प्रकार की गुंथागुंथ। टूट जाय सर्वथा।१८।

गुंथागुंथीसे उकलना सूत। वैसे मायासे मन करो मुक्त। धीरे धीरे ब्रह्मपर्यन्त। ले जावो उसको ।१९। जड़ चंचल और निश्चल। इनका हो गयाहै संकट। उससे ही हुवे हैं निर्माण। पिण्ड और ब्रह्माण्ड ।२०। इसीलिये जो है देखना। या जो है शोधना। चर्तुदश-नामा भी माया। समझ लेवो शरीरमें ही ।२१। निर्गुण। निर्विकारी ब्रह्म। है जो सर्वत्र व्यापक। वो अपनेही देहमें निष्कलंक। देखो है या नाहीं ।२२। मूलमाया संकल्परूप। है जो अंतःकरणस्वरूप। जड़में जो लावे चैतन्य। वो भी है शरीरमें ।२३। त्रिगुणोंका जो साम्यभाव। उसका विचार है सूक्ष्म। किन्तु जानते वो साधुजन। उनको करता हूं प्रणाम ।२४। शरीरमें वामांग और दक्षिणांग। वैसे प्रकृति पुरुष-रूप द्विधा शरीर। है वोही अर्धनारिनटेश्वर। पहचानो पिण्डमें ही ।२५। उसको ही कहते षड्गुणेश्वर। या शिवशक्ति महतत्त्व। अर्धमात्रा शुद्धसत्व। गुणक्षोभिणी माया ।२६-२७। त्रिगुणोंसे चलता है शरीर। त्रिगुणोंसे प्रत्यक्ष व्यवहार। ऐसे है यह शरीर। कर्दमरूप ।२८। मन माया और जीव। है तीनोंका ही अंतर्भाव। चतुर्दश नामोंमें ही जान। लेवो शरीरमें प्रत्यय ।२९। पिण्डका होतेही नाश। होता है सबका विनाश। किन्तु रहे शाश्वत परब्रह्म। धरो दृढ़ उसको ।३०।

इति श्रीदासबोधे गुरुशिष्यसंवादे सूक्ष्मनिरूपणनाम समास नौवा ॥९॥

॥ श्रीराम ॥

लेने जाय तो अशक्य। छोड़ना चाहे तो न सके छोड़। है ही वो परब्रह्म। जहां तहां ।१। अत्र तत्र और सर्वत्र। है वो सदा सन्मुख। विन्मुख हो तो भी सन्मुख। रहता है निरपवाद ।२। बैठा था कोई वो गया उठ। किन्तु वहां रहता है आकाश। चारों ओर देखा जाय। तो भी आकाश सन्मुख ।३। धाव धाव धावे जीव। तो भी चारों ओर उसके आकाश। जा सके कौन आकाश बाहर। पराक्रमसे ।४। जहां जहां देखे जीव। वहां वहां आकाश सन्मुख। जैसे समस्तोंके मस्तकपर। मध्यान्हकालमें मार्तण्ड ।५। यह है केवल दृष्टान्त। है न वो पर्याप्त। किन्तु समझनमें सहाय्यभूत। वस्तु तो दृष्टान्त रहित ।६। नाना देशोमें नाना तीर्थ। जाना पड़े वहां करके कष्ट। वैसे नाहीं परब्रह्म। जहां बैठो वहां सुलभ ।७। बैठा है कोई एक। या वो चल गया धावत। परब्रह्म तो उसके साथ। रहता है सदैव ।८। पक्षी उड गया अंतराल। तो भी चारो ओर आकाश। वैसे ही परब्रह्म व्यापक। जीवके चारों ओर ।९। स्वयं अव्याप्त और घन। अमर्याद और अनंत। किन्तु है सबसे अतिनिकट। परब्रह्म सदैव ।१०। दृश्यके सबाह्य अभ्यंतर। ब्रह्म

व्यापक ब्रह्माण्डोदर । अरे है वो अनुपम विमल । किसकी उपमा मैं देऊं ।११। वैकुण्ठ कैलाश और स्वर्ग । इन्द्रलोक या चतुर्दश लोक । या पन्नगादि पाताललोक । सबमें है वो ब्रह्म ।१२। काशीसे दूर रामेश्वर । किन्तु बिचमें ही वो घन । अपार अपार नाहीं पार । परब्रह्मका ।१३। है जभी अकेला एक । तो भी परब्रह्म सर्व व्यापक । सबको ही एक समयमें स्पर्श । करे सर्व स्थानमें ।१४। भीगे ना पर्जन्यसे ब्रह्म । या न होवे कर्दमसे लिप्त । नदीको आवे बाढ । बहे ना बाढके साथ ।१५। है आगे पीछे एक समय । वाम सव्य दोनों ओर । अध ऊर्ध्व सबके साथ । है व्याप्त सर्वकाल ।१६। आकाशरूप महासागर । है सर्वदा शांत और स्थिर । असंभाव्य जिसका विस्तार । वहां भी परिपूर्ण ब्रह्म ।१७। एक जिनसी गगन शून्य । वहां न होता है दृश्य-भास । भास या निराभास रहित । है एक परब्रह्म ।१८। संत साधु महानुभाव । देव दानव मानव । सबके लिये है विश्रान्तिस्थान । परब्रह्म एक ।१९। कौन जाये अनंतके पार । किसको होगा अनंतका दर्शन । अमर्यादको किस प्रकार कौन । करे मर्यादित ।२०। नाहीं स्थूल नाहीं सूक्ष्म । नाहीं अन्य कीसीके सदृश । नाहीं ज्ञान दृष्टिबिन । किंचिदपि समाधान ।२१। होवे पिण्डब्रह्माण्ड का निरास । तो न होगा ब्रह्ममें भास । आदि अंतमें स्वयंभी । रहे परब्रह्म ।२२। जब तक है दृश्यजात । ब्रह्म व्यापक यही सत्य । किन्तु न हो जब व्याप्य दृश्य । कहेंगे किसको व्यापक ।२३। ब्रह्म है शब्दातीत । ब्रह्म है कल्पनातीत । शब्द-कल्पनासे रहित । है निरंजन ब्रह्म ।२४। शुद्धसार है श्रवण । प्रत्ययानुसार शुद्ध मनन । स्वरूप विज्ञानमें होवे मग्न । तो मन होवे उन्मन ।२५। मिला साधनका फल । संसार हुवा सुफलित । निर्गुण ब्रह्म निश्चल । दृढ हुवा अभ्यंतरमें ।२६। मायाका हो गया अंत । हुवा तत्वोंका निर्णय । साधनोंका भी हुवा विलय । साध्यरूप होते ही ।२७। जो जो देख लिया स्वप्न । उड गया होते ही जागृत । तो सहज ही हुवा समाधान । अनिर्वाच्य ।२८। इसीलिये जानो विवेकपूर्ण । लेवो स्वानुभव प्रत्यक्ष । तब तव जन्म और मरण । होंगे शून्याकार ।२९। भक्ताभिमानी देव । है दाशरथी समर्थ श्रीरामकेही कृपावचन । है यह दासबोध ।३०। बीस दशक दासबोध । श्रवणद्वारसे करे शोध । और करे कोई मनन । तो होवे विशद परमार्थ ।३१। वीस दशक दो सौ समास । देखे साधक सावकाश । करे विवरण मनन । अपने आप होगा ज्ञान ।३२। करो ग्रंथका स्तवन । क्यों पूछते क्या प्रयोजन । आप ही समझेंगे कारण । प्रत्यय आतेही ।३३। हैं पंचभूतात्मका देह । वहांका कर्ता आत्मा एक । तो क्या होगा कवित्व-प्रकार । मनुष्यका बोलो ।३४। सकलकर्ता जब हो जगदीश । तो क्या

कवित्व ही एक मानव निर्मित । बोला जाय अप्रमाण । तो क्या फलप्राप्ति ।३५। सब देहका हुवा विलय । उड़ गया तत्व-समुदाय । तो क्या रह कुछ पदार्थ । जो कहूंगा है मेरा ।३६। एवं है यह विवेकका काम । भ्रमसे न होना संभ्रमित । सब ही होता यथा क्रम । जगदीशका कर्म ।३७।

इति श्री दासबोधे गुरुशिष्यसंवादे विमलब्रह्मनिरूपणनाम समास दसवां ॥१०॥

।। राजाधिराज सद्‌गुरुनाथ महाराजकी जय ।।

मुद्रक : भावना प्रिन्टर्स, मुंबई–४०० ००४. * फोन : ३६ ४६ ६१

आ र त्या

१ श्री भाऊसाहेब महाराजांची

मंगलं महालिंग उमदींशा मुनिजन पोषा ।
भ्रमरकुंतलीकांत सर्वेशा । इंचगेरीवासा ।।धृ.।।

पृथ्विमेलिन प्रेमभक्तरनु । परिपालिसुवनित्यनित्यदिसत्यशंकरने ।
चितशुद्धि मांडु एन्न कर्तृ निन्न करुणविट्टु ।
मृत्युविन बाधेयनु बिडिसुव सत्य सद्गुरु काडसिद्धा ।।१।।

धरणिपालिप दुरित संहरने । त्रिपूरांतक ने
चरणसेवक भजकरक्षकने । मायावि नीने
परमपावन पंचपाशकने । मरेय होक्कर
बिरदु कायुब अरवु कोट्टु मरवु बिडिसुव
शरणजनर स्मरणि तारक सुंदरात्मक सगुण निधिये ।।२।।

अष्टदिक्पालकर ओडेयने । सृष्टीकर्ता ।
श्रेष्ठ सद्गुरू लिंगजंगमने ।।
निष्ठेयिंदलि नबिदवर कष्ट कडिदु कडेय हायिसुव ।
वृष्टिअमृत सुरिद जगदि जय जय पडेदंथ सद्गुरू ।।३।।

२ श्री अंबुराव महाराजांची

(आरती भुवनसुन्दराची..। या आरती कुन्जविहारी की..। इस चाल पर)

आरती अंबुरावांची। माझ्या सद्पुरुरायांची।

वंदुनी भाऊराव-चरण। अहर्निशीं होती ध्यानमग्न।

असुनि सद्गुणांचि खाणी। जपती बहू यमऽनियमीं।

(चाल) अवगणुनि पंचभूतांतें। मन-बुद्धि-अहंकाराते।

(चाल) साधि जो त्वरित, ध्यान अविरत, नित्य जागरत,

समाधि आत्मस्वरुपाची, देहातीत ब्रह्म रुपाची ॥ आरती अंबुरावांची-१

नाशुनि रजतमोराशी। वाढविलें सत्त्व-चांदण्यासी।

पाजुनि नाममंत्रासी। दाहविलें ब्रह्मतेजासी।

(चाल) सर्वांभूति आत्मभावानें। भक्तांवरिल गाढ प्रेमाने।

(चाल) जो करि पावन, दुःखनिवारण, पापविमोचन,

वाढवी भक्ति साधकांची, श्रद्धायुक्त गुरुपुत्रांची ॥ आरती अंबुरावांची-२

३ श्री रामभाऊ रानडे महाराजांची

आरती रामराया, स्मृर्तगामी समर्था।

सच्चिदानन्द नाथा, परब्रह्म तत्वता ॥ आरती रामराया-१

संसार-दुःख हरो, अघनाश-कारका।

मृत्युभय हरण करो, नाम-संजीवनी-दाता ॥ आरती रामराया-२

अखंड चरणसेवा, दर्शनसुख समाधि।

याचना माझी इतुकी, पूर्ण करो दयाघन ॥ आरतो रामराया-३

४ श्रीसद्गुरुची

सुखसहिता दुःखरहिता निर्मल एकांता ।
कलिमलदहना गहना स्वामि समर्था ॥
न कळे ब्रह्मादिकां अंत अनंता ।
तो तूं आम्या सुलभ जय कृपावंता ॥१॥
जयदेव जयदेव जय करुणाकरा ।
आरती ओवाळूं सद्गुरूमाहेरा ॥धृ॥
मायेविण माहेर विश्रांतीठाव ।
शब्दी अर्थलाभ बोलणे वाव ।
सद्गुरू प्रसाद सुलभ उपाव ।
रामीं रामदासा फळला सद्भाव ॥२॥

॥ श्रीराम ॥

५ श्रीसद्गुरुप्रसन्न

आरती दाते राया । सद्गुरु कृपा निकेता ।
त्रिताप भव त्राता । ब्रह्मानन्द स्वरुपा ॥ आरती० ॥
अजस्त्र नाम निष्ठा । गुणत्रय देहातीता ।
कारुण्यामृत स्त्रोता । शांतिक्षमा परिपूर्ता ॥ आरती० ॥
कृपालु दीनानाथा । भक्तिदान देओ पाता ।
त्रिभुवन गुण गाता । नररुप भगवंता ॥ आरती० ॥

—❀—❀—

भाऊसाहेब अंबुराव रामराया । गुरु राया जय गुरु राया ।
भाऊसाहेब अंबुराव रामराया । गुरु राया जय गुरु राया ॥
रामभाऊ अंबुराव दातेराया । गुरु राया जय गुरु राया ।
रामभाऊ अंबुराव दातेराया । गुरु राया जय गुरु राया ॥
॥ गुरु राया जय गुरु राया ॥

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Vidya Mahavidyalaya
892

Bhawan ... Sanskrit Mandir
Vidya ... Mandir

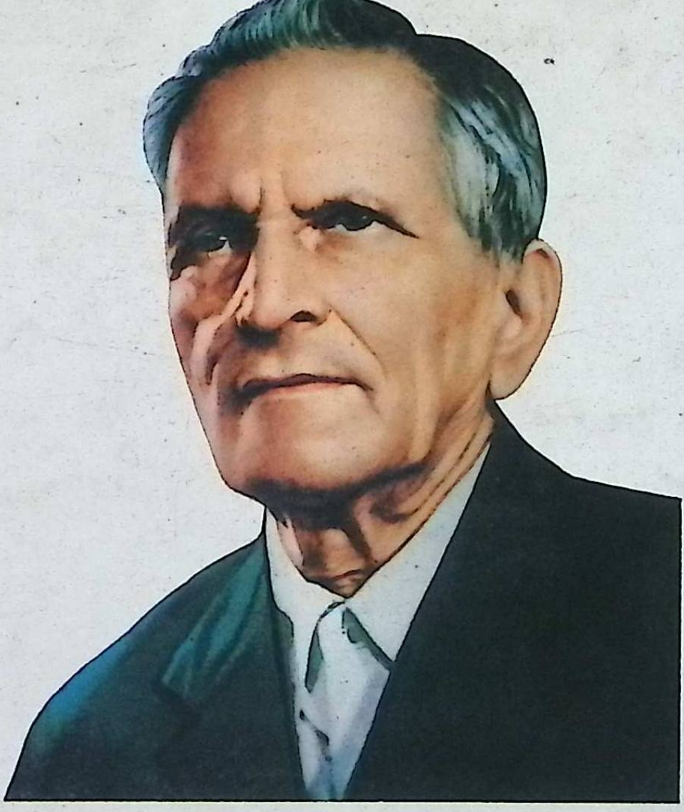

डॉ० व्ही. एच. दाते

ग्रन्थ और ग्रन्थकार

समर्थ स्वामी रामदास महाराष्ट्र के महांनतम संतों में से एक हैं। 'दास-बोध' उनका एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसके विषय में उनकी प्रतिज्ञा है कि उन्होंने जिस 'सत्य' का अनुभव लिया है उसी 'सत्य' का प्रतिपादन उसमें किया है – 'आदि केले मग सांगीतले' डॉ. व्ही.एच. दाते न केवल एक दर्शनवेत्ता ही थे बल्कि एक महान संत भी थे और उन्होंने अन्यत्र यह स्वीकार किया है कि 'दास-बोध' का अध्ययन उन्होंने पचास-साठ वर्षों तक निरन्तर किया था' अतएव इस अनुवाद में अनुभूतिपरक प्रांजलता और आत्मविश्वास स्पष्ट परिलक्षित होता है। अनुवाद की एक विशेषता यह भी है कि नैतिक और पारमार्थिक महत्व की ओवियों के गूढार्थ को सरल परन्तु प्रभावशाली ढंग से स्पष्ट किया गया है। ग्रन्थ की भूमिका में परमार्थ की एक संक्षिप्त रूपरेखा के साथ परमार्थ में गुरू और उसकी कृपा के विलक्षण प्रभाव का, साधन की सफलता के लिए नैतिक अनुशासन की आवश्यकता का, तथा गुरू-प्रद्दत्तनाम के स्मरण का महत्व विस्तार से प्रतिपादित किया गया है। कर्म करते करते भक्ति करना, निश्चित समय पर बैठ कर प्रेमादरसे नेम (नाम-स्मरण) करना और अपने व्यवहारिक कर्त्तव्यों का कुशलता से पालन करते हुए निरन्तर परमार्थ-पथ पर आगे बढ़ते रहना ही एक साधक के लिए योग्य है ऐसा दर्शाया गया है।

डॉ. व्ही. एच. दाते अपने गुरू प्रो. रा. द. रानडे की भांति ही परमार्थ के प्रसार की दृष्टि से ही ग्रन्थ रचना करते थे। उनके अनुसार दार्शनिक चिन्तन का महत्त्व अनुभूत ज्ञान के औचित्य को सिद्ध करना है और इसी कारण जो अनुभूत 'सत्य' नहीं है वह या तो कोरी कल्पना है या केवल अनुमान और ये दोनों ही परमार्थ की दृष्टि से निरूपयोगी हैं। दाते साहब ने अपने जीवनकाल में छोटे-बड़े कुल पैंतीस ग्रन्थों की रचना की थी और उनमें से प्रत्येक में जितनी दार्शनिक चिन्तन की प्रखरता है उतनी ही अनुभूतिजन्य स्पष्टता और प्रभावोत्पादकता भी है। उनके ग्रन्थ वे चाहे ब्रह्मसूत्र या गीता पर भाष्य हों अथवा *'Yoga of The Saints', Rock and Religion; puzzles of spiritual life'*. जैसी स्वतन्त्र रचनाये हो या फिर संतों के अनुभवजन्य उद्गार हों, सब में अनुभव पर आधारित पारमार्थिक दृष्टि ही प्रमुख है' इसी कारण धर्म के नाम पर प्रचलित अन्ध विश्वास, आडंम्बर और भ्रमक धारणओं का उच्छेद कर परमार्थ का सरल मार्ग प्रशस्त करना यही उनके ग्रन्थों का प्रमुख उद्देश्य है।